श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली

भगवान, देवी-देवता, ऋषि, मुनि, हर धर्म के पैगम्बर, सिद्ध, सन्त, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के द्वारा प्रकट होकर लिखवाए आध्यात्मिक पदों का दिव्य संग्रह

ग्रन्थ-१ः भाग २

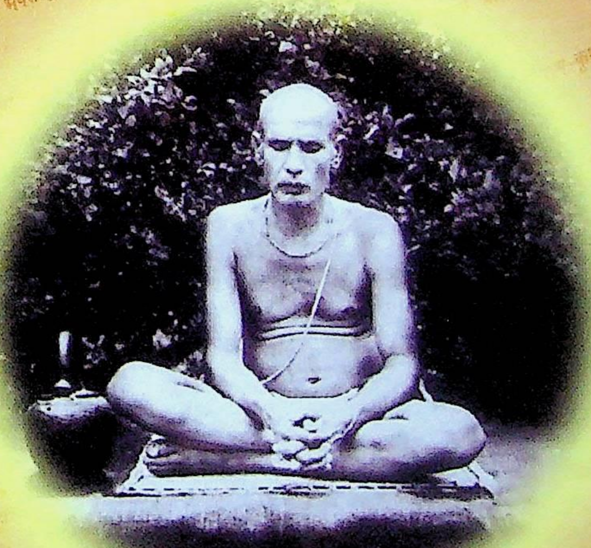

परमहंस राम मंगल दास

गोकुल भवन, अयोध्या

क्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला

ला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला

ष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण

ाम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली

श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत च

ावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्ता

चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला

क्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण

ला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम

ष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री

राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरिताव

श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत च

ष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्ता

राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला

श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण

राम-कृष्ण
ी श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृ
रितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री
ृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली
भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण
लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृ
कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री
राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली
ी श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरि
रितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत
ृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भ
भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण ली
लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष
ावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री रा
रितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री
चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरिता
ामृत च

क्तामृत चरितावल

ला भक्तामृत च

ष्ण लीला भक्ताम

ाम-कृष्ण लीला

श्री राम-कृष्ण

ावली श्री राम-

चरितावली श्री

क्तामृत चरितावली

ला भक्तामृत च

ृष्ण लीला भक्ताम

राम-कृष्ण लीला

श्री राम-कृष्ण

श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली

भगवान, देवी-देवता, ऋषि, मुनि, हर धर्म के पैगम्बर, सिद्ध, सन्त, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के द्वारा प्रकट होकर लिखवाये आध्यात्मिक पदों का दिव्य संग्रह

ग्रन्थ - १

भाग - २

परमहंस राम मंगल दास

गोकुल भवन

अयोध्या

दिसम्बर २००१

प्रकाशक:

डा० राजीव कुमार वर्मा
4074, टाईप 4 क्वार्टर्स
आई.आई.टी. कैम्पस
कानपुर 208 016 (उ. प्र.)
फोन: 0512-598494, 591428
फैक्स: 0512-591428
email: rkvarma@iitk.ac.in
rkvarma@engga.uwo.ca

कापीराइट: सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: दिसम्बर 2001
500 प्रतियाँ

न्योछावर: रू० 125/-

रू० 50/-

मुखपृष्ठ चित्र: गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी का सर्वप्रथम चित्र (1946)

कम्प्यूटरीकरण: श्री टी. सदागोपन

मुखपृष्ठ सज्जा: श्री काशी मिश्रा

मुद्रक:
शारदा ग्राफिक्स (प्राइवेट) लिमिटेड
111-A /407, अशोक नगर
कानपुर 208 012
फोन: 0512-290791, 256591

गणपति वन्दना

गणपति को प्रथमै करों वन्दन। मिलत सुक्ख दुख होत निकन्दन।१।
रिध्दि सिध्द सोहत संग जाके। भाल विशाल सिन्दूर को चन्दन।२।
अब हम पर नित दाया कीजै। वाहन मूष उमा के नन्दन।३।

सुनिये विनय गजानन अब हम सुनाने वाले।
अब पार बेड़ा मेरा, तुम हौ लगाने वाले।
है मूष की सवारी औ डील डौल भारी।
देवन में आदि पूजन अपनी कराने वाले।
कवियों को कार्य्य सारो, बुद्धी मेरी सुधारो।
हिरदय में मेरे बसिये, आनँद बढ़ाने वाले।६।

शारदा वन्दना

शरन मैं निशि दिन हूँ तेरी, सुनौ शारद महरानी जी।१।
बसौ हिरदय में आ मेरे, सकल गुण की निधानी जी।२।
तुम्हारे ही बदौलत से हुये कवि लोग ज्ञानी जी।३।
अरज मेरी सुनौ चित दै, कहौं मैं कछु कहानी जी।४।

- परमहंस राम मंगल दास

गुरु वन्दना

श्री गुरु महिमा को कहै अति ही ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परनाम।।

- भगवान रामचन्द्र जी

दो शब्द

हम 28 की उम्र में राम घाट पर अपने गुरु जी परमहंस बाबा बेनी माधौ दास जी महाराज के पास आये। दो माह बाद सबसे पहले शुरु शुरु ध्यान में राम विवाह देखा था। महारानी जी दस हजार सखिन के बीच में जै माल लेकर धीरे धीरे चलती थीं, सब सखी मंगल गाती थीं। 20 कड़ी का था। ऐसे स्वर मिले थे मालूम होता था एक जनी गा रही है। हम सुबह लिखना चाहते थे तो महाराज जी ने मना कर दिया। कहा "पहिले पहिले न लिखौ नहीं तो फिर कुछ न होगा।" तब सब भूल गए।

फिर एक दिन नित्य दरबार गए। वहाँ बीच में राजा जनक जी बैठे थे, गल मोच्छा रखाये, गोरे गोरे पतरे पतरे, बन्ददार लम्बा अंगरखा पहिने, सफेद धोती, चौकसिया टोपी सर पर थी। हमने पूछा "आप कौन हैं," तो कहा "हम राजा जनक हैं।" हम ने कहा "आप राजा जनक हैं तो हमको राम जी का कोई पद सुनावो।" तो खड़े होकर, कुछ झुक कर दाहिना हाथ सामने करके पद सुनाने लगे, चारौं तरफ ठौर पर घूमकर पहिली कड़ी सुनाकर मस्त हो गए। तब हमै सब याद हो गया।

इसके 6 माह बाद नानक देव राम घाट पर बट बृक्ष के नीचे दिन में ११ बजे प्रगट हुए। शुकुल धोती पहिने थे जैसी हमारे यहाँ जनेऊ में पहिराई जाती है - पीली रंगी इस रीति से बहुत पंडित अभी पहिरते हैं। सफ़ेद बाल चांदी चांदी ऐसे चमकते थे, दाढ़ी भी सफेद चमकती थी। बहुत गोरे थे, शरीर महकता था। हम दंडवति किया। फिर उनके गले के पास से पेट तक चाँदी कैसी पटरी प्रगट हो गई। उसमें ३५ अक्षरी खुदी थी काली रोशनाई की। हमसे कहा "सुनावो।" हमने कहा "हम रोज़ इसका पाठ करते हैं।" सुनाया तो वह पटरी उलट गई, पेट की तरफ अक्षर हो गए। हम से कहा "यह स्तोत्र तुमको सिद्ध हो गया।" फिर हमने चर्णोदक उतारा तब अन्तर हो गए। फिर थोड़े दिन में प्रगट होकर थोड़ा बताया। फिर तीसरी बार सब बता कर अन्तर हो गए। महाराज (गुरुजी) ध्यान में बैठे थे।

जब हमारी अवस्था 42 रही होगी, महाराज का शरीर शान्त हो चुका था, तो तमाम अजर अमर सिद्ध संत आने लगे, झुंड के झुंड और कहैं हमारा पद लिख लो, हमारा पद लिख लो। तो हम कहा, "का हमैं यादि रहैगा।" तो सरस्वती जी प्रगट हो गईं और आशीर्वाद दिया कि जो कोई जो कुछ तुमको बतायेगा या सुनायेगा सब तुम्हें यादि हो जायगा। तब से हमें यह सब यादि हो जाता है। हर मजहब के सिद्ध सन्त आते, सतसंग करते और अपना कोई पद सुना जाते। तो हम भोर में उठते ही पेन्सिल से कागज पर लिखते। दिन-दिन भर लिखते-लिखते थक जाते तो गोस्वामी जी (तुलसीदास जी) ने कहा - थोड़ी देर दिवाल के भल बैठकर आराम कर लिया करो, तो वैसा करने लगे, तो थकान चली जाती थी।

हमने दो किताब (कक्षा दो तक) पढ़ा है। जो हमको बहुत से अजर-अमर सिद्ध सन्तों ने तथा देवी-देवताओं ने दर्शन देकर लिखाया था, मैं श्री सरस्वती जी की कृपा और आशीर्वाद से उसको लिखने में समर्थ हो सका। किसी किसी महापुरुष ने एक दोहा या केवल एक पद ही लिखाया है और किसी ने अधिक लिखाया है। फिर ऐसे सिद्ध सन्त अभी तक दो हज़ार के ऊपर मिले हैं जिनके पद लगभग 3500 से ज्यादा ही होंगे। कभी गिने नहीं गए हैं। वह सब हम लिख लेते थे और वह हमारे भक्त साफ साफ नकल कर देते। मास्टर हरनाथ सिंह ने खुशखत लिखा है। चार जिलदें (ग्रन्थ) हैं।

इनको जो पढ़ेगा - प्रेरणा पायेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा तो उसका जीवन सार्थक होगा, उसका कल्याण होगा।

जिसको जिस देवी देवता में प्रेम हो मन लगाकर और अपने इष्ट में विश्वास करके थोड़ा जप या पाठ नित्य करे।

द: परमहंस राममंगलदास

परमहंस राम मंगल दास
गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड,
अयोध्या

दिव्य ग्रन्थ - १
के
द्वितीय भाग की प्रस्तावना

भगवान् की असीम दया व परंपूज्य गुरुदेव श्री परमहंस राममंगलदास जी की कृपा से इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन कार्य सम्पन्न होने पर अत्यन्त हर्ष हो रहा है। सब देवी देवताओं, ऋषि मुनियों तथा हर धर्म के सिद्ध सन्तों व महापुरुषों ने गुरुदेव के समक्ष प्रकट होकर जो आध्यात्मिक पद तथा वार्तिक (कथाएँ) लिखवाए उन्हें श्री गुरुदेव ने चार मुख्य दिव्य ग्रन्थों में संग्रहीत किया है। श्री गुरुदेव द्वारा रचित इन चार ग्रन्थों में दिव्य ग्रन्थ-१ "श्री रामकृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" का प्रथम भाग सन् 1999 में छपा तथा उसका विमोचन अयोध्या जी के श्रद्धेय संत श्री नृत्य गोपाल दास जी के कर कमलों द्वारा 31 दिसम्बर 1999 को हुआ। इस दिव्य ग्रन्थ का यह दूसरा भाग अब आपके हाथों में हैं।

यह ग्रन्थ श्री गुरुदेव भगवान की इच्छा व आशीर्वाद से तथा अनेक भक्तों के अप्रतिम सहयोग से ही छप सका है। गुरुदेव के अनन्य शिष्य परम आदरणीय श्री रामसेवक दास जी का मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जो श्री गुरुदेव के गोकुल भवन का समस्त कार्य गुरु उपदेशों के अनुसार संभाल रहे हैं। उन्होने अत्यन्त कृपा कर गुरुदेव भगवान के दिव्य साहित्य को प्रकाशित करने की अनुमति मुझे प्रदान करी तथा इस कार्य के लिये अपना अपूर्व सहयोग व आशीर्वाद दिया। गोकुल भवन आश्रम के ही श्री प्रेमानन्द जी के अपरिमेय सहयोग व विश्वास के लिये में उनका आभारी हूँ। श्री रामायणी जी व श्री परशुराम जी की सतत् शुभकामनाएँ इस कार्य के लिये मुझे प्राप्त हुई हैं जिसके लिये मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। श्री अवस्थी जी अत्यन्त श्रद्धा व निष्ठापूर्वक जो प्रयास कर रहे हैं कि श्री गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी का साहित्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके, वो अत्यन्त सराहनीय है।

स्वर्गीय श्री जगत नारायण बाबू जी को हृदय से नमन करता हूँ, जो इन सारे दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन के प्रेरणास्रोत थे तथा जिन्होने इन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये मेरा निरन्तर उत्साह वर्धन किया। वे 1944 से गुरुदेव के शिष्य थे तथा 1971 से गोकुल भवन में अन्त समय तक निरन्तर गुरुदेव की सेवा में रत रहे। वे कहते थे, "ये ग्रन्थ अलौकिक हैं। न पहले कभी ऐसे ग्रन्थ बने और न बाद में शायद कभी बनेंगे। हर परिवार में, सम्मान पूर्वक जैसे रामायण-गीता रखी जाती हैं, वैसे रखने लायक हैं। इनके नित्य पाठ से घर में रहने वालों को मार्गदर्शन मिलेगा व उनका कल्याण होगा।"

ये दिव्य ग्रन्थ श्री बलराम वर्मा जी के प्रयासों से गोकुल भवन आश्रम में सुरक्षित रखे हुये हैं। उन्होंने ग्रन्थों के बारे में बड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों से मुझे अवगत कराया, उसके लिये उन्हें बहुत धन्यवाद देता हूँ। श्री गणेश प्रसाद माथुर जी का ऋणी हूँ जिन्होंने श्री गुरुदेव महाराज जी के अनेक हस्तलिखित पत्र व उपदेशों का संकलन तथा उनके साहित्य के अंश मुझे दिये, जिनको प्रभु इच्छा से भविष्य में छपाया जायेगा। उनकी शुभकामनायें व आशीर्वाद पाकर मैं कृतकृत्य हुआ हूँ।

मन में अतीव इच्छा थी कि परंपूज्य गुरुदेव के अधिकाधिक चित्र इन ग्रन्थों में छापे जा सकें, ताकि भक्त जन गुरुदेव के अनेक रूपों के दर्शन कर सकें। मैं डा० रमेश निगम का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने कृपा कर श्री महाराज जी के तीन फोटो एलबम मुझे दिये। इन एलबम के कई चित्र इस ग्रन्थ में समाहित हैं तथा कई अन्य चित्र श्री गुरु कृपा से भविष्य में छपने वाले ग्रन्थों में छापे जायेंगे। श्री बागेश्वरी नारायण श्रीवास्तव जी तथा डा० के० एन० मिश्रा जी ने जो हर पग पर मार्ग दर्शन किया व श्री गुरुदेव के चित्र उपलब्ध कराने में सहयोग दिया है, उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। श्री रविशंकर तिवारी को ग्रन्थों के वितरण में उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

राजा भानु प्रताप सिंह जी का अति विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने परंपूज्य श्री गुरुदेव के चित्र, उनका एकमात्र वीडियो तथा आडियो कैसेट मुझे दिया है, ताकि उनके संशोधित तथा समुन्नत रूप सब पाठकों व भक्तों के लिये

भविष्य में उपलब्ध कराये जा सकें। जब भी मुझे प्रूफ-रीडिंग में संशय होता वे देर रात तक जागते व कृपा कर उन संशयों का निवारण करते।

आई०आई०टी० कानपुर में प्रोफेसर टी.वी. प्रभाकर, डा. टी. अर्चना तथा श्रीमती रजनी मूना का परं आभारी हूँ जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के वेबसाइट के निर्माण में पूर्ण सहयोग दिया है। इस वेबसाईट के माध्यम से सारे विश्व में कहीं भी कम्प्यूटर द्वारा श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थ पढ़े जा सकते हैं। इस समय प्रथम दिव्य ग्रन्थ का प्रथम भाग वेबसाईट पर उपलब्ध है।

इस वेबसाईट का विकास किया जा रहा है तथा शीघ्र ही श्री महाराज जी का अन्य दिव्य साहित्य, चित्र, वीडियो व आडियो को इसमें समाहित कर लिया जायेगा। इस वेबसाईट का पता हैः

www.rammangaldasji.org

आई०आई०टी० कानपुर के टेलिविज़न सेन्टर तथा उसमें कार्यरत श्री अरविंद मिश्रा जी का आभारी हूँ जिनके माध्यम से श्री गुरुदेव का वीडियो तथा आडियो के एडिटिंग का कार्य हो रहा है। श्री गुरुदेव के दिव्य ग्रन्थों की वेबसाईट डिजाइनिंग के लिये श्रीमती सन्ध्या मिश्रा को धन्यवाद देता हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ के अन्त में परमहंस श्री राममंगलदास जी की गुरु परम्परा के आदिगुरु "श्री स्वामी रामानन्द जी" जो श्री विष्णु भगवान के अंशावतार थे, उनके द्वारा प्रकट होकर लिखवाये इन ग्रन्थों की महिमा का पद समाविष्ट किया गया है। तदोपरान्त डा० सुधाकर अदीब द्वारा विरचित श्री परमहंस राममंगल दास जी की आरती सम्मिलित की गई है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में आई०आई०टी० के प्रोफेसर सुमित गांगुली जी का जो अनुपम सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिये मैं उनका ऋणी हूँ। श्री प्रदीप भार्गव जी ने कठिन समयाभाव के बावजूद भी इस ग्रन्थ को समय से छापा है उसके लिये मैं उनका अति कृतज्ञ हूँ।

इस ग्रन्थ को अत्यन्त श्रद्धा व लगन से श्री सदागोपन जी ने कम्प्यूटर में टाइप किया है व रूप सज्जा की है। इस कार्य के लिये उनके तथा उनके परिवार की तपस्या के प्रति आभार व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं।

इस ग्रन्थ की सपूर्ण प्रूफ-रीडिंग मेरी धर्मपत्नी श्रीमती मालिनी वर्मा ने की है। इस सहभागिता के बिना यह ग्रन्थ समय पर नहीं छप पाता।

इस प्रकाशन कार्य का एक एक अंग श्री गुरुदेव ने ही जुटाया है तथा उन्होने ही कराया है। वे ही इन दिव्य ग्रन्थों के प्रगटकर्ता व प्रकाशक हैं - यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांकः 17 दिसम्बर 2001

दिव्य ग्रन्थ - १
के
प्रथम भाग की प्रस्तावना

श्री महाराज जी की महिमा

भगवान श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं प्रकट होकर श्री महाराज जी को लिखवाया है:-

श्री गुरु महिमा को कहै, अति ही ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परनाम।।

श्री महाराज जी ने अपनी पुस्तक "भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत" के "दो शब्द" में लिखा है, "कुछ समय हुआ भगौती (माँ भगवती) का हुक्म हुआ कि कुछ भक्तौं की कथाएँ लिख दो। अवस्था 82 की हो गई है, शरीर कमजोर है पर भगौती का हुक्म है तो धीरे धीरे अभी तक 300 से ऊपर कथाएँ लिखी हैं। पहिले इनमें से 200 छपैंगी, फिर भगवान की जैसी इच्छा होगी।"

जो बातें स्वयं श्री भगवान, देवी देवताओं व संतों ने श्री महाराज जी के बारे में इन चार दिव्य ग्रन्थों में कही हैं तथा उपरोक्त भक्तों की कथाओं में लिखी हैं, जो मैं अपनी निपट बुद्धि से जान सका, वे ही बातें उन्हीं की कृपा से मैं नीचे लिख रहा हूँ।

जगदीशपुरी धाम की यात्रा के वर्णन में महाराज जी ने लिखा है - "जब गौरांग जी के मंदिर में गये जहाँ वह छै भुजा से विराजमान हैं तो लम्बी दंडवति करने का विचार किया तो बड़ा प्रकाश हुआ। मालूम हुआ कि सारा संसार प्रकाशमान है। फिर लय दशा हो गई। ज्ञान, ध्यान, भान भूल गया। सीधा काठ ऐसा शरीर खड़ा रहा। तब भगवान ने अपना दाहिना चरण हमारी छाती पर लगाया। हम होश में आ गये। हमने चरण को माथे में लगा कर छोड़ दिया। वहाँ पर कबीर जी, मलूक साहेब, कर्मा माई, हरी दास, नित्यानन्द जी,

रघुनाथ, अद्वैताचार्य और श्री बास के दर्शन हुये। सबने कहा, "महाराज, कृष्णावतार का यह सखा आप का सुखदेव है।" भगवान मुस्करा दिये। हमारे आँसुओं की धारा चलने लगी। वै प्रेम के आँसू बर्फ जैसे ठंडे होते हैं। यह प्रेम की नदी से बहते हैं। दुख की नदी के आँसू गरम होते हैं। दो नदी आँखों में हैं।"

बूढ़ी माता, हुसेन गंज, लखनऊ, की कथा में बूढ़ी माता ने श्री महाराज जी का हाल द्वापर का बताया था कि कृष्ण भगवान ने कहा है, "यह हमारा सखा सुखदेव ग्वाल है हर समय संग नाचता, गाता था और दूध लूटने में संग रहता था"।

इस दिव्य ग्रन्थ में श्री महाराज जी के बारे में इन्होने यह लिखाया हैः-

श्री भद्रसेन जी

राम मंगल दास तेरा नाम कहते संत जन ।
श्री गुरु जी के चरण सेवा में रहता था मगन ।।
दुनियां की मौज उड़ा चुका करता है अब प्रभु का भजन ।
किरपा हुई सरकार की अब छूटिगा आवागमन ।।

श्री सीता जी

गुरु दयाल तुम पर भये, दीन शब्द का रंग ।
आशिरवाद हमार यह, रहो सदा हरि संग ।।

श्री कलियुग महाराज जी

धन्य धन्य तुम धन्य हो धन्य धन्य तुम धन्य।
सब देवन के दरस भे तुम पर हम परसन्न।।
तुम हमार गुरु भाय हो हम तुमार गुरु भाय।
ताते विनती करत हौं बार बार सिर नाय।।
गुरु सेवा का फल यही आँखिन देखो भ्रात।
आवागमन न होय अब छूटा जग से नात।।

चहें तहाँ अब तुम रहौ राम कृष्ण हैं संग।
अब तुम्हारि रक्षा करैं शिव समेत बजरंग।।

श्री कलियुग महाराज जी को गुरुदीक्षा स्वामी रामानन्द जी ने दी थी और श्री महाराज जी स्वयं स्वामी रामानन्द जी की परम्परा के हैं।

श्री लक्ष्मी जी

बसो प्रभू के पास, हमको सब मालुम पता।

श्री पार्वती जी

सुनो पुत्र दुख भाग, अब जग में आओ नहीं।

श्री कबीर जी

सुर मुनि सब परसन्न हैं सुनिये तुमसे तात ।
ताते हमहूँ कहत हैं, तन मन से सब बात ।।

श्री वशिष्ठ जी

सब तुम पर नित खुश रहें गुरु सेवा तुम कीन ।
राम कृष्ण का खेल यह तुमरे संग जो कीन ।।

यह ग्रन्थ श्री महाराज जी के लिखे चार दिव्य ग्रन्थों के प्रथम ग्रन्थ का पहला भाग है। दूसरे भाग में श्री महाराज जी ने अपने पद में लिखा है।

गोलोक का कछु चरित दिल में था मेरे लिखता अभी।
श्री कृष्ण जी ने कह दिया अब कछु नहीं लिखिये कभी।।
अंदर से मेरे नाम की धुनि हो रही बसु याम है।
सुनते रहो इस शब्द को जो सत हमारा नाम है।।
और थोड़े दिन रहो अबहीं यहां कछु काम है।
आवागमन नहिं होय कबहूँ बसौ मेरे धाम है।।

यह पद श्री महाराज जी ने 1945 ईस्वी के लगभग लिखा था। इसमें श्री कृष्ण भगवान ने श्री महाराज जी को आशीर्वाद दिया था कि वे भगवान के

साथ गोलोक धाम में ही रहेंगे। इसके उपरान्त एक विचित्र घटना हुई। श्री महाराज जी ने भक्तों की कथाओं में लिखा है, जो छप चुकीं हैं:-

"श्री राम सिंह, गंगवल स्टेट, जिला बहराइच के राजा थे। यह बहुत बीमार पड़े, मारकेश (ग्रहों के अनुसार मृत्यु योग) लग गया। घर का काम बहुत बाकी था। इनके संबंधी और घर के लोग हमारे पास आये, बहुत रोये। हमें दया आ गई तो हमने अपना सिर मान दिया तो अच्छे हो गये। मारकेश टल गया।

श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, कचहरी रोड, लखनऊ, के रानी इटौंजा के वकील हैं। इनका भी मारकेश आ गया। रानी बहुत दुखी हुईं, सारे मुकदमे झंझट के पड़े थे। राजा साहब थे नहीं। सब महाबीर प्रसाद को सुपुर्द कर दिये थे। रानी ने अपनी करुण कहानी हमसे कही। हमें दया आ गई तो हम अपना सर तो मान ही चुके थे पहले राम सिंह को, धड़ महाबीर प्रसाद को मान दिया।

अब जब से भगवती ने रोक दिया है, सर, धड़ राम सिंह, महाबीर प्रसाद को माना था, तब से, कहा, दान जप करा दिया करो, यथा शक्ति धर्म जो तन मन से करेगा उसका भला होगा और जिसका भाव तुम में होगा उसका काम भगवान पूरा करेंगे। तुमको यही करने का अब अधिकार दिया गया है। शरीर हमारा हो गया।"

राजा राम सिंह, गंगवल, का 9-11-1973 को शरीर छूटा। श्री महाराज जी ने 21-11-1973 को एक अप्रकाशित भक्त कथा में लिखा है "भगौती ने मुझे बताया कि राम सिंह जब पहले बीमार पड़े थे तभी से मारकेश शुरू हो गया था। तुमने उनके लिये अपना सिर और महावीर प्रसाद के लिये अपना धड़ मान दिया। हमें इतने दिन आयु बढ़ा देने की आज्ञा हुई और मैने अन्त में उन्हें बैकुण्ठ पहुँचा दिया।"

श्री महाराज जी की पुनः भगवती जी से (रामसिंह से संबंधित) वार्ता 22-11-73 को हुई जो उन्होंने अपनी अप्रकाशित कथाओं में लिखी है:-

भगौती ने कहा "हमारे ऐसा कोई भक्त नहीं है जो अपना सर व धड़ अपने भक्त के लिए हमैं माना हो। हम तुमको भी अपने पास राखैंगी। कृष्ण भगवान ने तुम से कहा था, "कुछ दिन और रहौ थोड़ा काम तुम से कराना है। फिर हमारे पास आवोगे। अब तुम सर व धड़ हमें दे चुके तो भगवान से हम तुम को माँग लेंगी। भगवान हमारी बात न टालेंगे। वै दीन दयाल करुणासागर हैं।" और यह कहा "जब अपने पास रखौंगी तो ऐसी शक्ति तुमको दे दूँगी कि सब देवी देवताओं के लोक देख आवोगे, सब से मिल आवोगे।"

भगवती ने आगे कहा कि जिसकी सुरति तुम में लग जायगी वह तुम्हारे पास आ जायगा। वह तार ऐसा है कि खींचि लेता है छूटता नहीं। जब सुरति लगाने वाला आ जाता है तभी छूटता है। इसी तरह सुरति लगाने से देवी देवता सब आ जाते हैं। इस सुरति के तार को बहुत कम भक्त जानते हैं। इसका प्रचार जानकी जी ने किया है। प्रथम शंकर जी को बताया, हनुमान जी को बताया। भरत जी, लखनलाल, शत्रुहन को बताया, माण्डवी, उर्मिला, श्रुतिकीर्ति को बताया। इसका बड़ा विस्तार है। सब काम सुरति से होते हैं। थोड़ा लिखाया है।" हमने कहा "जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही हमैं मंजूर है।"

भगौती ने फिर कहा "जिसका आप में सच्चा भाव और विश्वास होगा उसका काम ठीक होगा।"

17 दिसम्बर 1984 की रात को श्री काली जी महाराज जी के सामने विशाल रूप में प्रकट हुईं। वे अपने हज़ार हाथों में विभिन्न प्रकार के अस्त्र धारण किये हुईं थीं। उन्होने श्री महाराज जी से कहा "प्रिय पुत्र तुम्हारा इस संसार में कार्य पूरा हुआ। हम तुम्हें लेने आईं हैं। अब तुम चलो।" अगले ही दिन 18-12-1984 से श्री महाराज जी ने पूरी तरह से अन्न जल लेना छोड़ दिया। अन्ततः तेरह दिन के पूर्ण उपवास के बाद 31-12-1984 की रात को तीन बजे उन्होंने महासमाधि ले ली।

श्री गुरुदेव के महाप्रयाण के कई दिनों बाद तक भी भक्तों के मन में

अनिश्चितता थी कि क्या उन्होंने वास्तव में शरीर छोड़ दिया है। क्योंकि उस समय श्री महाराज जी के शरीर में हृदय गति नहीं थी फिर भी आँखें खुलती बन्द होती थीं। ऐसा न कभी देखा गया था न सुना गया था। तो मैने परमपूज्य संत श्री देवरहा बाबा जी से ये सब बातें बताईं और पूछा। तब उन्होने कहा "बच्चा, यह सब सिद्ध सन्तों की लीला है। उन्होने शरीर छोड़ दिया है। वे तो भगवत् के स्वरूप थे। उनके बारे में जो कहा जाये वो थोड़ा है।"

इसके कुछ दिनों बाद पूज्य बुआजी (श्री महाराज जी की बहिन जी) जो स्वयं अत्यन्त उच्च सिद्ध अवस्था में थीं, उन्होने बताया कि श्री महाराज जी ने उनसे प्रकट होकर कहा था कि तुम हमारी दिव्य अन्तिम यात्रा देखोगी। बुआ जी ने बताया कि एक अलौकिक दिव्य विमान में श्री सीता जी, श्री राधा जी, श्री लक्ष्मी जी व श्री पार्वती जी बैठ कर आईं और श्री महाराज जी को अपने साथ ले गईं।

श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थ

मैं निपट मूर्ख अज्ञानी श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थों के बारे में क्या लिख सकता हूँ! श्री भगवान की असीम कृपा व इच्छा से तथा पूज्य श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी के आशीर्वाद से ही इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है।

गुरुदेव ने इन ग्रन्थों को 1933 ईस्वी से आश्रम में पूज्यनीय रूप से सुरक्षित कर रखा था। गुरुदेव अक्सर इन ग्रन्थों का भक्तों से पाठ करवाते। कुछ भक्तों को इन ग्रन्थों से कुछ पद उतार कर लिख लेने की आज्ञा देते। इन ग्रन्यों के कुछ अंश श्री महाराज जी की अनुमति से छपवाये गये पर पूरे ग्रन्थ अप्रकाशित ही रहे।

मेरे हृदय में बहुत इच्छा थी कि गुरुदेव की इस अमूल्य निधि का पूर्ण रूप से प्रकाशन किसी प्रकार से हो सके। श्री महाराज जी के शरीर छोड़ने के आठ वर्ष बाद 1992 में मैंने पूज्य योगी सन्त श्री स्वामी राम जी से प्रार्थना की कि इन ग्रन्थों को छपवाने की इच्छा है। उस समय मैं दो वर्षों के लिये कनाडा

जा रहा था। उन्होंने कहा "जब भारत लौट आओ तब करना।" जब भारत लौट आया तब पूछा, तो कहा "सब काम धीरे धीरे करो।"

15 दिसम्बर 1995 को आदरणीय श्री राम सेवक जी जिन्होंने श्री महाराज जी की अनन्य सेवा की है तथा अब सारे गोकुल भवन आश्रम का श्री महाराज जी के उपदेशानुसार संचालन कर रहे हैं, उन्होंने अत्यंत कृपा कर मुझे इन चारों ग्रन्थों तथा कथाओं को फोटोकापी करने तथा छपवाने की अनुमति प्रदान की। मैं उनको हृदय से नमन करता हूँ।

श्री वशिष्ठ जी ने स्वयं इस ग्रन्थ में पद 253 में लिखाया है कि जगत जननी श्री जानकी जी व श्री राधा महारानी जी की कृपा व आशीर्वाद से इस दिव्य ग्रन्थ की रचना हुई है। गुरु वशिष्ठ जी ने ही प्रकट होकर पद 25 में इस दिव्य ग्रन्थ का नामकरण "श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" किया है। सब से विचित्र बात यह है कि श्री राधा जी ने प्रथम ग्रन्थ के द्वितीय अप्रकाशित भाग में कहा है कि जब श्री कृष्णदास पयहारी जी प्रकट होकर अपने पद लिखवायेंगे तब इन ग्रन्थों का समापन होगाः-

ऐहैं कृष्णदास पयहारी। कहिहैं हरि चरित्र सुखकारी ।
तब यह चरित समापति होई। भरिहैं प्रभु यश तत्वनि चोई ।।

और वास्तव में चतुर्थ ग्रन्थ जिसकी समापन तिथि 12-6-58 ईस्वी पड़ी है उसमें अन्तिम संत पयहारी जी ही हैं जिन्होंने दिव्य रामायण लिखवाई है। जब श्री महाराज जी कथाएँ लिख रहे थे 82 की अवस्था में तब एक सन्त प्रगट हुये और उनसे सत्संग करने लगे। श्री महाराज जी ने कहा "आप हमें जानते होते तो जब हमारा शरीर ठीक था तब आते तो हमको बताते तो हम सब लिख लेते, कितने दिन लगते", तो कहा "मैं आपको जानता था लेकिन आ नहीं सके, सब काम भगवान की आज्ञा से होते हैं।"

इससे सिद्ध होता है कि इन सारे ग्रन्थों की रचना कैसे भगवान की इच्छा से इतने व्यवस्थित रूप से हुई है। एक ही विषय पर बोलने वाले संत एक ही साथ एक क्रम में प्रगट हो कर लिखवाते थे। फिर वे यह भी कहते थे

कि अमुक विषय पर आपको वे संत लिखवा चुके है। जैसे, श्री ईसा मसीह जी ने शंकर जी, शुकदेव जी व गुरु नानक जी का उल्लेख किया है। सच है - भगवान की लीला अपरम्पार है।

एक दिन मैं प्रथम ग्रन्थ को अपने पिताजी को पढ़ कर सुना रहा था कि अचानक श्री वशिष्ठ जी के पद पर दृष्टि पड़ी। उसमें वशिष्ठ जी ने संवत् 1990 अर्थात् 1933 ईस्वी में श्री महाराज जी को प्रगट होकर आज्ञा दी थीः-

उनइससै निन्नानवे जब संवत् लगि जाय।
तब यह चरित छपाइये साँची दीन बताय।।

उसी पृष्ठ के नीचे ग्रन्थ समापन तिथि 11 जुलाई 1945 पड़ी हुई थी। मन में प्रश्न उठा कि वशिष्ठ जी ने क्या विक्रमी संवत् 1999 में छपवाने की आज्ञा दी थी या ईस्वी संवत् 1999 में छपवाने का आदेश दिया था। कानपुर के योगी श्री महेश चन्द्र द्विवेदी जी ने इसको स्पष्ट किया कि वशिष्ठ जी की आज्ञा ईस्वी संवत् 1999 मे छपवाने की ही है। क्योंकि विक्रमी संवत् 1999 के अनुसार ईस्वी संवत् 1942 होता है। जब ग्रन्थ की समाप्ति 11 जुलाई 1945 में ही हुई तो ग्रन्थ 1942 में कैसे छप सकता था। इसके अतिरिक्त यदि 1942 में छपवाने की आज्ञा होती तो श्री महाराज जी अवश्य ही वशिष्ठ जी की आज्ञा पालन करते हुए इस ग्रन्थ को उस वर्ष छपवा देते। पर ऐसा नहीं हुआ। श्री महेश जी का हृदय से अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे सबसे पहले 1976 में श्री महाराज जी के बारे में बताया, अनेक उपकार किये तथा सदा मार्गदर्शन किया।

आदरणीय श्री जगतनारायण जी का मैं ऋणी हूँ जिनका मुझपर अत्यन्त स्नेह है तथा जिन्होने श्री महाराज जी के ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये सदा ही उत्साह वर्धन किया।

मैं अपना हार्दिक आभार अपने अभिन्न मित्र श्री सदागोपन जी के लिये व्यक्त करता हूँ जो यद्यपि दक्षिण भारतीय हैं पर उन्होंने अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक और तन मन से इन ग्रन्थों को हिन्दी में कम्प्यूटर में टाइप किया तथा उनकी

रूपरेखा तैयार की। श्री सदागोपन जी के परिवार से इस कार्य के लिये जो सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिये मैं उनको सादर धन्यवाद देता हूँ।

इन ग्रन्थों की फोटोकापी एक मुस्लिम भक्त के द्वारा की गई जिनको मैं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

गुरुदेव द्वारा समस्त दिव्य पद चार ग्रन्थों में संकलित किये गये हैं। "श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" प्रथम ग्रन्थ के दो भागों का प्रथम भाग है। बाकी ग्रन्थ तथा गुरुदेव द्वारा लिखित भक्तों की कथाएँ बाद में प्रभु कृपा से छपाई जायेंगी। ये सारे ग्रन्थ अवधी भाषा में हैं। इन ग्रन्थों की टीका का कार्य भी हो रहा है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन भगवान की असीम कृपा, सब देवी देवताओं, ऋषि मुनियों, पैगम्बरों, सिद्ध सन्तों व महापुरुषों के आशीर्वाद से हो रहा है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री महाराज जी के समस्त भक्तों की भगवान से प्रार्थना के फलस्वरूप ही हो रहा है।

यह सम्पूर्ण कार्य गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी महाराज ने ही किया है तथा करवाया है - यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांकः 25 दिसम्बर 1999

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान

गोकुल भवन
वशिष्ठ कुण्ड
अयोध्या 224 123 (उ.प्र.)
फोनः- 05278 - 32484

तथा

डा० राजीव कुमार वर्मा
4074, टाईप 4 क्वार्टर्स
आई.आई.टी. कैम्पस
कानपुर 208 016 (उ.प्र.)
फोनः 0512-598494, 591428
फैक्सः 0512-591428
email: rkvarma@iitk.ac.in
rkvarma@engga.uwo.ca

विषय सूची

		पृष्ठ सं०
	गणेश वन्दना	i
	शारदा वन्दना	i
	गुरु महिमा	ii
	दो शब्द	iii
	द्वितीय भाग की प्रस्तावना	v
	प्रथम भाग की प्रस्तावना	ix
1.	श्री १०८ परमहंस बेनी माधव दास जी	1
2.	श्री १०८ परमहंस राम मंगल दास जी महाराज	1
	महात्मा गाँधी जी संबंधी पद	7
3.	श्रीमती फातिमा जी	8
4.	श्री हसन जी	9
5.	श्री हुसेन जी	,,
6.	श्री मन्सूर जी	,,
7.	श्री सैयद सालार जी	,,
8.	श्री शरमद जी	,,
9.	श्री शम्श तवरेज़ जी	,,
10.	श्री मियां चिश्ती जी	,,
11.	श्री करोमियां जी	10
12.	श्री मदार शाह जी	,,
13.	श्री मख्दुम शाह जी	,,
14.	श्री धर्म दास जी	,,
15.	श्री ख्वाजा जी	11
16.	श्री चौपान शहीद जी	,,
17.	श्री साईं जी तकिया	,,
18.	श्री रसखान जी	,,
19.	श्री अली शाह जी	12
20.	श्री नवी जी	,,
21.	श्री सोहराव जी	,,
22.	श्री गूदर दास जी	13

		पृष्ठ सं०
23.	श्री मियां खुसरू जी	14
24.	श्री भीखा जी	15
25.	श्री हरखू जी	24
26.	श्री पाताञ्जलि जी	30
27.	श्री श्यामा जी	,,
28.	गोस्वामी तुलसीदास जी	32
29.	श्री राधा जी	33
30.	श्री भृगु जी	,,
31.	श्री हरिभजनदास जी	34
32.	श्री भगवन्त दास जी	39
33.	श्री अद्वैताचार्य्य जी	,,
34.	पंडित श्री बास जी	44
35.	श्री मुकुन्द जी	46
36.	श्री गरीबदास जी	,,
37.	श्री महात्मा खरगू जी	47
38.	श्री गदाधर जी	,,
39.	श्री सुनयना जी	48
40.	श्री सुमन्त जी	,,
41.	श्री मँगरूजी, कोरी	,,
42.	श्री भरथ जी	,,
43.	श्री लक्षमण जी	49
44.	श्री शत्रुहन जी	,,
45.	श्री कैकेयी जी	,,
46.	श्री सुमित्रा जी	,,
47.	श्री बलदेव जी	49
48.	श्री शतानन्द जी	,,
49.	श्री संकर्षण जी	,,
50.	श्री प्रद्युम्न जी	49
51.	श्री अनिरुद्ध जी	50
52.	श्री शतरूपा जी	,,

53. श्री निर्भय दास जी, पासी 50
54. श्री श्याम दास ब्रह्मचारी जी ,,
55. श्री स्वामी राम दास जी 52
56. श्री बिष्णु दास जी ब्रह्मचारी 53
57. श्री उमा दास जी 54
58. श्री प्राग दास जी 55
59. श्री ज्ञान दास जी ,,
60. श्री भूधर दास जी 56
61. श्री सकटू दास जी 57
62. श्री गिरिवर दास जी ,,
63. श्री सरयूदास जी 58
64. श्री गंगा दास जी ,,
65. श्री दूवर दास जी ,,
66. श्री जंगली दास जी ,,
67. श्री निर्धन दास जी ,,
68. श्री केशवा नन्द जी ,,
69. श्री झगरूदास जी ,,
70. श्री गिरधारी दास जी 59
71. श्री सुदर्शन दास जी ,,
72. श्री मोहन दास जी ,,
73. श्री नारायण दास जी 60
74. श्री स्वामी नारायण जी 60
75. श्री पद्मावती जी ,,
76. श्री दमयन्ती जी 61
77. श्री घण्टा कर्ण जी 61
78. श्री हकीम अजमल खाँ जी 64
79. श्री तानसेन जी ,,
80. श्री बैजू बावरे जी ,,
81. श्री सहदेव जी 64
82. श्री नकुल जी 65
83. श्री भीम जी 66
84. श्री सुनीति जी ,,
85. श्री पूरनमल जी 66
86. श्री जय जी 67
87. श्री बिजय जी ,,
88. श्री प्रियवर्त जी ,,
89. श्री मुर्वी जी ,,
90. श्री कामदेव जी 68
91. श्री रति जी ,,
92. श्री मन्दालसा जी ,,
93. श्री रोहिणी जी 69
94. श्री बामन भगवान जी ,,
95. श्री बाराह भगवान जी 70
96. श्री नृसिंह भगवान जी ,,
97. श्री कच्छप भगवान जी ,,
98. श्री मच्छ भगवान जी ,,
99. श्री वृत्ता सुर ,,
100. श्री कीरति जी 71
101. श्री रती जी 71
102. श्री दधिबल जी ,,
103. श्री गिरधारी दास जी ,,
104. श्री शौनक जी 72
105. श्री सूत जी ,,
106. श्री अञ्जनी जी 73
107. श्री सेन भक्त जी 75
108. श्री लुकमान हकीम जी 75
109. श्री हकीम अरस्तू जी 76
110. श्री हुलसी माता जी ,,
111. श्री शची जी 88
माटी खान लीला 90
चन्द्रा बलि छलन लीला 92
गृह उपद्रव लीला ,,
श्री दुलरी लीला 99
112. श्री भोंदू दास जी 107

113. श्री आलम जी	108
114. श्री जंग शहीद जी	,,
115. श्री मर्द शहीद जी	109
116. श्री राजे जी	,,
117. श्री गाजे जी	,,
118. श्री अहमद जी	,,
119. श्री कादिर जी	,,
120. श्री ज्ञानेश्वर जी	,,
121. श्री नृबृत्ति नाथ जी	110
122. श्री सोपान देव जी	,,
123. श्री मुक्ता बाई जी	,,
124. श्री चाङ्ग देव जी	110
125. श्री गालवा नन्द जी	111
126. श्री गोपी चन्द जी	,,
127. श्री शेख जी	112
128. श्री जाकिर अली जी	,,
129. श्री बहादुर दास जी	,,
130. श्री लैनिन जी	,,
131. श्री यमराज जी	113
132. श्री अन्न पूर्णा जी	,,
133. श्री उर्मिला जी	,,
134. श्री माण्डवी जी	,,
135. श्री श्रुति कीर्ति जी	113
136. श्री कंस जी	,,
137. श्री दन्त बक्र जी	,,
138. श्री आल्हा जी	114
139. श्री इन्दल जी	114
140. श्री अश्वत्थामा जी	,,
141. श्री मृत्यु जी	,,
142. श्री काल जी	115
143. श्री रुक्माङ्गद जी	,,
144. श्री शाह जहाँ जी	115
145. श्री पहलवान शाह जी	,,
146. श्री बादल खाँ जी	,,
147. श्री आबिद जी	,,
148. श्री बरकत अली जी	,,
149. श्री अशरफ़ अली जी	116
150. श्री अमजद जी	,,
151. श्री ग़फूर जी	116
152. श्री वाहिद अली जी	,,
153. श्री शाकिर अली जी	,,
154. श्री यारी साहेब जी	,,
155. श्री सादिक अली जी	117
156. श्री बुल्ला साहेब जी	,,
157. श्री शोभादास जी	,,
158. श्री देवहूती जी	,,
159. श्री काशी पुरी जी	119
160. श्री एकादशी जी	120
161. श्री गया जी	,,
162. श्री चित्रकूट जी	,,
163. श्री गोदावरी जी	121
164. श्री ढोढ़े दास जी	,,
165. श्री कढ़िले दास जी	,,
166. श्री मत्त गजेन्द्र जी	121
167. श्री लाड़िली जी	123
168. श्री विशेषा सखी जी	124
169. श्री चन्द्राबलि सखी जी	,,
170. श्री मनसुखा जी	124
171. श्री द्वारिका पुरी जी	,,
172. श्री जगदीश पुरी जी	,,
173. श्री सुदामा पुरी जी	,,
174. श्री राग रागिनी पुत्र सहित	125

175. श्री जनक पुरी जी 125
176. श्री शिव काञ्ची जी 126
177. श्री बिष्णु काञ्ची जी ,,
178. श्री मोलहे दास जी 126
179. श्री गुरु दीन दास जी 127
180. श्री घसीटे दास जी ,,
181. श्री सुलतान शाह जी ,,
182. श्री यम पुरी जी 128
183. श्री जानकी जी 129
184. श्री मलूक दास जी 130
185. श्री संजय जी ,,
186. श्री दशानन जी ,,
187. श्री कुम्भ कर्ण जी ,,
188. श्री हिरण्य कश्यप जी ,,
189. श्री हिरण्याक्ष जी ,,
190. श्री ताडुका जी 131
191. श्री पूतना जी ,,
192. श्री सूर्पणखा जी 132
193. श्री लंकिनी जी 133
194. श्री अदिति जी ,,
195. श्री सुरसा जी ,,
196. श्री भस्मासुर जी 133
197. श्री नज़र अली शाह जी 135
198. श्री दुर्योधन जी ,,
199. श्री कीचक जी 135
200. श्री धन्वन्तरि जी 136
201. श्री शरभङ्ग जी 137
202. श्री गव जी ,,
203. श्री गवाक्ष जी ,,
204. श्री द्विविद जी ,,
205. श्री मयन्द जी 137
206. श्री बालि जी ,,
207. श्री सुबाहु जी 138
208. श्री नारान्तक जी ,,
209. श्री कालनेमि जी ,,
210. श्री मारीच जी ,,
211. श्री कवन्ध जी ,,
212. श्री तपा दास जी 139
213. श्री लवणा सुर जी ,,
214. श्री त्रिजटा जी ,,
215. श्री खर जी ,,
216. श्री दूषण जी ,,
217. श्री त्रिशिरा जी 140
218. श्री सुलोचना जी ,,
219. श्री मेघनाद जी ,,
220. श्री षड़ानन जी के बाहन ,,
221. श्री गजानन जी के बाहन ,,
222. श्री सिकन्दर शाह जी 141
223. श्री दारा जी ,,
224. श्री अकबर शाह जी ,,
225. श्री आसफुद्दौला जी ,,
226. श्री मलिका विक्टोरिया जी ,,
227. पार्वती माता के बाहन सिंह 142
228. ब्रह्मा जी के बाहन हंस 142
बार्तिक 143
229. श्री माया देवी जी 145
230. श्री निद्रा देवी जी 146
231. श्री भोला नन्द जी 146
232. श्री ज्वाला नन्द जी 147
233. श्री निजामीदास जी ,,
234. श्री उद्दालक ऋषि जी 159
235. श्री विद्यारण्य स्वामी जी 162
236. श्री श्याम तीर्थ जी ,,
237. श्री सुतीक्षण जी 163

238.	श्री सतयुग जी	163
239.	श्री त्रेतायुग जी	,,
240.	श्री द्वापर युग जी	164
241.	श्री रामायण जी (मानस जी)	,,
242.	श्री गीता जी	165
243.	श्री जालन्धर जी	166
244.	श्री तारकासुर जी	,,
245.	श्री जरासन्धु जी	,,
246.	श्री महा रावणं जी	167
247.	श्री महिरावण जी	,,
248.	श्री जफ़र खां जी	,,
249.	श्री शंखा सुर जी	168
250.	श्री महिषासुर जी	,,
251.	श्री निहाल दास जी	,,
252.	श्री बिभाण्डक ऋषि जी	169
253.	श्री सुभद्रा जी	170
254.	श्री कैलाश जी	171
255.	एक ही बाणी चारों श्री बैकुण्ठ जी की	171
256.	श्री गोलोक जी	,,
257.	श्री साकेत जी	,,
258.	श्री इन्द्रपुरी जी	172
259.	श्री बिष्णुप्रिया जी	,,
260.	ख्याली राम जी	173
261.	श्री मनसा राम जी	174
262.	श्री भोला मस्तान शाह जी	175
263.	श्री अमीर हसन खां	176
264.	श्री घिसावन दास जी	,,
265.	श्री जानकी दास जी	177
266.	श्री दुलारे दास जी	183
267.	श्री भगवान दास जी	184
268.	श्री बिजयी दास जी	192
269.	श्री ताम्र ध्वज जी	193
270.	श्री देवी दास जी	194
271.	श्री चन्द्र रानी जी	,,
272.	श्री गया दास जी	195
273.	श्री ध्यान दास जी	,,
274.	श्री कमल दास जी	196
275.	श्री माता ईछरा जी	,,
276.	श्री वाजिद अली शाह जी	,,
277.	श्री बलदी दास जी	,,
277 (अ)	श्री भोला दास जी	197
278.	श्री मगण जी	198
279.	श्री नगण जी	,,
280.	श्री भगण जी	,,
281.	श्री यगण जी	,,
282.	श्री जगण जी	,,
283.	श्री रगण जी	,,
284.	श्री सगण जी	198
285.	श्री तगण जी	,,
286.	श्री सन्त दास जी	,,
287.	श्री गोपाल दास जी	199
288.	श्री लक्ष्मण दास जी	,,
289.	श्री गुरुबख्श सिंह जी	200
290.	श्री जवाहिर सिंह जी	,,
291.	श्री शिव प्रसाद जी	201
292.	श्री राम औतार जी	,,
293.	श्री राम सुख जी	,,
294.	श्री दुर्गा दास जी	202
295.	श्री गणेश दास जी	,,
296.	श्री हरिहर दास जी	203
297.	श्री अवध प्रताप नारायण सिंह	204
298.	श्री नैन शाह जी	205

299. श्री श्रुति निधान जी 205
300. श्री काला देव जी 206
301. श्री लाल देव जी ,,
302. श्री लाल परी जी ,,
303. श्री सब्ज़ परी जी ,,
304. श्री नीलम परी जी 207
305. श्री पोखराज परी जी ,,
306. श्री नान्हू दास जी ,,
307. श्री नोखे दास जी 208
308. श्री नँगा दास जी 209
309. श्री कमला बाई जी ,,
310. श्री बिमला बाई जी 210
311. श्री टीका दास जी 210
312. श्री पहलवान दास जी 211
313. श्री मृत्यु लोक जी 211
314. श्री बजरंग दास जी 212
315. श्री हरि दास जी 213
316. श्री दुर्गा दास जी ,,
317. श्री भैरव दास जी 214
318. श्री मोहन दास जी ,,
319. श्री शिवनाथ जी ,,
320. श्री हरितीर्थ जी ,,
321. श्री केशव भारती 215
322. श्री आत्मा राम जी ,,
323. श्री चितरंजन दास जी ,,
324. श्री शुकरू जी ,,
325. श्री कन्हई दास जी 216
326. श्री शुकई जी ,,
327. श्री जुम्मन जी ,,
328. श्री सत्य नारायण दास जी 217
329. श्री रंगी राम जी 218
330. श्री नज़ीर जी ,,
331. श्री स्वामी शिवपुरी जी 219
332. श्री लाल दास जी ,,
333. श्री जगन्नाथ दास जी ,,
334. श्री मणीराम दास जी 220
335. श्री वैष्णव दास जी ,,
336. श्री मुरारी दास जी ,,
337. श्री प्रह्लाद दास जी ,,
338. श्री पण्डित भगवान दास जी 220
339. श्री पं. उमापति जी 221
340. श्री बब्बन पति जी ,,
341. श्री तुलसी दास जी ,,
342. श्री राम फल दास जी ,,
343. श्री द्वारिका प्रसाद जी ,,
344. श्री रघुनाथ दास जी 222
345. श्री राघौ दास जी ,,
346. श्री राम दास जी भंगेड़ी ,,
347. श्री मधुर अली जी ,,
348. श्री राम सखे जी 223
349. श्री सीता शरण जी ,,
350. श्री लक्ष्मण शरण जी ,,
351. श्री भगवान दास सखी जी ,,
352. श्री द्वारिका दास जी ,,
353. श्री घनश्याम शरण जी 224
354. श्री फकीरे राम जी ,,
355. श्री संगति बख्श जी ,,
356. श्री सहज राम जी ,,
357. श्री काठ जिह्वा स्वामी ,,
358. श्री बाबा जै राम दास जी ,,
359. श्री धीरम दास जी 225
360. श्री भीषम दास जी ,,
361. श्री निहाल दास जी ,,
362. श्री सुख देव दास जी 226

363. श्री बृजलाल दास जी	226
364. श्री बख्तावर दास जी	,,
365. श्री निहाल दास जी	,,
366. श्री गोपाल दास जी	,,
367. श्री मनोहर दास जी	227
368. श्री देवादास जी	,,
369. श्री शम्भू दास जी	,,
370. श्री यमुना दास जी	228
371. श्री भरथ दास जी	,,
372. श्री भगवत दास जी	,,
373. श्री अनन्त दास जी	,,
374. श्री शंकर दास जी	,,
375. श्री हनुमान दास जी	,,
376. श्री लक्ष्मी दास जी	229
377. श्री गिरिजा दास जी	,,
378. श्री बिन्ध्या दास जी	,,
379. श्री गोबर्द्धन दास जी	,,
380. श्री रामा जी	,,
381. श्री राम अधार जी	,,
382. श्री सरवन जी	230
383. श्री गोगे दास जी	,,
384. श्री चिरकुट दास जी	,,
385. श्री बुधई दास जी	231
386. श्री माथुर जी	,,
387. श्री नाथू दास जी	,,
388. श्री भगवान सिंह जी	232
389. श्री जावालि जी	,,
390. श्री जयन्त जी	233
391. श्री शची जी (इन्द्राणी)	,,
392. श्री मंगू दास जी	233
393. श्री गणेश शंकर विद्यारथी	,,
394. श्री यतीन्द्रनाथ जी	234
395. श्री भगत सिंह जी	234
396. श्री दरिद्रा जी	,,
397. श्री कुदरत अली जी	235
398. श्री पण्डित मोती लाल नेहरू	,,
399. श्री लाला लाजपति राय जी	,,
400. श्री राजगुरु जी	236
401. श्री सुखदेव जी (पंजाब)	,,
402. श्री राम प्रसाद बिस्मिल	,,
403. श्री बिनता जी	,,
404. श्री कद्रूजी	,,
405. श्री राना बेनी माधौ सिंह	,,
406. श्री गुलाब सिंह	237
407. श्री दरिया साहब जी	,,
408. श्री बली राम जी	,,
409. श्री सहजो बाई जी	,,
410. श्री चरणदास जी	,,
411. श्री दर्शन सिंह जी	,,
412. श्री राम अधीन सिंह जी	238
413. श्री मान सिंह जी	238
414. श्री फिक्कू जी	,,
415. श्री खैरू शाह जी	,,
416. श्री चँटू शाह जी	,,
417. श्री अजबदास जी	239
418. श्री भगेलू दास जी	,,
419. श्री झाँझू दास जी	239
420. श्री झिनकू दास जी	240
421. श्री आनन्द गिरि जी	,,
422. श्री दाया बाई जी	,,
423. श्री सटपट दास जी	241
424. श्री एकनाथ जी	,,
425. श्री पवन नाथ जी	,,
426. श्री महेन्द्र नाथ जी	,,

427.	श्री लक्कड़ नाथ जी	241
428.	श्री फक्कड़ नाथ जी	,,
429.	श्री अधार सिंह जी	,,
430.	श्री मंगल सिंह जी	242
431.	श्री रंका जी	,,
432.	श्री वंका जी	,,
433.	श्री तुका राम जी	,,
434.	श्री लव जी	,,
435.	श्री कुश जी	,,
436.	श्री नासिक जी	,,
437.	श्री सतगुरु दास जी	243
438.	श्री राम सुन्दर दास जी	244
439.	श्री राम मनोहर दास जी	,,
440.	श्री श्याम मनोहर दास जी	245
441.	श्री लोना चमारी जी	,,
442.	श्री शिव दीन सिंह जी	246
443.	श्री बज्रड्.ग बख्स जी	249
444.	श्री गजोधर बख्स जी	249
445.	श्री ठाकुर दास जी	,,
446.	श्री इस्माइल जी	,,
447.	श्री सफी बक्स जी	250
448.	श्री चाँद खाँ जी	,,
449.	श्री मुस्तफ़ा हुसेन जी	,,
450.	श्री जग देव दास जी	,,
451.	श्री हरदेव दास जी	251
452.	श्री मुन्ना दास जी	252
453.	श्री जग रानी माई जी	,,
454.	श्री झब्बू दास जी	,,
455.	श्री मौलाना जुन्नैद	253
456.	श्री अहमक दास जी	,,
457.	श्री ढपोंगा दास जी	254
458.	श्री ढोंगा दास जी	254
459.	श्री पोंगा दास जी	255
460.	श्री चोंगा दास जी	,,
461.	श्री घोंघा दास जी	256
462.	श्री सोंटा दास जी	,,
463.	श्री कर्कट दास जी	,,
464.	श्री फजीहत दास जी	257
465.	श्री सुन्दरी जी	258
466.	श्री जालिपा जी	,,
467.	श्री लोटनी देवी जी	,,
468.	श्री चुटकी देवी जी	,,
469.	श्री चौबुर्जी जी	,,
470.	श्री गुरगाईं जी	,,
471.	श्री ज्ञानेश्वर जी	259
472.	श्री निशंकदास जी	,,
473.	श्री बीर भद्र जी	259
474.	श्री दीन दरवेश जी	,,
475.	श्री ताज जी	260
476.	श्री यकरंग जी	,,
477.	श्री खलील जी	,,
478.	श्री सीता रामदास जी	,,
479.	श्री खुरशैद जी	,,
480.	श्री बादल जी	,,
481.	श्री फय्याज़ जी	261
482.	श्री सादुल्ला जी	,,
483.	श्री रेवती जी	,,
484.	श्री पद्मावती जी	262
485.	श्री शहादत खाँ जी	,,
486.	श्री हिदायत खां जी	,,
487.	श्री काले खाँ जी	263
488.	श्री इमदाद खाँ जी	,,
489.	श्री महमूद खाँ जी	,,
490.	श्री तकीवेग जी	,,

491.	श्री दाता शाह जी	264		श्री कृष्ण भगवान के पद	267
492.	श्री नूरे शाह जी	265	*499.*	श्री गंगा दास जी	267
493.	श्री यकीन शाह जी	,,	*500.*	श्री दयाल दास जी	268
494.	श्री झल्लर शाह जी	,,	*501.*	शिकारी शाह जी	,,
495.	श्री सलामत शाह जी	,,		*आदि गुरु श्री रामानन्द जी कृत दिव्य ग्रन्थों की महिमा*	
496.	श्री कलूट शाह जी	266		*गुरु महाराज जी की आरती*	
497.	श्री भलूट शाह जी	,,			
498.	श्री दरगाही शाह जी	,,			

॥ गुरु-आरती ॥

ओ३म् जय-जय गुरूदेवा।
जय गुरुदेव दयानिधि, दीनन हितकारी, स्वामी दीनन हितकारी।
जय-जय मोह विनाशन, जय-जय मोह विनाशन, भव बंधन हारी।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरु मूरति धारी, स्वामी गुरु मूरति धारी।
वेद पुरान बखानत, वेद पुरान बखानत, गुरु महिमा भारी।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

जप तप तीरथ संयम, दान विविध दीन्हें, स्वामी दान विविध दीन्हें।
गुरु बिन ज्ञान न होवे, गुरु बिन ज्ञान न होवे, कोटि जतन कीन्हें।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

माया मोह नदी जल, जीव बहे सारे, स्वामी जीव बहे सारे।
नाम जहाज बिठा कर, नाम जहाज बिठा कर, गुरु पल में तारे।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारी, स्वामी चोर बड़े भारी।
ज्ञान खड्ग दे कर में, ज्ञान खड्ग दे कर में, गुरु सब संघारी।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें, स्वामी निज-निज गुण गावें।
सबका सार बताकर, सबका सार बताकर, गुरु मारग लावें।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी, स्वामी सब पातक हारी।
बचन सुनत तम नाशै, बचन सुनत तम नाशै, सब संशय टारी।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

तन मन धन सब अर्पण, गुरु चरनन कीजे, स्वामी गुरु चरनन कीजे
ब्रह्मानंद परमपद, ब्रह्मानंद परमपद, मोक्ष गती लीजे।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

॥ वन्दना ॥

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये।।

खा रहा गोते हूँ मैं भव सिन्धु के मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में।।

मुझ में है जप तप न कुछ साधन नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है।।

पाप बोझे से लदी नैया भँवर में आ रही।
नाथ दौड़ो अब बचाओ जल्द डूबी जा रही।।

आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
जन्म दुख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं।।

सब जगह मैंने भटक कर अब शरण ली आपकी।
पार करना या न करना दोनों मर्जी आपकी।।

गुरु मूरति मुख चन्द्रमा सेवक नयन चकोर।
अष्ट पहर निरखत रहों गुरु मूरति की ओर॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

क्षमा याचना

इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन में पूरा प्रयास किया गया है कि जैसा मूल ग्रन्थ में है वैसा ही प्रकाशित किया जाये। यदि इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो प्रकाशक अपनी इस भूल के लिये हृदय से क्षमाप्रार्थी है।

सीतानाथ समारम्भां, रामानन्दार्य मध्यमाम्
अस्मदाचार्य पर्यन्ताम् वन्दे गुरु परम्पराम्

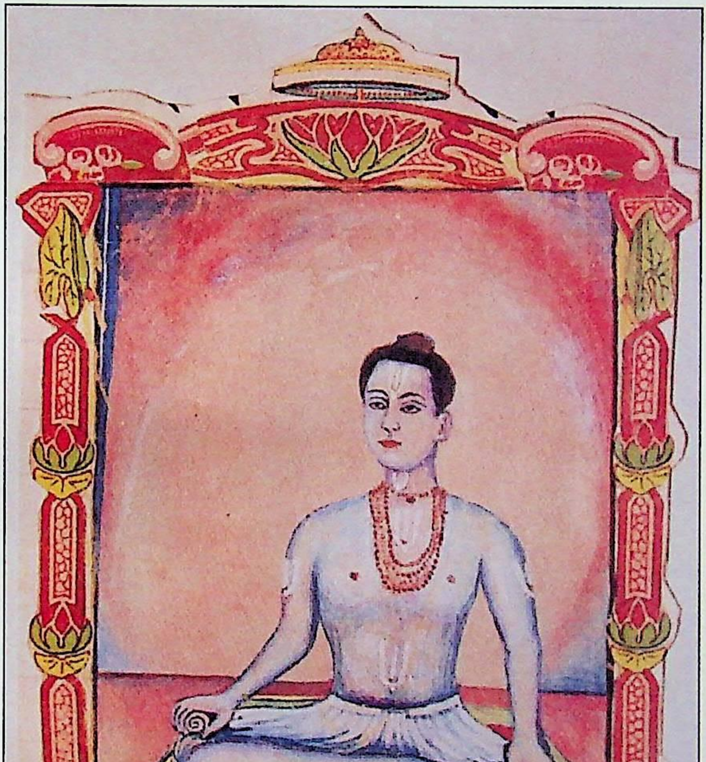

परं वन्दनीय श्री जगत्‌गुरु स्वामी रामानन्दजी महाराज
विष्णु भगवान के अंशावतार ।
परमपूज्य श्री परमहंस राममंगलदास जी की
गुरु परम्परा के आदि गुरु

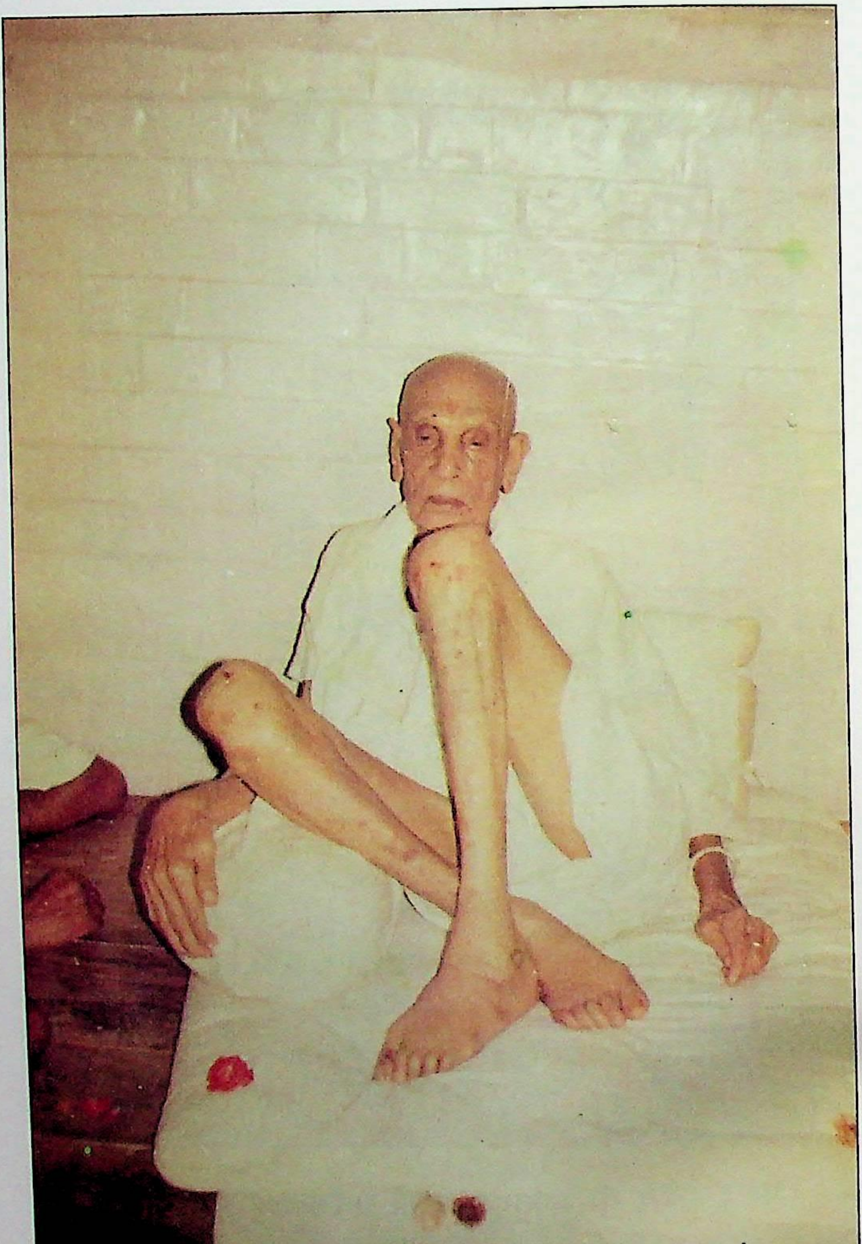

श्री परमहंस राममंगलदास जी
गोकुल भवन आश्रम में ।

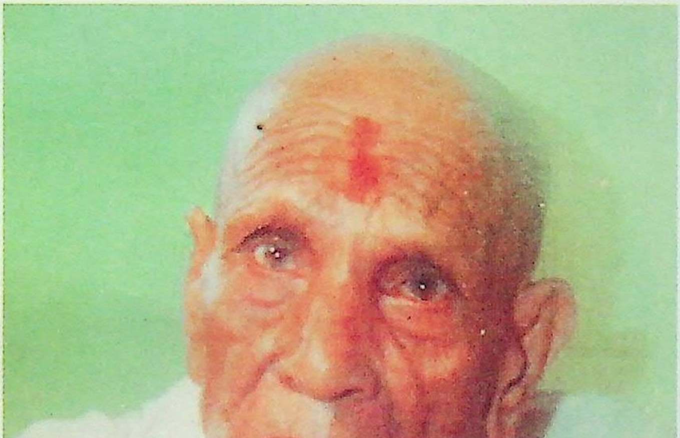

श्री परमहंस राममंगलदास जी।

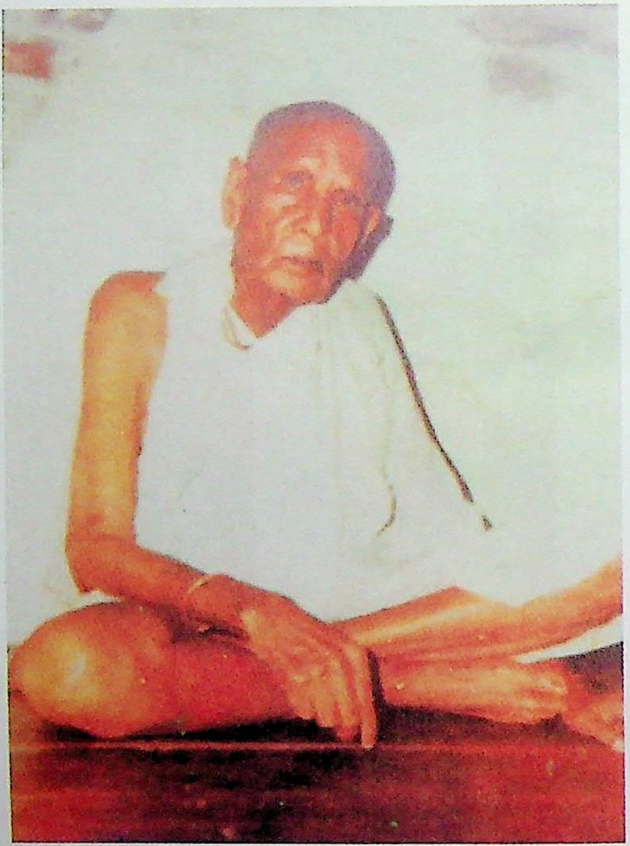

श्री गुरुदेव इसी सादी लकड़ी के तखत पर बैठकर
सारे दिन गोकुल भवन आश्रम में भक्तों को
कल्याण उपदेश देते थे।

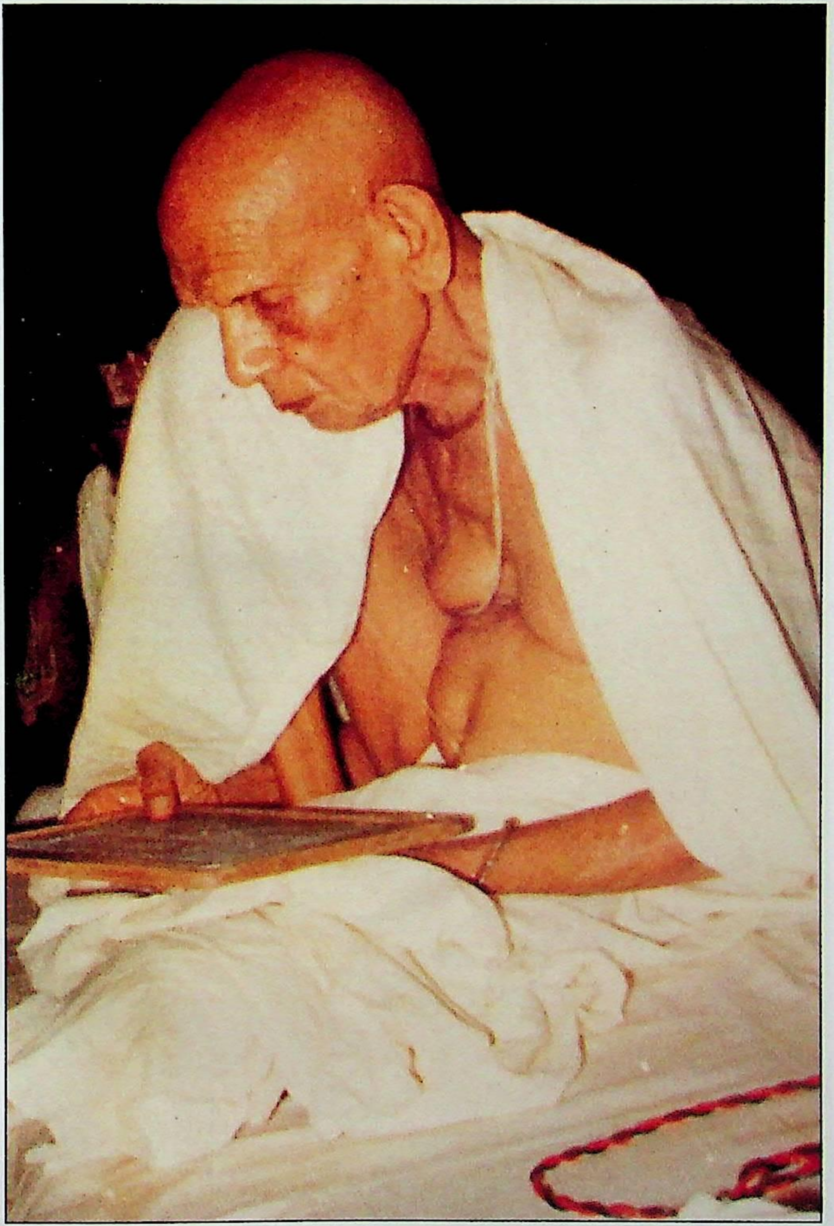

पूज्य गुरुदेव स्लेट को पढ़ते हुये।
(श्री गुरुदेव अन्दर से निरन्तर अनहद नाद सुनते रहते थे ।
इस कारण वे कान से बाहरी बातें नहीं सुन पाते थे ।
भक्तगण अपनी प्रार्थनाएं व प्रश्न स्लेट पर लिखकर देते थे।)

ध्यानस्थित श्री परमहंस राममंगलदास जी
गोकुल भवन आश्रम में ।

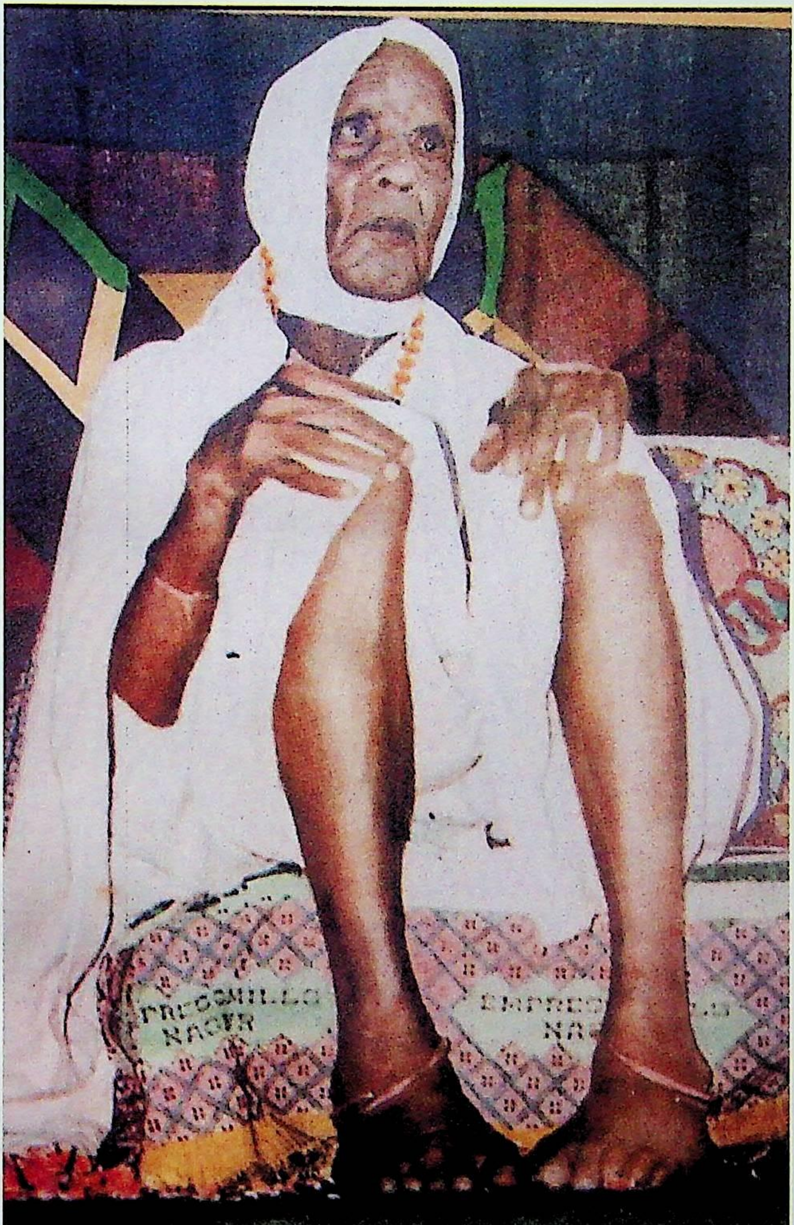

गुरुदेव, एक पूजा कार्यक्रम में ।

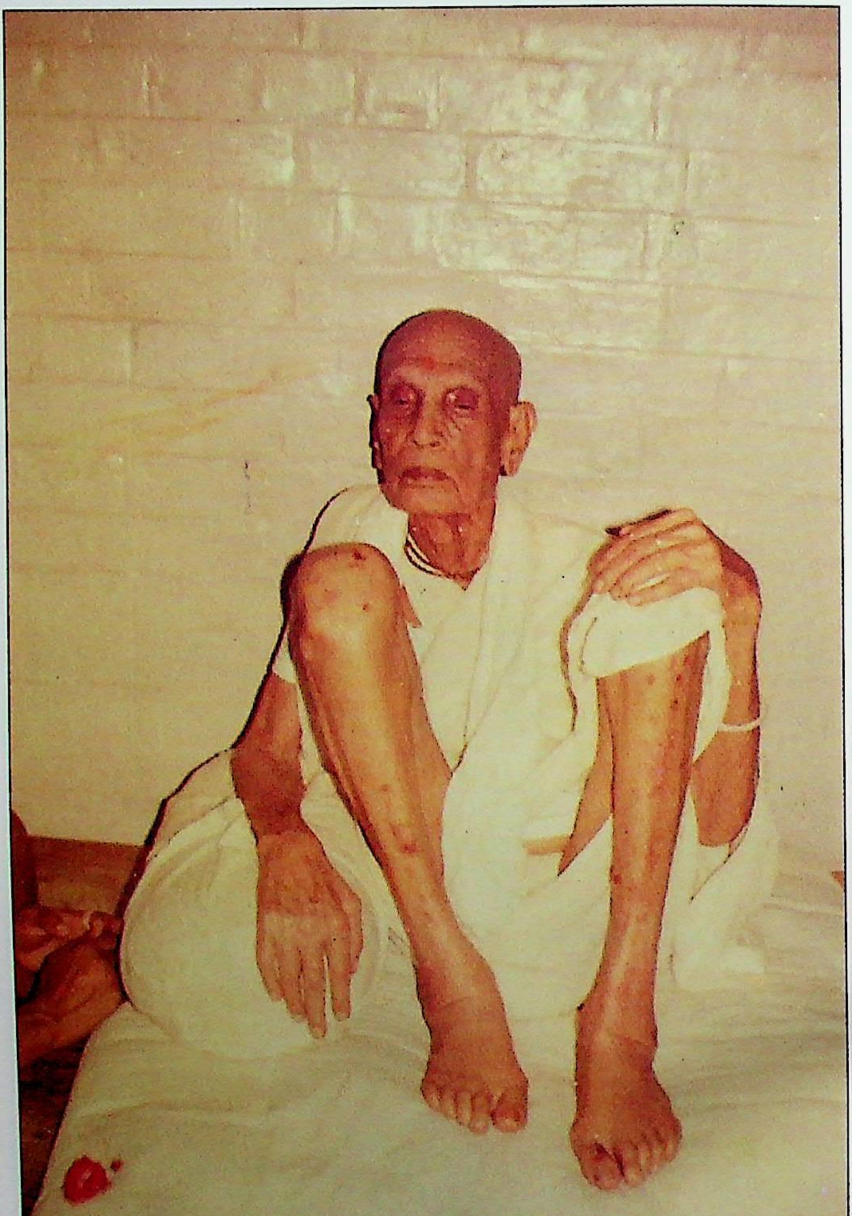

श्री गुरुदेव गोकुल भवन आश्रम में ।

श्री गुरुदेव गोकुल भवन आश्रम से रिक्शे में प्रस्थान करते हुये। गुरुदेव सदा रिक्शे से ही आते जाते थे।

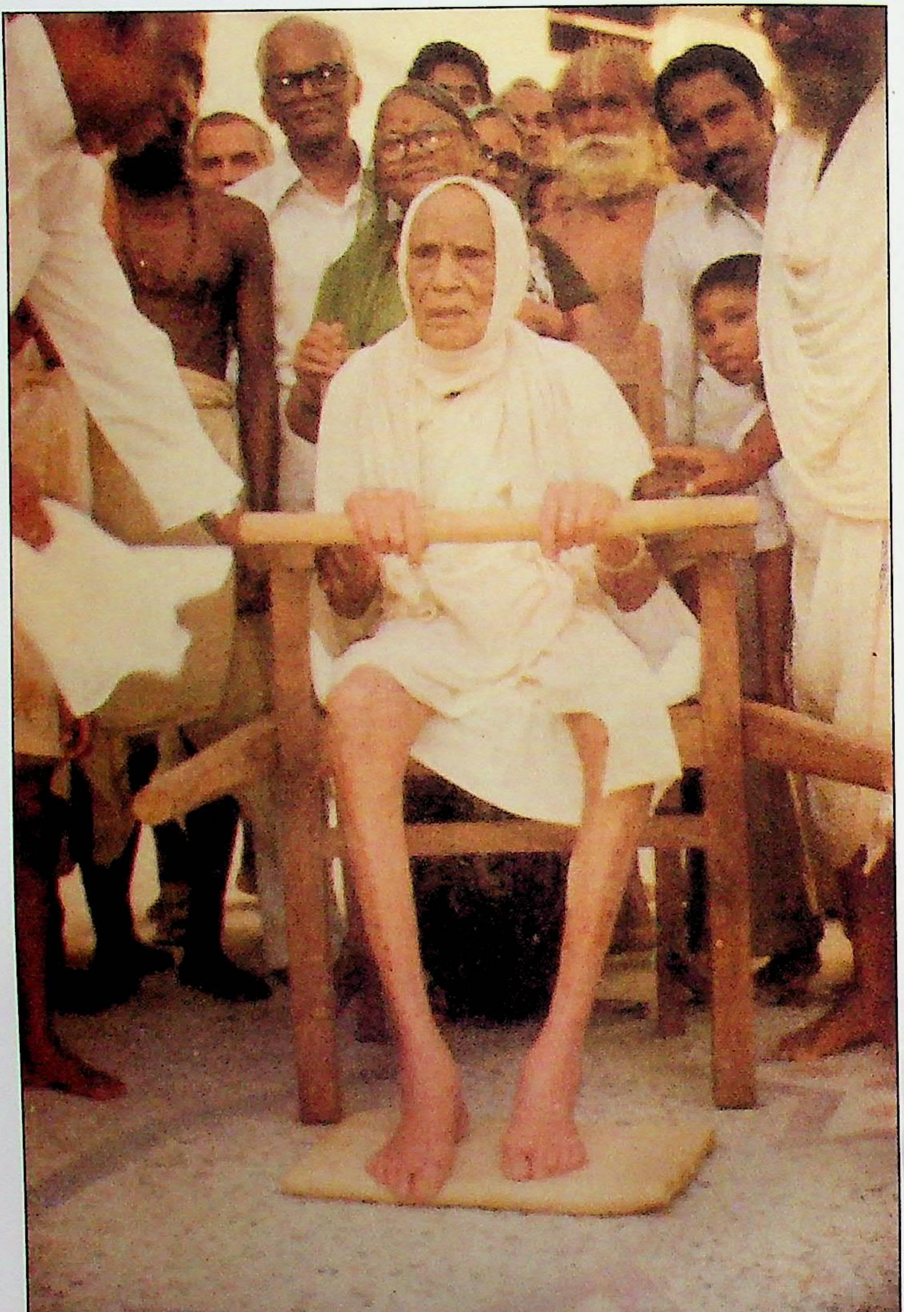

महाप्रयाण के पूर्व श्री गुरुदेव का वशिष्ठ कुंड
की जगत से दृश्य दर्शन। (नवम्बर 1984)

श्री परमहंस राममंगलदास जी
अपने निवास स्थान बजरंग भवन में।

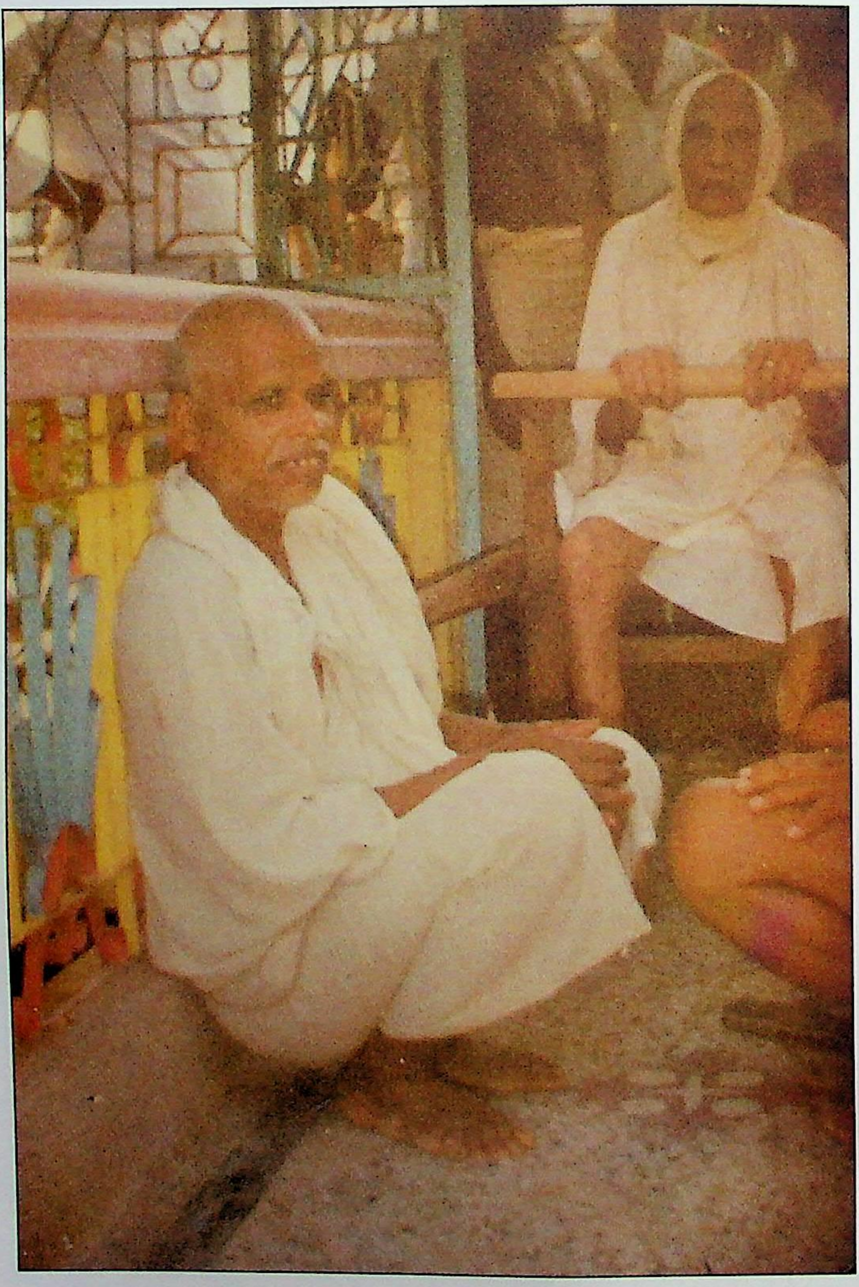

महाप्रयाण के पूर्व श्री गुरुदेव
वशिष्ठ कुंड स्थान में (नवम्बर 1984) ।

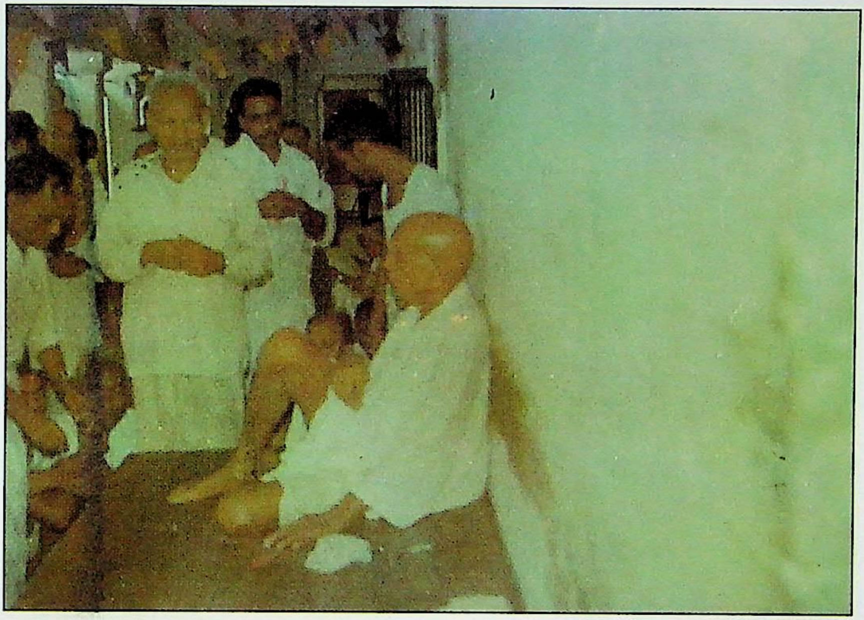

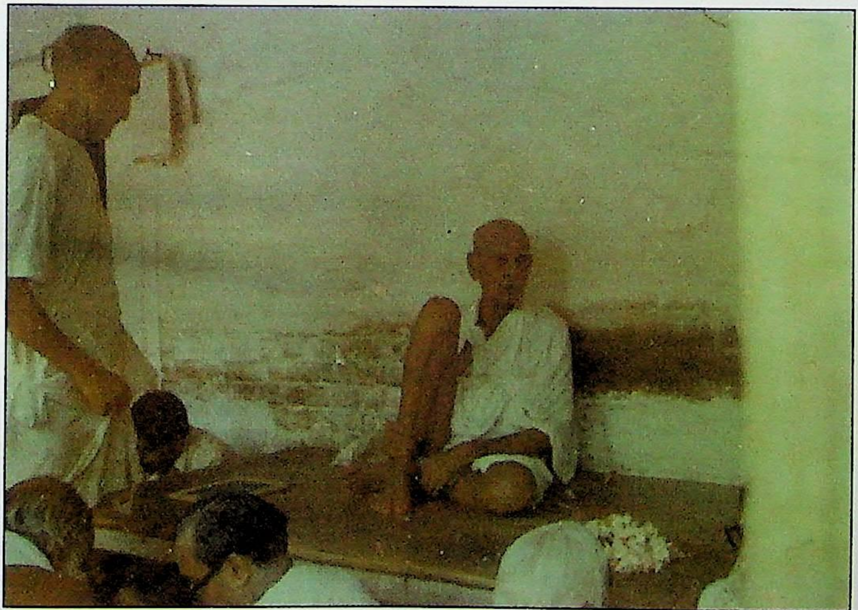

गुरुदेव, गोकुल भवन आश्रम में, भक्तों के बीच ।

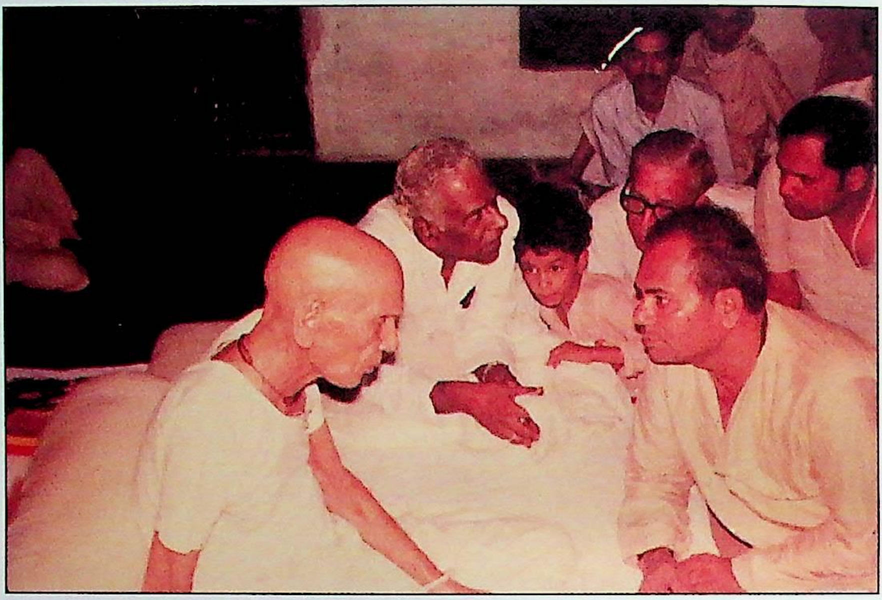

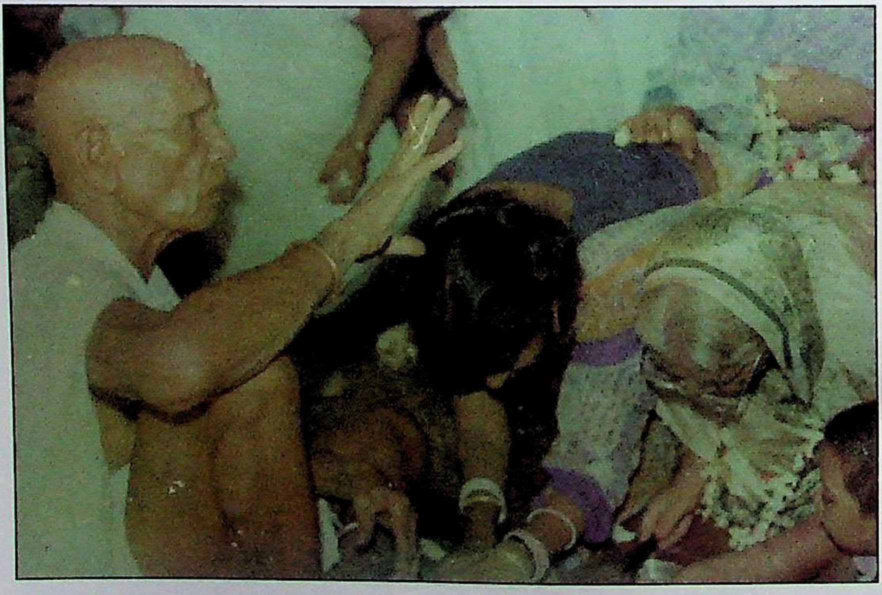

भक्तों के बीच श्री परमहंस राममंगलदास जी ।

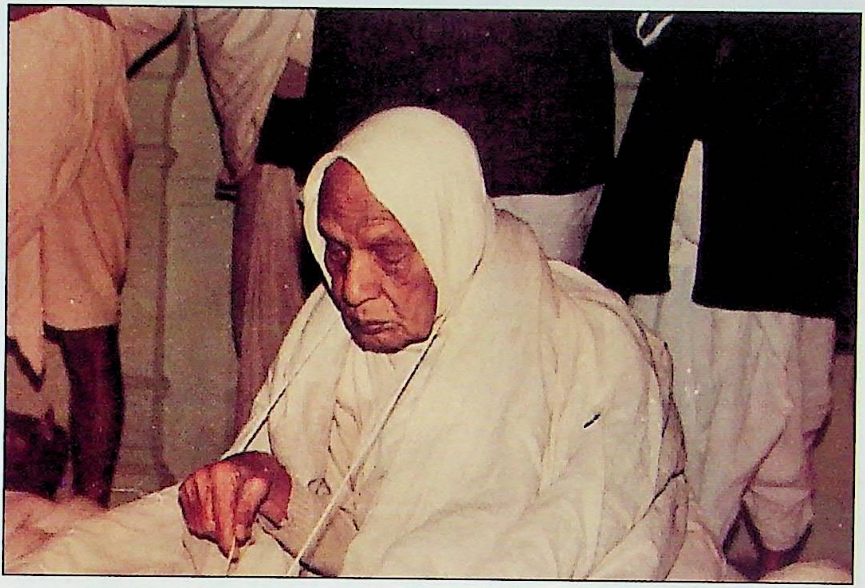

भक्तों के बीच श्री परमहंस राममंगलदास जी।

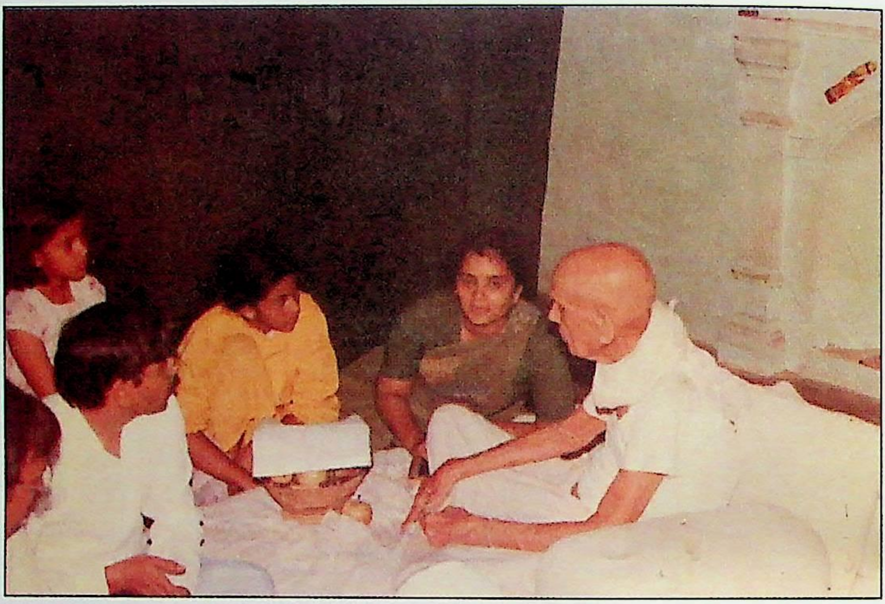

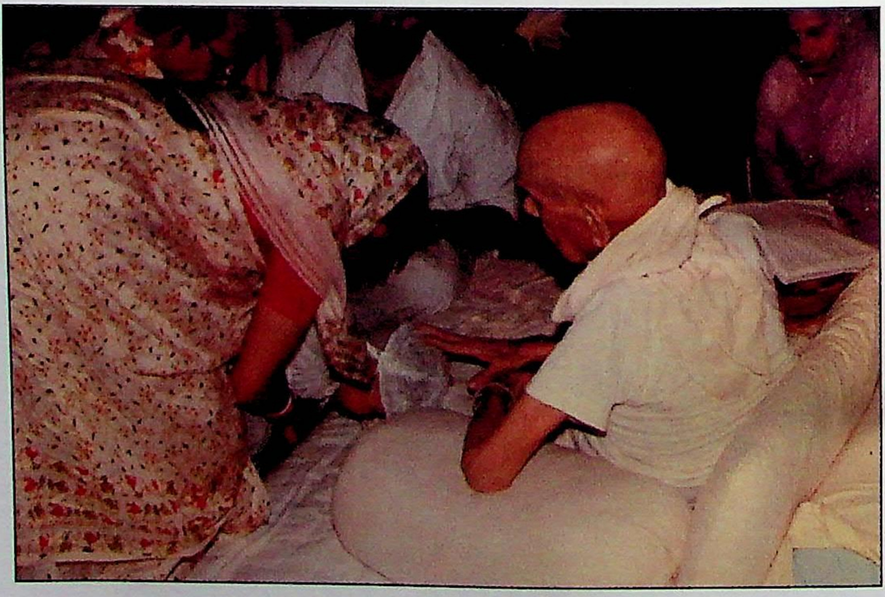

गुरुदेव भक्तों को उपदेश व आशीर्वाद देते ।

।। श्री गणेशाय नमः ।।
।। जै जै श्री गुरुदेव भगवान की ।।

श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली

भाग - २

१ ।। श्री १०८ परमहंस बेनी माधव दास जी ।।

श्री गुरु महाराज जी

(श्री गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड, अयोध्या जी)

श्लोकः- रकारः शब्दः परमं ध्वनिः
ध्वनेरन्तरगतो ज्योतिः ज्योतिषोरन्तर गतो ध्वनिः
तपसा तन्मय ध्यानेन तद्विष्णोः परमं पदम्।१।

२ ।। श्री १०८ परमहंस राम मंगल दास जी महाराज ।।

(श्री गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड, अयोध्या जी)

दोहाः- श्री शारद गणपति चरण, बार बार शिर नाय।
कृपा कीजिये दास पर, आकर होहु सहाय।।
श्री गुरु महाराज को, ध्यान हृदय में धारि।
चरण कमल की रेणुका, लीन्हीं नैनन डारि।।
चरणोदक मैं आपका, रोज करत हौं पान।
कृपा कीजिये दीन पर, दास आपनो जान।।
भक्त जनन का चरित यह पढ़ै सुनै जो कोय।
निश्चय पावै भक्ति पद, आतम अनुभव होय।।
पहिले तो श्री व्यास जी, जगत हेतु भे आय।
ब्रह्म सूत्र उपनिषद अरु, गीता लिखी बनाय।५।

पढ़ै सुनै जो ग्रन्थ ये, छूटै यम की त्रास।
आवागमन न होय फिर, रहै सदा हरि पास।।
तब फिर स्वामी बुध्द जी, भये धर्म के हेतु।
जीवन पर रक्षा करी, बाँधि गये दृढ़ सेतु।।
तब फिर शंकराचार्य्य जी, निर्गुन ज्ञान बताय।
जहँ देखौ तहँ ब्रह्म है, सब से कहैं सुनाय।।
तब फिर रामानुज भये, लखन लाल को अंश।

भक्ति में प्रीति दृढ़ाय के, कीन्हों दुःख विध्वंश।।
तब फिर रामानन्द जी, भये विष्णु अवतार।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, भव सागर हो पार।१०।

द्वादश चेला संग में, रहे सिध्द भरपूर।
जाकी जैसी भावना, ताकी तैसेहि पूर।।
तब फिर गोरख जी भये, गोरखपुर में आय।
जिनके चेला भरथरी, आजहुँ परत दिखाय।।
तब फिर गुरु नानक भये, अंश जनक को आय।
दुखी जनन को दुःख हरि, दीन्हों सुक्ख अघाय।।
ओंकार की जाप को, दीन्हों जिन्हें बताय।
अर्थ धर्म्म अरु काम फिर, गये मोक्ष को पाय।।
तब फिर श्री गौराङ्ग भे, सुन्दर रूप अनूप।
प्रेम की मूरति आप हैं, वरनि सकै को रूप।१५।

भक्ति योग वैराग अरु, ज्ञान ध्यान नित नेम।
सब में आगे चलत है, केवल आप क प्रेम।।
रामकृष्ण परमहंस को, तिरवेणी तट जाय।
अभ्यन्तर की धुनी का, दीन्हों भेद बताय।।
छिन छिन में लय होत है, दिन पर दिन अधिकाय।
सूरज मण्डल सामने, रूप अनूप दिखाय।।
काली माता करि कृपा, दीन्हों भक्ति दृढ़ाय।
जनम मरन से छूटिहौ, सुनौ पुत्र हर्षाय।।
तब फिर तुलसी दास जी, बाल्मीकि भे आय।
रामायण श्री राम तन, दीन्हों जगत चलाय।२०।

पढ़ै सुनै जो ग्रन्थ यह, ह्वै करिके निष्काम।
सत्य वचन संशय नहीं, जावै हरि के धाम।।
राम नाम के जपे ते, छूटि जात सब पाप।
जहँ देखो तहँ रमि रहे, सब में आपुइ आप।।
पवन तनय के अंश भे, राम दास महाराज।
दुखी जनन को दुख हरो, कीन्हों बहुतै काज।।
शीवा जी को शिष्य करि, दीन्हों बली बनाय।
जिनके आगे युध्द में, कोई नहिं ठ्हराय।।

सूर दास ऊधो भये, तुलसी दास के साथ।
तन मन हरि रँग में रँगे, एकतारा लिये हाथ।२५।

तब फिर नाभा जी भये, भक्त माल जिन गाय।
सतगुरु की सेवा करी, अनुभव दीन जगाय।।
तब फिर दादू जी भये, तत्व ज्ञान शिर मौर।
सुन्दर तिनके शिष्य भे, हरि चरनन की ओर।।
तब फिर जगजीवन भये, कोटवा ग्राम मँझार।
सत्य नाम को जगत में, कीन्हों है परचार।।
अब तो मोहन दास जी, भये कबीर की जोति।
तन मन धन ते जगत हित, बोय दीन जिन मोति।।
राम नाम विश्वास दृढ़, जिनके हिरदय माँहि।
होवै सब जग का भला या में संशय नाहिं।३०।

कबीरदास के पुत्र भे, पण्डित जवाहिर लाल।
सत्य वचन मम मानिये, जिनका नाम कमाल।।
पण्डित जवाहिर लाल सम, धनी और शौकीन।
हिन्दुस्तान में नहिं कोई, कैसे ह्वै गये दीन।।
त्याग इसी को कहत हैं, तन मन धन जिन दीन।
मनसा वाचा कर्मणा, रहत सदा लवलीन।।
जगत हेत अवतरित भे, सुन्दर पुरुष महान।
ऐसे पुरुषन के चरित, को करि सकै बखान।।
और महात्मा बहुत भे, हैं अरु होतै जांय।
सबहुन को परनाम है, बार बार शिर नाय।३५।

मुसलमान जे ह्वै गये, हैं अरु ह्वै हैं जानै।
पीर पैगम्बर औलिया, कुतुब रहैं मुख मौन।।
सब को मेरी बन्दगी, बार बार शिर नाय।
भूल चूक होवै क्षमा, कीजै सदा सहाय।।
कोई कुल में अवतरै, राम चरन रति होय।
अन्त समय हरिपुर बसै, आवा गमन न होय।।
भक्तन का कोई चरित, पढ़ै सुनै ह्वै शान्ति।
निश्चय वा के हृदय की, छूट जाय सब भ्रान्ति।।

पक्षपात को छोड़िकै, भजै रैन दिन नाम।
रोम रोम ते धुनि उठै, सन्मुख होवैं राम।४०।

शिव मारुत सुत कृपा करि, मोकौ आज्ञा दीन।
पाठ करन के हेतु मैं, यह चरित्र लिख लीन।।
व्यालिस दोहा लिख गये, कलम कीन अब बन्द।
सब देवन के दरश भे, छूटि गये दुख द्वन्द।।
गणन भेद जानत नहीं, सत्य कहौं गोहराय।
सज्जन सब मिलि कृपा करि, देखि के लेहिं बनाय।४३।

भजनः- गणपति को प्रथमै करों वन्दन। मिलत सुक्ख दुख होत निकन्दन।१।
रिध्दि सिध्द सोहत संग जाके। भाल विशाल सिन्दूर को चन्दन।२।
अब हम पर नित दाया कीजै। वाहन मूष उमा के नन्दन।३।

ग़ज़लः- सुनिये विनय गजानन अब हम सुनाने वाले।
अब पार बेड़ा मेरा, तुम हौ लगाने वाले।
है मूष की सवारी औ डील डौल भारी।
देवन में आदि पूजन अपनी कराने वाले।
कवियों को कार्य्य सारो, बुद्धी मेरी सुधारो।
हिरदय में मेरे बसिये, आनँद बढ़ाने वाले।६।

ग़ज़लः- शरन मैं निशिदिन हूँ तेरी, सुनौ शारद महरानी जी।१।
बसौ हिरदय में आ मेरे, सकल गुण की निधानी जी।२।
तुम्हारे ही बदौलत से हुये कवि लोग ज्ञानी जी।३।
अरज मेरी सुनौ चित दै, कहौं मैं कछु कहानी जी।४।

भजनः- भजु राम नारायण विष्णु कृष्ण ब्रह्मा शिव गणपति शारद को।
विश्वामित्र वशिष्ठ यमदग्नि अत्रि भृगु अंगिरादि मुनि नारद को।
पाराशर अष्टावक्र व्यास शुकदेव परीक्षित तारन को।
भरद्वाज कश्यप पुलस्त्य सनकादिक रूप निहारन को।४।

तारागण सूरज चन्द्र इन्द्र अरु वरुण कुबेर विशारद को।
वामदेव कुम्भज कपीश श्री शेष बिना महि धारत को।
भरत लखन रिपु दमन कपिल मुनि साठि सहस सुत जारत को।
सुर मुनि शक्तिन तीर्थन प्रणाम इनके बिन अधम उधारत को।८।

भजन प्रभाती:- सीता पति रामचन्द्र राधा पति कृष्ण चन्द्र सुनो अर्ज मेरी।१।
काम क्रोध लोभ मोह अहंकार घेरी।२।
इनको अब शान्त कीजै अभय दान मोहिं दीजै कीजिये न देरी।३।
चितओ अब नैन कोर कारज तब सरै मोर,
पाहि पाहि पाहि नाथ चरण शरण तेरी।। सीतापति रामचन्द्र ० ।४।

राग ध्रुपदः- राम कृष्ण गति अति अपार, पावत नहिं कोई पार।१।
ब्रह्मा ऋषि मुनि फणीन्द्र, तारा गण चन्द्र इन्द्र शंकर जी ध्यान धारि।२।
गणपति अरु शारदादि हनुमत जी औ तमारि, चौदह भुवन लोक तीन उदर माहिं वसत झारि।३।
कहत हौं हरि हरि पुकार बेड़ा मेरो कीजै पार शरनि आये कि रखनेहार।४।

दोहाः- श्री यमुना जी के निकट, राजापुर है ग्राम।
सब जन जानत जगत को तुलसीदास है नाम।।

पदः- गोस्वामी जी की सूरति करूँ मैं बयान।
भद्र रूप शिर शिखा मनोहर गोखुर की परमान।
सुन्दर बदन मदन छवि लाजै धोती शुकुल महान।
काँधे श्वेत जनेउ छाजै गले में कण्ठी जान।
मानस श्वेत वस्त्र में बांधी बाँयें बगल दबा।५।

शुभ पलाश की चरण पादुका कहँ लगि करूँ बखान।
शान्त स्वभाव प्रेम की मूरति करत राम गुण गान।
दर्शन भये पाप सब छूटे आवागमन नशान।८।

दोहाः- कई दफ़े दर्शन भये, राति सबेरे शाम।
आशीर्बाद दियो हमैं, जपो सदा हरि नाम।।

दोहाः- प्रथम तुम्हैं सुमिरन करूँ श्री गणेशाय नमः।
शीर्श नाय विनती करूँ तुम चरण नाय नमः।।
सरस्वती माता मेरी, तुम्हैं नवाउँ माथ।
कर जोरूँ अर्जी करूँ शिर पर धरिये हाथ।।
शिव मारुत सुत कृपा निधि, मो पर हो अनुकूल।
नैनन देखा लिखत हौं, होय न मुझसे भूल।।
सत्य लोक साकेत है, अति अपार छवि भौन।

राम रूप इच्छा रहित, बैठे सब मुख मौन।।
बिहार बाग जहँ है बनी, नाना रँग के वृक्ष।
मणिन जड़ित पृथ्वी तहाँ, कैसी सुन्दर स्वच्छ।।
सिंहासन जहँ पर धरे, शोभा कही न जाय।
तिन पर बैठे भक्त जन, श्याम स्वरूप बनाय।।
सर्वेश्वर के सामने, बैठे गुरू कृपाल।
नैनन में नैना मिले, देखि के भयों निहाल।७।

चौपाई:- सबसे ऊँचा है सिंहासन। राम ब्रह्म का तेहि पर आसन।।
अमित काम छवि बरनि न जाही। शेष शारदा की गमि नाहीं।।
प्रभु के अन्तरगत महरानी। रूप राशि शोभा गुण खानी।।
शंख चक्र गदा पद्म न जहँवा। मुरली धनुष बाण नहिं तहँवा।।
राति दिवस जहँ होते नाहीं। खान पान नहिं धाम न छाहीं।५।

महा प्रकाश अखण्ड एक रस। वरनि सकै को कौन कहै कस।।
नाम जपै अरु धरै ध्यान जब। फिर देखै वह अमर घाम तब।।
अभ्यन्तर धुनि नाम कि जानै। निर्विकल्प के ध्यान को मानै।।
गुरु कृपा करि मोहिं बतायो। करि अभ्यास भेद यह पायो।१०।

दोहा:- वेद शास्त्र के परे मत, अति ही अगम अनन्त।
गरु दयाल किरपा करैं, तब जानै कोइ सन्त।१।
सत्य शब्द को जानि कै मन स्थिर ह्वै जाय।
क्रिया मान प्रारन्ध अरु, संचित जाय नशाय।२।
ध्रुव पद अचल अशोक है, आवागमन न होय।
यहि के नीचे लोक सब, अमर लोक यह होय।३।
रोम रोम मुख जीभ हो, रोम रोम चहे नैन।
तबहूँ देखत ही बनै, मुख से खुलै न बैन।४।

छन्द:- गोलोक का कछु चरित दिल में था मेरे लिखता अभी।
श्री कृष्ण जी ने कहि दिया अब कछु नहीं लिखिये कभी।
अंदर से मेरे नाम की धुनि हो रही बसु याम है।
सुनते रहो इस शब्द को जो सत हमारा नाम है।
और थोड़े दिन रहो अब हीं यहां कछु काम है।
आवागमन नहिं होय कबहूँ बसौ मेरे धाम हैं।६।

दोहाः- चितय नैन की कोर हरि, मधुर मधुर मुसुकाय।
अन्तर ध्यान भये तुरत, चित को लीन चुराय।१।

पदः- जागु जागु नर क्या गाफिल है चल बेगम के बाग रे।
मानुष चोला बड़ा अमोला लगा दाग़ पर दाग़ रे।
करम काचली लगा चित्त में हुआ मानुष से नाग रे।
मन का भौंरा विषय क लोभी गुरु चरनन में लाग रे।
तन सराँय बिच बसत मुसाफिर क्या करता अरमान रे।५।

रैनि सिरानी उठि गये डेरा पड़ा रहा यह ठाठ रे।
हरि को भजै तो हंस कहावै कामी क्रोधी काग रे।
श्री जगदीश कहैं गुरु ज्ञानी सपने कैसा साथ रे।८।

श्री महात्मा गाँधी जी के सम्बंधी पद

पदः- तन मन धन ते महात्मा, गान्धी कीन विचार।
सुखी रहैं सभी आतमा, कृपा करो करतार।१।
रहै न दिल में सादमा, सत्याग्रह व्रत धार।
मेल होय सब जातिमां, हो स्वराज्य सुखसार।२।

पदः- स्वराज्य लें हम स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लें हम स्वराज्य़ लेंगे।
करैंगे सत्याग्रह युध्द जारी महात्मा जी ने जो है विचारी।
न हम डरैंगे न हम डरैंगे स्वराज्य लें हम स्वराज्य लेंगे।
न खौफ़ हमको मशीन गन का न तोप तलवार तीर जनका,
जेहल चलैंगे जेहल चलैंगे स्वराज्य लें हम स्वराज्य लेंगे।
मुसलमां हिन्दू सब मिल के भाई करो आपस में अब मेल धाई।
तब यह कहैंगे तब यह कहैंगे स्वराज्य दें हम स्वराज्य देंगे।६।

शेरः- गोखले मिस्टर तिलक, नौरोजी जो होते यहां।
तो मिटा देते यहां से, फूट का नामो निशां।१।

गज़लः- गांधी जी आज जग में धर्मी कहा रहें हैं।
जिनकी बदौलत हम सब, मौजें उड़ा रहै हैं।
चरखा चलाय दीना क्या काम ठीक कीना।
सुन्दर स्वदेशी कपड़े बन बन के आ रहै हैं।
वालन्टियरों की सैना, देखो उघार नैना।५।

सहते हैं दुःख कैसा, जेलों में जा रहे हैं।
दफ़तर ज़िलों ज़िलों में, कपड़े बनैं मिलों में।
भारत के वासियों को सोते जगा रहे हैं।।
कर दी है डाक जारी भारत में चलती सारी।
तलवारें गुप्ती बल्लम सब को बँधा रहे हैं।।
इन्साफ़ खूब करते धीरज को मन में धरके।
क्या नीति ही कि बातें सब को सिखा रहे हैं।१०।

हरिनाम के सहारे होवैंगे काम सारे।
विश्वास अपने दिल में वह खुद जमा रहे हैं।
ऐसे समय में कोई ऐसा हुआ न होई।
छोटे बड़ों के दिल में कैसे समा रहे हैं।
छे पैसे का है भोजन सुन लीजिये यह सब जन।१५।

क्या ज़िन्दगानी अपनी सुख से बिता रहे हैं।
परस्वार्थ हेतु मरते सब लोग जै जै करते।
वह बैठि कर सिंहासन बैकुण्ठ जा रहे हैं।
कलियुग में सतयुग देखो, कहीं वेदहूँ न लेखो।
श्री गान्धी जी से रघुवर लीला करा रहे हैं।२०।

होगा स्वराज्य जानो मेरा वचन यह मानो।
अब थोड़े ही दिनों में, दिन अच्छे आ रहें हैं।
महिमा अपार जिनकी, वरनन करूँ क्या तिनकी।
थाकी हिये में शारद फणपति चुपा रहे हैं।
कायम रहे ज़िन्दगानी सुरसरि में जब लों पानी।२५।

और चाँद सूर्य्य जब तक नभ में दिखा रहे हैं।
परिवार में भी सुख हो, हरगिज़ कभी न दुख हो।
चिरजीवें सब हमेशा, अब हम मना रहे हैं।२८।

३ ।। श्रीमती फातिमा जी ।।

शेरः- फतेह याबी पायगा जिसने किया हर दम ज़िकिर।१।
देखता सूरत है उसकी जिसको है सब की फ़िकिर।२।
हर शै से उठती धुनि जो है एक रव्व ही के नाम की।३।
दीदार हर दम हो रहा जो बात अपने काम की।४।

४ ।। श्री हसन जी ।।

शेरः- हर वक्त का जो जिक्र करना यह बड़ा ही काम हैं।१।
मुरशिद बिना मिलता नहीं ऊँचा यह रव का नाम है।२।
जिसको मिला वह खिल गया फिर कहने का क्या काम है।३।
देखता सूरत है सन्मुख सुन रहा धुनि नाम है।४।

५ ।। श्री हुसेन जी ।।

शेरः- शुक्र हर दम कर रहा जो हुस्न देखेगा वही।१।
हर शै से धुनि जो सुन रहा वह रब क प्यारा है सही।२।
मिल गई छुट्टी उसे अल्लाह से सल्लाह कर।३।
पहुँचिगा वह पास में बैठा सिंहासन ह्वै अमर।४।

६ ।। श्री मन्सूर जी ।।

शेरः- मरैगा सदा जो खुदा से जुदा, उसी में पगा सो खुदा का सदा।१।
लिया लव लगा सो हुआ क्या गदा, सूली दे लगा तब भी बोलै खुदा।२।
हटै तब दगा मोह माया मदा, मुरशिद दे जगा तब तो छूटै वदा।३।
कातो झीना तगा रूप सन्मुख सदा, पता लो लगा बन के बैठो खुदा।४।

७ ।। श्री सैयद सालार जी ।।

शेरः- वही है वही है वही है वही।
सही है सही है सही है सही।।

८ ।। श्री शरमद जी।

शेरः- आपै गुरू व चेला, मादर पिदर बना।
हमशीरा भाई जोड़ू, फरज़न्द सब बना।।

९ ।। श्री शम्श तवरेज़ जी।

शेरः- अपने ही आप रूप को पहिचान जायगा।
तन मन से मुरशिद खिदमत कर सीख पायगा।।

१० ।। श्री मियां चिश्ती जी ।।

शेरः- जिधर देखो उधर ही देख पड़ता प्राण प्यारा है।
उसी का खेल सब तर क्या, वही नैनों क तारा है।।

११ ।। श्री करोमियां जी ।।

शेरः- सब में समा रहा है यह नाम रूप जानो।
तन मन लुभा रहा है, हर दम अनूप मानो।।

१२ ।। श्री मदार शाह जी ।।

शेरः- जिसको तू ढूँढता है सो पास ही में बैठा।
मुरशिद से ताली लेकर, खोलो कुलुफ़ है ऐंठा।।

१३ ।। श्री मख्दुम शाह जी ।।

शेरः- मुरशिद की खिदमत कर प्यारे, प्रेम पन्थ तब पावैगा।
षट चक्कर वेधन तव होवैं, आनन्द हिय न समावैगा।
खिल जाँय कमल सातों प्यारे, सब में फिर वही दिखावैगा।
अनहद बाजा बाजि रहे हैं, को मुख से कहि पावैगा।
कुण्डलिनी जाग्रत ह्वै जैहै सब सुर दरश दिखावैगा।५।

धुनि हर शै से फिर सुनिहै वह, और रोम रोम खुलि जावैगा।
शून्य भवन में लय जब ह्वै है, सुधि बुधि सबै भुलावैगा।
कहै मख्दुम शाह सुन लीजै, आवागमन मिटावैगा।८।

१४ ।। श्री धर्म दास जी ।।

पदः- माला सदा घट में फिरै कोई ख्याल तो करते नहीं।
पांचों की आंच में नाच नाचत मन को वश करते नहीं।
शब्द पर सूरति लगाकर ध्यान तो धरते नहीं।
बाजा सुघर अनहद बजैं उस पन्थ पर परते नहीं।
रोम रोम से नाम धुनि सुनि मोद मुद भरते नहीं।५।

श्याम अनुपम रूप सन्मुख सुफ़ल तन करते नहीं।
शून्य में जाकर के सुधि बुधि मन को लय करते नहीं।
शुभ अशुभ सब कर्म जरि जहँ अमर हो मरते नहीं।
गर्भ में एकरार कीन्हों सो तो चित धरते नहीं।
भर्म के चक्कर में पड़ि यम काल को डरते नहीं।१०।

सतगुरु से बिन जाने अगम यह काम तो सरते नहीं।
धर्मदास निर्वैर निर्भय ते कभी गिरते नहीं।१२।

१५ ।। श्री ख्वाजा जी ।।

पदः- फौरेव वशर का छूटि जाय तब हर दम दरशन रब का हो।१।
नाम रूप परकाश हर जगह जो मालिक है सब का हो।२।
फना करै तन मन उस पर जो नाधै सातों तवका हो।३।
चतुर खिलाड़ी ख्वाजा सोई फिदा रहै नहिं भ भवा हो।४।

१६ ।। श्री चौपान शहीद जी ।।

शेरः- सख्त लोहे के चने शीरीं शकर है वह नहीं।
जिक्र हर दम जे करैं पास में जावैंगे वही।१।

१७ ।। श्री साईं जी तकिया ।।

शेरः- दगा का परदा हटै मुरशिद से जा कर के मिलो।
देखिये नाम रूप नूर ही है सब में खिलो।।

१८ ।। श्री रसखान जी ।।

शेरः- कहते रसखान हैं मुरशिद से मिलो ढूँढ़ अबी।
राम के भजन बिन दोज़ख में जाय पड़िहैं सबी।१।
राम औ कृष्ण विष्णु कहते हैं उन्हीं को नबी।
जान लेवैंगे है यह सच्चा मेरा दास कबी।२।
काम जाहिर में करो वातिन जपो अजपा जबी।
प्रेम एकतार हो तन मन कि सुधि भूलोगे तबी।३।
धुनी जारी हो रोम रोम वसै नैनों छवी।
जान लो मुझ को तो अपनाय लिया मेरे नवी।४।

दोहाः- सब मन की जब वासना, जरैं कहैं रसखान।
तब हर दम सन्मुख रहे, झांकी कृपानिधान।।

गज़लः- दिखा अनोखी छवी प्रभू ने यह तन मन मेरा लुभा लिया है।१।
अधर पै मुरली को धरि के हरि फिर मधुर मधुर धुनि बजा दिया है।२।
करी है किरपा दया के सागर ने जगत विषय सब हटा दिया है।३।
रसखान प्राणों के प्राण हरि को हम अपने दिल में बसा लिया है।४।

१९ ।। श्री अली शाह जी ।।

पदः- मार्ग मुरशिद ने बताया है जय जय कार हुई।
भव के बन्धन से छुटाया है जय जय कार हुई।
स्वप्न में जिस का न आया था कभी मुझ को ख्याल।
वह इन नैनों से दिखाया है जय जय कार हुई।
प्रेम तन मन से करो सच्चे बनो आशिक तो।५।

देखो सब में तो समाया है जय जय कार हुई।
दुई को छोड़ कर हो जावै दीन जौन कोई।
पास ही में वास वह पाया है जय जय कार हुई।
खेलता खेल अकेला है वह प्यारा सबका।
जिसने यह सृष्टि बनाया है जय जय कार हुई।१०।

रूप की छवि को कौन वरनन कर सकता है अली।
जानकी जान हम पाया है, जय जय कार हुई।१२।

शेरः- जिक्र करने से फिक्र छूटती है कहते अली।
प्रेम में चूर हो जाओगे मिलै तब तो गली।।

२० ।। श्री नवी जी ।।

ग़ज़लः- सिय राम के भजन बिन जग काम धाम फीका।
परलोक लोकहु में जो सब के शिर का टीका।
सतगुरु से जान करके यह सीख लो तरीका।
हर दम ही दरशन होवैं वन्धन छुटै गजी का।
सोते हौ मोह निशि में परदा पड़ा दुई का।५।

जागो उठो तो चेतो सुमिरन करो हरी का।
हरि भजन करने आया यमराज हाथ वीका।
वादा किया गरभ में मानो वचन नवी का।८।

२१ ।। श्री सोहराव जी ।।

ग़ज़लः- एक दफ़ा देखा है जिसने उस संवलिया यार को।
चैन फिर पड़ती नहीं देखे बिना दिलदार को।
छवि अनोखी कर में मुरली संग राधे प्यार को।

तिरछी चितवन मन हरन मुसक्यान पग झंकार को।
साकार वह निराकार वह करतार जगदाधार को।५।

सरदार सब से न्यार सब हित कार ज्ञानगार को।
लीला अपरम्पार जिनकी कौन पावै पार को।
सोहराव तन मन दे चुका उस सांवले सरकार को।८।

शेरः- प्रेम बिन होता नहीं दरशन सुनो सरकार का।
प्रेम वह सोहराव है, जो लगा गया एक तार का।।

ठुमरीः- भजो भजो मन श्याम श्याम श्याम।
तेरा बनि जावै सब काम काम काम।
निपट निडर हरि को बिसराये।
जाय परै यम धाम धाम।
सोहराव ज़िकर कर फिकिर मिटै।
मुरशिद से जानि के नाम नाम।६।

शेरः- हर जगह सोहराव वह है देखिये करि प्रेम जी।
प्रेम के बस में हैं मोहन हैं नहीं वह नेम जी।।

२२ ।। श्री गूदर दास जी ।।

लावनीः- क्या श्याम गौर दोउ वसुदेव देवकी लाला।
भये जगत हेतु अवतरित दुःख सब टाला।
कानों में कुण्डल शिर पर मुकुट विशाला।
केशरि को माथे तिलक़ गले मणि माला।
पहिरे तन में हैं वसन रंग रंग आला।५।

कटि में फेटा कसि बांधि सखा संघ वाला।
जब रहस करत बृज चन्द सुनो अहेवाला।
लखि शेष होत मुख मौन सहस फन काला।
मन मगन अहैं सरकार संग सखि ग्वाला।
सुर मुनि बहु देखैं चकित थकित बेहाला।१०।

ताथेई ताथेई धुनि उठत करन पर ताला।
बाजा नाना विधि बजैं राग हों आला।
नूपुर छम छम छम बजैं नाच गति चाला।

मुरली की मधुरी तान बजावत लाला।
सुधि बुधि सब की जाय भूल होंय मतवाला।१५।

श्री राधे जी हैं संग ढंग नीराला।
धनि धनि बृज भूमी धन्य जहाँ गोपाला।
नित नये नये तहँ खेल करत नन्द लाला।
बसि देखत ही बनि परै कहै को हाला।
परदा अज्ञान का हटै मिटै जंजाला।२०।

जब सतगुरु शब्द को दीन हिये में शाला।
मिंटि गई करम गति लिखी रही जो भाला।
ध्वनि उठत नाम की रोम रोम ते आला।
मरि गये हृदय में रहत पांच थे व्याला।
जग में हरि सुमिरन सार मिटै भव जाला।२५।

जब दीन होय तब द्रवैं हटै दुख टाला।
अगणित पापी तरि जांय गये सुख साला।
जा को कहते सतलोक अमरपुर आला।
तन मानुष का हरि दियो बड़े किरपाला।
करि भजन जतन से सन्मुख ह्वै जा लाला।३०।
तब हर दम रहि हो मगन डरैं यम काला।
साका लोकौ परलोक में होवै लाला।
प्रभु सुमिरन जग में सार और जंजाला।
सब गूदर दास के वचन पै कीजैं ख्याला।३४।

दोहाः- हरि से जे जन विमुख हैं, उनकी कटि गइ नाक।
नाक यथारथ भक्ति है, ता को समुझत खाक।१।
गर्भ कि बात बिसारि कै, भये काल मुख पाक।
गूदर हरि निशि दिन भजै, तब होवै बेवाक।२।

२३ ।। श्री मियां खुसरू जी ।।

ग़ज़लः- श्याम की सूरति को देखा दिल मेरा ललचा रहा।
नाम का जिनके जहाँ में हर जगह यश छा रहा।
छिप के बैठे हो कहाँ पर आय के दरशन तो दो।

स्वांस रुक रुक चलती है मुख में कलेजा आ रहा।
अनुपम छटा देखे बिना तन हो रहा है अट पटा।

किस सोच में भूले हो क्या कुछ गांठ से जाता रहा।
लौ लगी सच्ची मेरी घट घट कि आप तो जानते।
सब मे व्यापक आप कहलाते वह बल जाता रहा।
आप के मैं रूप पर आशिक हुआ लीजै खबर।
पास ही में राखिये अब जग से क्या नाता रहा।

दीन बन्धु दयाल हौ अब दीन की सुन लीजिये।
देर काहे कर रहे मम ख्याल क्या जाता रहा।
आइये जल्दी मनोहर अर्ज खुसरू की यही।
सामने ही प्राण निकलें मन में अभिलाषा रहा।२४।

दोहाः- भाला बर्छी सांगि औ तीर घाव भरि जाय।
विरह वान जाके लगै, खुसरू सो मरि जाय।।

२४ ।। श्री भीखा जी ।।
(बाल चरित्र)

लावनीः- श्री राम भरथ औ लखन शत्रुहन भाई।
दशरथ के आंगन खेलत शोभा छाई।
कुण्डल कानन में शिर पर मुकुट सुहाई।
है पीत झिंगुलिया कटि करधनियां भाई।
पगन पनहियां रतन जटित चमकाई।

बाजै पैजनियां ठुमुकि चलत सब भाई।
कर छोटे छोटे धनुष बान सुखदाई।
नीचे औ ऊपर चहुं दिशि देत चलाई।
बारह बिगहा की फरश हाथ गहराई।
मोती सांचे पिसवाय के तहाँ बिछाई।

ता पर सब करत किलोल धूरि उड़वाई।
बहु शिशुन लेत बुलवाय सुनो बतलाई।
स्फटिक के खम्भे लगे चहूँ दिशि भाई।
खेलैं निहारि प्रतिबिम्ब हंसैं मुख बाई।
कनियां में लै लै आवैं सब की माई।

बहु वृन्द कि वृन्द इकट्ठा होवैं आई।
सब हिलि मिलि खेलत हंसत गिरत उठि धाई।
कौशिल्या कैकेयी सुमित्रा आईं।
राजा दशरथ लखि रहै मनहिं हरषाई।
सब सुर मुनि देखैं अवधपुरी में आई।२०।

सब प्रेम में गद्गद कण्ठ से बोलि न जाई।
जब राम के बदन क तेज छिटिक जाय भाई।
तब सबकी आंखों में परकाश समाई।
सब अपनी आंखैं बन्द करैं गोहराई।
तुम काह करत हौ राम नैन चौंधाई।२५।

जब थोड़ी देर में फिर स्थिरता आई।
सब खुशी होंय शिशु आनन्द हिय न समाई।
सांवले रंग के जितने शिशु हैं भाई।
धूरी तन में लगि जाय चीन्हि ना जाई।।
जब गौर वरन शिशु तन में धूरि लगाई।३०।

बस देखत ही बनि परै कहत नहिं भाई।
माता नहिं पावैं जानि रहैं सकुचाई।
सब बालक लेवैं चीन्हि गले लिपटाई।
जब खेलि होंय तब बैठैं सब मिलि आई।
माता कौशिल्या बहु पकवान मंगाई।३५।

सब बालक खावैं जल पीवैं हर्षाई।
अंचल से झारैं अंग मातु सुख पाई।
चूमैं मुख करि करि प्यार हिये हुलसाई।
फिर कर गहि कनियां लेहिं मनो निधि पाई।
यह लीला नित प्रति होत ठीक बतलाई।४०।

हरि का जो सुमिरन करै सो देखै भाई।
चारों भाई मिलि दौरि भूप ढिग जाई।
ह्वै मातु पिता अति खुशी गोद बैठाई।
प्रात काल हो प्रथम उठैं रघुराई।
माता कौशिल्या मुख धोवैं हर्षाई।४५।

लड्डू पेड़ा दोनों कर देंय थम्हाई।
प्रभु खेलैं खावैं तन मन अति हर्षाई।
तँह काक एक पहुँचै आंगन में जाई।
किनका जो कहुँ गिरि जाँय धरनि पर भाई।
तिनको वह लेवै चूगि मनै सुखपाई।

दौरैं हरि बाकी ओर उड़ै नहिं भाई।
भागै चारौं दिशि अपनों दाँव बचाई।
तब प्रभु सब मीठा फोरि के देंय बहाई।
चूगै फिरि निर्भय काग आपु मुसुख्याई।
फिरि माता के ढिग जाय के लावैं धाई।

जब खाय के जाय अधाय पियै जल भाई।
तब प्रभु होवैं परसन्न देंय उड़वाई।
यह लीला होवै नित्य कौन कहि पाई।
शिव शारद नारद शेष रहे. गुण गाई।
भोजन करने जब बैठैं भूपति जाई।

पहुँचैं तब चारों कुँवर दौरि के भाई।
नाना विधि व्यञ्जन थार में देंय धराई।
भूपति विहँसैं औ कहैं खाव सुख पाई।
तब चारों भाई खाँय औ देंय छिटकाई।
भूपति के ऊपर डारैं जूठनि भाई।

छोटी झारिन में जल पीवैं सब भाई।
फिर भूपति ऊपर सब मिलि जल देंय नाई।
भूपति के मन में नेकौं दुख नहिं आई।
भोजन करि लेवैं आप प्रेम से भाई।
माता तीनों मन मगन बोलि नहिं जाई।

तब भूपति सब को फेरि देंय नहवाई।
पोछैं साफ़ी से देह पलंग बैठाई।
माता तब वहँ पर आय देंय पौढाई।
पँखा की करैं बयार झुलावैं माई।
सोवैं तहँ चारिउ भाय पिता सुख पाई।

माता तब भोजन करैं जाय हर्षाई।
भूपति रहैं बैठे खुशी में नींद नहि आई।
माता तब ह्वै निश्चिन्त जाँय तहँ धाई।
भूपति तब करैं अराम राम कहि भाई।
माता तब लालन संग पौढ़ि जाँय भाई।

दासी मिलि ढारैं बहुत देयँ तँह आई।
जब जागैं चारों कुँवर सवन सुखदाई।
तब माता छोरैं शिशुन के केश वकाई।
तब राम भरथ को झोटा पकरैं धाई।
धरनी में जावैं लोटि भरत जी भाई।

तब दौरि शत्रुहन राम को पकरैं जाई।
तब लषन लाल शत्रुहन को देंय गिराई।
तब भरथ दौरि कर लछिमन पर रिसियाई।
तब राम भरथ को पकरि लेंय मुसुकाई।
मातन के मुख से बोल कढ़त नहिं भाई।

अस प्रेम प्रीति की रीति बढ़ी सुखदाई।
फिरि दौरि कुँवर सब मातन पास में जाई।
पीछे ह्वै जावैं खड़े गले कर लाई।
तब मूंदै आंखी मातन की हँसि भाई।
माता नहिं बोलैं कछू सत्य कहौं भाई।

तब भूपति के ढिग जाय के उधुम मचाई।
जब देखैं बैठे दशरथ जी को भाई।
तब चारौं जन मिलि राजै देंय गिराई।
कोइ पावन पै कोइ पेट पै बैठैं धाई।
कोइ वाहन पर बैठे रहे हैं पैर हिलाई।

राजा चुपके रहैं परे हिये हुलसाई।
फिरि दौरि के मातन के ढिग पहुचैं जाई।
तब बैठि जाँय चुपचाप शान्त सब भाई।
माता लै हांथी दांत के कंघा आई।
जिनमें नग जड़े अमोल कौन बतलाई।

झारैं केशन को प्रेम मगन सब माई।
मातन के दोउ कर पकरि लेंय सुखदाई।
माता यह खेल तो जानैं रोज क भाई।
जब छोड़ैं तब फिर सुख से मलैं बनाई।
केशन में गूंथैं फूल कली मँगवाई।११०।

क्या भांति भांति के रंग वरनि नहिं जाई।
जब खिलैं कली तब फूलैं फूल सुहाई।
जैसे वृक्षन में खिले रहैं सुखदाई।
तनको कुम्हिलावैं नहीं मानिये भाई।
है लीला हरि की अगम पार को पाई।११५।

हैं काले काले बाल मनोहर भाई।
कछु नागिन काक औ भंवर मिसाल बताई।
नासा मणि कहत बुलाक जिन्हैं सब भाई।
माता चारौं पुत्रन के देंय लगाई।
सच्चे पत्थर की कनी जटित हैं भाई।१२०।

चमकैं जैसे फणि मणी उजेरिया छाई।
भूषन औ वसन सजाव कहा नहिं जाई।
जो देखै आँखिन जाय देखि छकि जाई।
जाड़े में फरगुल ओढ़ैं चारौं भाई।
जब दौड़ैं तब वह फहर फहर फहराई।१२५।

बोलैं तोतरि क्या बैन चारिहू भाई।
सुनिकै प्यारे अति बैन बहुत सुख आई।
पितु मातु हिया हुलसाय लेंय उर लाई।
सूरति चारों कुँवरन की हिये समाई।
नहिं नैनन ते मम टरें कहैं पितु माई।१३०।

प्राणों के प्राण हमार यह चारौं भाई।
सब शिशुन क मालूम रहे समै अब आई।
कहैं माता लै अब चलौ राम गृह धाई।
खेलन को होत अबेर राम रिसियाई।
तुम हमका आओ पठय समय गो आई।१३५।

बिन खेले हमको चैन परत नहिं माई।
खाने को मिलत है रोज विचित्र मिठाई।
माता हँसि हँसि के कहैं चलो पहुँचाई।
तुमरे सब के संग हमहूँ सुख नित पाई।
हैं धन्य भाग्य हम सब की अवध में आई।१४०।

नित दर्शन देवैं सब को चारौं भाई।
हमरे सब के हरि उर में गये समाई।
देखे बिन परत न चैन कहौं समुझाई।
तुम खेलौ हम सब बैठि कै देखैं भाई।
इतना कह कर चलि देंय सबै तहँ आई।१४५।

ब्राह्मण औ क्षत्री वैश्य के शिशु तहँ आई।
क्या सदाचार से खेल होत सुखदाई।
है बना गेंद का भवन हरे रंग भाई।
तहँ रंग बिरंगे धरे गेंद बहु भाई।
हैं बड़े मुलायम गेंद कड़े नहिं भाई।१५०।

मखमल के भीतर सूत भरा सुखदाई।
जाली बीनी तिनके ऊपर है भाई।
नहिं जानि परै केहि विधि ते कौन बनाई।
भीतर के सूत क हाल जौन बतलाई।
श्री नारद जी ने हमको दीन बताई।१५५।

श्री पारवती लक्ष्मी ब्रह्मानी माई।
इच्छा ते प्रगटे गेंद फटैं नहिं भाई।
होवैं कबहूँ नहिं मैल जौन जैसाई।
हम तुमको दीन बताय मानिये भाई।
क्या खेलैं गेंद क खेल सबै मिलि भाई।१६०।

गोंचैं हांथन पर दौरि दौरि सुखपाई।
मखमल के गद्दे बिछे श्वेत रंग भाई।
तिन पर सब खेलैं खेल करैं लरिकाई।
मारैं सब सब के गेंद चोट नहिं आई।
तहँ उठत शब्द गदबद गदबद का भाई।१६५।

फिर गेंद के खेल को बन्द करैं सब भाई।
गोली कर में लै लेंय सुनो हरषाई।
सब खेलैं अपना अपना दांव बताई।
चट पट चट पट गोलिन आवाज सुनाई।
दो गज़ का लम्बा चौड़ा और उचाई।१७०।

गोलिन से कोना भरा एक है भाई।
चिक्कन अति नीकी चमकीली सुखदाई।
हैं रंग रंग के पत्थर की सब भाई।
कहते जिनको है पथर कला सुर राई।
ब्रह्मा विष्णु शिव इच्छा ते प्रगटाई।१७५।

आवैं देखैं नित खेल सत्य बतलाई।
फूटै नहिं टूटै गोली मानहु भाई।
है वज़न न हलकी मजे कि जानहु भाई।
नहिं मैली होवैं सब रंगी सुखदाई।
माता के घूँघट खोलैं चारौं भाई।१८०।

माता मुसक्याय के गोद में लेंय बिठाई।
अंचल ओढ़ाय के दूध पिआवैं माई।
पीवैं चारों सरकार मगन मन भाई।
पी होवैं दूध उठैं खेलैं हरषाई।
दौरैं औ ऊपर को उछरैं सब भाई।१८५।

लोटैं जब आंगन में चारौं सुखदाई।
जैसे बेलन लुढ़काय देंय कोइ भाई।
आंखैं करि लेवैं बन्द न बोलैं भाई।
फिरि ढनगि के एकै जगह पै आवैं भाई।
उठि बैठैं औ मुसक्यावैं चारौं भाई।१९०।

क्या चरित करत नित नये नये सव भाई।
पृथ्वी व्याकुल हो पाप सहा नहिं जाई।
तब लेवैं हरि औतार देर नहिं लाई।
जब बाढ़े दैत्य क वंश सुनो चितलाई।
तब उनका करैं संहार जगत सुख पाई।१९५।

जब कई होंय संघटन औतरें आई।
सुर मुनि चर औ अचर सुखी हों भाई।
राम स्वयं सरकार भरत जी विष्णु अंश हैं भाई।
लखन शेष को अंश शत्रुहन शम्भु अंश सुखदाई।
संसार उधारन हेतु आये सब भाई।२००।

यह जानै सकल जहान जगत यश छाई।
श्री जनक धाम का हाल यही है भाई।
जहाँ प्रगटीं जगत की मातु जानकी माई।
ऐसे करैं बाल चरित्र सबन सुखदाई।
बसि इतने में लेव जानि कहौं का भाई।२०५।

मथुरा में प्रगटे जाय कृपानिधि भाई।
तहँ कीन्ही लीला अधिक वरनि को पाई।
बालापन में बहु असुरन मारयो भाई।
नाना विधि लीला करी रह्यौ यश छाई।
श्री राधे जी का बाल चरित सुखदाई।२१०।

रुक्मिणी चरित्र विचित्र जानिये भाई।
श्री रामानन्द क बाल चरित्र लखिपाई।
गौराङ्ग महाप्रभु बाल चरित्र देखाई।
होवैं चरित्र नित नये नये सुखदाई।
सुर मुनि कहि सकते नहीं कहौं का भाई।२१५।

सब प्रेम पन्थ परि भूलि जात हैं आई।
तन मन की सुधि नहिं रहै कौन बतलाई।
यह दस चरित्र पवित्र मेरे मन भाई।
दस दिन देखौ मैं एक एक सुखदाई।
बरदान सबै सुर मुनिन दीन मोहिं भाई।२२०।

तब से नित देखौं एक एक हरषाई।
जो बाल चरित्र को पाठ करै नित भाई।
तन मन को करै एकाग्र प्रेम उर आई।
सो भब वन्धन से छूटि जाय सुख पाई।
थोड़े में दीन लिखाय अकथ है भाई।२२५।

सुर मुनि जिनका करैं भजन चित्त लाई।
भीखा की सुनिये अर्ज सबै जन भाई।
मैं बाल चरित्र में मस्त रहत हौं भाई।
प्रेमिन के पाठ के हेतु तुम्हैं बतलाई।
पढ़िहै सुनिहैं ये चरित्र हिया हुलसाई।२३०।

दोहाः- दश चरित्र जे जन पढ़ैं दशों शान्त ह्वै जाँय।
पांच चोर गुण तीन मन, माया दीन बताय।।
भीखा भीख यही चह्यौ दीन कृपानिधि जान।
पढ़ा नहीं मैं हूँ कछू, बाल चरित मन मान।।
संतरूप हरि अवतरहिं, हरैं धरनि को भार।
भीखा हरि के भजन बिन, सबै दिसन अंधियार।।
भीखा सुमिरन सार है, और कछू नहिं सार।
या से हरि सुमिरन करो, मानो वचन हमार।।
भीखा वै कैसे जियैं, जिन्हैं न दरशन होंय।
जैसे जल बिन मीन गति, देंय प्राण को खोय।५।

मुरदा उनको जानिये, फंसे कामना कीच।
खाय तमाकू थूकिये, उनके मुख हैं नीच।।
पीक दान वा को कहत, नीचे धरा जो जाय।
ऊपर ते थूकैं सबै, पान तमाकू खाय।।
अबहीं तो चेतैं नहीं, सोवैं पांव पसार।
या को लेखा होयगो, साहब के दरबार।।
गर्भ कि बात बिसरि गये, देवै कौन जवाब।
यम उनको ऐसे धुनैं, जैसे बनै कवाब।।
गुदा इन्दिरी द्वार दोउ, उनके मुख से नीक।
मल औ मूत्र को त्यागि दें, तन ह्वै जावै ठीक।१०।

मानुष का तन पाइके, हरि से करै न प्रीति।
नाम की रीति को जानि ले, ह्वै जावै परतीति।।
हारि जाव जब यहाँ पर, वहाँ न पावो जीति।
भीखा के इस वचन को, मानि लेव दृढ़ भीति।।
भीखा हरि के भजन बिन, वृथा जानिये देह।
अपना कारज नहिं सरयो, जरि के ह्वै गई खेह।।

भीखा हरदम हरि लखै, ता को प्रेमी मान।
नाहीं तो जन्मै मरै, होवै नहिं सुख जान।१४।

२५ ।। श्री हरखू जी ।।

कीर्तनः- सियाराम कहौ प्रिया श्याम कहौ रमा विष्णु कहौ हर्षाई जी।
सीता राम कहौ राधे श्याम कहौ श्यामा श्याम कहौ हर्षाई जी।
सीता रमन कहौ राधे रमन कहौ लक्ष्मी रमन कहौ हर्षाई जी।
सीता पती कहौ राधे पती कहौ लक्ष्मी पती कहौ हर्षाई जी।
श्री रघुपति कहौ श्री यदुपति कहौ श्री श्रीपति कहौ हर्षाई जी।५।

रघुनाथ कहौ यदुनाथ कहौ विश्वनाथ कहौ हर्षाई जी।
किरपाल कहौ दीनदयाल कहौं जगपाल कहौ हर्षाई जी।
दीनानाथ कहौ सुरनाथ कहौ सब के नाथ कहौ हर्षाई जी।
दया सागर कहौ करुणा सागर कहौ गुण आगर कहौ हर्षाई जी।
नट नागर कहौ गुणसागर कहौ सुखसागर कहौ हर्षाई जी।१०।

कृपा सिन्धु कहौ दीन बन्धु कहौ करुणा सिन्धु कहौ हर्षाई जी।
श्री राम कहौ घनश्याम कहौ अभिराम कहौ हर्षाई जी।
सुखधाम कहौ बलिराम कहौ गुण ग्राम कहौ हर्षाई जी।
श्री राम कहौ श्री श्याम कहौ जय राम कहौ हर्षाई जी।
गुणवन्त कहौ औ अनन्त कहौ भगवन्त कहौ हर्षाई जी।१५।

राधे कृष्ण कहौ गोपी कृष्ण कहौ श्री कृष्ण कहौ हर्षाई जी।
श्री नाथ कहौ सीता नाथ कहौ गोपी नाथ कहौ हर्षाई जी।
सिया वर तो कहौ राधे वर तो कहौ लक्ष्मी वर तो कहौ हर्षाई जी।
सीता प्राण कहौ लक्ष्मी प्राण कहौ राधे प्राण कहौ हर्षाई जी।
श्री माधव कहौ श्री राघव कहौ श्री यादव कहौ हर्षाई जी।२०।

चाहै राघौ कहौ चाहै माधौ कहौ चाहै यादव कहौ हर्षाई जी।
रघुराई कहौ यदुराई कहौ सुखदाई कहौ हर्षाई जी।
मन मोहन कहौ गोदोहन कहौ चाहै मोहन कहौ हर्षाई जी।
चित चोर कहौ माखन चोर कहौ वर जोर कहौ हर्षाई जी।
मुरलीधर जी कहौ गिरधर जी कहौ वंशीधर जी कहौ हर्षाई जी।२५।

श्री नारायण कहौ मन भायन कहौ मुददायन कहौ हर्षाई जी।
भगवान कहौ बलवान कहौ गुणवान कहौ हर्षाई जी।

वासुदेव कहौ सुरदेव कहौ सब के देव कहौ हर्षाई जी।
दामोदर कहौ ज्ञान गूदर कहौ सब के ऊपर कहौ हर्षाई जी।
जय नाथ कहौ हरि नाथ कहौ सब के नाथ कहौ हर्षाई जी।३०।

ब्रज चन्द कहौ आनन्द कन्द कहौ सुख कन्द कहौ हर्षाई जी।
परमानन्द कहौ ब्रह्मानन्द कहौ नित्यानन्द कहौ हर्षाई जी।
रामानन्द कहौ अनन्तानन्द कहौ योगानन्द कहौ हर्षाई जी।
सुखानन्द कहौ भावानन्द कहौ प्रेमानन्द कहौ हर्षाई जी।
हरियानन्द कहौ सर्वानन्द कहौ अखण्डानन्द कहौ हर्षाई जी।३५।

सहजानन्द कहौ शिवानन्द कहौ राघवानन्द कहौ हर्षाई जी।
श्री विष्णु कहौ श्री कृष्ण कहौ चहै कृष्ण कहौ हर्षाई जी।
नन्दलाल कहौ यसुदालाल कहौ देवकी लाल कहौ हर्षाई जी।
नन्द नन्दन कहौ यशुदा नन्दन कहौ यशुमति नन्दन कहौ हर्षाई जी।
वसुदेव नन्दन कहौ देवकी नन्दन कहौ बृज के चन्दन कहौ
हर्षाई जी।४०।

कौशिल्या नन्दन कहौ सुमित्रा नन्दन कहौ कैकेयी नन्दन कहौ हर्षाई जी।
कौशिल्या लाल कहौ कैकेयी लाल कहौ सुमित्रा लाल कहौ हर्षाई जी।
राघव जी कहौ माधव जी कहौ यादव जी कहौ हर्षाई जी।
श्री स्वामी कहौ अन्तर्यामी कहौ सब के स्वामी कहौ हर्षाई जी।
गोपेश्वर कहौ महेश्वर कहौ रामेश्वर कहौ हर्षाई जी।४५।

जगन्नाथ कहौ द्वारिकानाथ कहौ बद्रीनाथ कहौ हर्षाई जी।
जगदीश कहौ द्वारिकाधीश कहौ सबके ईश कहौ हर्षाई जी।
राघो वाय भी कहौ कृष्णा वाय भी कहौ विष्णु वाय भी कहौ हर्षाई जी।
करतार कहौ सरकार कहौ सुखसार कहौ हर्षाई जी।
जगदाधार कहौ साकार कहौ निराकार कहौ हर्षाई जी।५०।

निराधार कहौ सर्वाधार कहौ सब से न्यार कहौ हर्षाई जी।
सर्गुण कहौ चाहै निर्गुण कहौ चहै सब गुण कहौ हर्षाई जी।
ज्ञानी कहौ चाहै ध्यानी कहौ चाहै बानी कहौ हर्षाई जी।
अहं ब्रह्म कहौ ॐ ब्रह्म कहौ सोऽमं ब्रह्म कहौ हर्षाई जी।
अहं अस्मि कहौ ब्रह्म अस्मि कहौ सोऽमं अस्मि कहौ हर्षाई जी।५५।

शिवोऽमं भी कहो रां बीज कहौ क्लीं बीज कहौ हर्षाई जी।
राम ब्रह्म कहो विष्णु ब्रह्म कहौ कृष्ण ब्रह्म कहौ हर्षाई जी।
भरिपूर कहौ सब से दूर कहौ सब का नूर कहौ हर्षाई जी।
अनहद नाद कहौ घननाद कहौ सब की नाद कहौ हर्षाई जी।
वसुदेव प्यारा कहौ देवकी प्यारा कहौ सब का प्यारा कहौ हर्षाई जी।६०।

नन्द प्यारा कहौ यशुमति प्यारा कहौ यशुदा प्यारा कहौ हर्षाई जी।
कौशिल्या प्यारा कहौ कैकेयी प्यारा कहौ सुमित्रा प्यारा कहौ हर्षाई जी।
दशरथ प्यारा कहौ औ दुलारा कहौ सब के ढारां कहौ हर्षाई जी।
मधुसूदन कहौ मद मूँदन कहौ भव पोखन कहौ हर्षाई जी।
प्राण नाथ कहौ दीना नाथ कहौ भोलानाथ कहौ हर्षाई जी।६५।

सर्वस्व कहौ सब तत्व कहौ निःतत्व कहौ हर्षाई जी।
एक रंगी कहौ सव रंगी कहौ नहिं रंगी कहौ हर्षाई जी।
भीतर है कहौ बाहेर है कहौ सब में है कहौ हर्षाई जी।
रेफ बिन्दु कहौ अर्ध्द चन्द्र कहौ नाद विन्दु कहौ हर्षाई जी।
राम नाम कहौ विष्णु नाम कहौ कृष्ण नाम कहौ हर्षाई जी।७०।

बनवारी कहौ गिरिवर धारी कहौ औ भिखारी कहौ हर्षाई जी।
मुरली धारी कहौ वंशीधारी कहौ सुखकारी कहौ हर्षाई जी।
शंखधारी कहौ चक्रधारी कहौ गदाधारी कहौ हर्षाई जी।
धनुष धारी कहौ गेंद धारी कहौ पुष्पधारी कहौ हर्षाई जी।
बाराह कहौ नरसिंह कहौ चाहै बावन कहौ हर्षाई जी।७५।

कच्छप कहौ चाहै मच्छ कहौ सब से स्वच्छ कहौ हर्षाइ जी।
भृगुनाथ कहौ मुनि नाथ कहौ ऋषि नाथ कहौ हर्षाई जी।
गिरिवर नाथ कहौ बंशीनाथ कहौ मुरलीनाथ कहौ हर्षाई जी।
बलधाम कहौ सुखधाम कहौ शोभाधाम कहौ हर्षाइ जी।
मन हरन कहौ दुःख हरन कहौ सुख करन कहौ हर्षाई जी।८०।

सृष्टि कर्त्ता कहौ पालन कर्त्ता कहौ लय कर्त्ता कहौ हर्षाई जी।
बलवीर कहौ रणधीर कहौ सब से बीर कहौ हर्षाई जी।
यदुवंशी कहौ रघुवंशी कहौ चन्द्र वंशी कहौ हर्षाई जी।
भानु वंशी कहौ अग्नि वंशी कहौ ग्वाल वंशी कहौ हर्षाई जी।
श्रीं बीज कहौ ह्रीं बीज कहौ ल्रीं बीज कहौ हर्षाई जी।८५।

नारायण कहौ नरनारायण कहौ महानारायण कहौ हर्षाई जी।
श्री गौराङ्ग कहौ जै गौराङ्ग कहौ गौराङ्ग कहौ हर्षाई जी।
कृष्ण चैतन्य कहौ सब में सन्य कहौ परसन्य कहौ हर्षाई जी।
हरे राम कहौ हरेश्याम कहौ हरे कृष्ण कहौ हर्षाई जी।
जै कृष्ण कहौ हे कृष्ण कहौ कृष्ण कृष्ण कहौ हर्षाई जी।९०।

राम रघुपति कहौ कृष्ण यदुपति कहौ रुक्मिणी पति तो कहौ हर्षाई जी।
शेषसाई कहौ गरुड़ के साई कहौ सव के साईं कहौ हर्षाई जी।
ॐ राम कहौ ॐ श्याम कहौ ॐ ॐ कहौ हर्षाई जी।
ॐ सोऽहं कहौ ॐ सोऽहं कहौ सोऽहं सोऽहं कहौ हर्षाई जी।
जानकी बल्लभ कहौ सियाबल्लभ कहौ सीता बल्लभ कहौ हर्षाइ जी।

राधे बल्लभ कहौ श्यामा बल्लभ कहौ प्रिया बल्लभ कहौ हर्षाइ जी।
राधा स्वामी कहौ सीता स्वामी कहौ लक्ष्मी स्वामी कहौ हर्षाई जी।
राम स्वामी कहौ विष्णु स्वामी कहौ कृष्ण स्वामी कहौ हर्षाई जी।
राम कृष्ण कहौ कृष्ण राम कहौ विष्णु राम कहौ हर्षाइ जी।
राम विष्णु कहौ कृष्ण विष्णु कहौ विष्णु कृष्ण कहौ हर्षाई जी।१००।

महिदेव कहौ सुर देव कहौ सब के देव कहौ हर्षाई जी।
ररंकार कहौ रंकार कहौ रा रा कार कहौ हर्षाई जी।
शम्भु कहौ महा शम्भु कहौ श्री शम्भु कहौ हर्षाई जी।
श्री शक्ती कहौ महा शक्ती कहौ सब की शक्ती कहौ हर्षाइ जी।
अकाल कहौ सब काल कहौ प्रणतपाल कहौ हर्षाई जी।१०५।

श्री मंगल कहौ जय मंगल कहौ फिर मंगल कहौ हर्षाई जी।
भुवनेश्वर कहौ सब के ईश्वर कहौ महा ईश्वर कहौ हर्षाई जी।
बजरंग कहौ नहिं अंग कहौ सर भंग कहौ हर्षाई जी।
पावन कहौ जग पावन कहौ महा पावन कहौ हर्षाइ जी।
श्री गुरू कहौ वाह गुरू कहौ सब के गुरू कहौ हर्षाई जी।११०।

साहेब कहौ श्री साहेब कहौ सब के साहेब कहौ हर्षाई जी।
दाता कहौ जग दाता कहौ सब के दाता कहौ हर्षाई जी।
खालिक कहौ चाहे मालिक कहौ सब के मालिक कहौ हर्षाइ जी।
आहूत कहौ लाहूत कहौ हा हूत कहौ हर्षाई जी।
ऊदासी कहौ सन्यासी कहौ सब के पासी कहौ हर्षाई जी।११५।

वैरागी कहौ औ त्यागी कहौ बड़भागी कहौ हर्षाई जी।
सत्यनामी कहौ सब के स्वामी कहौ अन्तरयामी कहौ हर्षाई जी।
निर्मला कहौ सब में मिला कहौ सब का भला कहौ हर्षाई जी।
कबीर पन्थी कहौ दादू पन्थी कहौ सब पन्थी कहौ हर्षाई जी।
आपा पन्थी कहौ गोरख पन्थी कहौ रैदास पन्थी कहौ हर्षाई जी।१२०।

ब्रह्मचारी कहौ औ अचारी कहौ जगधारी कहौ हर्षाई जी।
गोसाई कहौ जग के साईं कहौ और साईं कहौ हर्षाई जी।
करम हंस कहौ परम हंस कहौ चाहे हंस कहौ हर्षाई जी।
ज्ञानी कहौ महा ज्ञानी कहौ विज्ञानी कहौ हर्षाई जी।
संत कहौ श्री संत कहौ जय संत कहौ हर्षाई जी।१२५।

सब मंत्र कहौ सब यंत्र कहौ सब तंत्र कहौ हर्षाई जी।
बौध्दी कहौ चाहै जैनी कहौ दयानन्दी कहौ हर्षाई जी।
हरिव्यासी कहौ सब में वासी कहौ सुखरासी कहौ हर्षाई जी।
राधा स्वामी कहौ नारायण स्वामी कहौ ईसर स्वामी कहौ हर्षाई जी।
गणेश कहौ औ दिनेश कहौ औ सुरेश कहौ हर्षाई जी।१३०।

काल भैरव कहौ वटुक भैरव कहौ चाहै भैरव कहौ हर्षाई जी।
सर्वोत्तम कहौ पुरुषोत्तम कहौ नरोत्तम कहौ हर्षाई जी।
ऋषी कहौ चाहै मुनी कहौ चाहै गुनी कहौ हर्षाई जी।
फुरदेव कहौ सुरदेव कहौ सब के देव कहौ हर्षाई जी।
दुर्गा कहौ श्री दुर्गा कहौ जय दुर्गा कहौ हर्षाई जी।१३५।

काली कहौ भद्र काली कहौ महा काली कहौ हर्षाई जी।
उमा कहौ सरस्वती कहौ चाहै शारद कहौ हर्षाई जी।
माई कहौ जय माई कहौ महा माई कहौ हर्षाई जी।
माया कहौ योग माया कहौ महा माया कहौ हर्षाई जी।
भरथ लाल कहौ लखन लाल कहौ शत्रुहन लाल कहौ हर्षाई जी।१४०।

ऋषभ देव कहौ श्री रंग कहौ वाला जी कहौ हर्षाई जी।
प्रद्युम्न कहौ अनिरुध्द कहौ संकर्षण कहौ हर्षाई जी।
वीरभद्र कहौ चाहै चन्द्र कहौ औ नक्षत्र कहौ हर्षाई जी।
ग्रामदेव कहौ महिदेव कहौ कुल देव कहौ हर्षाई जी।
अष्ट सिध्दि कहौ नव निध्द कहौ अन्नपूरना कहौ हर्षाई जी।१४५।

सावित्री कहौ गायत्री कहौ इन्द्राणी कहौ हर्षाई जी।
कला कहौ महा कला कहौ सब का भला कहौ हर्षाई जी।
चतुरानन कहौ पंचानन कहौ औ षड़ानन कहौ हर्षाई जी।
वरुण कहौ औ कुबेर कहौ दिगपाल कहौ हर्षाई जी।
अश्वनी कहौ धन्वन्तरि कहौ लुकमान कहौ हर्षाई जी।१५०।

आशीर्वाद कहौ एवमस्तु कहौ वरंब्रूहि कहौ हर्षाई जी।
अल्ला कहौ बिसमिल्ला कहौ अबदुल्ला कहौ हर्षाई जी।
खोदा कहौ सब से जुदा कहौ सब में मुदा कहौ हर्षाई जी।
नबी कहौ चाहै रबी कहौ चाहै सबी कहौ हर्षाई जी।
मुहम्मद कहौ चाहै ईसा कहौ चाहै नानक कहौ हर्षाई जी।१५५।

सब नाम कहौ सब रूप कहौ निष्काम कहौ हर्षाई जी।
सब में आप कहौ सब आप कहौ धनि आप कहौ हर्षाई जी।
रोजा भी रहौ नेवाज़ करौ कुरान पढ़ौ हर्षाई जी।
तस्वी फेरो सदा बांग टेरो सदा रहम हेरो हर्षाई जी।
हरदम याद करो दोज़ख़ न परो होवै भिशत खरो हर्षाई जी।१६०।

माला जाप करो मुख से नाम ररौ चाहै पाठ करौ हर्षाई जी।
गुणगान करौ स्वर तान भरौ नहिं मान करौ हर्षाई जी।
ठाकुर सेवा करो नित नेम करौ तन मन प्रेम करौ हर्षाई जी।
जब भोग धरौ राम मन्त्र पढ़ौ फिर ध्यान करौ हर्षाई जी।
राम विष्णु सटे संग कृष्ण छटे सब खात डटे हर्षाई जी।१६५।

जब खाय चुकैं जल पाय चुकैं सुख पाय चुकैं हर्षाई जी।
तब विनय करौ हरि पाप हरौ मोहिं कीजै खरो हर्षाई जी
हरखू मूर्ख कहै यह गारी गहै औ सब की सहै हर्षाई जी।
तब दरसैं होकर परसैं हो हिय हरसै हो हर्षाई जी।१६९।
यह नेम से हो नहिं टेम से हो बस प्रेम से हो हर्षाई जी।१७०।

दोहाः- राम विष्णु औ कृष्णजी, सुर मुनि दर्शन देंय।
नित प्रति एते नाम जे, तन मन प्रेम से लेंय।।
हरखू दुविधा छोड़ि कै, भजन करै जो कोय।
अँधरा जिमि लकुटी गहै, लेय बाद को टोय।।
हरखू हरि सुमिरन बिना, कोइ न आवै काम।

मातु पिता भ्राता बहिन, दुहिता सुत धन धाम।।
सब जहँ के तहँ ही रहैं, जब यम पकरैं आय।
हरखू तब तुम का करौ, कौन बचावै धाय।।
सतगुरु से उपदेश लै, नाम भजौ सुख पाव।
हरखू हरि किरपा करैं, हरि के पासै जाव।५।

हरखू हरि के भजन ते, हटैं सबै तन पाप।
दैहिक दैविक भौतिकहु, ऐसा नाम प्रताप।६।

२६ ।। श्री पाताञ्जलि जी ।।

दोहाः- परमारथ पथ है सही, सूरति शब्द की जाप।
पाताञ्जलि तुमसे कहैं, निर्गुण सर्गुण छाप।१।
पाताञ्जलि सत्पुरुष से, मिलत मार्ग यह जान।
सुलभ रास्ता और कोइ, या से है नहिं मान।२।
अजपा जाप खुलै जबै, मुक्ति भक्ति मिलि जाय।
पाताञ्जलि जियते लखै, बरनत नहिं सेराय।३।
पाताञ्जलि गुरु बचन पर, जाहि होय विश्वास।
सत्य सत्य मानो बचन, सो पहुँचै हरि पास।४।

२७ ।। श्री श्यामा जी ।।

दोहाः- कार्य्य सुफ़ल सब ह्वै गयो, तब आयन महाराज।
नित प्रति दर्शन देत हैं, श्री राधे ब्रजराज।१।

राग अध्दाः- बजै दोउ भाइन पग पैजनियां।
श्याम गौर सुन्दर छवि सागर पहिने कटि करधनियां।
मोर मुकुट शिर कानन कुण्डल नाक में नाशामनियां।
खेलत नन्द के आंगन माहीं बहु बालक औ धनियां।
देखत रूप चराचर मोहैं दोउ कुँवरन छवि जनियां।५।

सुर मुनि नित दर्शनं को आवैं तन मन प्रेम में सनियां।
दौरत हंसत घुमत दै तारी बोलत मृदुल बचनियां।
लीला अगम शेष मुख थकि गये जिनके सहस रसनियां।
रूठत मचलि जात भुइँ लोटत लेत यशोमति कनियां।
धन्य धन्य ब्रज बासी हैं सब धन्य नन्द नंदरनियां।१०।

रोम रोम से नाम खुलो है डोलत नहिं अब बेनियां।
हरदम झांकी नैनन सन्मुख भयो सुफ़ल तन बनियां।
पांचौ चोर तीनि गुण माया मन मरि ह्वै गयो पनियां।
भीतर बाहर एकै दरशै है यह अकथ कहनियां।
सतगुरु बिन कोइ जानि न पावै पढ़ि सुनि करत बखनियां।
श्यामा कहैं दीन ह्वै जावै लादै नाम लदनियां।१६।

दोहाः- सतगुरु आप की कृपा अब मो पर ह्वै गई पूर।
नाम रूप परकाश लय, है पासै नहिं दूर।।

गज़लः- सब में व्यापक हैं वह चित चोर कहाने वाले।
सन्मुख रहते हैं सदा मुरली बजाने वाले।
रूप छवि कौन कहै वह तो हैं उपमा उपमेंय।
आप ही आप हैं आपै को बनाने वाले।
जैसा चहते हैं वैस रूप बना लेते हैं।५।

यही मुश्किल है बड़ी पार को पाने वाले।
स्वामी सेवक के भाव से मिला आनन्द हमें।
दुःख के बन्धन को मेरे तोड़ि बहाने वाले।
साथ चोरों क छोड़ि ढूँढ़ा तभी हमको मिले।
देखा तब आप ही में आप समाने वाले।१०।

बिना सतगुरु के हरि से मिलना ज़रा मुश्किल है।
पता उन्हीं से मिलै भेद बताने वाले।
श्यामा कहेती हैं बिना चाभी खुलै कैसे ताला।
मानुष तन पाय हाय मुफ़त गँवाने वाले।१४।

राग अद्धाः- दशरथ के ललंा चित लीन्हों चुराय।
रूप अनूप कि उपमा को कहै देखत ही बनि आय।
बिखुरे बाल चहूँ दिशि सोहैं झीगुंलि तन फहराय।
किलकैं उठैं चहूँ दिशि खेलैं मातन हिये हुलसाय।
कर से कर पकरैं सब हिलि मिलि खेलैं घुमनी पराय।५।

कूदैं हँसै सबै आँगन में तारी खूब बजाय।
पगन पौटिया बाजैं प्यारी कानन शब्द समाय।

सुर मुनि दरशन रोज़ करत तहँ मानुष रूप बनाय।
गुरू वशिष्ठ राजा जी दशरथ बैठे तहं हर्षाय।
बाल नवीन प्रवीन सबै हैं श्याम गौर रंग भाय।१०।

राम भरथ रंग श्याम सुहावन शान्ति रूप सुखदाय।
लखन शत्रुहन गौर रंग अति चंचलता अधिकाय।
खम्भन के चारौं दिशि घूमैं झांकैं हँसै ठठाय।
ताकैं छिपैं ओट खम्भन के नैन मूंदि मुसक्याय।
प्रेम कि प्रीति की रीति अगम यह सुधि बुधि जात हेराय।
श्यामा कहैं अवध वासी धनि दरशन करत अघाय।१६।

२८ ।। श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास जी ।।

पदः- अमरपुरी से आई यह धुनि कहत जिसे शिव वानी।
महा शून्य को वेधन करि कै शून्य में आय समानी।
शून्य से आय गगन में पहुँची ररंकार फरियानी।
गगन से त्रिकुटी पर आसन कियो बिधि हरि शिव जप ठानी।
रेफ बिन्दु हैं राम जानकी कहत देव मुनि ज्ञानी।५।

जानै योगी इस रहस्य को चित एकाग्र से ध्यानी।
चमकै तेज कहै को मुख से है यह अकथ कहानी।
ख्याल करै थोड़े दिन तन मन प्रेम लगाय के प्रानी।
दुइ दल कमल के ऊपर देखै बिन अधार सुख दानी।
अनहद बाजा बहु बिधि बाजैं होय मस्त मन मानी।१०।

एक अंश त्रिकुटी से आयो कण्ठ मध्यमा बानी।
कण्ठ से हिरदय में फिरि आयो पैशन्ती भइ बानी।
हिरदय से फिर नाभि में आयो परा बानि कहलानी।
जिव्हा पर वैखरी बिराजै कहै मृदुल कटु बानी।
सार असार बतावन के हित यह बानी हरि ठानी।१५।

नाहीं तो जानत कोइ कैसे धनि धनि सारंग पानी।
रोम रोम ते ररंकार धुनि सन्मुख प्रभु महरानी।
पच्छिम दिशि की खिड़की खुलि जाय मुक्ति भक्ति गुणखानी।
विहंग मार्ग तै होय छिनै में पहुँचि जाय तब प्रानी।
ध्यान समाधि करै को सुमिरन स्थिर भइ तहँ वानी।२०।

आवागमन क काम रहा नहिं राम रूप भे जानी।
बिना गुरु के मिलै न यह पद तुम से सांच बखानी।
श्री नरहरियानन्द गुरू मम जिन किरपा हम जानी।
तुलसी दास कहैं सुनिये सुत हरि मर्य्यादा ठानी।२४।

पदः- प्रेम भाव से मुक्ति भक्ति मिलि जाय देर नहि लागै।
सुर मुनि आयके करैं बत कही राम नाम धुनि जागै।
काम क्रोध मद लोभ मोह माया तीनो गुण त्यागै।
हर दम हरि को देखै सब दिशि सबै कामना भागै।
जियतै में जो जानी प्राणी छूटै द्वैत के धागै।५।

दीन भाव ह्वै गुरु से जानै सूरति शब्द में तागै।
पूरा शूर सन्त तेहि जानौ चरन कमल अनुरागै।
तुलसीदास कहैं सुनिये सुत नाम के रंग जो पागै।८।

दोहाः- तुलसी हरि के भजन बिन, मिटै नहीं दुख द्वन्द।
जब तिरगुन के परे हो, तब छूटै यम फन्द।।
हर दम सुमिरन होय जब, छूटि जाय भ्रम फन्द।
तुलसी सन्मुख रहैं हरि, करुणा निधि सुख कन्द।।
निर्गुण केवल बोध हित, सर्गुण आनन्द कन्द।
तुलसी दोनों एक हैं, समुझे नहिं मतिमन्द।।
निर्गुण सर्गुण बनत हैं, सर्गुण निर्गुण होय।
तुलसी लीला अगम है, पार न पावै कोय।५।

२९ ।। श्री राधा जी ।।

दोहाः- आठ चारि ढाई सुनि लीजै। शिष्य तुम्हार भये गुनि लीजै।
दीन बताय ठीक तुम युक्ती। पाइ गये मुक्ती औ भक्ती।
दयाल दास रुस्तम औ श्यामा। दर्शन इनको हों बसुयामा।
ऐहैं कृष्णदास पय हारी। कहिहैं हरि चरित्र सुखकारी।
तब यह चरित समापति होई। भरिहैं प्रभु यश तत्वनि चोई।५।

३० ।। श्री भृगु जी ।।

दोहाः- षट् दल कमल में चक्र जो, तहँ पर जा को थान।
चक्र एक है अष्ट दल, कमल में पा को जान।१।

था है बारह दल कमल, एक चक्र तहँ मान।
जा पा था के भेद को, जानहिं पुरुष महान।२।

पदः- प्राणायाम व जड़ समाधि षट् मुद्रा हों पूरब से।१।
पांच प्राण मिलि एक होंय, चक्कर करि जांय पच्छिम से।२।
पहूँचि जाँय साकेत पुरी को, सीधे तब उत्तर से।३।
असुर योगिनी चौंसठि, बावन बीर मरैं दक्षिण से।४।

पदः- ब्रह्मा का बरदान प्रथम हो, दूजे विष्णु को जानो।१।
तीजे शिव जी संग में जावैं, मिलि जाय ठीक ठिकानो।२।
चारि रूप से ब्रह्मा तन में, छा से शिव को जानो।३।
चारि से विष्णु वास करत हैं, साधन करिकै मानो।४।

दोहाः- जा के ढिग से जापकर पा ढिग पहुँचै जाय।
पा के पास से चलै फिरि, था ढिग पहुँचै धाय।१।
था के संग में जाय तब, सत्य लोक दरशाय।
थमि जावै सो वहीं पर, राम रूप बनि जाय।२।

३१ ।। श्री हरिभजनदास जी ।।

कीर्तनः- नमो राम नमो कृष्ण नमो विष्णु नमो नमो।
नमो सीता नमो राधा नमो लक्ष्मी नमो नमो।
नमो शंकर नमो ब्रह्मा नमो गणपति नमो नमो।
नमो गिरिजा नमो शारद नमो सरस्वती नमो नमो।
नमो फणपति नमो खगपति नमो धनपति नमो नमो।५।

नमो काली नमो दुर्गा नमो ज्वाला नमो नमो।
नमो नारद नमो भैरव नमो हनुमति नमो नमो।
नमो नरहरि नमो शंकर नमो बावन नमो नमो।
नमो कच्छप नमो मच्छव नमो लोमश नमो नमो।
नमो रघुपति नमो यदुपति नमो भृगुपति नमो नमो।१०।

नमो यशुदा नमो देवकी नमो कुन्ती नमो नमो।
नमो दिग्गज नमो पृथ्वी नमो सुरपति नमो नमो।
नमो द्रुपदी नमो तारा नमो अहिल्या नमो नमो।
नमो अष्ट सिध्दि नमो नौ निध्दि नमो अन्नपूर्णा नमो नमो।
नमो श्री ध्वज नमो बसुदेव नमो दशरथ नमो नमो।१५।

नमो भरथै नमो लखनै नमो शत्रुहन नमो नमो।
नमो बलदेव नमो जयदेव नमो वीरभद्र नमो नमो।
नमो कर्मा नमो कुब्जा नमो सेवरी नमो नमो।
नमो मुर्बी नमो पदमा नमो हुलसी नमो नमो।
नमो कौशिल्या नमो कैकेयी नमो सुमित्रा नमो नमो।

नमो उर्मिला नमो माण्डवी नमो श्रुतिकीर्ति नमो नमो।
नमो रुक्मिणी नमो सुभद्रा नमो श्री शची नमो नमो।
नमो अनसूया नमो अरुन्धती नमो सत्यभामा नमो नमो।
नमो रामानुज नमो शंकराचार्य नमो रामानन्द नमो नमो।
नमो कबीर नमो रैदास नमो नानक नमो नमो।

नमो गौराङ्ग नमो नित्यानन्द नमो ज्ञानेश्वर नमो नमो।
नमो बामदेव नमो नरसी नमो तुलसी नमो नमो।
नमो दादू नमो सुन्दर नमो जगजीवन नमो नमो।
नमो ईशा नमो मुहम्मद नमो वुध्द नमो नमो।
नमो पानी नमो अग्नी नमो वायू नमो नमो।

नमो आकाश नमो पाताल नमो सब राग नमो नमो।
नमो सूरज नमो चन्दर नमो उड़गन नमो नमो।
नमो संकर्षण नमो प्रद्युम्न नमो अनिरुद्ध नमो नमो।
नमो श्रीब्यास नमो षटमुख नमो शुकदेव नमो नमो।
नमो भीषम नमो कर्णौ नमो द्रोणाचार्य्य नमो नमो।

नमो प्रह्लाद नमो श्री ध्रुव नमो श्री बलि नमो नमो।
नमो श्रीभुशुण्डी नमो अर्जुन नमो धर्म्मराज नमो नमो।
नमो अगस्त नमो बिश्वामित्र नमो ऋषभदेव नमो नमो।
नमो गोरख नमो भर्तृहर नमो गोपी चन्द नमो नमो।
नमो राघवानन्द नमो वशिष्ठ नमो अंगिरस नमो नमो।

नमो अम्बरीष नमो मोरध्वज नमो भगीरथ नमो नमो।
नमो अत्री नमो यमदग्नि नमो दुर्वासा नमो नमो।
नमो मन्दालसा नमो सतरूपा नमो दमयन्ती नमो नमो।
नमो हरिश्चन्द्र नमो दधीच नमो श्री मनु नमो नमो।
नमो अंगद नमो सुग्रीव नमो जामवन्त नमो नमो।

नमो नल जी नमो नीलै नमो दधिवल नमो नमो।
नमो रावण नमो कुम्भकर्ण नमो विभीषण नमो नमो।
नमो मन्दोदरी नमो सुलोचना नमो त्रिजटा नमो नमो।
नमो दन्तबक्र नमो शिशुपाल नमो कंसै नमो नमो।
नमो हिरण्याक्ष नमो हिरण्यकश्यप नमो वृत्रासुर नमो नमो।५०।

नमो श्री अंजनी नमो श्री रघु नमो श्री दिलीप नमो नमो।
नमो श्री जय नमो श्री बिजय नमो श्री सनकादिक नमो नमो।
नमो नारायण नमो नरनारायण नमो परनारायण नमो नमो।
नमो नन्दी नमो गोबर्द्धन नमो ऊधो नमो नमो।
नमो कल्पवृक्ष नमो अक्षयबट नमो कामधेनु नमो नमो।५५।

नमो रोहिणी नमो नन्दन बन नमो स्फटिक मणि नमो नमो।
नमो श्री द्विबिद नमो श्री मयन्द नमो श्री गवाक्ष नमो नमो।
नमो गंगा नमो यमुना नमो सरयू नमो नमो।
नमो सरस्वती नमो गोमती नमो शारदा नमो नमो।
नमो नर्मदा नमो पुष्कर नमो रत्नाकर नमो नमो।६०।

नमो श्याम कर्ण नमो ऐरावत नमो राघव मच्छ नमो नमो।
नमो श्री बालि नमो खरदूषण नमो मारीच नमो नमो।
नमो ताड़ुका नमो शूर्पनखा नमो पूतना नमो नमो।
नमो गणिका नमो अजामिल नमो श्री गृद्ध नमो नमो।
नमो अश्वनी नमो धन्वन्तरि नमो लुकमान नमो नमो।६५।

नमो कौस्तुभ मणि नमो पारस मणि नमो मरकत मणि नमो नमो।
नमो शालिग्रम नमो नरवदेश्वर नमो गोमती चक्र नमो नमो।
नमो श्री बृज नमो श्री अवध नमो श्री काशी नमो नमो।
नमो जगदीश नमो बद्रीनाथ नमो रामेश्वर नमो नमो।
नमो कैलाश नमो बैकुण्ठ नमो गोलोक नमो नमो।७०।

नमो प्रियबर्त नमो श्री सगर नमो श्री नृग नमो नमो।
नमो बिन्ध्यबासिनी नमो सुन्दरी नमो पाटेश्वरी नमो नमो।
नमो श्री बाल्मीकि नमो सेवरी नमो श्री च्यवन नमो नमो।
नमो श्रीनिषाद नमो श्री श्वपच नमो श्री सधन न नमो।
नमो श्री धना नमो पीपा नमो बामदेव नमो नमो।७५।

नमो रंका नमो बंका नमो कमाल नमो नमो।
नमो सब अस्त्र नमो सब वस्त्र नमो सब भूषण नमो नमो।
नमो सब बृक्ष नमो सब फूल नमो सब फल नमो नमो।
नमो सब यन्त्र नमो सब तन्त्र नमो सव मन्त्र नमो नमो।
नमो सब दिन नमो सब तिथि नमो सब घड़ी नमो नमो।८०।

नमो सब राशि नमो सब नक्षत्र नमो सब ग्रह नमो नमो।
नमो सब योग नमो सब मास नमो सब बर्ष नमो नमो।
नमो श्री मृत्यु नमो सब दैत्य नमो सब युग नमो नमो।
नमो गुरु देव नमो महि देव नमो मनदेव नमो नमो।
नमो सब वर्ण नमो सब धर्म नमो सब कर्म नमो नमो।८५।

नमो सब यक्ष नमो गन्धर्व नमो किन्नर नमो नमो।
नमो सब पितृ नमो सब प्रेत नमो श्री भक्ति नमो नमो।
नमो श्री सुक्ख नमो श्री दुःख नमो श्री ज्ञान नमो नमो।
नमो श्री शान्ति नमो श्री शील नमो सन्तोष नमो नमो।
नमो सरधा नमो दाया नमो क्षमता नमो नमो।९०।

नमो श्री क्षिमा नमो श्री सत्य नमो श्री प्रेम नमो नमो।
नमो संचित नमो प्रारब्ध नमो क्रियमाण नमो नमो।
नमो विश्वास नमो परस्वार्थ नमो पुरुषार्थ नमो नमो।
नमो श्री द्वैत नमो अद्वैत नमो श्री माया नमो नमो।
नमो श्री काम नमो श्री क्रोध नमो श्री लोभ नमो नमो।९५।

नमो श्री मोह नमो अहंकार नमो श्री रात नमो नमो।
नमो सब चोर नमो सब शाह नमो सब बीर नमो नमो।
नमो श्री भूख नमो श्री प्यास नमो श्री निद्रा नमो नमो।
नमो रजगुण नमो सतगुण नमो तमगुण नमो नमो।
नमो श्री त्याग नमो वैराग्य नमो अनुराग नमो नमो।१००।

नमो श्री ध्यान नमो अनहद नमो परकाश नमो नमो।
नमो श्री शून्य नमो महाशून्य नमो साकेत नमो नमो।
नमो अष्टाङ्ग नमो हठयोग नमो राज योग नमो नमो।
नमो रंकार नमो सोऽहं नमो ओंकार नमो नमो।
नमो श्रीं बीज नमो ह्रीं बीज नमो लीं बीज नमो नमो।१०५।

नमो षट रस नमो षटऋत नमो क्लीं बीज नमो नमो।
नमो सब लोक नमो सब देश नमो सब दीप नमो नमो।
नमो सब खण्ड नमो सब भुवन नमो सब दिशा नमो नमो।
नमो उत्पति नमो पालन नमो परलय नमो नमो।
नमो सब तिथि नमो सब गिरि नमो संकल्प नमो नमो।११०।

नमो श्री बिष नमो अमृत नमो श्री क्षीर नमो नमो।
नमो सब भोग नमो सब रोग नमो संयोग नमो नमो।
नमो श्री छांह्व नमो श्री धूप नमो श्री भय नमो नमो।
नमो श्री शीत नमो श्री ऊष्ण नमो श्री आयु नमो नमो।
नमो पंच तत्व नमो पचीस प्रकृति नमो श्री वैखरी नमो नमो।११५।

नमो श्री परा नमो पैशन्ती नमो श्री मध्यमा नमो नमो।
नमो श्री श्राप नमो आशीश नमो कल्याण नमो नमो।
नमो कृष्ण पक्ष नमो शुक्ल पक्ष नमो सब अन्न नमो नमो।
नमो सब रंग नमो सत संग नमो लघुसंग नमो नमो।
नमो सब बेद नमो सब शास्त्र नमो सब पुराण नमो नमो।१२०।

नमो सब संहिता नमो सब उपनिषत नमो श्री गीता नमो नमो।
नमो श्री भागवत नमो महाभार्थ नमो वशिष्ट योग नमो नमो।
नमो बालमीकी नमो मानस नमो भक्त माल नमो नमो।
नमो विश्राम सागर नमो बृज बिलास नमो सुखसागर नमो नमो।
नमो रुक्मिणी मंगल नमो प्रेम सागर नमो गीत गोविन्द नमो नमो।१२५।

नमो ग्रन्थ साहब नमो बाइबिल नमो कुरान नमो नमो।
नमो सब ग्रन्थ नमो सब पन्थ नमो सब विद्या नमो नमो।
नमो श्री पाप नमो श्री पुण्य नमो श्री तन नमो नमो।
नमो श्री बल नमो श्री छल नमो श्री दम्म नमो नमो।
नमो सन्मान नमो सब नाम नमो सब रूप नमो नमो।१३०।

नमो सब सुर नमो सब मुनि नमो सब ऋषि नमो नमो।
नमो जल चर नमो थल चर नमो नभचर नमो नमो।
नमो हम में नमो तुम में नमो सब में नमो नमो।
कहैं हरि भजन लगी रहे लगन रहे मन मगन नमो नमो।
लखै हरि दृगन सुनै धुनि श्रवण मिटै आवागमन नमो नमो।१३५।

दोहाः- नाम हरि भजन दास मम, पढ़ा न अक्षर एक।
यही वन्दना मन बसी, फरक परै नहिं नेक।१।
पढ़ै सुनै जो प्रेम से, तिनको हो कल्याण।
कहैं हरि भजन बिनय यह, और न जानत ज्ञान।२।
होय एक रस प्रेम जब, सुर मुनि दर्शन देंय।
कहैं हरि भजन तब प्रभू, पास आपने लेंय।३।

३२ ।। श्री भगवन्त दास जी ।।

दोहाः- श्याम के सन्मुख राधिका, राधे सन्मुख श्याम।
राम के सन्मुख सिया हैं, सिया के सन्मुख राम।१।
श्री के सन्मुख विष्णु हैं, विष्णु के श्री को जान।
यह लीला सोई लखै, जा पर कृपा महान।२।

३३ ।। श्री अद्वैता चार्य्य जी कृत संकीर्तन ।।

कीर्तनः- हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे,
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे,
हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे हरे।
हरे विष्णु हरे विष्णु हरे विष्णु हरे हरे।
हरे श्याम हरे श्याम हरे श्याम हरे हरे।
नमो राम नमो राम नमो राम नमो नमो।५।

नमो कृष्ण नमो कृष्ण नमो कृष्ण नमो नमो।
नमो विष्णु नमो विष्णु नमो विष्णु नमो नमो।
नमो श्याम नमो श्याम नमो श्याम नमो नमो।
श्री राम श्री राम श्री राम हरे हरे।
सिया राम सिया राम सिया राम हरे हरे।१०।

श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण हरे हरे।
श्री विष्णु श्री विष्णु श्री विष्णु हरे हरे।
श्री श्याम श्री श्याम श्री श्याम हरे हरे।
हरे राम हरे राम हरे राम नमो नमो।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण नमो नमो।१५।

हरे विष्णु हरे विष्णु हरे विष्णु नमो नमो।
हरे श्याम हरे श्याम हरे श्याम नमो नमो।
नमो राम नमो राम नमो राम हरे हरे।
नमो कृष्ण नमो कृष्ण नमो कृष्ण हरे हरे।
नमो विष्णु नमो विष्णु नमो विष्णु हरे हरे।

नमो श्याम नमो श्याम नमो श्याम हरे हरे।
श्री राम श्री राम श्री राम नमो नमो।
श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण नमो नमो।
श्री विष्णु श्री विष्णु श्री विष्णु नमो नमो।
श्री श्याम श्री श्याम श्री श्याम नमो नमो।

हरे राम नमो राम श्री राम कहौ रे।
हरे कृष्ण श्री कृष्ण नमो कृष्ण कहौ रे।
हरे विष्णु नमो विष्णु श्री विष्णु कहौ रे।
हरे श्याम नमो श्याम श्री श्याम कहौ रे।
श्री राम हरे कृष्ण नमो विष्णु श्याम श्याम।

हरे राम नमो कृष्ण श्री विष्णु श्याम श्याम।
नमो राम श्री कृष्ण हरे विष्णु श्याम श्याम।
श्याम राम श्याम कृष्ण श्याम विष्णु श्याम श्याम।
राम श्याम कृष्ण श्याम विष्णु श्याम कहौ रे।
राम नाम कृष्ण नाम विष्णु नाम कहौ रे।

राम राम राम राम राम राम कहौ रे।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कहौ रे।
विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु कहौ रे।
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम कहौ रे।
मुक्ति भक्ति जक्ति माहिं आय भाय लहौ रे।

काम क्रोध मोह लोभ अहंकार हरौ रे।
नाम रूप लीला धामं सुनौ लखौ करौ रे।
शान्ति शील क्षिमा दया सरधा हिरदय भरौ रे।
दिव्य रूप निरखि निरखि पाप भस्म करौ रे।
नाम ध्वनी रोम रोम उठत जियत मरौ रे।

सन्तोष सत्य दीनता प्रचार जक्त करौ रे।
हानि लाभ दुःख सुक्ख परै तौ न टरौ रे।
मान अपिमान को लै प्रेम बिरह जरौ रे।
तारि सकौ औरन तब प्रथम आप तरौ रे।
प्रेम योग सिद्धि होय मूर्छि धरनि गिरौ रे।५०।

लय दशा में पहुँचि जाव शून्य माहिं परौ रे।
कभी रहौ ध्यान माहिं आगे नाहिं बढ़ौ रे।
कृष्ण लिये सखा सखी लीला करैं लखौ रे।
शर्म भर्म छूटि जाय कर्म लिखा मिट्यौ रे।
द्वैत भाव रहा नहीं वही वही सट्यौ रे।५५।

नाम जपो नाम जपो नाम माहिं खपौ रे।
मातु बहिन पुत्री सम पर त्रिया को लखौ रे।
अनहद ध्वनि मधुर मधुर श्रवण ते सुनौ रे।
कहन सुनत ते परे हैं मन ही मन गुनौ रे।
रेक टेक मानि ठानि बानि यही गहौ रे।६०।

नाम ही से सुर व मुनी दरश देत सिखौ रे।
वेद शास्त्र वाक्य नाम सार तत्व लिख्यौ रे।
जपो जपो जपो भाय जब लग जग जियौ रे।
नाम रूप चीन्ह भाय पास बास लिह्यौ रे।
राम बिष्णु कृष्ण जपौ राम विष्णु कृष्ण।६५।

तन मन करि प्रेम खपौ राम बिष्णु कृष्ण।
सीता राम राधे श्याम रमा बिष्णु जय जय राम।
सीता राम सीता राम सीता राम जय जय राम।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम जय जय राम।
रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु जय जय राम।७०।

श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम जय जय राम।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण जय जय राम।
सीता राम सीता राम सीता राम राम राम।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम राम राम।
रमा विष्णु रमा विष्णु रमा विष्णु राम राम।७५।

सीता राम सीता राम सीता राम श्याम श्याम।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण श्याम श्याम।
रमा विष्णु रमा विष्णु रमा विष्णु श्याम श्याम।
सीता राम सीता राम सीता राम राधे श्याम।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे श्याम।८०।

रमा विष्णु रमा विष्णु रमा विष्णु राधे श्याम।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम।
सीता राम सीता राम सीता राम कृष्ण कृष्ण।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम कृष्ण कृष्ण।
रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु कृष्ण कृष्ण।८५।

राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण कृष्ण कृष्ण।
सीता राम सीता राम सीता राम बिष्णु बिष्णु।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम बिष्णु बिष्णु।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण बिष्णु बिष्णु।
रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु बिष्णु बिष्णु।९०।

सीता राम सीता राम सीता राम सीता राम।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण।
रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु।
राम बिष्णु कृष्ण भजो राम बिष्णु कृष्ण।९५।

एक ही हैं द्वैत तजौ राम बिष्णु कृष्ण।
राम राम कृष्ण राम बिष्णु राम कहौ हो।
राम श्याम कृष्ण श्याम बिष्णु श्याम कहौ हो।
राम वही कृष्ण वही बिष्णु वही कहौ हो।
प्रेम भाव होय भाय तवै सुक्ख लहौ हो।१००।

राम राम राम राम राम राम कहौ हो।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कहौ हो।
बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु कहौ हो।
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम कहौ हो।
सीताराम राधे श्याम रमा बिष्णु ऊँ ऊँ।१०५।

सीताराम सीताराम सीताराम ऊँ ऊँ।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम ऊँ ऊँ।
रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु ऊँ ऊँ।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण ऊँ ऊँ।
राम राम राम राम राम राम ऊँ ऊँ।११०।

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण ऊँ ऊँ।
बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु ऊँ ऊँ।
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम ऊँ ऊँ।
ऊँ राम ऊँ श्याम ऊँ बिष्णु ऊँ ऊँ।
ऊँ हरे ऊँ नमो ऊँ श्री नमो नमो।११५।

ऊँ श्री ऊँ नमो ऊँ हरे ऊँ ऊँ।
राम बिष्णु कृष्ण कहौ राम बिष्णु कृष्ण।
मुक्ति भक्ति लीन चहौ राम विष्णु कृष्ण।
राम विष्णु कृष्ण रटौ राम विष्णु कृष्ण।
तन मन ते संग सटौ राम विष्णु कृष्ण।१२०।

ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ। यदुपति माधव मोहन श्याम।
अधम उधारन राधे श्याम। मुक्ति भक्ति के दाता राम।
दीन भाव जेहि आता राम।१२५।

सिया संग में सोहैं राम। निरखत छबि मन मोहैं राम।।
रमा बिष्णु को जपिये नाम। जग प्रति पालन जिनका काम।।
अनुपम झाँकी सीता राम। रमा विष्णु औ राधे श्याम।

एक भाव जो मानै राम। षट दर्शन सुख जानै राम।
द्वैत भाव ते सरै न काम। सबै रूप हैं सीताराम।
सब में व्यापक सब कछु राम। कृष्ण विष्णु हैं रामै श्याम।
अद्वैता चार्य्य कहैं बसुयाम। श्री गुरु ते लै जपिये नाम।
बिधि चतुरानन सम दो नाम। गुरु बिन मिलै न राम क धाम।१३६।

दोहाः- राम कृष्ण अवतार लै गुरु कीन हर्षाय।
जग हितार्थ के वास्ते, अधम तरैं करि भाय।१।
रामानन्द चार्य्य भे, बिष्णु केर अवतार।
श्री गौराङ्ग जी कृष्ण भे, जानत सब संसार।२।

रामानुजा चार्य्य भे, लछिमन जी को जान।
स्वामी शंकरा चार्य्य भे, श्री शंकर को मान।३।
आचार्य्य रूप ते बहुत भे, को गिन करै बयान।
अधम उधारन तब बने, लै श्री गुरु से ज्ञान।४।

सोरठाः-हैं मर्य्याद अनादि, मेट सकै या को कवन।
ब्रह्मा शिव सनकादि, नारद शारद अहि भवन।।

दोहाः- अद्वैता चार्य्य यह कहत हैं, मानो बचन प्रमान।
मानैं नहिं सोऊ भले, खुले न आंखी कान।१।
संकीर्तन तो बहुत हैं, थोड़ा दीन लिखाय।
तन मन प्रेम लगाय कै, करिये हरि दरसाय।२।

वार्तिकः- श्री गौराङ्ग महाप्रभु ने ओंकार ही को महावाक्य कहा है। और तीन वेद प्रधान माना है। सामवेद ऋग्वेद और ययुर्वेद। ॐ में पांच अक्षर हैं। आ उ म। आ से सामवेद, उ से ऋग वेद और म से यजुर्वेद। इन्हीं तीन वेदों के अंश से अथर्वण वेद बना है। और चारों के अंश से आयुर्वेद हुआ है। ॐ के ऊपर जो रेफ़ बिन्दु है वह निर्गुण नाम राम जानकी, कृष्ण राधा बिष्णु रमा का है और उसी में पालन, प्रलय, उत्पति, सब सुर मुनि, नर और सब जीवों का बास है। इस नाम को ब्रह्मा, शिव, शेष, ल़ोमश इत्यादि सभी जपते हैं। विष्णु जी आप ही आप को जपते हैं। और जगत का पालन करते हैं। यह बात बहुत ही ऊँची हैं। अपने आप को तो जपना ही है। दूसरा कोई नहीं है। अपने स्वरूप को पहिचान कर स्वयं आप ही आप हो जाता है। परन्तु श्री गुरु द्वारा जानकर बोध होता है। नहीं तो कदापि समझ में नहीं आता है।

३४ ।। पंडित श्री बास जी ।।

रामा बाय कृष्णा बाय राघो बाय यादो बाय।
बिष्णु बाय केशव बाय माधव बाय हरी बाय।
श्री राम जय राम जय जय राम।
श्री श्याम जय श्याम जय जय श्याम।
श्री कृष्ण जय कृष्ण जय जय कृष्ण।५।

श्री बिष्णु जय बिष्णु जय जय बिष्णु।
जै राम जै कृष्ण जय बिष्णु जय श्याम।

हरे राम हरे कृष्ण हरे बिष्णु हरे श्याम।
नमो राम नमो कृष्ण नमो बिष्णु नमो श्याम।
श्री राम श्री कृष्ण श्री बिष्णु श्री श्याम।१०।

नमो रामो नमो कृष्णो नमो बिष्णो नमो श्यामो।
हरे रामो हरे कृष्णो हरे बिष्णो हरे श्यामो।
श्री रामो श्री कृष्णो श्री बिष्णो श्री श्यामो।
राम लला गोपाल कहौ बृद्ध तरुण औ बाल।
हरी बोल कृष्ण बोल राम बोल श्याम बोल।१५।

राघव बोल यादव बोल माधव बोल केशव बोल।
राम बोल कृष्ण बोल बिष्णु बोल श्याम बोल।
हरी बोल हरी बोल हरी बोल हरी बोल।
गोविन्द गोविन्द गोविन्द बोल।
गोविन्द माधव केशव बोल।२०।

राघव बिष्णु यादव बोल।
हरि हरि बोल हरि हरि बोल हरि हरि बोल हरि हरि बोल।
सिया राम बोल राधे श्याम बोल रमा बिष्णु बोल श्याम श्याम बोल।
राम राम बोल राम राम बोल राम राम बोल राम राम बोल।
कृष्ण कृष्ण बोल कृष्ण कृष्ण बोल कृष्ण कृष्ण बोल
कृष्ण कृष्ण बोल।२५।

बिष्णु बिष्णु बोल बिष्णु बिष्णु बोल बिष्णु बिष्णु बोल बिष्णु बिष्णु बोल।
श्याम श्याम बोल श्याम श्याम बोल श्याम श्याम बोल श्याम श्याम बोल।।

पदः- भजो सिय राम राधे श्याम लक्ष्मी बिष्णु को भाई।
मातु पितु बन्धु औ भगिनी नारि सुत पुत्री मित्रताई।
छूटि सब जायंगे यहां पर संग में कोइ नहिं जाई।
पकरि यमदूत लै चलिहैं कहौ तब कौन छोड़वाई।
कष्ट यम पुर में ऐसे हैं बरनि तिनको कौन पाई।५।

जियत में जानि जब लैहौ तभी पहुँचा वहां जाई।
बिना गुरु के नहीं मिलते बचन यह सत्य बतलाई।
कहैं श्री बास दुतिया को छोड़ि जो देय सो पाई।८।

३५ ।। श्री मुकुन्द जी ।।

दोहाः- मुकुन्द कुन्द सम तब खिलै, जब सुमिरै हरि नाम।
नहीं तो चक्कर काटिहैं, मिलै न ठीक मुकाम।१।
सुमिरन ते सब कछु लहैं, रूप व लीला धाम।
मुकुन्द सत्य यह कहत हैं, भजौ सदा हरि नाम।२।

पदः- राम सीता राम सीता राम सीता मम प्रणाम।
श्याम राधे श्याम राधे श्याम राधे मम प्रणाम।
रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु मम प्रणाम।
श्याम श्यामा श्याम श्यामा श्याम श्यामा मम प्रणाम।
उमा शंकर उमा शंकर उमा शंकर मम प्रणाम।५।

गणेश शारद गणेश शारद गणेश शारद मम प्रणाम।
राम सीता कृष्ण राधे रमा बिष्णु मम प्रणाम।
श्याम श्यामा उमा शंकर गणेश शारद मम प्रणाम।८।

३६ ।। श्री गरीबदास जी ।।

कीर्तनः- सीता राम सीता राम सीता राम सीता राम।१।
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम।२।
राम राम राम राम राम राम।३।
श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम।४।

पदः- रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु रमा बिष्णु।१।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण।२।
बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु बिष्णु।३।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण।४।

पदः- सीता नाथ सीता नाथ सीता नाथ सीता नाथ।
रमा नाथ रमा नाथ रमा नाथ रमा नाथ।
राधे नाथ राधे नाथ राधे नाथ राधे नाथ।
उमा नाथ उमा नाथ उमा नाथ उमा नाथ।
शम्भु शम्भु शम्भु शम्भु शम्भु शम्भु शम्भु शम्भु।
अम्ब अम्ब अम्ब अम्ब अम्ब अम्ब अम्ब अम्ब।६।

पदः- सीता मातु सीता मातु सीता मातु सीता मातु।
रमा मातु रमा मातु रमा मातु रमा मातु।
उमा मातु उमा मातु उमा मातु उमा मातु।
राधे मातु राधे मातु राधे मातु राधे मातु।
शारद मातु शारद मातु शारद मातु शारद मातु।५।

काली मातु काली मातु काली मातु काली मातु।
दुर्गा मातु दुर्गा मातु दुर्गा मातु दुर्गा मातु।
ज्वाला मातु ज्वाला मातु ज्वाला मातु ज्वाला मातु।
गंगा मातु गंगा मातु गंगा मातु गंगा मातु।
यमुना मातु यमुना मातु यमुना मातु यमुना मातु।१०।

सरयू मातु सरयू मातु सरयू मातु सरयू मातु।११।
गोमा मातु गोमा मातु गोमा मातु गोमा मातु।१२।

३७ ।। श्री महात्मा खरगू जी ।।

पदः- हर दम नैनन सन्मुख रहते सीता राम राधिका श्याम।
लक्ष्मी नारायण संघ राजैं षट दर्शन सुख धाम।
रोम रोम ते ररंकार धुनि जड़ चेतन हर ठाम।
कोटिन मुख ते कहत बनै नहिं नाम रूप का काम।
नैनन में मुख जीभ नहीं है जीभ में दृगनहि राम।५।

कहैं सुनैं समुझैं हरि आपै सब कछु आपै आम।
सर्गुण रूप ते लीला करते निर्गुण रहत अकाम।
निर्गुण सर्गुण बनत देर नहिं सर्गुण निर्गुण ग्राम।
जा को सतगुरु भेद बतावै सो होवै निष्काम।
जियतै मुक्ति भक्ति को पावै सुरति शब्द पथ थाम।
खरगू जय जय कार होय तब अचल रहै बसुयाम।११।

दोहाः- सर्गुण निर्गुण ग्राम है, निर्गुण सर्गुण ग्राम।
खरगू सतगुरु कृपा बिन किमि जानै यह काम।१।

३८ ।। श्री गदाधर जी ।।

दोहाः- नाम जपै जो प्रेम से, कहै गदाधर सत्य।
रोम रोम ते धुनि उठै , दर्शन होवैं नित्य।१।

तन मन धन अर्पण करै, सुमिरै आठौं याम।
कहैं गदाधर जाय सो, पहुँचि श्याम के धाम।२।

पदः- राम सीता राम सीता राम सीता पाहिमाम।
कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे रक्षमाम।
बिष्णु लक्ष्मी बिष्णु लक्ष्मी बिष्णु लक्ष्मी पाहिमाम।
श्याम श्यामा श्याम श्यामा श्याम श्यामा रक्षमाम।
राम सीता कृष्ण राधे रमा बिष्णु पाहिमाम।
श्याम श्यामा उमा शंकर गणेश शारद रक्षमाम।६।

३९ ।। श्री सुनयना जी ।।

चौपाईः- आँखिन देखै रूप बिशाला। कानन सुनै नाम धुनि आला।१।
सो बनि जाय राम उर माला। कहैं सुनयना बचन रसाला।२।

४० ।। श्री सुमन्त जी ।।

दोहाः- श्री गुरु बचन में प्रीति करि, ख्याल करै जो कोय।
नाम खुलै सन्मुख हरी, अन्त राय नहिं होय।१।
कह सुमन्त मिटि जाय तब, बिधि ने लिखा जो भाल।
मानुष का तन पाइकै, भजैंजे दशरथ लाल।२।

४१ ।। श्री मँगरूजी कोरी ।।

कजरीः- झूला नैनन सन्मुख झूलैं राधे कृष्ण जानकी जान।
मुरली अधर धरे छेड़त हैं मधुर मधुर क्या तान।
ताकैं दृगन की कोर प्रिया को मन्द मन्द मुसुक्यान।
तन मन प्रेम से भजन करैं जे पावैं पद निर्वान।
धुनी ध्यान अन्तर नहीं होवै तब हो चतुर सुजान।
श्री सतगुरु की कृपा से मँगरू, खुलैं नैन औ कान।६।

दोहाः- निशि बासर सुमिरन करै, सो है पूरा बीर।
मँगरू नाम व रूप ले, बैठि जाय हरि तीर।।

४२ ।। श्री भरथ जी ।।

दोहाः- राम प्राण के प्राण को सुमिरै आठौ याम।
सो पावै निर्वाण पद रहै न जग से काम।।

४३ ।। श्री लक्ष्मण जी ।।

दोहाः- नाम राम का खुलै जब, मुक्ति भक्ति मिलि जाय।
राम सिया के दरश हों, हरदम हिय हर्षाय।।

४४ ।। श्री शत्रुहन जी ।।

दोहाः- राम नाम जग सार है, ता में चित्त को देव।
हर दम दर्शन कीजिये, यहां वहां सुख लेव।।

४५ ।। श्री कैकेयी जी ।।

दोहाः- राम नाम जे जन जपैं ते ह्वै जावै पार।
सुमिरन ही सुख सार है, यह असार संसार ।।

४६ ।। श्री सुमित्रा जी ।।

दोहाः- तन मन को एक तार करि, राम नाम जप जीव।
धुनि खुलि सन्मुख दरश हरि, ह्वै जावै तू शीव।।

४७ ।। श्री बलदेव जी ।।

दोहाः- राम नाम में प्रीति हो खुलै राम का नाम।
अन्तराय नहि होय फिरि, सुनिये आठों याम।१।
दर्शन ते मन मगन अति, सुन्दर रूप अनूप।
देखि छको छबि श्याम की, जो सब के हैं भूप।२।

४८ ।। श्री शतानन्द जी ।।

दोहाः- राम श्याम छबि देख ले, जो कोई एक बार।
मुख से क्या बरनन करै, तन मन मात्यौ यार।।

४९ ।। श्री संकर्षण जी ।।

दोहाः- प्रीति करै जब नाम में, सुफ़ल होय नर देह।
नाम खुलै सन्मुख प्रभू, जानो सत्य सनेह।।

५० ।। श्री प्रद्युम्न जी ।।

दोहाः- राम नाम गुरु पास लै, धारन करि उर लेव।
तब होवै आनन्द अति, सूरति नाम में देव।।

५१ ।। श्री अनिरुद्ध जी ।।

दोहाः- जब तक सांची प्रीति नहिं, तब तक खुलै न नाम।
नाम खुलै तन सुफल हो, सन्मुख सुन्दर श्याम।।

५२ ।। श्री शतरूपा जी ।।

दोहाः- राम नाम जे जन जपैं, जपत जपत खुलि जाय।
अनुपम सन्मुख राम सिय, भक्तन के सुख दाय।।

५३ ।। श्री निर्भय दास जी पासी ।।

पदः- सीता राम भरथ औ लछिमन संग शत्रुहन दास हनुमान।
हर दम सन्मुख मेरे रहते सुन्दर दिव्य रूप गुण खान।
अनुपम छटा बनै नहिं बरनत कौन देऊँ परमान।
राम नाम धुनि एक तार भइ कौन करै जप ध्यान।
प्रेम भाव करि गुरू लखायो मम मन लीन्हेउ मान।५।

यह आनन्द कहौं मैं कहँ लगि तन मन धन कुर्बान।
सबै देव नित दर्शन देते प्रभु चरित्र करि गान।
कथा कीर्तन नाना लीला संघ कृष्ण भगवान।
विष्णु शम्भु ब्रह्मा नारद संघ गणपति शारद आन।
गान बजान करत हिय हर्षत नेक न तन मन मान।१०।

द्वैत भाव तन मन ते छूटै तब होवै यह ज्ञान।
दीन दयाल बसैं घट ही में सब सुर मुनि संघ जान।
परदा हटै दीनता आवै सबै तीर्थ असनान।
मुक्ति भक्ति सब नाम से होती खुलत आँखी कान।
इच्छा पूरी जियतै होवै रहै न तनकौ शान।
निर्भय दास कहैं सुनिये पद गुनिये तब कल्यान।१६।

५४ ।। श्री श्याम दास ब्रह्मचारी जी ।।

पदः- हर दम सन्मुख मेरे सोहैं गिरिजा शंकर रूप बिशाल।
कानन में कुण्डल सर्पन के अधर गुलाबी लाल।
शिर पर गंगा करैं किलोलैं चन्द्र की शोभा भाल।
गले की शोभा नील मनोहर मोर कि कंठ मिसाल।
अरुण नयन औ बदन गौर सब गले में मुण्डन माल।५।

बिच्छुन की एक गुंज सुहावनि श्याम पीत हरे लाल।
बिच्छू श्वेत चहुँ दिशि शिर पर बिखुरे काले बाल।
हर हर करो कष्ट सब हर लें खुश हों बजतैं गाल।
राम सिया की भक्ति देत हैं मेटैं लिखा जो भाल।
यश शिशु धन की इच्छा होवैं कर दें माला माल।१०।

कर त्रिशूल डमरू डिमकावैं चारौं बेदन ताल।
बम्भोला जो प्रेम से बोलै छिन में करैं निहाल।
भस्म लगी सर्वाङ्ग मनोहर अंग अंग भूषण ब्याल।
भंग रंग पर ढंग निराला बीज मन्त्र तन शाल।
रोम रोम से ध्वनी उठत सन्मुख सिय राम कृपाल।१५।

पलकैं परैं न ख्याल में तत्पर प्रेम में प्रभु के आल।
योगेश्वर आचार्य्य नाम के देवन मध्य भुआल।
सब सुर महादेव कहि टेरत कांपत देख के काल।
प्रभु किरपा से उत्पति पालन प्रलय करैं तत्काल।
अजर अमर हैं राम नाम जपि कहं लगि कहौं हवाल।२०।

बाटैं सब को भक्ति राम की वृद्ध तरुण औ बाल।
राम नाम का भरा खजाना चुकै न ऐसा टाल।
नन्दी गण पायक हर केरे राम नाम तन ख्याल।
बाघम्बर अम्बर तन ऊपर लखत मोहनी डाल।
भजन करै निशि बासर हरि का होय न बांको बाल।२५।
सब जीवों पर दया मातु की कोमल बचन रसाल।
चम चम चमकै तेज बदन का जिमि अग्नी की ज्वाल।
दिव्य सिंगार अंग अंग भूषण उर मन्दारकि माल।
झांकी की छबि बनै देखतै कहत रहै नहिं ख्याल।
फूल धतूर बेल की पाती चन्दन अक्षत डाल।३०।

इतनी पूजा ते सब कछु दें गिरिजा शम्भु दयाल।
तन मन ते भक्तन संघ डोलैं काटैं भव भय जाल।
द्वैत भाव तजि दीन भाव गहि फंसौ प्रेम के जाल।
श्याम दास ब्रह्मचारी कहते जियतै होहु निहाल।३४।

५५ ।। श्री स्वामी राम दास जी ।।

पदः- लक्ष्मीनारायण कि झांकी मेरे सन्मुख रहती भ्रात।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते जीवन जल भोजन मिलि जात।
कमलासन से युगुल रूप क्या मन्द मन्द मुसुक्यात।
शंख चक्र गदा पद्म लिये कर निरखत हिय हुलसात।
कानन कुण्डल जगमग जग मग शिर पर मुकुट सुहात।

श्याम रंग तन परम सुहावन माता गौर देखात।
देखत बनै बनै नहिं वर्णत कोटिन काम लजात।
शान्ति शील सन्तोष दीनता छिमा सत्य के गात।
श्रद्धा दया सतोगुण हैं हरि प्रेम के हाथ बिकात।
कीन परिक्षा भृगु जी जायके उरि कसि मारी लात।

उठि कै चरन लगे सोहरावन बार बार बलि जात।
चरन कमल सम कोमल आप के उर मम पत्थर तात।
खता हमारी माफ करो मुनि रहि रहि जिय अकुलात।
आप तो सब के पूज्य मही सुर सब लोकन बिख्यात।
अस कहि सिरहाने वैठायो मुनि तन मन सकुचात।

हब्य अनार पवायो मुनि को दोउ नैनन जल जात।
लक्ष्मी जी यह लीला देखि के मुनि चरनन परिजात।
बोलि न सकैं कण्ठ अति गद गद निरखैं मुनि को गात।
दहिन अंग नारायण पकरयौ बाम लक्ष्मी मात।
लागे सेवा करन प्रेम से पूंछि पूंछि कुशलात।

शेष न पायो मर्म सेज पर जिनके भइ यह बात।
मांगि बिदा मुनि चले हर्ष हिय जिमि तरूवर के पात।
आय कह्यौ ऋषि मुनिन ते जहँ जहँ भई जौन कछु बात।
जय जय कार की वाणी ऋषि मुनि करत हिये हर्षात।
तब से बड़े बनायो त्रटषि मुनि सब लोकन गइ बात।

भजन करै निशि वासर हरि का जग से तोड़ि कै नात।
अँजुलि जल परमान वृथा यह नर तनु छीजा जात।
मातु पिता भ्राता सुत बनिता भगिनी मित्र बनात।

सब झूठे मतलब के साथी सांची मानो बात।
अवसर पर कोइ काम न ऐहैं जब यम करिहैं घात।३०।

आखिर में लै जाँय नर्क को फिर पीछे पछितात।
राम दास कहैं हर दम सन्मुख नाम प्रेम से कात।३२।

५६ ।। श्री बिष्णु दास जी ब्रह्मचारी।।

पदः- अंजनि तनय बीर सुखदायक सन्मुख रहते श्री हनुमान।
सुभग सिंगार अंग कंचन सम कान्ति कोटि रवि मान।
तन मन प्रेम से जे नर ध्यावत तिनके संघ बलवान।
निर्भय सो संसार में डोलै सदा करैं कल्यान।
कांधे मुंज जनेऊ पहने लाल लंगोटा जान।५।

बज्र गदा दहिने कर सोहै राम सिया को ध्यान।
रोम रोम में राम नाम रमि गयो निकलती तान।
भीतर बाहेर झांकी प्रभु की निरखत हर दम मान।
राजतिलक जब भयो प्रभू का सुर नर मुनि सब जान।
उर बिदारि दिखलायो सब को राम नाम चमकान।१०।

नजर न ठहरी सुर नर मुनि की प्रगट्यो कै तेज महान।
राम सिया उर में हैं राजत दिव्य रूप दोउ जान।
खींचि प्रकाश लीन हरि तब फिरि झांकी सुघर देखान।
सवा घड़ी तक सुर नर मुनि सब देख्यौ अति सुख मान।
जय जय कार की धुनि सुर मुनि कियो धन्य दास हनुमान।१५।

स्वामी को सेवा से बश करि लीन्हेउ आपु सुजान।
उर फिर बन्द भयौ तुरतै हरि किरपा लीजै मान।
चिन्ह तलक लखि परयौ नहीं कछु ऐसे भक्त महान।
राम सिया के चरन परे प्रभु सिया मनै सुख मान।
शिर पर हाथ मातु पितु फेरयौ कहँ लगि करूँ बखान।२०।

राम सिया की सेवा के हित शम्भु रूप दुइ जान।
एक रूप ते सेवा करते एक ते सुर मुनि मान।
राम नाम के बांटन हारे मुक्ति भक्ति दें दान।
तन मन प्रेम से नेह करै जो ताके हाथ बिकान।

कपट कटारी काढि दूरि धरि दीजै तब हो ज्ञान।
बिष्णुदास ब्रह्मचारी कहते तब होवै कल्यान।२६।

५७ ।। श्री उमा दास जी ।।

कजरीः- सन्मुख हर दम रहते मेरे स्वामी गणपति ज्ञान निधान।
एक दन्त दाया के सागर सोरह भुज सब जान।
अरुण नयन शुण्डी अति कोमल देखत चित्त लोभान।
शुण्डी में दुइ छिद्र सुहावन चिक्कन गोल हैं मान।
भाल विशाल सिंदूर को चन्दन श्रवण सुभग दोउ जान।५।

कर कोमल ग्रीबा अति चिक्कन सीना भरा समान।
नाभि गभीर तोंद की छबि कवि क्या कर सकत बखान।
कटि केहरि की कटि सम मानो सबैं देंय परमान।
कदली खम्भ समान जंघ दोउ परिया गोली जान।
मुरवा चढ़ा उतार बने दोउ चरण कमलवत मान।१०।

नब्बे नख अति लाले चिक्कन चमकीले हैं जान।
पग औ करन की गादी लाली बिम्बा फल सम मान।
धोती पीत रंग की पहिने गौर बदन अति जान।
गज मुक्तन की माल गले में नाभी तक लटकान।
शुकुल मण्डलाकार तेज के मध्य में लीजै मान।१५।

कमलासन आसन करि बैठे मूष के ऊपर जान।
श्वेत वरण के मूष हैं पायक नैन अरुण नख मान।
दिब्य अंबारी ऊपर सोहै नैनन जोति समान।
देखत बनै कहै का मुख से कहे बिना को जान।
राम नाम परताप ते पूजन प्रथम होत जग जान।२०।

राम सिया की झांकी सनमुख स्वामी के ठहरान।
राम नाम धुनि होत अखण्ड़ित रोम रोम ते जान।
पलकैं परैं नहीं एक टक हैं ताटक लागो मान।
बाहन मूष नाम को सुमिरैं निशि बासर सुख मान।
रिद्धि सिद्धि औ मुक्ति भक्ति दें वांझिन पुत्र को दान।२५।

पान फूल लै प्रेम से पूजौ देवैं चट बरदान।

गणन की भय नहिं रहै सुनो मम बचन लगाय के कान।
उमा दास जे नाम प्रथम लै करत कार्य्य कल्यान।२८।

५८ ।। श्री प्राग दास जी ।।

कजरी:- झांकी श्री दुर्गा माता की मेरे सन्मुख है सुखदाय।
एक हजार वर्ष से पूजन कुल मेरे चलि आय।
ढाई सै बर्ष भईं हमको दर्शन देतीं माय।
भूषन अंग अंग में सोहैं दिव्य जानिये भाय।
बसन मनोहर लाल रंग के छबि अनुपम को गाय।५।

पांच पांच भुज दोउ दिश सोहैं अस्त्र सब में चमकाय।
काल के गाल से छोरि लेंय जो भजन करै चितलाय।
सिंह के ऊपर किहे सवारी देखत ही बनि आय।
अरूण कमल सम नैन सुहावन पलकैं परैं न भाय।
जपैं निरन्तर राम नाम को सन्मुख सिय रघुराय।१०।

भजन करै निष्काम जौन कोई मुक्ति भक्ति देंय माय।
करैं कामना धन शिशु यश की देवैं हिय हर्षाय।
ब्रह्मा बिष्णु महेश कि शक्ति से प्रगटीं मम माय।
सुर नर मुनिन के कार्य्य संवारै तन मन प्रेम लगाय।
लाल फूल सिन्दूर लौंग जो कोई देय चढ़ाय।१५।

गोघृत गुड़ अग्नि पर छोड़ै भोग मुनक्का लाय।
बाती शुद्ध बनाय रुई की गोघृत लेय भिजाय।
करै आरती खुश अति होवैं उर में लेंय लगाय।
सारा खेल है मन का भाई मन जा में रम जाय।
प्रागदास कहैं सांची मानो सो कारज बनि जाय।२०।

५९ ।। श्री ज्ञान दास जी ।।

कजरी:- झांकी श्री काली माता की मेरे सन्मुख रहती यार।
काले बसन रूप अति काला काल निरखि गयो हार।
काले केश एक सौ कर हैं अरूण नयन मद मार।
कर पचास में खप्पर सोहैं कर पचास तलवार।
सीता जी ने रूप धरयौ यह रावण महा संघार।५।

काल न होय काल कर देवैं ऐसी शक्ति अपार।
कलकत्ते में रूप धरयौ श्री माता काली क्यार।
जो इच्छा सोई बर देवैं करैं भजन एक तार।
रहै न भर्म कर्म गति मेटैं जो बिधि लिख्यौ लिलार।
भाल सिन्दूर तैल युत शोभित पलकैं नेक न मार।१०।

राम ब्रह्म की झांकी सनमुख धुनी उठत रंकार।
इस रहस्य को जानै प्राणी तिर्गुण से हो न्यार।
श्याम फूल नारियल से खुश हों औ लौंगन का हार।
ज्ञान दास धनि धनि मम माता चरन कमल बलिहार।१४।

६० ।। श्री भूधर दासजी ।।

कजरी:- सन्मुख रहते मेरे भैरव काली तनय बीर बलवान।
काला बदन नैन दोउ लाले शिव के प्राण समान।
काले श्वान के ऊपर बैठे कमलासन से जान।
तन से प्रभा श्वेत रंग निकलै चका चौंध हो मान।
कांधे ब्याल जनेऊ धारे निरखि के काल लुकान।५।

सर्प पूँछ को मुख में दाबें कैसा सिख्यौ ज्ञान।
लोह जंजीर लंगोटा मारे करि के खूब कसान।
दहिने कर त्रिशूल लिये हैं वायें दण्ड को जान।
दहिने कर पीछे कर में है चक्र तेज चमकान।
पीछे वायें कर के कर में लियो कपाल को मान।१०।

हर दम राम नाम को सुमिरैं अजपा जाप से जान।
राम सिया सन्मुख में रहते दिब्य रूप ते मान।
रिद्धि सिद्धि औ पुत्र देत हैं मुक्ति भक्ति को दान।
तन मन प्रेम से सुमिरन कीजै त्यागि मान अपमान।
कड़ू तैल सिन्दूर को चन्दन भाल बिराजै मान।१५।

गुड़ औ भंग क शरबत दीजै भोग मुनक्का पान।
लौंग कपूर की धूप को दीजै लेंय वासना मान।
प्रेम प्रीति से वश हो जावैं ज्यों बालक अज्ञान।

सबै पदारथ देंय कृपा करि जियत करैं कल्यान।
भूधर दास कहैं सुन लीजै ऐसे कृपा निधान।२०।

६१ ।। श्री सकटू दास जी।।

दोहाः- बीर भद्र का दास मैं सकटू मेरा नाम।
मेरे सन्मुख रहत हैं स्वामी आठौ याम।।
राम नाम ही जपत हैं मन ही मन एक तार।
बाहर रोवन ह्वै उठै क्या धुनि रा रा कार।।

राम सिया सन्मुख रहैं स्वामी के निशि बार।
सबै पदारथ देत हैं प्रेम करै जो यार।।
राल तेल की धूप दे सूंघै चित्त लगाय।
गुड़ घी भंग के भोग को पावैं प्रेम लगाय।।
शिव इच्छा ते प्रगट करि इन्हैं दीन बरदान।
बड़े बीर रणधीर हैं सुर मुनि नर सब जान।५।

चौपाईः- काला बदन काल सम जानौ। चारि भुजा इनके हैं मानो।
दहिने कर त्रिरशूल है मोटा। अरुण नयन औ लोह लँगोटा।
बायें कर में गुर्ज बिराजै। जिनको देखि काल झुकि भाजै।
दहिने कर पीछे कर जो है। ता में बर्छी चोखी सोहै।
बायें कर पीछे कर माहीं। भाला सोहत अभय रहाहीं।५।

६२ ।। श्री गिरिवर दास जी ।।

चौपाईः- सरस्वती माता की झांकी। हर दम सन्मुख रहत है वांकी।
विद्या बुद्धि को देतीं माता। सुर मुनि नर सब में बिख्याता।
राम नाम जपतीं निशि बासर। राम सिया सोहै समुहें पर।
भूषन बसन बदन की शोभा। कोटिन काम लखत मन छोभा।
केकी के ऊपर असवारी। निरखत छबि आनन्द अति भारी।५।

गौर वर्ण कर आठ सुहावन। दुइ कर वीणा मधुर बजावन।
हरि जस गान में तन मन वारे। सुर मुनि सुनि अति होत सुखारे।
गिरिबर दास है नाम मेरा। तन मन प्रेम ते मातु को चेरा।८।

६३ ।। श्री सरयूदास जी ।।

दोहाः- नृसिंह रूप के दरश हों, हर दम हमको जान।
सरयूदास है नाम मम, मानो बचन प्रमान।।

६४ ।। श्री गंगा दास जी ।।

दोहाः- बाराह रूप के दरश हो निशि बासर मोहिं जान।
गंगा दास है नाम मम तुम से कहूँ बखान।।

६५ ।। श्री दूवर दास जी ।।

दोहाः- बावन रूप के दरश हों हम को दिन औ रात।
दूवर दास है नाम मम हर्ष न हृदय समात।।

६६ ।। श्री जंगली दास जी ।।

दोहाः- कच्छ रूप के दरश हों हमैं हर घड़ी भाय।
तन मन ते हर्षित रहौं नाम जंगली आय।।

६७ ।। श्री निर्धन दास जी ।।

दोहाः- मंच्छ रूप के दरश मम नैनन समुहे जान।
अन्तराय होवै नहीं निर्धन करै बखान।।

६८ ।। श्री केशवा नन्द जी ।।

दोहाः- गायत्री जी दरश दें हमको आठौं याम।
माता हर दम जपत हैं बीज राम को नाम।१।
सन्मुख झांकी राम सिय हर दम देखैं मात।
निशि बासर रहतीं मगन सुन्दर कोमल गात।२।
नाम केशवानन्द मम तुम से कहौं सुनाय।
माता की किरपा सदा रहत एक रस भाय।३।

६९ ।। श्री झगरूदास जी ।।

पदः- जय जय श्री सीताराम जय जय श्री राधेश्याम जय जय
श्री रमा बिष्णु राखो लाज मेरी।
माया औ पांच चोर द्वैत लीन घेरी।
मनुवाँ तिन संघ फंस्यौ पड़ी कठिन बेरी।

बासना नाना प्रकार उठतीं प्रभु बार बार तिरगुन की परयौं धार बूड़त नहिं देरी।
सुमिरन की बिधि क हाल जानत नहि हौं कृपाल धरिहै जब काल गाल जाय नर्क गेरी।५।
दानी हरि हौ उदार महिमा तुमरी अपार अधमन दीनन उधार सुर मुनि सब टेरी।
सतगुरु दीजै मिलाय पाप ताप सब नशाय सन्मुख झांकी देखाय मातु पिता तेरी।
रोम रोम राम नाम निकसै धुनि अष्ट याम झगरू करते प्रणाम बार बार टेरी।८।

दोहाः- झगरू जब तक नाम धुनि रोम रोम नहिं होय।
तब तक सन्मुख राम सिय हर दम कैसे होय।।

७० ।। श्री गिरधारी दास जी ।।

चौपाईः- दर्शन श्री सीतला माता। हर दम देत सुफल मम गाता।
खर के ऊपर है असवारी। श्वेत रंग को खर सुख कारी।
चारि भुजा माता के सुन्दर। भूषन बसन मनोहर अंग पर।
नाम राम को जपतीं माता। राम सिया सन्मुख हैं ताता।
नाम हमार अहै गिरधारी। सांची मानो बात हमारी।५।

७१ ।। श्री सुदर्शन दास जी ।।

चोपाईः- धूमा बती मातु के दर्शन। हर दम होते नाम सुदर्शन।
काक के ऊपर किहे सवारी। श्वेत बसन तन में सुभ धारी।
चारि भुजा सो हैं सुख कारी। निकसै तेज बदन ते भारी।
गौर बदन कोमल नीरज सम। राम नाम में तत्पर हरदम।
राम सिया सन्मुख में सोहैं। हर दम मातु मगन छबि जो हैं।५।

७२ ।। श्री मोहन दास जी ।।

पदः- जियतै श्री गुरु झांकी सन्मुख अन्तराय नहि मानो।
पक्का गुरु का भक्त वही है बचन सत्य यह जानो।
काम क्रोध मद लोभ मोह को रहै न बदन ठेकानो।
माया द्वैत तीनि गुण बशि भे दीन भाव उर आनो।
शान्ति शील सन्तोष छिमा औ श्रद्धा का उर थानो।५।

दया सत्यता प्रेम आयकै एकै में लिपटानो।
कसनी कितनौ परै सहै सब दुख सुख सम करि मानो।
मोहन अन्त में राम सिया ढिग गुरु समीप रहि जानो।८।

७३ ।। श्री नारायण दास जी ।।

पदः- श्री गुरु शब्द बतायो जो है सूरति से जप ठानो।
अजपा जाप इसी को कहते जिह्वा चलै न मानो।
राम नाम की धुनी उठै क्या रोम रोम ते जानो।
राम सिया औ कृष्ण राधिका बिष्णु रमा दरसानो।
जैसी हरि की किरपा होवै वैसे रूप दिखानो।५।

करै न इच्छा लखै चरित बहु यह अचरज मन मानो।
जियत मरै फिर आप को देखै आप में आप समानो।
नारायण धनि धनि गुरू दाया अलखै लखै ठिकानो।८।

७४ ।। श्री स्वामी नारायण जी।।

दोहाः- शान्ति चित्त से बैठि के शान्ति रूप लखि लेव।
उपदेशौ तब और को जब जानौ यह भेव।१।

७५ ।। श्री पद्मावती जी।।

पदः- नाचत झुकि झूमि झूमि ताकत फिरि घूमि घूमि राधे मुख चूमि चूमि यशुमति नन्द भैया।
मोर मुकुट लसत भाल कानन कुण्डल बिशाल गले सोहैं मोती माल बंशी के बजैय्या।
केशरि को तिलक सोहै सुर मुनि नर नारि मोहैं निरखि बरनि सकत को है अनुपम छबि कन्हैया।
पीत फेटा कमर बांधे घँघुरू दोउ पगन राजै बसन शुभग अंग छाजै सब ठौर के बसैया।
बाजत सब साज साथ नाचत धरि माथ हाथ गावत सुनि सब सनाथ ताल स्वर मिलैया।५।

सखा सखी ग्वाल बाल फँसिगे सब प्रेम जाल जय जय त्रिभुवन भुवाल नृत्य के करैया।

सुर मुनि नर नारी जौन सखा सखी वृज के भौन ह्वै गे सब मौन पौन
सब को कृत कृत्य करत रूप बहु धरैया।
पद्मावती कहत आय दर्शन दीजै कन्हाय लीजै चरनन लगाय दीनन
की सुनैया।८।

७६ ।। श्री दमयन्ती जी।।

पदः- लचकि लचकि चलत चाल नैनन की सैन मार साँवरो कन्हाई।
मोर मुकुट शिर पर राजै कानन कुण्डल बिराजै मुरली दोउ करन
माहिं अधर धरि बजाई।
पीताम्बर कटि में काछे अंग बसन आछे आछे नूपुर दोउ पगन बांधे
नृत्य करत धाई।
सखा सखी आगे पीछे बाजा बहु बिधि के बाजैं राधे श्याम मध्य सोहैं
सुन्दर छबि छाई।
दौरि झपटि सखा सखिन प्रेम करत लपटि लपटि राधे के पास जाय
गले बाँह लाई।५।

वंशी को काँख दाबि दोनो कर ताल देत गावत क्या मधुर तान सबन
को रिझाई।
सुर मुनि सब देखैं आय हरि की लीला को भाय शारद औ शेष मौन
और को बताई।
दुखिया दमयन्ती नाथ दीनन के दीना नाथ करियो मो को सनाथ चरन
शरन आई।८।

७७ ।। श्री घण्टा कर्ण जी।।

दोहाः- शंकर की भक्ती किहेंव तन मन प्रेम लगाय।
नाम दूसरा नहिं सुन्यौं सत्य मानिये भाय।१।
कानन घण्टा बांधि कै सोच्यों यही उपाय।
नाम और क जो कहैं घण्टा देंव बजाय।२।
घण्टा के बजतै तुरत शब्द जात विलगाय।
शंकर प्रगटे औ कह्यौ बर मांगौ हर्षाय।३।

चौपाईः- शंकर सै मैं कह्यौं सुनाई। दीजै मुक्ति मोंहि सुखदाई।।

दोहाः- कह्यौ शम्भु घण्टाकरण, जाहु बद्रिका धाम।
श्री कृष्ण भगवान ते, बनै तुम्हारो काम।।

चौपाईः- रूप रंग हर दीन बताई। तब हम जाय के खोज लगाई।।

दोहाः- भेट बड़ेन को चाहिये मन में कीन बिचार।
सब से उत्तम कौन है सो लै धरौं अगार।।

चौपाईः- ब्राह्मण एक जात लखि पायौं। निरखत ही मम मन हरषायौ।१।
सुर सब उत्तम जाहि बतावैं। या से उत्तम हम कँह पावैं।२।

दोहाः- दौरि के ताको पकरि कै तुरतै लीन्ह्यौं मारि।
ऊपर का धर तूरि कै, लै कै चल्यों सम्हारि।।

चौपाईः- हे मन मोहन कृष्ण मुरारी। मुरली धर गिरधर बनवारी।१।
करत कीर्तन पहुँच्यों तहवां। बैठे गुफा में मोहन जहवां।२।
आगे भेंट धरयौं जस जाई। श्याम घूमि बैठे मुसक्याई।३।

दोहाः- तब हम ताहि उठायकै मूंह के समुहे कीन।
कह्यों कृपानिधि विप्र तन पावन जानि के लीन।।

चौपाईः- नीचे का तो वहीं परा है। अब ही नेकौ नहीं सरा है।१।
हुकुम होय तो लावौं जाई। कह्यौ कृष्ण लै आओ धाई।२।

दोहाः- तब हम ताको लाय कै धरेन अगारी आय।
धड़ से धड़ को जोरि हरि, तुरतै दीन जिआय।१।
बिप्र आपने धाम को फेरि चल्यो हर्षाय।
यह कौतुक हरि ने कियो जय जय जय यदुराय।२।

चौपाईः- तब हम से हंसि कह्यो कन्हाई। कौन कार्य्य हित आयो भाई।१।
तब हम हाल अपन बतलावा। शंकर आप के पास पठावा।२।
कह्यों कृष्ण शंकर हैं हम में। हम तो है शंकर के बश में।३।

दोहाः- जौन काम हित तुमहिं शिव यहँ पर दीन पठाय।
सो अब हीं मैं देत हौं लीजै मन हर्षाय।१।
उठि के श्याम खड़े भये दीन्हेव हाथ उठाय।
सिंहासन असमान से उतरयो तहँ पर आय।२।

चौपाईः- चारि पारषद ऐसे सोहैं। जिनको निरखत ही मन मोहैं।
कह्यो कृष्ण तेहि दिब्य बनावों। यह शरीर अब ही बिलगावों।
तब तुम या पर बैठि के भाई। चलिये बैकुण्ठे हरखाई।
तब मैं कह्यों सुनो भगवाना। मै परिवार के करो रवाना।
जाउँ अकेल नहीं मैं स्वामी। आपु कृपालु सुरन में नामी।
तब घनश्याम कह्यों हरषाई। मै परिवार के देउँ पठाई।६।

दोहाः- यकइस सहस बिमान हरि तुरतै लीन मँगाय।
सब परिवार हमार तँह लीन्हैउ फेरि बोलाय।।

चौपाईः- ऐसी लीला कीन्ह कन्हाई। आये सबै देर नहिं लाई।१।
सब को तन छोड़ाय हरि दीन्हा। दुख नहिं व्यापेउ अचरज कीन्हा।२।

दोहाः- दिब्य शरीर भये तुरत बारह बर्ष के जान।
चारि भुजा अति गौर तन क्या मैं करूं बखान।।

चौपाईः- भूषन बसन गरुड़ पहिरायो। नर नारिन के मन जो भायो।१।
बैठि सिंहासन पर सब जैसे। उड़े पारषद लै कर तैसे।२।

दोहाः- इन्द्र पुरी ह्वै कर गये लक्ष्मी निधि के पास।
शोभा देखत ही बनै कोटिन भानु प्रकाश।१।
दर्शन करिके चले सब नारायण के पास।
करि दर्शन तब फिर चले नरनारायण पास।२।

चौपाईः- वहां से दर्शन करिके भाई। पर नारायण पास में जाई।।

दोहाः- उतरि सिंहासन ते सवै शिर चरनन धरि दीन।
आशिष दीन्हेव कृपा निधि तब फिर आसन दीन।।

चौपाईः- कह्यौ बसौ यँह पर हर्षाई। बान्नवे कड़ोड़ वर्ष तक जाई।
तब फिर उत्तम कुल में जैहौ। करि निष्काम भजन गति पैहौ।
ऐसे अधम उधारन स्वामी। जे न भजैं ते निमक हरामी।
घण्टा कर्ण कहैं हर्षाई। राधे कृष्ण जपौ मन लाई।
भव बन्धन से छूटे कैसे। चुवै पाक फल वृक्ष ते जैसे।५।

७८ ।। श्री हकीम अजमल खाँ जी ।।

शेरः- रब के हुकुम बिना हम पलकैं न मार सकते।१।
बकने से क्या हो हासिल उघरैं न दिल के तखते।
आते उन्हीं के सन्मुख वरजिश को जो हैं करते।
रब नाम की धुनी को एक तार जो हैं सुनते।२।

पदः- अल्ला खुदा रबी नबी वही वही वही सबी।
हर दम जपो अजपा जबी तार हो एक तार तबी।
सामने हो नैनो छवी खुश नुमा वो श्याम रबी।
स्वप्न में न देखा कवी नूरहू का नूर नबी।
प्रेम हो तन मन से जवी मुरशिद दे वतलाय तबी।५।

गौर करके मानो सबी यत्न ही से मिलते रबी।
कपट कार छोड़ौ सबी कपट से हैं दूर नबी।
सांच ही से मिलते नबी आना जाना छूटै तबी।८।

७९ ।। श्री तानसेन जी ।।

पदः- कहत कहत सब गये हार पायो नहिं कोई पार।१।
सरगुण निर्गुण निराकार।२। जगदाधार सर्वाधार।३।
सब से न्यार सब का सार।४। कहत मियां तानसेन।५।
आयो सो बृज मंझार।६। बाज्यो लीला अवतार।७।
लीला अद्भुत अपार।८।

८० ।। श्री बैजू बावरे जी ।।

पदः- चतुर चूणा मणि कृष्ण चन्द। नन्द नन्दन आनन्द कन्द।२।
बिहरत कुञ्जन में मन्द मन्द। निरखत नभ से सुर मुनि के वृन्द।४।
राधे के गले वाँह मुख की छबि शरद चन्द।
कहत बैजू बाबरे सुखमा के भवन श्याम चितवो सब कटै फन्द।६।

८१ ।। श्री सहदेव जी ।।

चौपाईः- बिना रूप की वस्तु न कोई। बिना नाम के रूप न होई।१।
साधन करके जानो भाई। पढ़ि सुनि के वह हाथ न आई।२।
किसी जीव को दुख जो देहैं। सो यह मारग कैसे पैहैं।३।
बाद बिबाद त्यागि जो देवै। सो सर्गुण निर्गुण लखि लेवै।४।

दोहाः- मुख से शब्द निकालिये, प्रेम भाव करि जौन।
सुन्दर उनके रूप लघु, वनिके निकसैं मौन।१।
क्रोध से शब्द निकालिये, काले निकसैं तौन।
घूमके सन्मुख खड़े ह्वै, अन्तराय हों तौन।२।
सब में सब से न्यार हैं, सत्य कहैं सहदेव।
प्रेम दीनता से मिलै, है जो सब का देव।३।

८२ ।। श्री नकुल जी ।।

पदः- गगन से धुनी प्रथम फरियानी दूसर त्रिकुटी जानो।
तीसरि श्रवण से होती है चौथि सहस दल थानो।
त्रिकुटी के नीचे यह नीरज बचन सत्य मम मानो।
जोति निरंजन शिव शक्ति जहँ देखौ करिकै ध्यानो।
पचईं जाय दृगन ते होती युगुल रूप तहँ राजैं।५।

दहिने नेत्र में हरि को बासा बायें मातु विराजैं।
छठई धुनी नासिका से हो सतई कण्ठ से जानो।
अठई हिरदय से होती है नवई नाभि से मानो।
दसई षट दल से है होती लिंग इन्द्रिय जानो।
ग्यरहीं गुदा चक्र से होती जहँ गणेश बैठानो।१०।

बरहीं मध्य भाग पीठी से तीनि बिष्णु तहँ जानो।
तेरहीं जोड़ जोड़ से होती धुनि सुनि हिय हर्षानो।
उठत चौदहीं रोम रोम ते तन मन प्रेम ते सानो।
मातु पिता हर दम सन्मुख हैं नकुल कहैं यह जानो।
जिह्वा से वैखरी जाप औ सार असार बतावे।१५।

कथा कीर्तन कटु मृदु बानी जग में यह फैलावे।
तिल के ओट में सब कौतुक है देखै सोई मानौ।
कहे सुने से मिले न यह पद सतगुरु से लै जानो।१८।

चौपाईः- तीनि मार्ग हैं भजन के जानो। मीन पपील विहंग को मानो।१।
विहंग मार्ग सूरति को जानो। मीन मार्ग स्वांसा को मानो।२।
मार्ग पपील कण्ठ से जारी। मन ही मन हरि नाम उचारी।३।

दोहाः- तन मन प्रेम लगाइये जाप खुलैं सब ठौर।१।
बचन नकुल को मानिये होहु सन्त शिर मौर।२।
अभयन्तर की धुनी से सब में लाग्यो तार।३।
सुर मुनि शक्ति सबै मिलि करते तहां बिहार।४।

चौपाईः- ब्रह्म की बाणी यह है भाई। ब्रह्म नाड़ि में होत सदाई।।
सब पसार या को शिव गायो। बीज रकार इसे बतलायो।।

८३ ।। श्री भीम जी ।।

दोहाः- भीम कहैं पुरुषार्थ से सबै काम बनि जांय।
प्रारब्ध क्रिय माण अरु संचित जात नशाय।१।

चौपाईः- नाम में सूरति जौन लगावै। हर दम दरशन हरि को पावै।
कमल सहस दल है सुख दाई। तेहि पर यह ब्रह्माण्ड सुहाई।
बिन अधार के तापर सोहै। देखत बनै कहत नहि सोहै।
उमा निरंजन जोति क बासा। शेष सहस फन ऊपर खासा।
याको जानी सोई प्रानी। जो तन मन से हरि रति ठानि।
धुनी ध्यान अन्तर नहिं होई। कहै भीम आवै नहिं सोई।६।

८४ ।। श्री सुनीति जी ।।

कजरीः- मानुष का तन पाय नाम से नेह लगाना है।
नाम खुलै हरि सन्मुख हर दम दरशन पाना है।
छूट गयो मल भार अमल अनुभव उपजाना है।
कर्म शुभा शुभ जरे ब्रह्म अग्नी के ज्ञाना है।
सत रज तम को बन्धन टूट्यो फेरि न आना है।५।

रूप प्रकाश प्रभू का सब में क्या दर्शाना है।
तन मन प्रेम से सुमिरन करिये तभी ठिकाना है।
दुख सुख को सम मानिके सतगुरु करि तरि जाना है।८।

८५ ।। श्री पूरनमल जी ।।

दोहाः- निश्चय भक्ती प्रेम से चारि धाम करि लेय।
यहां रहे निर्भय सदा वहां महा सुख लेय।१।
सत्य बचन धारन करै झूठ से नाता तोड़।
पूरन मल यह कहत हैं मृत्यु को देय मरोड़।२।

८६ ।। श्री जय जी ।।

दोहाः- नाम से नेह लगाइये नाम करै सब काम।
नाम से परगट रूप हो निरखौ आठौ याम।१।
जय की बात को मानिये साधन में मन लाव।
सतगुरु बचन में प्रीति करि देखौ नाम प्रभाव।२।

८७ ।। श्री बिजय जी ।।

दोहाः- बिना नाम जाने सुनो होय न कोई पार।
कलि में ठीक उपाय यह और बात बेकार।१।
बिजय कहैं हरि नाम में तन मन प्रेम लगाव।
जियत सुफल तन कीजिये मरि हरि के ढिग जाव।२।

८८ ।। श्री प्रियवर्त जी ।।

चौपाईः- ब्राह्मण ह्वै कै ब्रह्म निहारै। क्षत्री ह्वै षट दुष्टन मारै।१।
वैश्य नाम को सौदा करई। शूद्र राम पद हिरदय धरई।२।
प्रियवर्त कहैं सब दुख भागै। चारौं तरैं देर नहि लागै।३।

८९ ।। श्री मुर्वी जी ।।

कजरीः- मानुष का तन पाय हाय क्यों बने अनारी हो।
सतगुरु से लै राम नाम को जपौ सम्हारी हो।
ऐसा समय फेरि नहिं मिलिहै लेहु बिचारी हो।
यह तो देह सुरन को दुर्लभ मंगल कारी हो।
राम नाम जप खुलै अखण्डित धुनि क्या जारी हो।५।

राम सिया की झांकी सन्मुख हर दम प्यारी हो।
पाचौं चोर अजा सत रज तम मन गो हारी हो।
मुर्वी कहैं चलो साकेतै तहँ सुख भारी हो।८।

पदः- क्या श्याम श्याम हैं श्याम श्याम मन मोहैं।
केशरि को तिलक बिशाल भाल में सोहैं।
कानन में कुण्डल शिर पर मुकुट बिराजै।
हीरा गज मुक्तन माल लाल मणि राजै।
क्या पीत बसन छबि अंग पगन दोउ नूपुर।५।

वंशी की मधुरी तान मोह जांय सब सुर।
हैं सुघर सुहावन बाम भाग में राधा।
लेवै उनका जो नाम हरै सब बाधा।
जो चाहै हर दम दरश बचन मम मानै।
लै सतगुरु से उपदेश नाम धुनि जानै।१०।

सुर मुनि नित देवैं दर्श संघ बतलावैं।
नाना बिधि लीला करैं मधुर स्वर गावैं।
है राज योग यह सुरति शब्द को ख्याला।
अनहद बाजैं क्या मधुर तान स्वर आला।
मुर्वी के प्राण के प्राण राम गिरधारी।
सुर मुनि जिनका करि भजन रहे एकतारी।१६।

९० ।। श्री कामदेव जी ।।

गारी:- सुमन धनुष औ सुमन बाण कर में लै घूमौं धाई जी।
ताकि के जेहि पर लक्ष करौं मैं सो उतान गिरि जाई जी।
पशु पक्षिन की कौन बात है सुर मुनि गोता खाई जी।
सुधि बुधि ऊँच नीच की छूटै ज्ञान कि शान सेराई जी।
करौं परिक्षा अभिमानिन की बनैं ब्रह्म जे आई जी।५।

तिन का शिर नीचे पग ऊपर करि टांगौ हर्षाई जी।
काम कहैं यह काम हमारा सत्य तुम्हैं बतलाई जी।
राम नाम में जे जन तत्पर तिनकी बलि बलि जाई जी।८।

९१ ।। श्री रति जी ।।

दोहा:- तन मन भोग बिलास में रहै आठहू याम।
पती हमारे काम हैं, रती हमारो नाम।१।
जे हरि नाम में मगन हैं तिनको करूँ प्रणाम।
नाहीं तो मैं पती से कहि चढ़ि देऊँ लगाम।२।

९२ ।। श्री मन्दालसा जी ।।

दोहा:- सकाम भक्ति जे जन करैं ते जग चक्कर खाहिं।
भक्ति करहिं निष्काम जे ते नहि आवहिं जाहिं।।

चौपाई:- बचन हमार सत्य सुनि लीजै। यही बात की सिक्षा दीजै।
और ज्ञान जग सार न कोई। मुक्ति भक्ति याही से होई।
मार्ग प्रवृत्ति देय छोड़वाई। फेरि निबृत्ति में देंय लगाई।
सोई सतगुरु जक्त कहावै। सुरति शब्द को भेद बतावै।
हरदम नाम कि धुनि हो जारी। सन्मुख राम औ जनक दुलारी।५।

जियतै में जो यहँ सुख पावै। तन छूटै सो हरि ढिग जावै।
राम रकार राम को नामा। शंकर भजत जाहि बसुयामा।
लोमश शेष और चतुरानन। गणपति शारद जपैं षड़ानन।
काग भुशुण्डि गरुड़ हनुमन्ता। नारद शुक सनकादि कहन्ता।
श्री वशिष्ठ मुनि जपैं हमेशा। नवयोगेश्वर चन्द्र दिनेशा।१०।

दोहा:- मन्दालसा कहैं हमैं, श्री गुरु नारद आय।
राम नाम के जाप का दीन्हउ भेद बताय।१।

९३ ।। श्री रोहिणी जी ।।

चौपाई:- दशरथ कौशिल्या नन्दन। भये आय राम रघुनन्दन।१।
बसुदेव देवकी नन्दन। भये मथुरा में ब्रज चन्दन।२।
नन्द यशुमति के अंगन। भरि दीन मोद करि क्रन्दन।३।
मुर्बी के गर्भ में आये। प्रगटै जग यश फैलाये।४।

दोहा:- गुरु राघवानन्द जी तारक मंत्र सुनाय।
आशिष इच्छा मरन की दीन हिये हर्षाय।२।

चौपाई:- रामानन्द नाम धरि दीन्हा। सर्व कला निधि छण में कीन्हा।
जो जौन कार्य्य हित आयो। सो बिमुख गयो नहि पायो।
फिर शची के गर्भ में आकर। प्रगटे करुणा सुख सागर।
जिन सर्गुण यश नहि गायो। तिनको हंसि नाच नचायो।
चैतन्य गौराङ्ग निताई। कहवाये यहं पर आई।
रोहिणी कहैं समुझाई। सुमिरौ सब काम बिहाई।६।

९४ ।। श्री बामन भगवान जी ।।

दोहा:- भक्त हमारे प्राण हैं हम भक्तन के प्राण।
तन मन प्रेम लगावहीं दीन भाव उर आन।।

९५ ।। श्री बाराह भगवान जी ।।

दोहाः- दोनों दाँतन पर धरेनि, जिमि हम लीन उठाय।
वैसै नित रक्षा करौं दीन भाव ह्वै जाय।।

९६ ।। श्री नृसिंह भगवान जी ।।

दोहाः- भक्त कि रक्षा मैं करौं मारि सकै नहि कोय।
तन मन हम पर बारि दे निर्भय तब वह होय।।

९७ ।। श्री कच्छप भगवान जी ।।

दोहाः- भक्त के कारन सब सहौं छिन छिन में सुधि लेंव।
निर्मल होवै भक्त जब मुक्ति भक्ति को देंव।।

९८ ।। श्री मच्छ भगवान जी ।।

दोहाः- भक्तन हित हम मच्छ कहायन। संखासुर को मारि नसायन।
तन मन ते हमको जो खोजै। तिनको दर्शन दें हम रोजै।।

९९ ।। श्री वृत्ता सुर ।।

चौपाईः- हरि मिलने की सहज उपाई। बाल अबोध बनै सो पाई।
नौ करोड़ कत्यानी देवी। छत्तिस कोटि चमुण्डा देवी।
तैतिस कोटि देवता जानो। सहस अठासी ऋषि हैं मानो।
उन्चास कोटि पृथ्वी पर भाई। साढ़े तीनि कोटि तीरथ सुखदाई।
जल चर थल चर नभ चर सारे। नर नारी सब वर्ण संवारे।५।

राम श्याम सबके तन मन हैं। आनन्द हू के आनन्द धन हैं।
दीन भाव में प्रेम अखण्डित। नेकौ होत नहीं है खण्डित।
हरि को दीन भाव अति प्यारा। दीनन को हरि करत दुलारा।
तन मन धन जिन हरि पर बारी। तिन पायो रघुबर गिरधारी।९।

दोहाः- सर्व धर्म तजि हरि भजै एक तार जो कोय।
ता के सन्मुख रहैं हरि अन्त राय नहि होय।१।

चौपाईः- जो सुमिरन यहं पर नहिं करिहैं। सो वँह जाय नर्क में परिहैं।१।
या से मानो कहा हमारा। भजहु नाम हो बहु भवपारा।२।
ऐसा समय फेरि नहि पैहौ। नर्क में फिर पछिताय के रोइहौ।३।
बृत्ता सुर यह कहैं बिचारी। भजौ नाम होवै सुख भारी।४।

१०० ।। श्री कीरति जी ।।

दोहाः- शक्ति में शक्तीमान हैं, शक्तिमान में शक्ति।
मुक्ति के अन्तर भक्ति है, भक्ति के अन्तर मुक्ति।१।
कीरति जाने जौन कोइ, नाम जपन की युक्ति।
ता के सन्मुख हर समय, शक्तिमान औ शक्ति।२।

१०१ ।। श्री रति जी ।।

पदः- ठुमकि मटकि चलत चाल चपल श्याम राधे साथ।
मोर मुकुट शीश धारे कुण्डल कानन में प्यारे केशरि के तिलक माथ।
सुन्दर सब बसन अंग ग्वाल बाल सोहैं संग नूपुर पग वंशी हाथ।
बाजन की मधुर ताल नाचत त्रिभुवन भुवाल निरखत सुर मुनि सनाथ।
मुरली की धुनि सुनाय तन मन हरि लें लोभाय वृज के सब जन
कृतार्थ।५।

सखा सखी दौरि दौरि नाचैं दृग जोरि जोरि बोलैं जै वृज के नाथ।
भृकुटी दोउ जिमि कमान कोरन दृग सैन बान धनि धनि धनि प्राण नाथ।
राधे कर पकरि लेत नाचत नहि जान देत ताली सब देत हाथ।८।

१०२ ।। श्री दधिबल जी ।।

पदः- पौन खींचि पूरब से उत्तर जड़ समाधि तक जाय सकैं।
आगे जान कि गैल नहीं वहँ से किमि पता लगाय सकैं।
मन तो सृष्टी अलग रचत है, आयू आप बढ़ाय सकैं।
पांच त्तव षट चक्कर सातौ कमलन लखि मुसक्याय सकैं।
अन्तरध्यान और बहु सिद्धिन में पड़ि गाल बजाय सकैं।
मन का सारा खेल है भाई मन जीतै सुख पाय सकैं।५।

उतरै प्राण फेरि जस के तस इधर उधर बौवाय सकैं।
सतयुग त्रेता द्वापर कलि मन इस बिधि नहिं ठहराय सकैं।
नाम कि धुनि के खुले बिना सिय राम न नित दरशाय सकैं।
जियतै जे नहिं जानै दधि बल भर करके कैसे जाय सकैं।९।

१०३ ।। श्री गिरधारी दास जी ।।

पदः- नाम कि बिधि सतगुरु से जानै कैसे सुर मुनि जपते हैं।
धुनी नाम की खुलै अखण्डित अजपा जिसको कहते हैं।

नाम रूप परकाश हर जगह हर दम सब में बसते हैं।
जानि लेय मन मानि लेय तन सुफल होय नहि गिरते हैं।
बिमल बिलोचन उघरैं तब हीं गुप्त प्रगट सब लखते हैं।५।

तीनों गुण को त्यागि शुभा शुभ कर्म अगिन में जरते हैं।
कुण्डलिनी जाग्रत ह्वै जाई सब लोकन में फिरते हैं।
कमल खिलैं सातों षट चक्कर वेधैं अनहद सुनते हैं।
इड़ा पिङ्गला एक होंय तब फिर सुखमन में चलते हैं।
सुखमन नाड़ि में नाड़ि चित्रणी ह्वै बज्रणी में घुसते हैं।१०।

ता के अन्दर ब्रह्म नाड़ि है तहं पर जाय ठहरते हैं।
इसी को अभयन्तर धुनि कहते शुकुल धुवाँ सम लखते हैं।
सुर मुनि वायू रूप से मिलकर धुनी के साथ बिचरते हैं।
ध्यान लय दशा नाम से होती सुधि बुधि तहां बिसरते हैं।
सत्य लोक साकेत पुरी को विहँग मार्ग लै चढ़ते हैं।
गिरधारी कहैं हम तो हर दम राम सिया लखि हँसते हैं।१६।

१०४ ।। श्री शौनक जी ।।

पदः- मनुआं लागु नाम में भैय्या।१।
ररंकार धुनि हर दम होती अपनै आप जपैय्या।२।
कृष्ण मनोहर नैनन सन्मुख संघ में राधे मैय्या।३।
भव बन्धन शौनक कहैं मिटिंगा गुरु चरनन चित लैया।४।

१०५ ।। श्री सूत जी ।।

पदः- नाम धुनि सुनि मन आठौं याम।
ना कर चलै न जिह्वा डोलै न कछु लागै दाम।
आपै सुमिरन होत निरन्तर आपै आप क काम।
र रंकार के अन्तरगत है अगणित रूप व नाम।
पांचौ चोर तीनि गुण माया करते नित्य प्रणाम।५।

ज्ञान अग्नि में कर्म शुभा शुभ जरि ह्वै [illegible]काम।
राम सिया की झांकी सन्मुख सुन्दर शोभा धाम।
सूत कहैं श्री गुरु से लैकर सुरति शब्द पथ थाम।८।

१०६ ।। श्री अञ्जनी जी ।।

पदः- क्या खेल है इस तन में हरि का सब सुर मुनि का सब तीर्थन का।
सब भवनों का सब खण्डों का सब द्वीपों का ब्रह्माण्डों का।
सब दिवसों का सब तिथियों का सब मासों का सब बर्षों का।
सब गिरहों का सब राशिन का सब योगों का सब भोगों का।
सब सूर्य्यों का सब चन्द्रों का सब तारों का सब लोकों का।५।

सब जल चर का सब थल चर का सब नभ चर का सब देसौं का।
सब बाजों का आवाजों का सब रागों का सब वक्तों का।
सब सरितन का सब तालों का सब गिरि बन का सव झरनों का।
सब बेदों का सब शास्त्रों का सब श्रुतियों का स्मृतियों का।
सब अस्त्रों का सब वस्त्रों का सब भूषनों का सब रतनों का।१०।

उतपति का औ पालन का औ परलय का औ मिलने का।
सब बर्णों का सब धर्मों का सब कर्मों का सब मर्मों का।
सब मंत्रों का सब जंत्रों का सब तंत्रों का सब जग्यों का।
सब युक्तिन का सब मुक्तिन का सब भक्तिन का सब शक्तिन का।
सब पाठों का सब पूजों का सब जापों का सब ध्यानों का।१५।

सब लीलों का सब धामों का सब नामों का सब रूपों का।
श्री सतगुरु से करिये एका बतलावैं अजपा सूरति का।
खुलि जावै तार वो ररंकार हो हर दम दरशन तब हरि का।
तब शान्ति होय तन औ मन का तन छोड़ि जाव हरि के ढिग का।
यह आतम ज्ञान मिलै उनका जिन मैं औ तैं त्याग्यौ तिनका।२०।

थुव है थुव है थुव है तिनका हरि में मन नाहिं रम्यौ जिनका।
यह नर तन पायो दस दिन का बिषयों में परि खोयौ धन का।
जब समय आइहै चलने का यमदूत चलैं लै यमपुर का।
मारैं अति कष्ट देंय तन का तब कौन बचाय सकै तुमका।
लेखा लेहैं जब कर्मों का तब काह बताओगे उनका।२५।

भोगौ दुःख नर्क में कल्पों का रहि जावै मन ही म मन का।
पागल अज्ञान न हौ लरिका अब ख्याल करौ अपने घर का।
पर धन दारा में जो अटका सो जन्म मरन में फिर भटका।

हरि नाम क जानि जाव लटका जो कार्य्य तुम्हारे मतलब का।
अधमन दीनन के तारन का भक्तन के कार्य्य संवारन का।३०।

श्री गीध श्वपच सबरी गणिका श्री यवन निशाद बालि बलिका।
श्री सधन अजामिल कुब्जा का कर्मा पूतना अहिल्या का।
मारीच सुबाहु ताड़ुका का त्रिशिरा कबन्ध खर दूषण का।
हिरनाकश्यप हिरनाक्षों का औ कुम्भ कर्ण दश आनन का।
बृत्तासुर घण्टा कर्णों का औ दन्त बक्र शिशुपालों का।३५।

कहँ तक बरनै को हरि यश का नहिं आदि मध्य अन्तौ जिनका।
धनि हैं धनि हैं धनि हैं उनका हरि नाम अमोल मिल्यो जिनका।
सुर चाहत निशि दिन नर तन का तिरगुन माया से तरने का।
फिर चौरासी नहिं परने का यक टक हरि दरशन करने का।
प्रतिमा सम पधरे रहने का मुख नेक न कबहूँ खुलने का।४०।

पदः- नाम से ध्यान ध्यान से लय हो लय से महा शून्य जाओ।
महाशून्य से श्री गोलोक में पहुँचि के हरि दरशन पाओ।
कृष्ण लोक से चलि साकेत में महा प्रकाश को लखि पाओ।
महा प्रकाश सूर्य्य अगणित जिमि उपमा और कौन गावो।
एक एक भक्तन के तन से सहस सूर्य्य सम द्युति छावो।५।

राम ब्रह्म की झांकी अनुपम सिया को उर में लखि पाओ।
होहु अभेद अखेद जबै तब नाम खुलै भव तरि जावो।
राम सिया की झांकी सन्मुख निरखि निरखि हिय हर्षावो।८।

दोहाः- सात कमल षट चक्र औ, कुण्डलिनी लो जान।
फाटक तिरगुन का खुलै तिरबेनी अस्नान।१।
रेफ़ बिन्दु के दरश हों निकसै तेज महान।
ब्रह्मा बिष्णु महेश जी जपैं बीज यह मान।२।
अनहद बाजा बजै तहँ मधुर मधुर धुनि जान।
मुख से को बर्णन करै धुनि सुनि लागे कान।३।
सूरति लागी नाम में उत्रायण में मान।
तन छूटै तब जाय वह हरि पुर बैठि बिमान।४।

१०७ ।। श्री सेन भक्त जी ।।

पदः- उत्पति पालन परलय औ लय रंकार के अन्तरगति सब है।
सन्मुख सिय राम की झांकी मै धुनि जारी हर दम रहती है।
लेटे बैठे चलते निर्भय आसान मार्ग यह ऐसा है।
शुभ अशुभ कर्म जरि ह्वै गे क्षय सब सुर मुनि दरशन देते हैं।
मन जस मानै बैठै वैसे नहिं आसन की कोई बिधि है।५।

निर्भय निर्बैर लखै एक मय जिन नाम में सूरति पागी है।
हर दम छबि सागर में तन मय नहिं इच्छा कोई रहती है।
प्रेमी सांचा ता में नहिं द्वैत न मन ते दीन भाव उर है।
पढ़ि सुनि गुनिये अपने हिरदय विश्वास बिना कछु होत न है।
होवै जेहि लायक जीव जभी दरजा वाको वैसा मिलिहै।१०।

हरि न्याय के सागर औ निर्भय ऐसा कोई नहि दूसर है।
श्री स्वामी रामानन्द कि जय कहैं शेन् भक्त मुद मंगल है।१२।

दोहाः- भक्त भक्त सब जन कहैं, भक्त होव बड़ा काम।
श्री गुरु सेवा जो करैं, प्रेम से आठौं याम।१।
छूट जाय तन मन कलुष, ह्वै जावै निष्काम।
राम नाम की धुनि खुलै, सन्मुख छबि सिय राम।२।
शेन भक्त सो धन्य है, ता को करूँ प्रणाम।
दरशन ते पातक हरैं, जिन पायो हरि नाम।३।

१०८ ।। श्री लुकमान हकीम जी ।।

पदः- जा को शेष जपत शम्भु जपत ब्रह्मा जपत बेद जपत पावत नहिं
आदि अन्त।
प्रगट्यौ श्री अवध आय दशरथ ग्रह सुत कहाय मातु पितु हिय जुड़ाय
चूमै मुख गुदगुदाय निरखैं सुर मुनि बसन्त।
पुर के सब वृद्ध बाल निरखत छबि अति बिशाल गावत दै हाथ ताल
पावत मणि पट निहाल जय जय कहि कहि चलन्त।
राम भरथ एक रंग लक्षिमन शत्रुहन के रंग तन मन सब के उमंग
सागर में जिमि तरंग अंगन प्रति द्युति भरन्त।
आये फिर बृज मंझार कीन्ही लीला अपार देवकि बसुदेव कुमार
यशुदानन्द करि के प्यार पाल्यौ पलना झुलन्त।५।

कृष्ण नाम राम जी का बलिराम नाम लखन जी का मोर मुकुट शीश
नीका कानन कुण्डल जरी का पीत बसन तन लहन्त।
सखा सखी संघ सोहैं चाल चलत मन को मोहैं वांकी दोउ सुघर भोहैं
मुरली कर माहिं सोहैं नूपुर दोउ पग बजन्त।
ताल मूल उलटि देत नांचत हंसि गारि देत गावत फिरि ताल लेत राधे
गले बांह देत पल में बनते अनन्त।८।

शेरः- मिलै जब नाम का नुस्खा धुनी एकतार जारी हो।
कृष्ण राधे कि छबि सन्मुख रहे हर दम निहारी हो।१।
नहीं कुछ खर्च नुसखे में गौर कर हम बिचारी हो।
नाम में प्रेम से सूरत लगा करके सम्हारी हो।२।
मिलै मुरशिद से यह ताली खुलै ताला करारी हो।
कैर कसरत खिलै गुलशन उड़ै खुशबू बहारी हो।३।

१०९ ।। श्री हकीम अरस्तू जी ।।

पदः- हम हर दम नाम की धुनि सुनते सरकार औ महरानी की जय।
अद्‌भुद दोनो झांकी लखते सरकार औ महरानी की जय।
सब सुर मुनि दरशन नित देते सरकार औ महरानी की जय।
नित ध्यान पैगम्बर का करते सरकार औ महरानी की जय।
फुरसत मिलि गई इस दुनिया ते सरकार औ महरानी की जय।५।
यह भेद मिला मोहिं मुरशिद से सरकार औ महरानी की जय।
छबि निरखि निरखि कै हम हंसते सरकार औ महरानी की जय।
सच कहैं अरस्तू यह तुमसे सरकार औ महरानी की जय।८।

शेरः- नुसखा बड़ा अजीब है मुरशिद से लीजिये।
सुनिये धुनी को नाम की नित दर्श कीजिये।१।
कहते अरस्तू सच है इस रंग में भीजिये।
आना व जाना छूटै कसरत तो कीजिये।२।

११० ।। श्री हुलसी माता जी ।।

पदः- दोनों कर पकड़ि लेत बेचन नहिं जान देत ऐसे हरि हैं
सचेत कैसी करूँ मैया।
ग्वाल बाल संघ सोहैं बीधिन में बाट जोहैं देखत ही खात सोहैं
कोई नहि लुटैया।

निकसै कछु दूरि जांय पीछे से आवैं धाय पकरैं कटि कसि के हाय
छोड़ैं नहि दैया।
ग्वालन से कहैं भाय खाओ मन भरि अघाय कैसे यह निकसि जाय
दान नहि देवैया।
शिर से मेटुकी उतारि माखन दधि खात झारि धोवत फिर हाथ बारि
फेंकि के मलैया।५।

एड़ुरी यमुना में डारि देवैं ए सुत तुम्हारि इन से मैं गई हारि
करते अति ढिठैया।
चोली को बन्द तूरि सारी नोचैं मरोरि बोलैं हम हाथ जोरि
तबहूँ नहि मनैया।
मुख पर हंसि हाथ देत बोलन नहिं बात देत बिगड़ी है इनकी नेत
लाज नहि रखैया।
छिन ही में बाढ़ि जात जादू क्या सिखे मात साढ़ी ऊपर की खात
जूठ दधि करैया।
आँखैं दोउ मूंदि लेत ग्वालन को टेरि देत चहुँ दिशि ते घेरि लेत
मेटुकी के फोरैया।१०।

दोनौं कर तानि देत आगे नहिं जान देत बोलैं तो गारि देत
वंशी गहि मरैया।
पीछे से गुदगुदाय देवै मेटुकी गिराय चलती नहि कछु उपाय
कोई नहि सुनैया।
चाटैं सब दही धाय धरनी में मूंह लगाय छीपैं फिर तन पै आय
हंसी के करैया।
मेटुकी लै भागी जात भाजत में खात जात संघै सब ग्वाल जात
पकरत सब भैया।
संघ में सब बैठि खात खावैं हंसि हंसि बतात जावैं ढिग मारैं लात
भागौं फिर कन्हैया।१५।

ग्वाल बाल हंसै ठाढ़ सब के सब बड़े राढ़ ऐसे दुखदेत गाढ़
रोये नहि चुकैया।
आधा दधि लेत खाय यमुना जल दे मिलाय धक्का फिर दें लगाय
मौन नहिं बोलैया।

दोना सब लेंय हाथ जावैं बनि अति अनाथ चरनन पर धरत माथ
दया उर अवैया।
पीवैं सब ग्वाल आंप दोना भरि भरि सड़ाप लेवैं फिरि नाप नाप
पेट नहि भरैया।
देखैं तहँ दौरि जांय रोवैं आँसू बहाय भूखन से प्राण जांय
दया करो मैया।२०।

रोटी नहि मातु दीन घर ते मोहिं काढ़ि दीन ग्वाल बाल संघ लीन
भीख के मंगैया।
गृह गृह में जांव माय मांगव बारी लगाय यमुना जल पिअव पाय
ग्वालन नहिं छोड़ैया।
गौवें सब की चराय खरचा कछु जांव पाय ग्वालन फिर बसन लाय
देहौं मम मैया।
छोड़ैं नहि बृज बिहार ग्वालन को हम दुलार फंसिगे सब प्रेम जाल
हमरे संघ खेलैया।
दाया तन जिनके आय देहैं ते हमैं लाय ऐसै नित पाय पाय
गुजर करब मैया।२५।

होवै जब हम सयान लेवैं नहि दधि का दान अबहिं कछु नहीं ज्ञान
बोलैं तुतलैया।
बृज को हम छोड़ि जाब छूटी तब दधि का खाब देवैं गृह क्या जवाब
चढ़ी बहु मोटैया।
पूछैं क्या भाव देव पैसा पहिले हि लेव चाखन तब सबै देव
झूठ नहि कहैया।
पैसा सब हमैं देत माखन दधि फेरि लेत हंसि हंसि सब पाय लेत
बोलत सुखदैया।
पकरत हरि मोहिं दौरि पैसा सब लेत छोरि बोलैं तब करत शोर
ऐसे कुटिलैया।३०।

आँखिन में धूरि झोंकि जावैं किमि देत रोंकि कोई नहिं सकत
टोंकि ऐसे धुरतैया।
चूमत कहुँ अधर आय मेढुकी को दें गिराय नाचैं औ लें नचाय
छोड़ैं तब मैया।

थूकैं तन पान खाय कपड़ा सब दें भिजाय ताली सब मिलि बजाय
हंसते अति मैया।
ढेला कर लें उठाय मेटुकी पर दें चलाय लगतै चट फूटि जाय
सारा तन भिजैया।
दौरैं मुख बाय बाय जिह्वा को लपलपाय मानहुँ कछु नशा खाय
गारी कटु देवैया।३५।

मेटुकी शिर पर से लेंय खावैं कछु फेंकि देंय मेटुकी को पटकि देंय
ग्वालन लै भगैया।
अपने तन दधि लगाय लेपैं ग्वालन के धाय दौरैं यमुना नहाय
करते छिप छिपैया।
ग्वालन के कांधे धाय बैठैं पीछे से हाय मेटुकी झट लेंय हाय
करि दें थुक थुकैया।
खावैं सब ताकि ताकि मेटुकी फिर झांकि झांकि बूरा को फांकि फांकि
वांधे सब पोटैया।
चोरी करने को जांय निशि हू बासर कन्हाय माखन दधि दूध पांय
शिकहर के तुरैया।४०।

देखन में लागैं छोट हैं तो यह बड़े खोंट पकरैं और दें घसोट
गिरौं धरनि मैया।
जैसे हम सोय जांय वैसे यह पहुँचि जांय मेटुकी लै निकसि जांय
पता नहि लगैया।
कबहूँ दधि खाय लेंय मेटुकी औंधाय देंय जल हू तहँ पाय लेंय
गगरी सब फौरैया।
कबहूँ मेटुकी को फोरि टुकड़ा बहु तोरि तोरि पानी में धरैं बोरि
सिकहर लै भगैया।
पहुँचैं चुपके से जाय मेटुकी को लें उठाय पृथ्वी पर देंय नाय
पानी भर धरैया।४५।

पकरैं तस मचलि जात कनियां ते सरकि जात छूटै तस सटकि जात
फेरि कब मिलैया।
पहुँचैं यह रैनि जाय सोवत जहँ हमै पाय ऊपर से दहि नाय
आवैं यदुरैया।

बेला भर दही नाय मेरे ढिग ढाँकि जाँय मुख में कछु दें लगाय
जागैं तब जनैया।
यमुना जल भरन जाँय पीछे ते साथ जांय भरि कै जब चलैं माय
गगरी चट फोरैया।
लकुटि मेटुकी में मारि भागति फिरिहैं मुरारि टेरत सब ग्वाल झारि
आवो दधि खवैया।५०।

लकुटी लै नोकदार मेटुकी में कोचि मारि पीछे से गिरत धार
हाथन छिदि चटैया।
मेटुकी चट पट उतारि बालू कछु देंय डारि बेचै किमि कहौ नारि
पावत खसखसैया।
सब की नित होत हानि छोड़त नहिं अपनि बानि झगड़ा नित ठानि ठानि
लूटत दधि कन्हैया।
कपड़ा लघु भिजय वोरि मेटुकी में देंय डारि लेवैं साढ़ी उतारि
मुख में धरि लेवैया।
मही निरखि छोड़ि देत दही निरखि छोरि लेत कबहूँ कछु मही लेत
ऐसे चतुरैया।५५।

माखन जो पाय जात अपनै सब खाय जात ग्वालन ते कहत भ्रात
फटो दही लैया।
खट्टा कबहूँ बताय पावैं मुख को घुमाय ग्वालन संघ करि हंसाय दौरत
करि कुहैया।
सारी को पकड़ि लेत कर औ मुख पोंछि लेत बोलैं तो घुड़कि देत
आँखैं करि ललैया।
घंघरा को पकरि लेंय ठौरै बैठारि लेंय लैकर दधि पाय लेंय
छोड़ैं तब मैया।
लरिका नहि है अजान लेवै जो बचन मानि गावै क्या मधुर तान
चित के चोरैया।६०।

गौवैं नौ लाख मातु तुमरे सब जग बिख्यात काहे तब लूटि खात
गुनिये चित मैया।

पूछैं हम कहैं बात हमरे घर नहि पकात फीका हमको बुझात
तोर मीठ मैया।

घर घर का यही हाल कहँ तक को कहैं बाल चटक मटक चलत चाल
नुपुर पग बजैया।
रुमि झूमि आय जात हँसि हँसि के करत बात नैनन की कोर मात
सैन शर मरैया।
धीरज सब छूटि जात मेटुकी गिर फूटि जात निकसत नहि नेक बात
बोलैं किमि मैया।६५।

कोमल अति श्याम गात सब से यह जीति जात कौन चीज़ खात मात
इतनो बल अइया।
लावैं जब पकरि माय आवैं संघ हँसत धाय मेरे पति तन बनाय
लेवैं चट कन्हैया।
वँशी की धुनि सुनाय तन मन हरि लें लुभाय आँगन नहिं घर सुहाय
देखे बिन कन्हैया।
देखा हम इन्हैं मात ग्वालन की रोटी खात मानत नहिं जाति पांति
बन में दोउ मैया।
रोटी को खात जात बोलत मुख बात जात फूहर तुम सब की मात
सेंकत अरसैया।७०।

अपनी फिरि बांटि देत हँसि हँसि कै सबै लेत पूँछत फिरि करि कै हेत
कैसी कहौ भैया।
बोलैं सब ग्वाल भाय रोटी बड़ी नीक लाय बदलब हम रोज़ लाय
मीठी अति लगैया।
गौवन ढिग बैठि जांय मुख में थन लें लगाय पीवैं तहं दूध गाय
ऐसी सिख सिखैया।
तरुवर पर बैठि जांय हाँकन नहिं आप जाँय ग्वालन ते कहैं भाय
देखौ कहां गैया।
बंशी को दें बजाय गोवैं सब आय जाँय ऊपर को मुख उठाय
देवैं हंकरैया।७५।

यमुना में जल पिआय खूँटन फिर बांधै आय लेवैं बहु तन बनाय
निरखत चकरैया।
मंजन हम यमुना जाँय बैठैं तहं हरि लुकाय कपड़ा सब लें उठाय
तरुवर चढ़ि टँगैया।

जल में सब नंगी नारि बैठी करती पुकार कपड़ा दै दो हमार
लेवैं हम बलैया।
ऐसा इन सिख्यो ढंग सब को नित करत तंग लाग्यौ अब इन्हैं रंग
जगत के रमैया।
बोलत हंसि कै कन्हाय आओ सब पास धाय सब को हम दें पिन्हाय
काहै सकुचैया।८०।

नाहीं तो सुनो बात पहिनो सब कमल पात ठाढ़ी हो पांति पांति
देय सब पटैया।
पुरइन के पहिरि पात आवैं सब तहां मात निरखत औ मुसकरात
फेंकत पट कन्हैया।
बनिकै निल गोदनी मात लीला गोदन को जात गोदन करि मुसकिरात
जानै तब मैया।
बनिकै मनिहारी जांय चुरिया पहिरावैं माय चुटिकी फिर काटैं हाय
ऐसे दुख दैया।
बिसातिन को रूप धारि सुरमा मीसी पुकारि लेहौ कोइ बृज की नारी
बोलैं सुख दैया।८५।

मोहरे पर बैठि जांय देवैं पुड़ियां उठाय टिकुली चट लें छोड़ाय
भागैं हंसि मैया।
धोबिन बनि कबहूँ जावैं कोई नहि चीन्ह पावै कपड़ा सब बांधि लावैं
ग्वालन सब बटैया।
जंगल की जड़ी लाय गोली कछु लें बनाय घूमैं बृज गलिन जाय
झोरी लै कन्हैया।
बोलैं हम वैद्य राज वैद्यन के शिर के ताज करते हैं धर्म काज
लेवैं कछु न मैया।
घर में हम लें बोलाय बैठें चुप चाप जाय देखैं फिर हाथ माय
परखैं सब रोगैया।९०।

खाने को गोली देंय संयम बतलाय देंय उठि कै हंसि गाय देंय
अंगन सब टोवैया।
नाउनि बन जात माय नहखुरि करते बनाय फूल बेलि पग बनाय
देवैं सुखदैया।

छोरैं जब केश मात झारैं फिर भलीभांति कंघी लै हाथि दांत
शुभग नग जड़ैया।
केशन में मलैं तेल ऐचैं करि एक मेल फूलन की कलिन बेल
केशन गुंथि देवैया।
चोटी को बांधि देंय सेंदुर को मांग देंय सुरमा दोउ दृगन देंय
इतर मुख मलैया।९५।

टिकुली माथे लगाय अरसी को दें देखाय गुच्चा गालन लगाय
भागैं फिर मैया।
दुहने जब गऊ जांय देखेन हम इनको माय बछरा संघ में पिआय
आपै खुब पिऐया।
दोहनी भरि जाय माय पीवैं फिर मूँह लगाय दुहि कै फिर लें पुराय
ऐसे जुठरैया।
बीथिन जहं जहं दुकान बैठत तहं जाय कान्ह मांगत दीजै मिठान
भूखे हम भैया।
नाना विधि की मिठाय देवैं सब लाय लाय खावैं हंसि हंसि कन्हाय
हरखैं हलवैया।१००।

सोवत देखैं निहारि भूषन सब लें उतारि देवैं शिरहाने डारि
चादर उतरैया।
केशन को झारि देंय चोटिन को छोरि लेंय चीटन से बांधि देंय
छोरे नहि छोरैया।
सब के गृह निशि में जांय माई तुम्हरे कन्हाय निशि भर करते हंसाय
सोवै नहि देवैया।
दुपहर औ आधी रात सब के घर रोज जात होवै जैसे प्रभात
पता नहि लगैया।
कितने यह रूप धरैं घर घर में रोज फिरैं नैनन से नाहि टरैं
रहस के करैया।१०५।

घर घर में यही बात अचरज की कही जात बनिगे हरि सब के नात
प्रेम उर भरैया।
सासु ससुर पिता मात सब के तन मन जुड़ात ऊपर ते कहत बात
सत्य मानु मैया।

सब को हरि बश में कीन्ह इनके सब हैं अधीन ऐसे यह हैं प्रवीन
मानो सत्य मैया।
देखे बिन नहीं चैन असुवां अति बहत नैन बोलत अति मृदुल बैन
मोहक यदुरैया।
जहां मिलैं तहां धाय उर में सब लें लगाय लाज को बिहाय दीन
हम हूँ सब मैया।११०।

ग्वाल बाल सब बुलाय खेलन गये गेंद धाय यमुना के निकट जाय
खेल तहँ करैया।
श्री दामा गेंद दीन हंसि कै हरि हाथ लीन उनहीं के मार दीन
हटिगे नहिं लगैया।
यमुना जल गेंद जाय धारा बिच परयौ आय दूसर नहिं सकत जाय
लावै को कढ़ैया।
बोलैं श्री दामा आय दीजै हरि गेंद लाय दूसर नहिं लेहैं भाय
वही मोहिं सोहैया।
हरि को कर पकरि लेत आगे नहि जान देत सुन्दर मैदान
रेत ठाढ़े यदुरैया।११५।

बोलैं हरि सुनो भाय अब ही हम लावैं जाय काहे तुम मन दुखाय
देर नहिं लगैया।
छोड़ैं श्री दामा वाँह कूदैं हरि जल अथाह काली दह को प्रवाह
कौन रुकि सकैया।
पहुँचै गृह काली जाय नागिनि बहु दौरि आय निरखैं तन मन लोभाय
बोलैं कन फुसैया।
जाओ तुम भागि लाल जागै पति धरै गाल होवै फिरि तुरत काल
करि ले गटकैया।
सुनतै यह बैन कान्ह पहुँचै बायु समान मारैं एक लात तान
कहैं उठु लड़ैया।१२०।

काली उठि झुल झुलाय हरि के तन लपटि जाय मुख पर फन लाय
लाय मारै फुफकरैया।
तन को हरि दें बढ़ाय रोवै करि हाय हाय टूटि मम देंह जाय
प्राण जांय भैया।

नागिन सब दौरि आय बिनती करतीं सुनाय छोड़ौ अहि बात जाय
हम सब दुख पैया।
बिनती सुनि अन्तराय परगट ह्वै नाथैं आय फन पर ह्वै खड़े जाँय
तिरछे पग धरैया।
डोरी को गले डारे वंशी को अधर धारे इच्छा ते बसन सारे
परगट करि लेवैया।१२५।

शीश मोर मुकुट साजे कुंडल कानन में राजैं केशरि को तिलक छाजै
मस्तक चमकैया।
नाना रंग बसन अंग उठती तिन में तरंग निरखत अहि नारि तंग
अद्‌भुत छवि कन्हैया।
सुरमुनि सब नभ में छाय देखत यह चरित भाय नाचत फन पर कन्हाय
नुपुर पग बजैया।
वंशी धुनि सो बजाय बाजत सब गे लोभाय अहि को परिवार आय
चरनन परि जैया।
काली से कहैं श्याम कमल एक कोटि काम लै कर संघ चलौ ग्राम
छोड़ैं तब भैया।१३०।

सुनतै सब दौरि जांय कोटि कमल देंय लाय अहि पर हरि लें लदाय
बोलें सुखदैया।
धीरज सब धरो भाय अब हीं हम दें घुमाय गृह में कमलन धराय
देर नहि लगैया।
इनको हम अभय कीन ए तो हैं बड़े दीन शिर की लखि चरण चीन्ह
गरुड़ नहि बोलैया।
काली तब चले धाय आये तट यमुना भाय सोहैं फन पर कन्हाय
निरखैं नर लोगैया।
नभ से बाणी सुनाय जय जय त्रिभुवन के राय फूलन सुर झरी लाय
दुंदभी बजैया।१३५।

आज्ञा हरि फेरि दीन चलि भे काली प्रवीन आसन प्रभु द्वार लीन
उतरे यदुरैया।
डोरी फन से निकारि लेवैं तहं पर मुरारि देवैं फन फूंक मारि
पूरै चट घवेया।

वृज के सब वृद्ध बाल फूलन लीन्हेउ उतार बोले तब फिर मुरारि
दूध पिओ भैया।
कीन्हेउ तुम बड़ा काम लेहैं जग तुमरो नाम दुपहर औ सुबह शाम
मिलिहैं हम सदैया।
लावैं हरि दूध धाय बूरा औ घृत मिलाय बेला में धरैं
पाय लीजै मम भैया।१४०।

काली तब कहै नाथ दीनन के दीना नाथ कीन्हों मम कुल सनाथ
जूठनि हम पवैया।
बेला कर में उठाय लेवैं हरि नेक पाय देवैं तब कालि पाय
जय जय धुनि करैया।
हरि की लीला अनूप प्रगट्यौ तहं नर स्वरूप देखत सब चकित रूप
उर में हरि लगैया।
चरनन में लपटि गयो तन मन को कलुष गयो तुरतै अदृष्ट भयो
शक्ती हरि देवैया।
पहुच्यों जब जाय धाम निरखैं सब सर्प बाम वोलैं जय श्याम श्याम
सब के उर बसैया।१४५।

धीमर बहु हरि बोलाय देवैं पुष्पन लदाय बहिंगा लै चलैं धाय
तन मन हर्षैया।
पहुँचै जब कंश द्वार बहिंगा धरि दें उतारि बोलैं तब सब कहार
फूल लेव रैया।
सुनिके यह हा हा कार आवैं तब कंश द्वार निरखत हिय जांय हार
बोलि नहिं सकैया।
द्वारे पर फूल नाय बहिंगा को कांख लाय होवैं सब अंतराय
पता नहि लगैया।
जान्यौं सब कंश हाल प्रगटे त्रिभुवन भुवाल आयो अब मोर काल
जैहौं हरि पुरैया।१५०।

कमलन का सुभग टाल निरखत राजा निहाल फेरी करि पांच हाल
धरनि परयौ धैया।
बैठ्यो फिर कंस राय चाह्यौ देखै उठाय फुलवा सबगे बिलाय
मन में पछितैया।

मारयौ बहु असुर आय कंसै फिरि पकरि धाय ऊँचे से नीचे लाय
कीन्ह्यौ कढ़िलैया।
चोटिया गहि कसि कन्हाय दीन्हेव तब फिरि घुमाय पटक्यो
तब धरनि लाय दीनन उधरैया।
लागी नहि देर नेक यमुना में दीन्ह फेंक मीनन बहु लीन
छेक खायो सब मसैया।१५५।

तुरतै तन दिब्य पाय नभ ते जय जय सुनाय फुलवा सुर मुनि गिराय
तन मन हर्षैया।
साज्यो तन गरुड़ आय भूषण औ वसन लाय निरखत छबि बनत भाय
ऐसी छवि छैया।
आयो तहं दिब्य यान बैठ्यौ नृप हर्ष मान चलिभो वायू समान
सुर पुर गो धैया।
सुरपंति के दरश पाय तन मन में हर्ष छाय बैठ्यौ फिर यान जाय
पहुँच्यो हरि पुरैया।
उतरयो फिरि चल्यौ धाय रमा बिष्णु पास आय चरनन पर शीश नाय
पायो आशिखैया।१६०।

आयो जहं पुरुष नारि राजत हैं सुघर झारि बैठ्यौ तन मन संभारि
आसन सुखदैया।
लीला हरि की अपार पावत नहि कोइ पार शारद शिव शेष हार
और को कहैया।
हुलसी कहैं बचन सार पढ़िहै जे मन संभारि सुनिकै उर लेंय धार
दरशन दें कन्हैया।
आसा हरि पूर कीन सुन्दर दै धाम दीन मान्हु जल मिल्यौ मीन
आनन्द नहि समैया।१६४।

दोहाः- पांच धाम को फूल गे, भाग बराबर जान।
ब्रह्मा बिष्णु महेश गृह फण पति इन्द्र के थान।।
हरे भरे रहते सदा अब हीं धरे हैं मान।
सुर मुनि नित दरशन करत हरि की लीला जान।।
हरि की लीला अगम है नहीं आदि औ अन्त।
नाम सदा सुमिरन करै सो ह्वै जावै सन्त।।

मेघनाद ही कंस भा द्वापर युग में आय।
इच्छा तन मन यह रही हरि मोहिं मारै धाय।।
पिता कि शरि वरि तब मिलै जाऊँ बिष्णु के धाम।
नारायण के दरश तहँ होवैं सुन्दर श्याम।५।

श्लोकः- निर्गुणम् सर्गुणम् नहिं असारम के सारम्।१।
सर्वेश्वरम् सर्व रूपम् औ नाथम्।२।
हुलसितम् नाशनम् घोर मोहान्धकारम्।३।
जयति जय जयति जय कृष्ण मम प्राणम्।४।

१११ ।। श्री शची जी ।।

पदः- ब्रह्मा भजत बिष्णु भजत शम्भु भजत जा को नाम।
शेष भजत लोमश भजत काक भजत अष्ट याम।
नारद भजत शारद भजत गणपति भजत श्री शुक अराम।
सब सुर भजत सब मुनि भजत सब ऋषि भजत नित्य ही काम।
सब में बसत सब को लखत सब की सुनत वह राम श्याम।५।

पहले कसत पीछे मिलत सब की सहत सो हो अकाम।
धुनि को सुनत हरि को लखत जियतै मुकुत सो भक्त आम।
सो नहि गिरत हरि पुर चलत प्रभु अस बनत ताको प्रणाम।८।

दोहाः- गोबर्द्धन नख पर धरयौ, बृज की रक्षा कीन।
सात दिवस जल प्रलय सम, मेघन बर्षा कीन।।
सुर पति का मद चूर भा, आय चरन शिर दीन।
खड़े भये कर जोरि कै, तन मन से ह्वै दीन।।
अस्तुति कीन्ही श्याम की, क्षमा करो भगवान।
आप की माया अति कठिन, सुर मुनि नर भटकान।।
आप की कृपा जाहि पर, सो होवै भव पार।
नाहीं तो यह पटकि कै, छाती पर असवार।।
छिन छिन में भटकावती, खींचैं अपनी ओर।
किरपा निधि किरपा करो, नेक दृगन की कोर।५।

अस्तुति करि सुरपति गये, अपने पुर हर्षाय।
हरि गोबर्द्धन दीन धरि धन्य, धन्य यदुराय।७।

दोहाः- बैठे कदम की छाँह, हरि सोय गये सुख पाय।
राधे जी पहुँचीं तहाँ, मुरली लीन चुराय।।
उठे श्याम मुरली नहीं, पहुँचे गृह में जाय।
रोवन लागै ह्वै खड़े, माता आई धाय।।
गोदी में बैठारि कर, मातु रहीं चुपवाय।
मानैं नहि नेकौ बयन, रोवैं कहैं सुनाय।।
मुरली लीन चुराय कोइ, सोय गयऊँ मैं माय।
बड़ी दुःख मो को भयो, तन मन अति अकुलाय।।
कहैं यशोदा सुनो सुत, सोने कि देंव गढ़ाय।
बांस की बंशी जान दे, काहे तू बिलखाय।५।

कहैं कृष्ण माता सुनो, सोने की नहिं लेंव।
वही बाँशुरी लेंवगो चहैं तहां ते देव।।
उस वंशी का भेद मैं तोको देंव बताय।
शिवा कुंञ्ज में बांस एक प्रगट्यो हरि ने आय।।
ब्रह्मा तुरतै काटि कै सवा पोढ़ बिलगाय।
जाय के शिव को दीन दै तब हर रच्यो बनाय।।
सात छिद्र ता में करे राम नाम भरि दीन।
शिव ने फिर हरि को दियो, हरि फिरि मोको दीन।।
ना वह टूटै ना फटे ना वह मैली होय।
वह वंशी जो नहिं मिलै प्राण देऊँ मैं खोय।१०।

चौपाईः- अन्तर ध्यान बांस ह्वै गयऊ। सुर मुनि ध्यान में देखत भयऊ।
सोने की चहै लाख मंगावो। मिलिहै वही तबै सुख पावों।।
सुनि हरि बचन मातु दुख आवा। घर घर में धावन पठवावा।
पता लगाय बांसुरी लावो। को लै गयो उसे समुझावो।।
पट भूषन हम धन बहु देहैं। जब तक जियैं सुयश नित गैहैं।
जो मम लाल कि वंशी देवै। जो मांगै सोई लै लेवै।।
धावन गृह गृह में बहु जावें। पता न लगै लौटि फिरि आवैं।
रोवैं श्याम मातु की कनियां। नैनन ते जारी बहु पनियां।।
राधे सुन्यो बिकल बनवारी। मुरली लै कर तुरत सिधारी।
पहुँचि गईं मोहन ढिग प्यारी। दीन बांशुरी हंसे मुरारी।१५।

दोहाः- याको बदला लेउंगो, राधे लीजै जान।
दुलरी की चोरी करूँ, गले से छोरूँ मान।१६।

चौपाईः- बदला लिहे बिना नहिं मानौं। तब मोहिं नन्द क भैया जानौ।
कहैं राधिका सुनिये माई। लाल कि अपने यह चतुराई।।
सोये कदम छाँह सुख पाई। वंशी शिरहाने धरि माई।
मेरे संग सखी बहु आईं। यमुना जल लेने हर्षाई।।
यह बिचार मेरे मन आई। अस न होय कोइ लेय उठाई।
सखा सखी बृज के सब ही जन। वंशी सब ही को यह तन मन।।
बाहेर ग्राम क जो कोइ लेहैं। तौ वंशी नहिं देने ऐहैं।
यही समुझि हम लै गईं माई। बिकल जानि तस लै कर आई।।
कहैं कृष्ण सुनिये तुम राधा। आज बजावन में भइ बाधा।।२०।।

सोरठाः- दुलरी गले में जौन, पहिरे हौ अनमोल जी।
छोरौं आय के भौन, मुख से कढ़ी न बोल जी।२१।

चौपाईः- यशुमति मातु कि देऊँ दोहाई। बिन छोरे मोहिं चैन न आई।
यमुना पशु पक्षी कृमि बृज के। सुन्यो न मुरली मन दुख सब के।।
कानन के जीवन दुख भारी। आँसू नैनन ते हैं जारी।
बृज चौरासी कोस में जानौ। जल चर थल चर सब दुख मानौ।।
बछरा गैयन ढिग नहिं जावैं। गैयन को दुख थन चर्रावैं।
गैयां बछरन ते मुख मोरयो। शोक से अपना नाता जोरयो।।
सुर मुनि सब ब्याकुल हैं कैसे। मणि बिन फणि की गति हो जैसे।।
वृज घर घर के नर औ नारी। तुम्हैं छोड़ि सब को दुख भारी।
जल भोजन कोई नहि पायो। या से मम उर दुख अति छायो।।
जाव राधिका अपने घर को। खुशी करौं मै अब हीं सब को।
गई लाड़िली भवन को धाई। मोहन मुरली दीन बजाई।२७।

दोहाः- तीनि लोक चौदह भुवन, सात द्वीप नौ खण्ड।
धुनि सुनि तन मन अति मगन, फूट्यौ शोक को भण्ड।२८।

।। माटी खान लीला ।।

चौपाईः- माटी खांय खवावै ग्वालन। घोटलन के बल चलि जग पालन।।
कहैं ग्वाल सुनिये मम भैया। बड़ी मीठ माटी सुख दैया।।

दूध दही भोजन नहिं पैहैं। रोज आय माटी यह खैहैं।।
ऐसा स्वाद बिचित्र है भाई। खातै बनै बरनि नहि जाई।३०।

वृज के कोई जानि न पावैं। किसी के आगे यँह नहि आवैं।
मैया जो कछु भोजन देहैं। सो लै कर बाहर हम ऐहैं।।
बाहेर गौवन देब खवाई। मुख में कछु मलि लेव लगाई।
फिरि घर में पहुँचव हर्षाई। पानी मांगव मातु से जाई।।
माता पानी देहैं आई। मुख औ कर धोवैं हर्षाई।
जल वँह पर कछु लेवै पाई। तब किमि जानै हमरी माई।।
माता ते पूछव लपिटाई। खेलन जांय श्याम संघ माई।
कहिहै मातु जाव तुम भैया। खेलौ सब जन संघ कन्हैया।।
तब सब जन मिलि यँह पर आवैं। माटी खांय औ खेल मचावैं।
कहैं कृष्ण सुनिये सब भाई। गुण या को हम तुम्है बताई।३५।

एक दफै नित या को पावै। तन बल बढ़े शरीर मोटावै।
तेइस घंटा भूँख नहि प्यासा। खेलन को क्या भयो सुपासा।।
बोलैं ग्वाल सुनो मम भाई। आज तलक काहे न बताई।
कहैं कृष्ण सुनिये सब भैया। या को भेद आज हम पैया।।
राति को एक पुरुष चलि आयो। या को भेद हमैं बतलायो।
कारो कारो मैं हौं जैसा। मानो बचन रहै वह वैसा।।
कूदैं ग्वाल हँसै दै तारी। जै श्री कृष्ण चन्द्र बलिहारी।।

दोहाः- रह्यो मनसुखा ग्वाल एक, गयो कृष्ण के भौन।
यशुमति से चुपके कह्यौ, भई बात यँह जौन।३९।

चौपाईः- आये भौन जबै यदुराई। यशुदा लीन गोद बैठाई।
माता पूँछै कुँवर कन्हाई। आज सुना माटी तुम खाई।।
हँसी करावति हौ तुम भैया। कौन कमी तुम को सुख दैया।
जो चाहौ सौ भोजन पावो। जो चाहौ सो सबन खिलावो।।
ग्वाल बाल लै माटी खैहौ। ह्वै है हानि सवै रोगिऐहौ।
कहै कृष्ण सुनिये मम माई। माटी भला जाति कहु खाई।।
माटी मे क्या भरी मिठाई। पावै जो कोइ मूँह खिसकाई।
झूँठी बात कौन बतलाई। मानि गईं ताको तुम माई।।
ग्वाल बाल सब लेव बोलाई। पूँछि लेव माटी को खाई।

तब फिरि हमको बांधौ मैया। जो चाहौ सो देव सजैया।४४।
देखि लेव हम मूह को बाई। माटी कहूँ लगी है माई।।

दोहाः- अस कहि श्याम खड़े भये मूह को दीन पसार।
यशुमति तहँ निरखत भई, लीला अपरम्पार।।
ब्रह्मा बिष्णु महेश जी, बैठे सुर मुनि जान।
असुर नाग बन ताल गिरि, सरिता सागर मान।।
प्रेत योगिनी सिंह खग, कृम को करै बखान।
बृज पुर बासी सहित गृह, आपौ तामें जान।४७।

चौपाईः- अगणित लोक भुवन औ खण्डा। अगणित द्वीप और ब्रह्मण्डा।४८।

दोहाः- मुरछा माता को भई, ढाई घरी की जान।
ज्यों की त्यों बैठी रहीं नेक न तनकौ भान।।

चौपाईः- तब कर श्याम शीश पर फेरा। सुधि ह्वै गई बिहंसि कर टेरा।
बैठि के सोय गईं तुम माई। ऐसी ठीक नहीं औंघाई।।
गिरि कहुँ परौ चोट लगि जाई। हम को भोजन कौन पवाई।

दोहाः- असि कहि गोद में बैठगे डारयो मोह को फन्द।
लीला अगम अपार है जय जय आनन्द कन्द।५१।

चन्द्रा बलि छलन लीला

दोहाः- चन्द्राबलि को हरि छल्यौ, बनिके भगिनी जाय।
चक्की पीस्यो साथ में गोबर पाथ्यो धाय।।
पाक बनायो प्रेम से, बरतन माँज्यो जाय।
झाड़ू से गृह झारि कै चौका दीन लगाय।।
संगै मे भोजन कियो हँसि हँसि कै बतलाय।
शयन कियो संग में, मुख चूम्यो हर्षाय।।
चन्द्रा बली उठि बैठि कै, चरनन शिर धरि दीन।
धन्य धन्य सुखमा भवन, तुम सम को परवीन।५५।

गृह उपद्रव लीला

चौपाईः- गृह में कृष्ण उपद्रव ठानै। खेल करैं जोई मन मानै।
गगरिन का पानी भभकाई। दारे भागि जांय हंसि भाई।।

आटा दाल औ चावल जाई। चुपके एक में देंय मिलाई।
घृत में नमक छोड़ धरि देवैं। कबहूँ बूरा को भरि देवैं।।
कबहूँ घृत औ तेल मिलाई। धरि देवैं चुपके से जाई।
कबहूँ दही कि मेटुकी धाई। खोलि के बूरा देंय मिलाई।।
टेटी करिल अचार उठाई। दही में डारि के देंय हिलाई।
कबहूँ दही में आटा नावैं। कबहूँ चावल दाल मिलावैं।।
कबहूँ दही की साढ़ी खावैं। ता में रोटी को धरि आवैं।
कबहूँ रोटी भात कन्हैया। दही में छोड़ैं बांधि पोटैया।६०।

कबहूँ माता की लै सारी। दही में बोरि धरैं बनवारी।
कबहूँ रोटी चुपके लावैं। जल की गगरिन में धरि आवैं।।
कबहूँ भात घड़न कछु भरि कै। बन्द करैं ढक्कन को धरि कै।
कबहूँ दही में तेल मिलावैं। कबहूँ घृत लै तेल में नावैं।।
कबहूँ तेल घड़न में नावैं। पानी ऊपर चट उतरावै।
कबहूँ पानी में घृत नावैं। आय के ऊपर वह जमि जावै।।
कबहूँ दूध वारि में नावैं। जल दूधै के रंग ह्वै जावै।
कबहूँ जल में दही मिलावैं। कबहूँ साढ़ी ही धरि आवैं।।
कबहूँ दही में दूध मिलावैं। कबहूँ दूध में दही को नावैं।
कबहूँ दूध में पानी भर दें। कबहूँ दही में पानी कर दें।६५।

कबहूँ सिकहर छोरि कन्हाई। दही में देवैं तुरत भिजाई।
लोहा गाड़ि लेंय लकुटी में। चुपके छेद करैं मेटुकी में।।
कबहूँ कोयला पीस के भाई। दही दूध घृत में भुरकाई।
आटा दाल औ चावल माहीं। छोड़ैं तेल फेरि भगि जाहीं।।
ऊखल धरि लें सिकहर छोरी। दूध में जाय के देवैं बोरी।
करन रसोई यशुमति जावैं। दूरिहि ते हरि घात लगावैं।।
दौरि के रोटी लेंय उठाई। द्वारे भागि जांय हसि भाई।
पहुँचैं आय फेरि यदुराई। लिपटि जांय यशुमति को धाई।।
रोटी लिहे हाथ अध खाई। माता के मुख देंय लगाई।
सब रोटिन में देंय छुवाई। फिरि खावैं हंसि कुँवर कन्हाई।७०।

दूध पिअन लागैं फिर भाई। अंचल ओढ़ि लेंय सुख दाई।
उगिलैं दूध कहैं मम माई। आज दूध में है करुवाई।।

का मिरचा खायो बहु माई। की या में तुम लिहेव लगाई।
यशुमति कहति सुनो यदुराई। अब तुम करते अधिक ढिठाई।।
तात तुम्हारे गृह जब ऐहैं। तब उनको हम सब बतलैंहैं।
रोज रोज बहु हानि करत हौ। नेकहुँ नहि तुम धीर धरत हौ।।
हारि गयन हम तुम ते भय्या। नेकहु नहि तुम कहा मनैया।
एहेके खातिर तुम को पाला। अब हीं ते बतलावत टाला।।
रोवां रोवां में यदुराई। अवगुन तुमरे भरा देखाई।
सबै वस्तु तुम रोज बिगाड़त। दुख हम को बहु होत निहारत।७५।

लरिका पुर में हैं बहुतेरे। तुम जैसै तैसे नहि हेरे।
कहैं श्याम में तो अति कारो। मैं भी ऐसो नहीं निहारो।।
पूँछि बताव आज तुइ माई। हम को ऐसा कौन बनाई।
जो मिलि जाय तो लाव वोलाई। हम को गौर बनावै आई।।
सब कुछ तुमरे गृह में माई। दे दीजै जो मांगै आई।
नर नारी पुर के सब आवैं। श्याम श्याम कहि के गोहरावैं।।
जो कारो होतेउँ नहि माई। तौ किमि श्याम कहत कोइ आई।
या से कीजै मातु उपाई। काहे श्याम कहै कोइ आई।।
कहैं यशोदा सुनो कन्हाई। कहां सिखी तुम यह चतुराई।
ऐसी बातैं करत बनाई। तुम ते कोई पेश नहि पाई।८०।

हम बूढ़ी तुम छोटे लाला। हमैं सिखावत आला बाला।
कहैं श्याम सुनिये मम माता। बूढ़ी आप सत्य यह बाता।।
बूढ़े सब पर छिमा करत हैं। लड़िका खेलत लड़त हँसत हैं।
लड़िका अपनी बानि न छोड़ैं। मातु पिता नाहक मुख मोड़ैं।।
जब सयान ह्वै जैहौं भाई। चञ्चलता आपुइ मिटि जाई।
अबहीं यही नीक मोहिं लागै। और बात में मन नहिं पागै।।
छोटे पर तुम माता कैसे। खेल्यौ खेल बताओ वैसे।
जो हमरे मन में वह भाई। वैसे खेलव मातु सदाई।।
आये नन्द भवन में ज्योंही। कह्यो यशोदा लीला त्योंही।
नन्द कहैं सुनिये मम भैया। ऐसी ठीक नहीं लड़िकैया।८५।

जो कोइ पाहुन कहीं से आई। अपने गृह में जाय बताई।
बड़ा ढीठं है कुँवर कन्हाई। हमरी तब अति होय हँसाई।।
कहैं श्याम सुनिये मम माता। माई झूठ कहत सब बाता।

नीक बिकार सबै हम जानैं। इनका कहा कौन नहि मानैं।।
जौन वस्तु माई मोहिं देवैं। तौन खुशी से लै हम लेवैं।
ऐसा कौन जगत में ताता। काटै अपने हाथन गाता।।
यह सब पगलन के हैं कामा। नाशैं वस्तु बिगड़ैं धामा।
गृह में पुरूष रहत एक भारी। लेवै रूप हमारो धारी।।
सब कारन उसका है ताता। मानो आप सत्य यह बाता।
माई वाको भेद न पावैं। हम ही को नित झूठ लगावैं।९०।

एक दिवस हमरे ढिग आयो। कसिकै घुड़क्यो मूँह फैलायो।
हम पूछा तुम कौन हो भाई। हमको रहे हो जो डेरवाई।
हम से कह्यो भूत मम नामा। रात दिवस हमरो यह कामा।
मातु पिता से जो कहुँ कहिहो। तो तुम यहां रहन नहिं पैहो।।
पकड़ि के लै जैहों मैं धाई। यमुना जी मे देंव डुबाई।
हम सब आप क दीन बताई। जस चाहौ तस करौ उपाई।।
सुनि हरि बचन नन्द दुख पायो। बिरथा लालहि दोष लगायो।
सुनो यशोमति तुम मम बानी। पकड़ो ताहि तुम्हैं हम जानी।।
लाल को जो अब दोष लगैहौ। तौ तुम घर में रहन न पैहौ।
होत प्रभात उठे बनवारी। दधि की मेटुकी जाय उधारी।९५।

लागे पावन कुँवर कन्हैया। यशुमति को दैकर दुचितैया।
गई यशोमति देखैं हरि को। पावैं दही शंक नहि तनको।।
माता को निरख्यो बनवारी। मेटुकी उलटि दीन तहँ सारी।
दहि भवन में तहँ भरि गयऊ। यशुमति के उर अति दुख भयऊ।।
भागे श्याम मातु रपटायो। आँगन में क्या खेल मचायो।
आगे श्याम औ पीछे मैया। पकरि न पावैं दें कोड़रैया।।
माता थकि हाँफन जब लागीं। तब हरि के उर दाया जागी।
दौड़ि के लपटि गये हरि जाई। माता पकरयो अति रिसिआई।।
यशुमति कहैं टेरि बलरामहिं। रसरी लावो बांधैं श्यामहिं।
लै बलराम धरैं बहु रसरी। कई तरह की मोटी पतरी।१००।

बांधैं यशुमति होवै छोटी। जोरैं एक में पतरी मोटी।
छोटि परै गांठी नहि लागै। यशुमति के तब अति रिसि जागै।।
तब बलराम कहैं सुनु माई। आदि पुरूष हरि हैं सुखदाई।
इनको कौन बांधि हें माई। भक्तन हित प्रगटे जग आई।।

सब को बांधन छोरन हारे। सबको पालन उत्पति वारे।
सब को परलय पल में कर दें। सब को फिर पल ही में रचदें।।
प्रेम से भक्तन बश कर लीन्हा। प्रेमै के हरि रहत अधीना।
पुर नर नारि सुन्यौ यह बाता आज रिसानी हरि पर माता।।
नर नारी सब देखन आवैं। यशुमति को सब मिलि समुझावैं।
काहे बांधौ कुँवर को माता। रोय रहे अति कोमल गाता।१०५।

यशुमति कहैं सुनो मम बानी। नित प्रति ये करते बहु हानी।
पूजा के हित दही जमाई। दीन जुठारि बड़े दुखदाई।।
देवन की पूजा सुखदाई। दीन छोड़ाय आज यदुराई।
या ते हम इन पर रिसियाई। पीटव सांटिन बांधि अघाई।।
सब नर नारी कहैं यशोमति। तुम्हरी ठीक नहीं है यह मति।
दही के कारन मारो श्यामहिं। शान्त करो अपने अब जामहिं।।
कहैं यशोमति सब नर नारी। आदति इनकी दिहेव बिगारी।
कबहूँ इनको डाटेव नाहीं। ओरहन बस लायेव हम पाहीं।।
अधिक दुलारा लड़िका होई। मातु पिता के बचन को खोई।
लड़िकी अधिक दुलारी होवै। सो तौ दोनों कुलन को खोवै।११०।

अपने अपने गृह को जावो। तुम सब हमको क्या समुझावो।
सुनि सब पुरवासी चलि दीन्हे। तन मन दुःख श्याम रस भीने।।
हलधर कहैं छोड़िये माई। बांधि न पैहौ तुम यदुराई।
रसरी कितनी लै कर जोरी। वृद्ध अवस्था मति भइ भोरी।।
तन मन ते तो करौ बिचारा। खुल जावैं तब ज्ञान केंवारा।
क्रोध बुद्धि की हानि करत है। क्रोध से धीरज दूर टरत है।।
कहैं यशोमति हल धर भैया। भक्तन बश जो कुँवर कन्हैया।
करौं परीक्षा अबहिं न देरी। देखौं बात सांच है तेरी।।

दोहाः- सतयुग के भक्तन शपथ, यशुमति कहैं सुनाय।
जो हरि तुमरे प्रिय हों, तौ तुम लेव बंधाय।११५।

चौपाईः-अस कहि बांधन लागीं माई। गांठि न लगै अति रिसिआईं।

दोहाः- त्रेता द्वापर के भगत, जौन होंय हरि तोर।
तिनकी शपथ देवावती, लेव बंधाय यह डोर।११६।

चौपाईः- अस कहि फिर बंधन कर लायो। बैठी न सक्यो गांठि दुख छायो।
तब यशुमति बोलीं रिसिआई। कलि के भक्तन शपथ खवाई।।
फिर बांधन लागीं जब माई। रसरी बढ़ी बंधे यदुराई।
ऊखल में बांध्यो हरखाई। हलधर को सौंप्यो बैठाई।।
अब गृह को मैं कार्य्य सँवारो। जो न तकौ तो तुमहि निकारौं।
हलधर कहैं सुनो महतारी। अब हम खूब करब रखवारी।।
भागि न पैहैं अब यदुराई। ऊखल बंध्यौ संग में माई।
अस कहि यशुमति भवन में जावैं। दही बटोरन में मन लावैं।१२०।

तब तक श्याम कहैं हलधर से। पकरयो मति भैय्या तुम कर से।।
ऊखल खींचि द्वार मैं जावों। तुम को कैसा खेल देखावों।।
माता को टेरयो मति भाई। शपथ अपन हम तुम्हैं खवाई।
सुनि हरि बचन हँसे बलरामा। कीन्ह चहत हैं प्रभु कुछ कामा।
हम कछु बोल सकैं नहि भैया। निर्भय ह्वै जाओ सुख दैया।।
चले श्याम ऊखल कढ़िलाई। द्वारे पर पहुँचे हरखाई।।
यमलार्जुन द्वै वृक्ष बिशाला। पहुँचि गये ऊखल लै लाला।।

सोरठाः- दोनों वृक्षन बीच, रह्यौ फासिला हाथ भरि।
ता में ह्वै हरि खींचि, लीन्हेव ऊखल जोर करि।।

चौपाईः- दोनो वृक्ष गिरे अरराई। पुर भर में यह शब्द सुनाई।
वृक्षन ते दुइ सुघर कुमारा। प्रगटे श्याम को रूप निहारा।।

दोहाः- चरनन में दोनों परे उठिकै अस्तुति कीन।
श्याम चतुर्भुज रूप ह्वै, तब फिरं दर्शन दीन।।
अन्तर ध्यान भये दोउ, गये विष्णु के धाम।
नारद श्राप ते छूटिगे, लीला कीन्ही श्याम।१२७।

चौपाईः- घर घर के नर नारी दौरै। इधर उधर ताकैं जिमि बौरे।
तहँ उपनन्द की नारी आई। निरख्यो श्याम रहे मुसक्याई।।
ऊखल ते छोरयो चट जाई। गोदी में फिर लीन उठाई।
यहाँ यशोमति आँगन आई। पूछयो हलधर कहाँ कन्हाई।।
हलधर कह्यो भागिगो माई। द्वार ऊखल को कढ़िलाई।
कहन चह्यों जस तुमते माई। तैसे तो आँगन तू आई।१३०।
यशुमति द्वारे को तब दौरी। देखैं श्याम गयो केहि ओरी।

दोहाः- तब तक श्याम को गोद में, लिये नारि उपनन्द।
यशुमति के ढिग पहुँचिगै, बोली सुनु मति मन्द।।

चौपाईः- आज देव सब भये सहाई। बचिगे तेरे कुँवर कन्हाई।
चलि कै देख भई जो बाता। निरखि कै जीभ दाबि है दांता।१३२।
दोनो वृक्षन मध्य मुरारी। ऊखल में बांधे बतलारी।

दोहाः- वृक्ष परे दोनो गिरे, बैठें तहँ पर श्याम।
नेक दया तेरे नहीं, ऐसी अधम निकाम।।

चौपाईः- यशुमति सुनि कै अति घबड़ानी। हरि को गोद में लै हरखानी।
गईं ठौर देखन नन्द रानी। हाय हाय करि के चिल्लानी।१३४।
हरि के तात सुनै रिसिऐहैं। कैसे उनको मुख दिखलैहैं।
जो यमुना में बूड़ौ जाई। तो कहँ पावों कुँवर कन्हाई।१३५।

या से अब का करौं उपाई। सुनिये पुर के लोग लुगाई।
पुर के नर नारी संघ जावैं। यशुमति को गृह में लै आवैं।१३६।
नन्द भवन में पहुँचे आई। देखा भीड़ बड़ी तहँ छाई।
हलधर दौड़ि के लपट्यौ जाई। दीन्हेव भेद सबै बतलाई।१३७।
पहुँचे नन्द महरि ढिग जाई। देखैं रोवैं अति बिलखाई।
श्याम को गोद में लीन उठाई। चट हिरदय में लीन लगाई।१३८।
बोले नन्द सुनो तुम रानी। बिन समझे करतीं मन मानी।
ऐसा काम फेरि मत कीजै। सब के सन्मुख सौगंध कीजै।१३९।

दोहाः- यशुमति सबके सामने, कीन्ह त्रिबाचा जान।
अब कबहूँ कछु श्याम को, नहीं कहौं सच मान।।

चौपाईः- बोले नन्द दान अब कीजै। पुर नर नारिन को खुश कीजै।
सब की भाग्य से कुँवर कन्हाई। बचिगे मानहुँ श्याम की माई।१४१।
पट धन यशुमति आँगन लाईं। धरि दीन्हेव बोलीं हर्षाई।
जा के मन में जो कुछ भावै। सो लै लेय न मन सकुचावै।१४२।
पट धन नर नारी सब लेवैं। यशुमति नन्द को आशिष देवैं।
हलधर श्याम यह दोनों भाई। खुशी रहें सब के सुखदाई।१४३।
असि कहि के सब लोग लोगाई। अपने अपने गृह में जाई।

दोहाः- खींचि शोक सब को लियो, क्षण ही में हरि जान।
पुर नर नारी मगन मन, मातु पिता सुख मान।।

।। श्री दुलरी लीला प्रारम्भः ।।

दोहाः- शयन भवन में राधिका, पहुँचीं जैसे जाय।
मुरली धर परगट भये, तुरत वहाँ पर आय।१४५।

चौपाईः- महा प्रकाश कीन यदुराई। राधे के नैन गये चौंधाई।
पलँगा पर बैठी तहँ प्यारी। जिमि मन्दिर में मूर्ति पधारी।।
मोहन दीन मोहनी डारी। खुल्यो न मुख को करै गोहारी।
दुलरी छोरि लीन बनवारी। फेरि पलँग पर दीन लेटारी।।
मखमल की तकिया के भीतर। दुलरी धरि दीन्हेव मुरलीधर।
सिरहाने फिर दीन लगाई। चादर तन पर दियो ओढ़ाई।।
अन्तरध्यान भये गिरधारी।आये अपने भवन मंझारी।
माता ते बोले मुसक्याई। मो को भूँख लगी है माई।।
मातु कह्यो दुहि लावो गैया। तब पावो फिर कुँवर कन्हैया।
चले गऊ दोहन दोउ भाई। हलधर से हरि दीन बताई।१५०।

तब बलराम कह्यो मुसक्याई। पूरी भई कसम अब भाई।।
गौवैं दुहि फिर भवन में आये। भोजन कीन परम सुख पाये।।
शयन कीन संघ दोनों भाई। उठे प्रभात तुरत सुखदाई।
यमुना गये नहाने धाई। जहँ बिश्राम घाट है भाई।।
राधे संघ सखी बहु आईं। शिर पर कलश कमर कर लाईं।
दोनों भाई करि अस्नाना। अपने गृह को कीन पयाना।।
कलशा धरि सब सखी नहावैं। यमुना जी में खेल मचावैं।
छिपि छिपैया करतीं सारी। एक ते एक बड़ी सुकुमारी।।
करिकै खेल आय फिर तट पर। पहिरयो बसन दूसरे तन पर।
सखी बिशेषा दृष्टि उठाई। राधे तन ताकेव तहँ भाई।१५५।

गले में दुलरी नहीं दिखानी। राधे सन बोलीं मृदु बानी।।
हे मम प्रिया किहेव का दुलरी। छोरि के धरेव कि टूटि केबखरी।।
राधे गले पै हाथ चलायो। दुलरी नहीं शोक तन छायो।
गीले बसन सखिन पहिरायो। यमुना जी में खोज करायो।।
ढूँढ़ैं राधे संग सब सखियाँ। पगन से नीचे करिकै आँखियाँ।

निर्मल बारि में सबै देखाई। कौड़ी पड़ी होय चमकाई।।
दुलरी को कहुँ पता न लागै। संग कि सखी दुःख में पागै।
राधे संग निकसि सब आवैं। बदलैं बसन सबैं मुरझावैं।।
बसन धोय कलशा भरि लेवैं। राधे संग भवन चलि देवैं।
आय भवन राधे जब जावैं। सब सखियन मिलि हाल सुनावैं।१६०।

राधे मातु सुनैं दुख पावैं। सुता को चट पट गले लगावैं।
राधे को लै गोद में माई। समुझावन लागीं हर्षाई।१६१।
दुलरी दूसर देऊँ गढ़ाई। आजै स्वर्ण कार बुलवाई।
कौन कमी तेरे गृह माहीं। जासे सोच करत मन माही।१६२।
राधे कहैं सुनो मम माई। वैसी दुलरी कौन बनाई।
वह दुलरी जो देव मँगाई। तब मम प्राण रहें सुनु माई।१६३।
दुलरी का मैं हाल बतावों। कहाँ से आई को लै आओ।

दोहाः- ब्रह्माणी गिरिजा रमा, दीन्हेउ दुलरी मात।
फूटै टूटै नहिं कबहुँ, सांची मानौ बात।।

चौपाईः- ना वह मैली होवै माई। रहे एक रस चमक सदाई।
माता कहैं सुता सुनि लीजै। धरयो छोरि होई गुनि लीजै।१६५।
काल्हि शाम तक मैं लखि पाई। दुलरी गले पड़ी सुखदाई।
की पलँगा के खाले गिरिगै। की यमुना की बाट में गिरिगै।१६६।
टूटि न सकै फूटि नहि सोई। ग्रन्थि ढीलि ते छूटि गै होई।

दोहाः- मूसा कहीं उठाय कै की धरि दीन्हेउ जाय।
घबराओ तुम मति सुता, भवन लेंव ढुँढ़वाय।।
राधे की माता कह्यो, सब सखियन समुझाय।
जाओ निज निज गृह सबै, पाक बनाओ जाय।१६८।

चौपाईः- गईं सखी अपने अपने गृह। तब राधे ढुँढ़वायो निज गृह।
मिली न दुलरी दुख भो भारी। नैनन ते आँसू अति जारी।।
माता कहैं लली मम प्यारी। तव दुख से मो को दुख भारी।
दुलरी के कारन सुकुमारी। तब तन पीलो भयो दुलारी।१७०।
छोड़ि दे चिन्ता सुनु मम बानी। नाही तो होई बड़ि हानी।
तव सुख से मोको सुख मानो। तव दुख से मोको दुख मानो।।
राधे कहैं सुनो मम माई। दुलरी बिना दुःख नहि जाई।

मातु पिता पुर जन समुझावैं। राधे के मन नेक न आवैं।१७२।
तीनि दिवस या बिधि ह्वै गयऊ। राधे जल भोजन नहि लयऊ।
यशुमति सुन्यो शोक उर आवा। द्वारे पर से हरि हि बोलावा।१७३।
गोदी में बैठारि के श्यामहिं। पूछैं गृह के तजि सब कामहि।
कहौ लाल दुलरी तुम लायो। हमरे आगे सौगंध खायो।१७४।

सोरठाः- गृह में थे बलराम, जब तुम हमरी शपथ की।
सुनिये प्यारे श्याम, दुलरी तुम है जपत की।१७५।

चौपाईः- चोरी करना ठीक न भैय्या। दीजै दुलरी कुँवर कन्हैया।
हम को चुपके देव गहाई। हम देवैं वहँ पर पहुँचाई।।
मातु पिता राधे हरखावैं। बृज के लोग जानि नहि पावैं।
कहैं श्याम मृदु बचन बनाई। दुलरी हम लाये नहिं माई।।
दुलरी अबला गले में लावैं। ब्याह न भयो जिसे पहिरावैं।
आपै चोर हमें बतलावो। तौ बहु ओरहन झूठे पावो।।
सुत पितु माता का होवै काना। अपने मुख वै कहैं न काना।
दुलरी एक गढ़ाय के माई। दै आओ राधे गृह जाई।।
तुम्हरे गृह में सब कछु माई। नाम तुम्हारो वृज में छाई।
कसम तुम्हारी जो मैं खाई। राधे को डेरवायन माई।१८०।

शायद मुरली फेरि चोरावैं। उनके संग सखी बहु आवैं।
राधे जो डरि जावैं माई। तौ कोइ सखी न सकै चोराई।।
चंचलता हम में कछु माई। दूध दही माखन लै खाई।
सब भीतर से हमको चाहैं। या से उनके बचन निबाहैं।।
निज स्वभाव जा को जो होई। ताको मेटि सकै नहि कोई।
सांची सब हम दीन बताई। भावै मनहिं करो सो माई।१८३।
सुनि के बचन श्याम के माता। बोलि न सकीं नेकहू बाता।

दोहाः- मातु कि गोद से उठे हरि, द्वारे पहुँचे जाय।
राधे के गृह को चले, पहुँचि गये हर्षाय।१८४।

चौपाईः- राधे कि मातु लख्यो बनवारी। धाय उठाय गोद बैठारी।।
कहैं कृष्ण सुनिये प्रिय माई। बड़ी उदासी गृह में छाई।१८५।
हमरे करने लायक होवै। सो हम करैं देर नहिं होवै।
कहैं राधिका जी की माई। दुलरी प्रिया कि बही कन्हाई।।

तीनि दिवस ते जल औ भोजन। त्यागि दीन ब्याकुल है तन मन।।
या से हमको दुख नन्द लाला। दीन बताय सत्य अहवाला।१८७।

दोहाः- कहैं श्याम सब सखिन को लीजै मातु बोलाय।
सब के सन्मुख स्वप्न मैं तुम से देउँ बताय।।

चौपाईः- सत्य स्वप्न जो होवै माता। तौ फिर तुम मान्यौ मम बाता।
माता धावन दीन पठाई। सब सखियन को लीन बोलाई।।

दोहाः- भीर भई वृषभान के, गृह द्वारे तक जान।
तब राधे की मातु से, कह्यो कृष्ण भगवान।।

चौपाईः- देख्यौं स्वप्न राति में माई। एक नारि मम सन्मुख आई।।
हम बोलेन तुम कौन हो माता। कहेव भगवती हम जग माता।।
तब हम कहेन जक्त की माई। कहाँ कृपा कीन्हेव तुम आई।।
बोलीं माता सुनो कन्हाई। तुम को बतलावन कछु आई।।
तब हम कहा बताओ माता। सुनकै मुद मंगल हो गाता।।
तब देवी सब हाल बतायो। तकिया में दुलरी खोजवायो।।
गले से छूटि गई थी दुलरी। राधे सोय गई सुधि बिसरी।
तब हम चुपके लीन उठाई। तकिया में धरि दीन तहाई।।
गृह गृह में हम घूमन जावैं। कोइ सोवत कोइ जागत पावैं।
या से हम मन यही बिचारा। होत प्रभात लखै कोइ दारा।१९५।

लेय उठाय घरै लै आवै। फिर दुलरी वह देन न आवै।
राधे निशि बासर अकुलैहैं। बिन दुलरी के चैन न पैहैं।।

दोहाः- सोवत में हम किसी को, नहीं जगावैं तात।
बड़े दोष की बात है नींद जाय अकुलात।।
वृज में तुम से चतुर कोइ, और नहीं है लाल।
तुम सब राधे कि मातु से, कहि आयेउ अहवाल।।

चौपाईः- इतना कहि कै जक्त कि माई। भईं अदृष्ट न पड़ीं देखाई।
होत प्रभात उठेन हम माता। गयन नहान यमुन दोउ भ्राता।।
करि मज्जन आयन गृह माई। माखन मिश्री मातु पवाई।
तब माता तुम्हरे गृह आयन। सबै बचन हम सत्य सुनायन।२००।
बचन कृष्ण के सुनि सुखदाई। राधे कि मातु उठीं हरषाई।

दोहाः- शयन भवन में राधिका पौढ़ी पलँग निहारि।
शिरहाने से मातु तहँ तकिया लीन निसारि।२०१।
उठि बैठीं राधे तहां मातु को रहीं निहारि।
तकिया खोलि के मातु तब दुलरी लीन निकारि।२०२।

चौपाईः- राधे के गले में बांध्यो माता। हर्ष से राधे क फूल्यो गाता।
माता हाथ पकरि के लाई। श्याम के चरनन शीश धराई।।

दोहाः- सबै सखिन तहं पर कह्यौ धन्य धन्य वृजराज।
तुम सम दूसर और को सब के हौ सिरताज।।

चौपाईः- तब बृषभान औ राधे कि माता। सखिन के मध्य कह्यौ यह बाता।।
राधे को हम सोपैं हरि को। अस कहि के पकरायो कर को।२०५।
अंगीकार करो हरि इनको। सुख होवै हमरे तन मन को।।
तहां सखी बहु मंगल गायो। देवन सुमन वृष्टि झरि लायो।।
नभ से सुर मुनि निरखैं कैसे। चकई शरद चन्द्र को जैसे।।
बृज की सखी सबै हरखानी। राधे मातु पिता सुख मानी।।
सबै परस्पर बचन उचारैं। यह जोड़ी हम रोज़ निहारैं।।
सब के हिरदय में युग झांकी। बसि जावै यह अद्‌भुत वाँकी।।
बिधि ने जोड़ी खूब बनाई। धन्य भागि हम सब वृज आई।।
दरशन ते तन मन हरषावैं। भूख प्यास की तपन बुझावैं।।
श्याम तहाँ पर कौतुक कीन्हा। सब के नेत्र बन्द करि दीन्हा।
ठाढ़ी सबै न आवै स्वांसा। सब के घट में भयो प्रकाशा।२१०।

श्याम मनोहर तहां बिराजैं। बाम भाग में राधे राजैं।।
होश में सबै सखी फिरि आई। प्रेम में मस्त प्रेम निधि पाई।।
कह्यो कृष्ण अब जैहैं माई। भोजन की बिरिया नगचाई।।
पिता के संग में दोनों भाई। हम नित पावैं जानो माई।२१२।
सब के पीछे पावैं माई। नित्य नेम सब तुम्हैं सुनाई।।

दोहाः- अपने अपने भवन को सबै सखी चलि जाँय।
गृह गृह में उत्सब मच्यौ, बाजै अनन्द बधाय।।

चौपाईः- अपने भवन कृष्ण तब आयो। मातु पिता लखि कै हर्षाये।
उठि बलिराम हिये में लायो। भय्या कहँ बड़ि देर लगायो।।

कृष्ण कहैं सुनिये मम भाई। भोजन करि के देंव बताई।
नन्द के संग में दोनो भाई। भोजन कियो परम सुख पाई।२१५।

दोहाः- भोजन करि आचमन कियो तीनों जन हर्षाय।
तब यशुमति पावन लगीं तन मन प्रेम लगाय।।

चौपाईः- माता पाय अँचय तहँ आईं। जहँ पितु संग बैठे दोउ भाई।
दीन श्याम सव हाल बताई। सुनि पितु मातु भ्रात हर्षाई।।
सब मिलि कहैं भई मन मानी। श्याम राधिका दोऊ गुण खानी।
ऐसी जोड़ी बिधि रचि दीनी। निरखत बनै प्रेम रस भीनी।।
घर घर बाजैं अनँद बधाई। प्रेम में भूले लोग लोगाई।
यशुमति बहु नाउनि बोलवाई। कह्यो जाव गृह गृह सब धाई।।
कह्यौ कि मम गृह मंगल गावैं। जो मांगैं सोई लै जावैं।
धन पट भूषन औ बहु गाई। देंउ आज जो मम गृह आई।२२०।

चलीं सबै नउनी हरखाई। गृह गृह में यह खबरि जनाई।
सब सुनतै उठि कै चलि दीन्हे। छोटे बड़ेन दबाव न कीन्हे।।
अपने अपने साज बजावत। कृष्ण भवन को गावत आवत।
नारी पुरुष यह जानैं नाहीं। को है नारि पुरुष कों आहीं।।
आँगन द्वारे नर औ नारी। नन्द के भीड़ भई अति भारी।
यशुमति पट भूषण धन ढेरी। आँगन धरि दीन्ही खुब गेरी।।
कह्यौ कि चहै तौन सो लेवैं। सकै न रोकि कोई हम देवैं।
जान्यो श्याम मातु पितु भ्राता। प्रेम में मस्त न समझैं बाता।२२४।
नर नारिन काहै बहु मेला। धन पट भूषन है नहि रेला।

दोहाः- शक्ति आपनी श्याम ने तामे कीन प्रवेश।
नर नारी लै लै चलैं, घटै न जस के तैस।।

चौपाईः- हाल जानि कछु गे यह हलधर। कीन्हेउ लीला जो मरलीधंर।
तब बलिराम कह्यो सब भाई। लूटौ मन भर खूब अघाई।२२६।

सोरठाः- लूट्यौ नर औ नारी, भूषण पट धन राति भर।
आखिर सब गे हारि, ऐसा कौतुक कीन हरि।२२७।

चौपाईः- बहु नर नारी गैया लीनी। बछरा बछिया सुघर नवीनी।
गैयां बछरा बछिया जितने। लै जावैं यहँ प्रगटैं उतने।।

नभ ते सुर मुनि फूल गिरावैं। जय जय श्याम श्याम कहि गावैं।
होत प्रभात गये दोउ भाई। श्री यमुना में जाय नहाई।।
करि अस्नान चले हलधर जी। पीछें पीछे मुरली धर जी।
सखिन समेत राधिका आवैं। मंजन हित श्री यमुना जावैं।।
हलधर नीचे शीश झुकाये। चले जात हरि के रंग छाये।
उन यह हाल जानि नहि पायो। श्याम मधुर स्वर बोलि सुनायो।२३१।

दोहाः- मुरली की चोरी किहेव, ता को बदलो लीन।
अब तुम हमरो क्या करो, तुम हू को लै लीन।।

चौपाईः- राधे नेक न बोलीं बानी। दोउ कर जोरयो औ मुसक्यानी।
सभी सखिन हँसि कह्यो बखानी। हरि तुम सम दूसर को ज्ञानी।।
पहुँचे दोउ भ्राता गृह जाई। माखन मिश्री मातु लै आई।।
पायो दोउ भ्राता हर्षाई। चले चरावन गौवैं धाई।२३४।

दोहाः- माखन रोटी बाम कर, चैल में बांधे जान।
दहिने कर लकुटी लिये, कांधे कमरी मान।।

चौपाईः- हलधर श्याम की जोड़ी प्यारी। सुर मुनि देखि के होत सुखारी।।
ग्वाल बाल वृज के नर नारी। सब के तन मन धन बनवारी।।
पक्षी पशु जल चर कृमि जानो। सब बस भये श्याम के मानो।
हलधर गौर वर्ण हरि कारे। उपमा जिनकी अमित अपारे।।
ग्वालन संघ चरावैं गैयां। सब को कहैं प्रेम से भैया।।
माखन रोटी सब की खावैं। तब फिर अपनी सबै खवावैं।।
साँझ होत गौवैं लै आवैं। यमुना जी में नीर पिआवैं।।
तब बाड़न में पहनैं लाई। गौवैं सिखी सबन सुखदाई।।
अपने अपने खूँटन जाई। ठाढ़ी होंय शान्ति से भाई।।
तब हरि बहुत रूप धरि लेवैं। बांधें छिन में गृह चलि देवैं।२४०।

भोजन भांति भांति के माई। गृह में राखैं मातु बनाई।।
हाथ पाँव धोवैं दोउ भाई। पिता के संघ में पावैं जाई।।
करि आचमन शयन फिर करहीं। नित लीला नाना बिधि करहीं।
यशुमति कह्यो जाव बलरामा। लै पीनस बृषभान के धामा।।
बिदा कराय लै आओ प्रिय को। आनँद होवै लखि कै हिय को।।
पुरवासिन को संघ लै जाओ। गान बजान करत गृह लाओ।।

दोहाः- गृह गृह में धावन गये सबै भये तैयार।
चले संग बलिराम के, पीनस लिहे कहार।।

चौपाईः- नाना बिधि के बाजा बाजैं। नाचैं नर नारी छबि छाजैं।।

दोहाः- पहुँचे द्वारे जाय सब, लखि वृषभान अनन्द।
कृष्ण राधिका उर बसे, जो आनन्द के कन्द।२४५।

सोरठाः- धाय मिले बलिराम, कर पकरयो वृषभान तब।।
सुन्दर शोभा धाम, गृह लैगे बृषभान तब।।

चौपाईः- माता लख्यौ प्रिया की जैसे। धाय के उर में लायो तैसे।।
फेरि गोद में लियो बिठाई। जिमि निर्धन पारस मणि पाई।।
तब बलिराम बचन मृदु गाये। प्रिया को बिदा करावन आये।।
मातु पिता मोहिं अज्ञा दीन्हा। तब हम यहां पयाना कीन्हा।।
सुनि बलराम की कोमल बानी। राधे कि मातु बहुत हर्षानी।।
धन पट भूषन औ पकवाना। बिबिध भांति को करै बखाना।२४९।
धीमर बहु लीन्हेउ बोलवाई। बहिंगन में सब दीन भराई।।

दोहाः- जो न्योताहरी नन्द के, सो बृषभान के जान।
सब तन मन ते अति खुशी, शेष न सकत बखान।।

चौपाईः- सब को धन पट भूषन देवैं। सब कोइ कहैं नहीं हम लेवैं।।
गैयां बछवा बछिया घर घर। धन पट भूषन ते गो मन भर।२५१।

दोहाः- ठौर घरन में कम रह्यो गुजर भरे को जान।
या से हम सब लेंय नहीं, मानो बचन प्रमान।।

चौपाईः- नन्द यशोमति के गृह जाई। लूटेन पट धन भूषन गाई।।

दोहाः- बचन सुने वृषभान यह, तन मन भयो सनाथ।
मै पत्नी के धुनि कियो। जय जय जय यदुनाथ।।

चौपाईः- राधे को पीनस बैठाई। कीन बिदा तन मन हर्षाई।।
चली जक्त माता गुण खानी। श्याम के रंग में हर दम सानी।।
आगे पीछे सब पुरवासी। बीच में पीनस सोहत खासी।।
गान बजान करत चलि आये। नन्द के द्वारे धूम मचाये।२५५।
द्वारे पर पीनस उतराई। गे बलराम भवन को धाई।।

माता से सब हाल बताई। फिर द्वारे पर पहुँच्यो आई।२५३।
माता द्वारे पर तब आईं। संग सखिन की शोभा छाई।

दोहाः- पीनस का परदा उलटि, चटपट दीन्हेउ माय।
झुकि करके कर को पकड़ि, प्रिया को चलीं लिवाय।।

चौपाईः- मध्य भवन में जाय बिठायो। देखि भवन बैकुण्ठ लजायो।।

दोहाः- सब पुरवासिन ते कह्यो, हलधर हाँक सुनाय।
भोजन प्रेम ते कीजिये, सब जन तन मन लाय।।
हलधर से सबने कह्यो, इच्छा नहिं सुखदाय।
इतना कहि सब चलत भे, निज निज गृह हर्षाय।२५९।

चौपाईः- यशुमति सब सखियन हर्षाई। लाय दीन पकवान मिठाई।।
सब ने हाथ जोरि शिर नाई। नेकौ इच्छा नहीं है माई।।

दोहाः- अस कहि उठि ठाढ़ी भईं, चलीं सबै हर्षाय।
अपने अपने भवन में, पहुँचि गईं फिर जाय।।
राधे नन्द के भवन में, रहीं रैन भरि जान।
होत प्रभात पिता भवन, को करि गईं पयान।२६२।

सोरठाः- नित प्रति का यह हाल, तुम्हैं दीन बतलाय हम।
पुर नर नारि निहाल, दुख क पुर में नहीं तम।।

दोहाः- वृज की लड़की निशि समय, रहैं पती के भवन।
जाँय सवेरे सब चली, मातु पिता के भवन।।
रीति पुरातन की तुम्हैं, दीन्हीं सत्य बताय।
या में जे संशय करैं, ते वृज पूछैं जाय।।
दुलरी की चोरी करी, प्रेम से कियो बिवाह।
सुर मुनि नर नारी सवै, तन मन ते उत्साह।।
हरि की लीला अकथ है, नाम मात्र कहि दीन।
पढ़िहै सुनिहै जौन कोइ तन मन ते ह्वै दीन।।
तिनको दरशन देंय हरि, सखा सखिन के संग।
शची कहैं बसु याम फिर, देखै नाना रंग।२६८।

११२ ।। श्री भोंदू दास जी ।।

पदः- ब्रह्म अखण्डं परमानन्दं आदि न अन्तं रूप न रेखम्।१।
निर्गुण रूपं सर्गुण रूपं ब्रह्मानन्दं नित्या नन्दम।२।

सहजानन्दं निज आनन्दं जयोति स्वरूपं महा प्रकाशम्।३।
कच्छ मच्छ बावन वाराहं नर्सिहं रामं औ कृष्णम्।४।

दोहाः- ब्रह्म सच्चिदानन्द हैं, ब्रह्म अखण्डानन्द।
सब में पूरण ब्रह्म हैं, भोंदू की मति मन्द।१।
नाम रूप परकाश जब, ब्यापक सब ही ठौर।
भोंदू द्वैत कहां रहा, देखौ करि कै गौर।२।
सब अन्तरगत ब्रह्म के, सतगुरु बिन को जान।
भोंदू हर दम सो लखै, जा के आँखी कान।३।

सोरठाः- सतगुरु से लै ज्ञान, बनि गरीब तो जाइये।
भोंदू नाम की तान, खुलि मुद मंगल गाइये।१।
हर दम निरखौ रूप, निर्गुण ते सर्गुण बनै।
भोंदू सब के भूप, सर्गुण ते निर्गुण बनै।२।
एक से होंय अनेक, फिर अनेक से एक हैं।
भोंदू कौन विवेक, अगम अपार अलेख हैं।३।

११३ ।। श्री आलम जी ।।

गज़लः- आलम के प्राण मोहन मुरली बजाने वाले।
चलते लचक के प्यारे भृकुटी नचाने वाले।१।
अद्भुत बनी है झांकी सब को लुभाने वाले।
क्या साँवली है सूरत सब में समाने वाले।२।

शेरः- एक बार श्याम प्यारे मुरली बजा तो दीजै।
आलम अमल में माता, झलकी दिखा तो दीजै।१।
आऊँगा पास ही में तन मन से प्रेम मेरा।
बैठे जहां हो छिपके, देखूँ मुकाम तेरा।२।
तन छोड़ने की देरी मैं पास बास लूँगा।
बारह बरस क बनकर बैठूँगा ह्वै के गूँगा।३।
मारो चहै जिआओ दर का तेरे भिखारी।
तव नाम की धुनी है मम रोम रोम जारी।४।

११४ ।। श्री जंग शहीद जी ।।

शेरः- शुक्र करना ही खुदा का काम देगा जानिये।
नेकी करो छोड़ो बदी यह बात मेरी मानिये।१।

११५ ।। श्री मर्द शहीद जी ।।

शेरः- यादगारी जिसने की अल्ला क प्यारा वह भया।
दीन दुनियां में रहा तन छोड़ि दोज़ख सो गया।१।
रहम जीवों पर नहीं औ बहम में तो चूर हैं।
भिश्त में नहिं जांय वह अल्ला को नहिं मंजूर हैं।२।

११६ ।। श्री राजे जी ।।

शेरः- याद करते रहना रब को तन यह एक दिन खाक हो।
राजे क कहना मानिये तब पाक हो बेबाक हो।।

११७ ।। श्री गाजे जी ।।

शेरः- शुक्र हर दम करते रहना रब ही से काम है।
गाजे कहैं सांचा सखुन मानै उसे आराम है।।

११८ ।। श्री अहमद जी ।।

शेरः- तन मन से प्रेम लगाइये दुनियां से ख्याल हटाइये।
अजपा खुलै सुख पाइये तन छोड़ि रब ढिग जाइये।१।
हर दम रियाज़ यह कीजिये ज़ाया समय मत कीजिये।
अहमद कहैं मानो बचन हर दम रहोगे तब मगन।२।

११९ ।। श्री कादिर जी ।।

शेरः- रब नाम कस के साधिये, सूरत में मन को बांधिये।
खुलि जाय अजपा जाप जब, मिटि जाय सारी ताप तब।३।
सब जगह उसका नूर है, वह पास में नहिं दूर है।
जो उसके रंग में चूर है, कादिर कहैं वह शूर है।४।

१२० ।। श्री ज्ञानेश्वर जी ।।

दोहाः- चारों तन शोधन करै जियति होय भव पार।
ज्ञानेश्वर यह कहत हैं सत्य बचन सुखसार।।

सोरठाः- सूरति शब्द लगाय चारों बेधन कीजिये।
ऐसा सुलभ उपाय ज्ञानेश्वर कहैं लीजिये।।

पदः- इक्यावन छिद्र कि हड्डी त्रिकुटी के बांये दिशि जानो।
दो अंगुल की लम्बी टेढ़ी बचन सत्य मम मानो।
बीच के छिद्र में सबै छिद्र मिलिगे झंझरी जिमि मानो।
बीच में ह्वै कर जावै योगी अमर पुरी स्थानो।
महा प्रकाश बनै नहिं बरनत राम रूप ह्वै जानो।५।

र रंकार धुनि होत अखण्डित रोम रोम उठि तानो।
शक्तिमान शक्ती हैं सन्मुख सब में जौन समानो।
ज्ञानेश्वर कहैं प्रेम दीनता बिन यह मिलै न ज्ञानो।८।

चौपाईः- तीनि कोटि जो भूत कहावैं। तिनको हाल तुम्हैं बतलावैं।१।
सतगुण कोटि एक हैं भाई। शान्ति चित्त वे रहैं सदाई।२।
रज गुण कोटि एक हैं जानो। भोजन बसन कि शौक है मानो।३।
तम गुण एक कोटि अभिमानी। मदिरा मांस भखैं अज्ञानी।४।

दोहाः- ज्ञानेश्वर कहैं मानिये मोरो बचन प्रमान।
सबै कला नीचै अहैं राम नाम के जान।।

१२१ ।। श्री नृबृत्ति नाथ जी ।।

दोहाः- ब्रह्मै का सब खेल है, ब्रह्मै सब है जान।
निबृत्ति नाथ सांची कहैं, गुरु से जानि के मान।।

१२२ ।। श्री सोपान देव जी ।।

दोहाः- सोपान देव मम नाम हैं केवल नाम अधार।
राम सिया सन्मुख रहैं धुनी सुनौं एकतार।।

१२३ ।। श्री मुक्ता बाई जी ।।

दोहाः- मुक्ता बाई नाम मम श्री गुरु नाम को दीन।
मुक्ति जियति ही में भई नाम रूप को लीन।।

१२४ ।। श्री चाङ्ग देव जी ।।

दोहाः- चाङ्ग देव चङ्गे भये लै सतगुरु से ज्ञान।
त्यागि दीन हठ योग को जान्यो बमन समान।।
सिद्धी व्याधि क मूल हैं आगे बढ़न न देंय।
चाङ्गदेव यह कहत हैं रहि रहि गोता देंय।।

जे जन इनको छोड़ि दें तिनको कहिये धन्य।
चाङ्ग देव ते सत पुरुष तिन पर हरि परसन्य।।
जे सिद्धिन में मगन हैं ते चौरासी जांय।
चाङ्गदेव कहैं कपट के कांटे हैं दुखदाय।।
राम नाम के जपे से सुर मुनि मिलते धाय।
चाङ्गदेव हरि सामने सतगुरु दीन लखाय।५।

सोरठाः- धुनी होत एकतार, चाङ्गदेव मन मगन है।
मानो बचन हमार सुलभ मार्ग नहिं बिघन है।१।
चाङ्ग देव कहैं शोध बचन सत्य मम मानिये।
होवै तब ही बोध जब जियतै में जानिये।२।

सोरठाः- रूप रेख नहिं रंग लय समाधि जब होत है।
चाङ्ग देव यह जंग तै कीन्हे सुख होत है।।

चौपाईः- जब समाधि ते उतरि के आओ। तब फिर नाम रूप सुख पाओ।१।
यह आनन्द वरनि नहिं जाई। निरखत बनै कहत नहि भाई।२।
चौदह सै बरसै ह्वै गयउ। ऐसो सुक्ख कबहुँ नहि भयऊ।३।
हरि हीरा पासै में पावा। चाङ्ग देव कहैं गुरु बतावा।४।

दोहाः- चाङ्ग देव कहैं गुरु पर कारिहैं जे विश्वास।
भेद बतावैं देर नहिं सबै वस्तु है पास।१।
सब में ब्यापक है वही अकथ अनादि अपार।
चाङ्ग देव सतगुरु बिना सबै ओर अँधियार।२।

१२५ ।। श्री गालवा नन्द जी ।।

दोहाः- आतम अनुभव के बिना मानुष तन बेकाम।
कहैं गालवा नन्द यह सुमिरौ आठौ याम।।

१२६ ।। श्री गोपी चन्द जी ।।

पदः- ब्रह्म अस्मी तत्व मसि अहं ब्रह्म सोऽहं ओंकार।१।
शिवोहं वही मानो बचन और कहते हैं वाको रकार।२।
निर्गुण वही सर्गुण वही सब में वही सब से है न्यार।३।
कहैं गोपी चन्द सतगुरु कृपा बिन भव हो न पार।४।

१२७ ।। श्री शेख जी ।।

ध्रुपदः- नैया हरि की जै पार।१।
नदिया बहत अगम धार लहरि उठत बार बार खेवन हार मतवार
बूड़ी जाय बीच धार।२।
दीनन के तुम मुरारि लीजै मो को उबारि दीजै बिगरी सुधारि।३।
प्राणन ते शेख प्यार करते हौ नित दुलार तन मन धन दीनि बारि।४।

१२८ ।। श्री जाकिर अली जी ।।

ध्रुपदः- राम श्याम छबि बिशाल मन्द मन्द चलत चाल केशरि को तिलक भाल
कुण्डल कानन में आल शीश मुकुट राजैं।१।
पीत बसन मन को हरत वायें कांधेन धनुष निषंग तरकश में बाण धारे
कटि में पट पीत वांधे अनुजन संघ बिराजै।२।
मुक्तन के सुभग हार गूँथे हैं स्वर्ण तार पहिने सब गलेन यार
अश्वन पर हैं सवार कोटिन मदन लाजैं।३।
बिहरत श्री अवध धाम निरखत सुरमुनि तमाम पुर के सब नर व
बाम जाकिर सर्वत्र राम सुनिये धुनि गाजैं।४।

१२९ ।। श्री बहादुर दास जी ।।

चौपाईः- नौ इन्द्री साधै जो कोई। पाठ नवाह्नि तासु को होई।
मन को शान्त करै जो कोई। मास परायण तासु को होई।
नाम की धुनी सुनै जो कोई। पाठ अखण्ड तासु को होई।
नित्य पाठ धुनि के अन्तरगत। नाम रूप परकाश सत्य सत।
लीला धाम की आनन्द लूटौ। सुनौ शब्द बन्धन ते छूटौ।५।

इसी से लय में जावै प्रानी। रूप रंग जँह पर नहिं बानी।
कहैं बहादुर दास बिचारी। यह अध्यात्म ज्ञान सुख कारी।७।

१३० ।। श्री लैनिन जी ।।

शेरः- जाल में एक मीन पकड़ी वह तड़फड़ाने लगी।
रहम दिल में आ गया पानी में छोड़ा वह भगी।
जाल को फेंका उसी दिन से लगे परस्वार्थ में।
जुट गये तन मन से मानो लै कलेजा हाथ में।
जो कुछ बना हमने किया आखिर गये हरि धाम को।५।

आनन्द वहँ पर है बड़ा मानो बचन नर बाम को।
जीव रक्षा के बराबर धर्म और न जानिये।
लैनिन कहैं इनको हमेंशा ख्याल करिके मानिये।

१३१ ।। श्री यमराज जी ।।

दोहाः- राम नाम जे जन जपैं, तिनके पास न जाँव।
करौं दणडवत दूरि ते, ऐसा नाम प्रभाव।।

१३२ ।। श्री अन्न पूर्णा जी ।।

पदः- अनन्त रूप अनन्त नाम अनन्त चरित अनन्त धाम।
धुनि अखण्डित सुनो नाम सन्मुख में हों राम श्याम।१।
सर्गुण निर्गुण अकाम, सारा उन्हीं क काम।
जपिहैं जे अष्ट याम यहँ वहँ हो तिनका नाम।२।

१३३ ।। श्री उर्मिला जी ।।

दोहाः- राम नाम के जपे से, अनुभव होंय बिचित्र।
मुख कैसे कह सकत हैं, निरखैं नैन चरित्र।

१३४ ।। श्री माण्डवी जी ।।

दोहाः- राम नाम जिनको मिल्यौ, तिन जान्यो कछु स्वाद।
पढ़ि सुनि के जे कथत हैं तिनके शिर उन्माद।।

१३५ ।। श्री श्रुति कीर्ति जी ।।

दोहाः- राम नाम में शक्ति अति कहे सुने नहि होय।
तन मन प्रेम लगाइये, निशि दिन दर्शन होय।।

१३६ ।। श्री कंस जी ।।

चौपाईः- कृष्ण से बैर कियो हम भाई। मारि दिहेव बैकुण्ठ पठाई।१।
जे हरि को निशि बासर ध्यावैं। आवागमन कि ग्रन्थि छोड़ावैं।२।
कंस कहैं हरि से करि नेहा। सुमिरौ सुफल होय नर देहा।३।

१३७ ।। श्री दन्त बक्र जी ।।

दोहाः- बैकुण्ठै पहुँचावते, बैरी कहे से श्याम।
निशि बासर जे ध्यावते, देवैं अचल मुकाम।।

सोरठाः- दन्त बक्र कहैं धन्य, जे जन हरि सुमिरन करैं।
तिन पर हरि परसन्य, मै परिवार को लै तरैं।

१३८ ।। श्री आल्हा जी ।।

दोहाः- देवी की पूजन करी तन मन प्रेम लगाय।
लता सजीवन मातु मोहिं दीन्हेव अति हर्षाय।।

चौपाईः- कह्यो मातु या को तुम पावो। ह्वै कर अमर मोर गुण गावो।
तब हम कहेन मोर एक ताता। कृपा होय वा पर कछु माता।
कह्यो मातु आधी तुम पावो। आधी वा के हित लै जावो।
आधी हम तुरतै वहँ पाई। आधी साफ़ी में गठिआई।
भवन में पहुँचि गयन हम जाई। ईंदल को दै दीन बताई।
पायो सुत अति प्रेम लगाई। ठीक बताय दीन हम भाई।६।

१३९ ।। श्री इन्दल जी ।।

दोहाः- आल्हा तात लै आय के दीन्ह सजीवन जान।
देवी ने दीन्ह्यौ उन्है मानो बचन प्रमान।१।
आधी पायो आपने आधी मो को दीन।
दोनों जन हम अमर हैं सुन्दर रूप नवीन।२।

सोरठाः-इन्दल कहैं सुनाय पिता संग हम रहत हैं।
देवी पूजन जांय नित प्रति दर्शन करत हैं।३।

१४० ।। श्री अश्वत्थामा जी ।।

चौपाईः- शंकर की पूजन हम कीन्हा। ह्वै प्रसन्न मो को बर दीन्हा।
कह्यो कि अजर अमर तुम रहहू। पूजन करो नित्य सुख लहहू।
खेड़ेश्वर शंकर सुन्दर थल। पूजत हौं नित लै गंगा जल।
बजैं रात्रि में जस दुइ भाई। मज्जन हित गंगा उठि जाई।
करि अस्नान लौटि चट आई। तन मन ते पूजौं हर्षाई।५।

दोहाः- अश्वत्थामा कहत हैं शिव में प्रेम हमार।
एक तार लागा रहै रिधि सिधि फिरै पंछार।।

१४१ ।। श्री मृत्यु जी ।।

दोहाः- राम नाम जे जन जपैं, ते हरि के ढिग जांय।
मेरे शिर पर चरण धरि चढ़ि बिमान हर्षाय।।

१४२ ।। श्री काल जी ।।

दोहाः- राम नाम जे जन जपैं तिनकी गती अपार।
जब चाहैं तब जाँय वै मौहिं देत लौटार।।

१४३ ।। श्री रुक्माङ्गद जी ।।

दोहाः- राम नाम में लौ लगी और न कछु सोहाय।
रुक्माङ्गद यह कहत हैं सब में हरि दर्शाय।।

१४४ ।। श्री शाह जहाँ जी ।।

पदः- क्या श्याम छैल बाँका मिलता कभी कभी था।
नुपुर बजा के छम छम चलता कभी कभी था।
सुन्दर लता पता में छिपता कभी कभी था।
राधे के संग गुलशन आता कभी कभी था।
चमनों के ऊपर चक्कर करता कभी कभी था।५।

तिरछी दृगों कि चितवन करता कभी कभी था।
मुरली में तान स्वर क्या भरता कभी कभी था।
मुसक्यान से वह तन मन हरता कभी कभी था।८।

१४५ ।। श्री पहलवान शाह जी ।।

शेरः- तन मन से यादगारी करना हैं ठीक प्यारे।
पहलवान शाह कहते तब जग से हो किनारे।।

१४६ ।। श्री बादल खाँ जी ।।

शेरः- सच्चा गदा वही है एक तार प्रेम जिसका।
बादल कहैं ये मानो आना न होगा उसका।।

१४७ ।। श्री आबिद जी ।।

शेरः- कपटी को हरि न मिलते हैं सब जगह में रहते।
आबिद के संग हँसते साँचा बयाँ यह तुमते।।

१४८ ।। श्री बरकत अली जी ।।

शेरः- बरकत अली यह शोभा निरखत ही तन मन लोभा।
ऐसा अनूप को भा सब के दिलों में चोभा।।

१४९ ।। श्री अशरफ़ अली जी ।।

शेरः- मुरशिद से जान करके परदा अलग तो कीजै।
अशरफ़ कहैं सबों में दीदार यार कीजै।।

१५० ।। श्री अमजद जी ।।

शेरः- सुमिरन करै जो रब का वह ठीक प्यारा सब का।
नाहीं तो कौन किसका दोज़ख में जाय पटका।१।
दुनियां में जौन भटका सो आय गर्भ लटका।
लखता जो रूप नट का अमजद कहैं सो सटका।२।

१५१ ।। श्री ग़फूर जी ।।

गजलः- कहता ग़फूर तन से होती धुनी है प्यारी।
मुरशिद बिना न जानो है हर जगह से जारी।
मुरशिद से जान करके खोजो सुघर मुरारी।
भीतर व बाहर देखौ जोड़ी युगुल निहारी।
मुरली अधर धरे हैं नुपुर पगन में धारी।५।

कानों में कुण्डल सोहैं शिर पर मुकुट सँवारी।
भूषन बसन कि बरनन करनें मे जीभ हारी।
अद्भुद अनूप जोड़ी पर तन मन धन हम वारी।८।

१५२ ।। श्री वाहिद अली जी ।।

शेरः- क्या राम बिष्णु झाँकी सन्मुख में देख पड़ती।
वाहिद छटा अनूपम पलकैं जरा न पड़ती।।

१५३ ।। श्री शाकिर अली जी ।।

पदः- सिय राम की छटा पर आशिक है मेरा तन मन।१।
प्राणों के प्राण प्यारे भजिये इन्ही को सब जन।२।
शाकिर यह सब जगह है दशरथ कौशिल्या के धन।३।
इन ही से प्रेम कीजै तन मन को करिके अर्पन।४।

१५४ ।। श्री यारी साहेब जी ।।

पदः- सिया राम संग लछिमन हर दम दिखा रहे हैं।१।
देखो जिधर उधर ही सन्मुख में छा रहे हैं।२।

आशिक हुआ मैं इन पर सब में समा रहे हैं।३।
यारी धुनी ये तन में अपनै सुना रहे हैं।४।

१५५ ।। श्री सादिक अली जी ।।

पदः- मुरली अधर पै धारे मन मोहन श्याम प्यारे।१।
कानों में कुण्डल डारे शिर पर मुकुट को धारे।२।
भूषण बसन सँवारे सर्वाङ्ग द्युति अपारे।३।
सादिक सबों से न्यारे फिर सब में हैं दुलारे।४।

१५६ ।। श्री बुल्ला साहेब जी ।।

पदः- राम ही सब में रमे सब राम ही का खेल है।
जानते बुल्ला वही जिनका हरी से मेल है।
तीनि गुण माया औ पाचौं चोर रोके गैल हैं।
सतगुरु बिना जानै नहीं कोइ यह सिद्धान्त अपेल है।
बासनाओं ने पकड़ कर मन को कीनो जेल है।५।

उठ उठ के सारी पीटर्ती बसु याम यही झमेल है।
सुमिरन बिना कटती नहीं यह पाप कर्म कि बेल है।
बीज जिसने खेत में बोया वो धरत सकेल है।८।

१५७ ।। श्री शोभादास जी ।।

पदः- आज देखा शुभ गमन मोहन श्याम।१।
मोर मुकुट शीश दीन्हें कानन कुण्डल नवीने दहिने कर वंशीथाम।२।
पीत बसन कमल नैन राधे संघ सखा बाम।३।
नूपुर दोउ पगन आल केशरि को तिलक भाल शोभा नित जपत नाम।४।

१५८ ।। श्री देवहूती जी ।।

राग अद्धाः- बृज में श्याम करत लरिकैंयाँ।
ग्वाल बाल संघ में बहु खेलैं चकई भँवर नचैया।
छुवा छुवौवर खेल करत हंसि भागैं दै कोडरैया।
ग्वाल बाल कोइ पकरि न पावैं थकि सब बैठि जवैया।
हलधर दौरि के पकरैं हरि को हरि हँसि लोटि परैया।५।

ग्वालन को बलिराम पुकारैं दौरौ सब जन भैया।
पकरि लीन हम हरि को देखौ कब के बड़े भगैया।

ग्वाल बाल दौरैं यह सुनि कै हरि कहैं हलधर भैया।
जी मचलात छोड़िये हमको उलटी मनहु होवैया।
छोड़ैं हलधर उठि हरि बैठैं भागैं दै दुचितैया।१०।

आवैं ग्वाल दौरि हलधर ढिग पूछैं कहाँ कन्हैया।
तब बलराम कहैं सुनिये सब भागि गयो हरि भैया।
दूरि खड़ो वह हसतो ठाढ़ो बड़ो चलाक कन्हैया।
दौरि के हरि सब के ढिग आवैं प्रेम प्रीति बढ़वैया।
कहैं खेल अब होय लुकौव्वरि चोर बनै कोइ भैया।१५।

तब मनसुखा कहैं हम बनि हैं लुकिये सब सुखदैया।
भागि जहाँ तहँ सब छिपि बैठैं चलैं मन सुखा धैया।
जाय के हरि के ढिग जस पहुँचै हरि अन्तर ह्वै जैया।
कहैं मन सुखा देखि लीन हम भागि गयो कहँ भैया।
सब सुनि बोल दौरि तहँ आवैं को भा चोर सुखैया।२०।

कहै मनसुखा हरि को देखा भागि कहूँ गो भैय्या।
पीछे से हरि आय कहैं तहँ सुनिये सब खेलवैया।
झूठ कहत हम को कब देखिसि पकरिसि क्यों नहिं धैया।
कहैं सबै सांची हरि कहते है अहमक ढुँढ़वैया।
तब हरि कहैं चलो यमुना जल खेलैं खूब डफैया।२५।

जांय दौरि यमुना हरि संग सब कूदैं प्रथम कन्हैया।
तब फिर सब कूदैं जल भीतर खेलैं छीप छिपैया।
एक से होंय अनेक देर नहिं कोइ न जानि पवैया।
डुबकी मारि कै नीचे जावैं पग पकरैं यदुरैया।
उलटि देंय सब गिरैं धमा धम संगै आप गिरैया।३०।

उठि कै कहैं काह भयो भाई सब जन गिरेन संघैया।
तब सब कहैं जानि नहिं पायन सोचौ कुँवर कन्हैया।
हरि तब कहैं मलौ निज निज तन कौन बात बड़ि भैया।
सुनि सब तन मलने में लागैं हरि बहु रूप बनैया।
चुटकी जाय पगन में काटैं भागैं सब चिलैया।३५।

आपौ भागैं औ चिल्लावैं दूरि जाय ठहेरैया।
ग्वालन से कहैं सुनिये भाई यहँ बहु जीव कटैया।

नीचे आय पगन में काटैं यहां नहाव न भैया।
ग्वाल बाल कहैं ठीक कहत हरि अब यहि घाट न जैया।
सुर मुनि चढ़े बिमानन निरखैं हंसैं सब मुख बैया।४०।

फेरि संभरि कै बिनय करैं हरि तुम सम को सुख दैया।
रह्यौ खेलाय सबै जीवन को आपौ संग खेलैया।
नाना चरित आप के हम सब गावैं पार न पैया।
धरनि के भार उतारन के हित नाना रूप धरैया।
अधम उधारन दीन बन्धु हरि चर औ अचर के रैया।४५।

धन्य भाग्य बृज के सब जीवन दर्शन नित पवैया।
ध्यान समाधि करैं हम सुमिरन तब कहुँ दरश देवैया।
बृज बासिन के भाग्य से हम सब नित नैनन फल पैया।
नर देही को लाहो लीन्हो इन सब वृज में ऐया।
इनकी क्या कोइ करै बराबरि चरनन रज न होवैया।५०।

इनके दर्शन ते अघ नाशैं प्रेम में पगे सदैया।
झांकी युगुल हृदय में सबके औ सन्मुख चमकैया।
नाम आप का सुनै अखण्डित आनन्द उर न समैया।
शर्म भर्म का काम रहा नहिं आप में आप देखैया।
अगम अपार आप की लीला कौन सकै बतलैया।५५।

पल में परलय उत्पति पालन करि फिरि खींचि लेवैया।
निर्गुण सर्गुण रूप आपका आनन्द कन्द कन्हैया।
आप के चरन कमल के नुपुर हम सब चहत बनैया।
सदा संग में छम छम बाजैं और कछू न चहैया।
ऐसी कृपा करो करुणानिधि पूरण आश करैया।६०।

दोहाः- कृष्ण खेल जे जन पढ़ैं सुनैं लेंय उर धारि।
देव हूती सांची कहैं तिनको मिलैं मुरारी।१।

१५९ ।। श्री काशी पुरी जी ।।

राग अद्धाः- दम का क्या ठिकाना भजो सिया बर।
श्यामल गौर किशोर युगुल छबि निरखौ अनुपम आठौ पहर
ऐसा दांव फेरि नहि पैहो तन मन प्राण को करिये नज़र।

नाम कि धुनि खुलि जाय अखण्डित मधुर मधुर होती जो सुघर।
सूरति शब्द क मारग पकड़ौ जियतै जानि लेव निज घर।५।

होहु अभेद अखेद तबै तुम तन छूटै बैठो ह्वै अमर।
पांचौ चोर तीनि गुण माया चारि पचीस के टूटैं पर।
पांचौं तत्व चारिहू तन ये शोधि के पहुँचि जाव ऊपर।
निर्गुण सर्गुण एकै स्वामी जल औ जल की जैसे लहर।
सुर मुनि के दर्शन नित होवैं राम नाम है सब की ज़र।१०।

गरुड़ काक लोमश फणपति शुक जपत निरन्तर बिधि हरि हर।
कमल चक्र कुण्डलिनी जानो इड़ा पिंगला सुखमन कर।
मान सरोवर बैठि नहावो पिओ अमी तब इच्छा भर।
ध्यान में नाना लीला देखौ बरनि सकै को अति सुन्दर।
लय में पहुँचि जाव नहि सुधि बुधि उतरौ सन्मुख सिया रघुबर।।
काशी पुरी कहैं सतगुरु से प्रेम करो तब मारो शर।१६।

१६० ।। श्री एकादशी जी ।।

पदः- तीरथ ब्रत अरु धर्म यज्ञ सब राम नाम में जानो।१।
नाम खुलै हर दम हरि सन्मुख मिटिगा आवन मानो।२।
दस इन्द्री गेरहे मन चंचल बंधि गो ठीक ठिकानो।३।
एकादशी कहैं सतगुरु बिन मिलै न पद निर्वानो।४।

१६१ ।। श्री गया जी ।।

चौपाईः- आप जपैं आपै बतलावैं। आप आप में आप समावैं।
आपै गुरु आप ही चेला। आपै करते ठेलकि ठेला।
आपै एक अनेक न रूपं। आपै अनुपम श्याम स्वरूपं।
आपै मौन व प्रगट अलापैं। आप अखण्डित सब कछु आपै।
गया कहैं या बिधि को जानै। नाम गुरू से लै जप ठानै।
ताकी गया होय नहि आवैं। बैठै अमर पुरी हर्षावैं।६।

१६२ ।। श्री चित्रकूट जी ।।

चौपाईः- चित्त को प्रथम जौन कोइ कूटै। भर्म क भाँडा ता को फूटै।१।
तब वह बसै आवरण मेरे। चित्रकूट कहैं सुक्ख घनेरे।२।

दोहाः- सुख बिलास में मगन सो हर दम धुनि सुनि नाम।
सन्मुख राम सिया लखन चित्रकूट बसुयाम।।

१६३ ।। श्री गोदावरी जी ।।

चौपाईः- इन्द्रिन दमन करैं जो कोई। ता को पैकरमा शुभ होई।१।
राम नाम को जानै जोई। धाम छेत्र को पावै सोई।२।
द्वारे हरि के पहुँचै जब हीं। द्वारा हरि को निरखै तब हीं।३।

दोहाः- राम सिया के दरश नित जाको होवैं जान।
जाय अखाड़े में जुटैं पूरा ह्वै पहलवान।।

चौपाईः- धुनि की ताल रात दिन बाजै। पाँचो चोर अजा संग भाजैं।१।
तब वह शूर सुखी ह्वै जावै। बिजय पत्र जियतै में पावैं।२।
सुर मुनि कहैं वीर सो होवै। राम नाम जपि भय सब खोवै।३।

दोहाः- मरै बासना सब तबै खुलि जाँय आँखी कान।
गोदावरी कि बिनय यह तब होवै कल्यान।।

१६४ ।। श्री ढोंढ़े दास जी ।।

ग़ज़लः- बनैं हम ब्रह्म किमि भाई हमें जग दीन बनि रहेना।
मान अपमान नहिं छूटा दुःख तनिकौ नहीं चहेना।१।
श्रवण बहिरे नयन अन्धे जीभ खाली से क्या कहेना।।
कहैं ढोंढ़े सुनो प्यारे श्याम राधे के पद गहेना।२।

१६५ ।। श्री कढ़िले दास जी ।।

ग़ज़लः- ब्रह्म बनते हो क्यों झूँठे ब्रह्म को चीन्ह तो लीजै।
नाम सतगुरु से लै करके सुरति को शब्द पर दीजै।
ध्यान लय प्राप्त कर भाई चपल मन शान्त तो कीजै।
झमेला बासनाओं का ज्ञान अग्नि में धरि दीजै।
दीन बनि आप को मेटौ प्रेम में तन व मन भीजै।
कहैं कढ़िले छुटै बन्धन नाम औ रूप रस पीजै।६।

१६६ ।। श्री मत्त गजेन्द्र जी ।।

कजरीः- कातिक शुक्ल पक्ष नौमी को परिकरमा करने सब जाँय।
प्रथम करैं सुर मुनि सब फेरी भरथ कुण्ड पर आय।

भरथ कुण्ड में करैं मार्जन सूर्य कुण्ड चलि जाँय।
सूर्य कुण्ड दहिनावैं तब फिरि करैं मार्जन धाय।
सूर्य कुण्ड से चलै जानकी नगर में पहुँचै आय।५।

करैं जानकी नगर की फेरी हर्षि हर्षि गुन गाय।
राजा जनक बास यहँ कीन्ह्यौ दुइ महिना तक आय।
ग्राम मोल लै दशरथ जी से एक शंख में भाय।
हीरै हीरा दीन राज ऋषि सन्दूखै भरवाय।
सुवरण की सन्दूखैं सुन्दर चमकैं चम चम भाय।१०।

नाम जानकी नगर पड़ा तब से मैं कहौं सुनाय।
चलैं जानकी नगर से सुर मुनि कुण्ड निर्मली जाँय।
करैं मार्जन फेरि पहुँचि गुप्तार पै आवै जाय।
करि मार्जन चलैं गुप्तार से पहुँचि जमथरा जाँय।
करैं मार्जन चलैं पहुँचि फिरि चक्र तीर्थ पर जाँय।१५।

करैं चक्र तीर्थ में मार्जन ब्रह्म कुण्ड चलि जाँय।
ब्रह्म कुण्ड में करैं मार्जन स्वर्ग द्वार को जाँय।
स्वर्ग द्वार से करैं मार्जन राम घाट चलि जाँय।
राम घाट में मज्जन करिके फिरि विल्व हर को जाँय।
करि मज्जन विल्व हर से चलि फिरि सूर्य्य कुण्ड को जाँय।२०।

सूर्य्य कुण्ड से चलि फिरि पहुँचैं भरथ कुण्ड पर आय।
भरथ कुण्ड की फेरी देवैं पांच फेरि हर्षाय।
जय जय कार भरथ को बोलैं दुन्दुभि साज बजाय।
जिस मुकाम में जल नहिं होवै सुर मुनि हंसै ठठाय।
लेंय मृत्तिका कर कमलन ते मुख में धरि कछु भाय।२५।

चलैं फेरि निज निज धामन को बार बार शिर नाय।
त्रेता युग के जन्म कि तिथि यह कह्यो देव मुनि गाय।
तन मन प्रेम लगाय करै परिकरमा पाप नशाय।
अवध पुरी मुद मंगल दायनि श्री सरयू जँह माय।
राम भरथ औ लखन शत्रुहन प्रगटे यहँ पर आय।३०।

दशरथ पिता मातु कौशिल्या और कैकेयी माय।
मातु सुमित्रा गुरू वशिष्ठ जी रहे नित्य दुलराय।

पुरवासी छवि छकैं रोज ही भूख प्यास बिसराय।
नाना चरित यहाँ पर कीन्ह्यो कौन सकै बतलाय।
परम पुनीत कहैं सब सुर मुनि आवैं नित प्रति धाय।३५।

जन्म भूमि तुलसी चौरा के फेरी के हित भाय।
पाप यहाँ पर करै जौन कोइ जड़ पताल को जाय।
काटै नहि फिर बज्र के काटे अन्त में नरकै जाय।
धर्म यहाँ पर करै जौन कोइ सो बैकुण्ठै जाय।
अहंकार औ कपट त्यागि दे यह दर्जा पाय।४०।

यहां वहां दोनो दिशि खातिर धर्म ध्वजा फहराय।
भजन करै जो कर्म धर्म तजि सो साकेत को जाय।
सब से बड़ा नाम का सुमिरन जो गुरु देंय लखाय।
नाम से रूप प्रगट चट होवै श्याम मनोहर आय।
होय प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि सबै भुलाय।४५।

नाम के अन्तर गत सब कौतुक जानि लेव दुख जाय।
नाम कि धुनी सुनै फिरि हर दम सन्मुख रूप देखाय।
साधारण रीति से यहँ पर रहै जौन कोइ भाय।
उत्तम कुल में लौटि के आवै आगे बढ़तै जाय।
सत्संगति संतन की करिये बिगरी सुधरै भाय।५०।

पाप ताप सब नाशि होय औ लखि यमराज डेराय।
मत्त गजेन्द्र कहैं सुनि मानौ सत्य सत्य हम गाय।
राम नाम से नेह न छोड़ै सोई शूर कहाय।५३।

१६७ ।। श्री लाड़िली जी ।।

अद्धाः- कोई देखा है हमारा प्यारा मोहन।
मन मोहन बिन कल न परत है बिरहा नल में दहत बदन।
लता पता में चलि सब ढूढ़ैं छिपि कहिं बैठा होगा सजन।
पग चलने को उठत नहीं हैं कैसी करूँ हरि तन मन धन।
प्राण के प्राण मेरे कब मिलिहौ अनुपम छटा लखौंगी दृगन।
श्याम प्रगट ह्वै भेंट्यौ प्रिया को सखा सखी सब ह्वै गे मगन।६।

१६८ ।। श्री विशेषा सखी जी ।।

दोहाः- श्याम राधिका की छवी, भीतर बाहर छाय।
सखी बिशेषा कहै हरि, नाम अखण्ड सुनाय।।

१६९ ।। श्री चन्द्राबलि सखी जी ।।

दोहाः- श्याम राधिका की छटा तन मन लीन लुभाय।
चन्द्राबलि कहैं हौं मगन नाम कि तान सुनाय।।

१७० ।। श्री मनसुखा जी ।।

सोरठाः- राधेश्याम देखाँय भीतर बाहेर सबै दिशि।
कहैं मनसुखा गाय छूटि गई हिरदय किमसि।।

१७१ ।। श्री द्वारिका पुरी जी ।।

चौपाईः- श्यामै तन मन धन सुख सारे। श्यामै नाम रूप लखु प्यारे।१।
श्यामै सब दिशि परै देखाई। कहैं द्वारिका पुरी सुनाई।२।

१७२ ।। श्री जगदीश पुरी जी ।।

चौपाईः- जगन्नाथ हैं कृष्ण सुहावन। संघ बलराम सुभद्रा पावन।
तन मन प्रेम लगाय के जोई। दरशन करै पाप छय होई।
तहां समुद्र रत्नाकर सोहै। लहरैं निरखत तन मन मोहै।
रथयात्रा को उत्सव भारी। दर्शन हित आवत नर नारी।
कह जगदीश पुरी जग जाना। छूति क तहँ पर नहीं ठेकाना।५।

१७३ ।। श्री सुदामापुरी जी ।।

चौपाईः- श्याम से प्रेम करो सुख पावो। भूलि जाव तो गोता खावो।।
मानुष का तन सुन्दर दीन्हा। कैसी किरपा तुम पर कीन्हा।।
भोजन बसन कर्म अनुसारा। देवैं सब को करैं संभारा।।
करि मगरूरी रहेव यहां पर। यमन के जूता चलैं तहाँ पर।।
जेहि तन को चिकनावत हौ तुम। दर्पन देखि सिहावत हौ तुम।५।

गीध स्यार कूकुर तेहि खैहैं। बिष्टा बनि मिट्टी मिलि जैहै।।
की धरनी में गाड़ै जाई। कीड़ा परैं और गन्धाई।।
की अग्नी में देंय जलाई। भस्म पवन लै जाय उड़ाई।।

जल के जीव पाय जो लैहैं। जल ही में बिष्टा कर देहैं।।
या से मानो कहा हमारा। भजौ नाम भव होवौ पारा।१०।

सोरठाः- सतगुरु से लै नाम, भजन करै निष्काम ह्वै।
हर दम राधे श्याम, निरखै तन मन मगन ह्वै।१।

दोहाः- कहैं सुदामा पुरी अब, चेत करौ बनि जाय।
जो बीती सो बीति गइ, भजिये कृष्ण कन्हाय।२।

१७५ ।। श्री राग रागिनी पुत्र सहित ।।
(एकै बाणी)

चौपाईः- श्यामै ग्राम श्याम स्वर जानो। श्यामै ताल श्याम गति मानो।१।
श्यामै लय श्यामै सम कहिये। श्यामै साज गवैया कहिये।२।
श्यामै धुनि औ तान बने हैं। श्यामै राग श्रृङ्गार बने हैं।३।

१७० ।। श्री जनक पुरी जी ।।

दोहाः- आदि शक्ति श्री जानकी प्रगटीं गोद में आय।
नाना बिधि लीला कियो बाल रूप में माय।१।

चौपाईः- सृष्टि क उत्पति पालन करना। सब जीवन के उदर को भरना।१।
ये सब कार्य मातु आधीना। पल लागत भर में सब कीन्हा।२।
भृकुटी ऊपर सबै नचावैं। सुर नर मुनि कोइ भेद न पावैं।३।
राम सिया सब के हैं स्वामी। निर्गुण सर्गुण रूप नमामी।४।

दोहाः- जनकपुरी की बिनय यह, सब से शीश नवाय।
भजहु राम सिय हर्षि हिय, आवागमन नशाय।।

राग अद्धाः- हरि को क्यों बिसारे मेरी मतिया।
काम क्रोध मद लोभ मोह की पहिराये मन को सुतिया।
झूट कपट निद्रा औ आलस्य माया द्वैत की भइ कुतिया।
सँभरि कै बैठु चेत करु घर का पहिरु दीनता की नथिया।
बाद बिबाद त्यागु सब प्यारी धुनि सुनि नाम कि दिन रतिया।५।

शान्ति शील संतोष छिमा औ सरधा दया कि लै खटिया।
सत्य प्रेम पद प्राप्ति होय तब हर दम निरखौ राम सिया।
चलै अखण्ड रकार की चक्की अनहद बाजैं बहु बिधिया।

ध्यान में नाना लीला निरखौ लय में रहे न सुधि बुधिया।
निर्भय बैर भाव सब छूटै तन गुदरी तब हो सुखिया।१०।

परमानन्द रहौ तब सुन्दरि एकै रस में जब पगिया।
सौदा नाम खरीदौ जियतै जाय उजरि एक दिन हटिया।
रोये चुकिहै नहीं अन्त में जब यम आय गहैं चोटिया।
प्राण निकासि चलैं लै यम पुर तन पर लोह कि दै सटिया।
कल्पन हाय हाय चिल्लावो सुमिरन बिन हो यह गतिया।
जनक पुरी कहैं बन्धन छूटै मान जाव जो मम बतिया।१६।

१७६ ।। श्री शिव काञ्ची जी ।।

चौपाईः- हर हर जपौ सुनौ सब बच्चा। फेरि न परौ नरक के गच्चा।
जो सुमिरन में रहिहैं कच्चा। सो परि हैं यम पुरी चभच्चा।
तन मन प्रेम लगाय के प्यारे। सुमिरो हर के होहु दुलारे।
जो सकाम भजिहौ शिव जी को। देहैं धन शिशु यश कोटी को।
ह्वै निष्काम भजै जो हर को। दर्श करावैं सिय रघुबर को।५।

मुक्ति भक्ति देवैं हर्षाई। अमर पुरी फिर देंय पठाई।
हर दम निरखै राम रूप को। अन्तर हरि के सिय स्वरूप को।
शिव काञ्ची यह कहैं सुनाई। जो जस करै तैस फल पाई।८।

१७७ ।। श्री बिष्णु काञ्ची जी ।।

चौपाईः- बिष्णु बिष्णु जे जपिहैं प्रानी। छूटै चौरासी हम जानी।१।
हरि के धाम जाय सुख पावैं। हव्य अनार पाय मुसक्यावैं।२।
भूषन वसन दिब्य तन सोहै। जिनहिं निरखि कुसुमायुध मोहै।३।
बिष्णु को भजन करै निष्कामा। तो फिरि जाय अमर पुर धामा।४।

दोहाः- कहैं बिष्णु काञ्ची सुनो तन मन प्रेम लगाय।
भजन करो श्री बिष्णु का आवा गमन नशाय।।

१७८ ।। श्री मोलहे दास जी ।।

पदः- एक बार श्याम प्यारे झलकी देखा तो दीजै।
आँखै सुभग कटीली तिरछी फिरा तो दीजै।
मुरली सुधर रसीली मुझ को सुना तो दीजै।

नूपुर बजा के छम छम कटि को हिला तो दीजै।
मोलहे कहैं न बोलो उर में लगा तो लीजै।
आशिक हूँ तन व मन से हरि पास बास दीजै।६।

१७९ ।। श्री गुरु दीन दास जी ।।

ग़ज़लः- कब तक छिपे रहोगे ढूँढूंग मैं न मानूँ।
तन मन व प्रेम तीनो एकै में कसि के सानूँ।
हिम्मत न हारूँगा मैं जब तक मही औ भानू।
झलकी दिखा लुभाया फिर क्यों भला न जानूँ।
तव नाम का हि ताना दिन रैन श्याम तानूँ।
गुरु दीन दास कहते यह एक टेक ठानूँ।६।

१८० ।। श्री घसीटे दास जी ।।

चौपाईः- नित्य प्रलय सुनिये हर्षाई। राति दिवस बीतत जिमि भाई।१।
दूसरि तन छूटै तब जानो। कर्म अनुसार दुःख सुख मानो।२।
तीसरि आवागमन नशावै। करि निष्काम भजन गति पावै।३।
कहैं घसीटे दास सुनाई। मति अनुसार कहेन हम गाई।४।

१८१ ।। श्री सुलतान शाह जी ।।

चौपाईः- नौ इन्द्री साधै जो कोई। दशम के में जाय के पहुँचै सोई।
पाँच को साधि पास में जावै। चारि को साधि चम्म ह्वै जावै।
तीनि को साधि के ध्यान लगावै। एक को साधि के शूर कहावै।
पाँच तत्व को साधन करई। चारौं तन सोधन करि मरई।
कशरत सूरति शब्द कि जानै। ता को मिलिहैं ठीक ठिकानै।५।

जगत मातु पितु हर दम देखै। जिनकी लीला अगम अलेखै।
नाम कि तान एक रस जारी। रोम रोम हर ठौर से प्यारी।
ध्यान में नाना लीला निरखैं। लय में सुधि बुधि कछु नहिं परखै।८।

दोहाः- पवन रूप ते ब्रह्म तहँ तामे जाय समाय।
उतरे फिर कौतुक लखै राम ब्रह्म का भाय।।

चौपाईः- आगे हरि किरपा बढ़ जावै। कृष्ण कृपा निधि लखि सुख पावै।
फिरि वहँ से जो चलि कै जावै। अमर पुरी लखि कै हरषावै।

महा प्रकाश बरनि को पावै। अगणित भानु जहां शरमावै।
राम रूप तहं सब हैं राजत। अमित काम की उपमा लाजत।
ऊँचे सिंहासन प्रभु सोहैं। अन्तर गत माता मन मोहैं।
सतगुरु गोरख नाथ लखावा। खुलिगे पट आनंद मुद छावा।६।

सोरठाः- शंकर जी का अंश सतगुरु गोरखनाथ जी।
कीन्ह्यो दुख बिध्वंस सन्मुख सिय रघुनाथ जी।।

चौपाईः-नागिन कमल सात षट चक्कर। जानि लीन मन से करि टक्कर।१।
मन से मेल भयो सुख पायों। सुर मुनि सबहुन दरश दिखायो।२।

दोहाः- मन की मति स्थिर भई भयो तासु कल्यान।
कहैं शाह सुलतान यह मानो बचन प्रमान।।

१८२ ।। श्री यम पुरी जी ।।

चौपाईः-मम आवरण जाय सोइ प्राणी। भज्यौ न हरि को मति बौरानी।।
झूठ कपट पाखण्ड हंसी में। दिन खोयो जग आय इसी में।।
राति दिवस यह कीन बिचारा। परधन हरौ लखौ पर दारा।।
मदिरा मांस को सेवन कीन्हा। पशु पक्षिन को तन हति दीन्हा।।
सब जीवन को सदा सतायो। लाज हाट में बेंचि के खायो।५।

सब की निन्दा में सुख मानै। अहंकार वश चलैं उतानै।।
हरि की कथा होति जँह भाई। दूरिहि ते लखि चलैं पराई।।
बाचा दै के करैं निराशा। दया धर्म को कीन्ह्यो नाशा।।
पर दुख देखि खुशी अति होवैं। पर सुख देखि दुखी अति होवैं।।
उनको दुःख वहां अति भारी। सहि न सकत कोइ जक्त मँझारी।१०।

जो जाको होवै अधिकारी। वैसै हरि तेहि हेत सँवारी।।
पापी अधिक जवै भरि जावैं। हर दम हाय हाय चिल्लावैं।।
यम मारैं कर्मन अनुसारा। सकै न कोइ छोड़ाय को प्यारा।
हरि के नाम प्रताप ते सारा। हमहूँ सहन करैं यह भारा।।
हरि यहि खातिर मोहिं बनायो। अज्ञा शिर धरि कार्य्य उठायो।।
हमको दोष कछू नहि लागै। जो जैसो तैसे में पागै।१६।

कानपुर में गंगाजी के पूजन को जाते श्री गुरुदेव।

कानपुर में गंगा जी के पूजन को जाते हुये श्री गुरुदेव।

श्री कोटेश्वर महादेव, अयोध्या, के मंदिर में परमहंस राममंगल दास जी। गुरुदेव कहते थे कि यह वही शंकर जी की मूर्ति है जिसकी पूजा करने श्री दशरथजी, रामजी, लक्ष्मणजी, भरतजी व शत्रुघ्नजी आते थे।

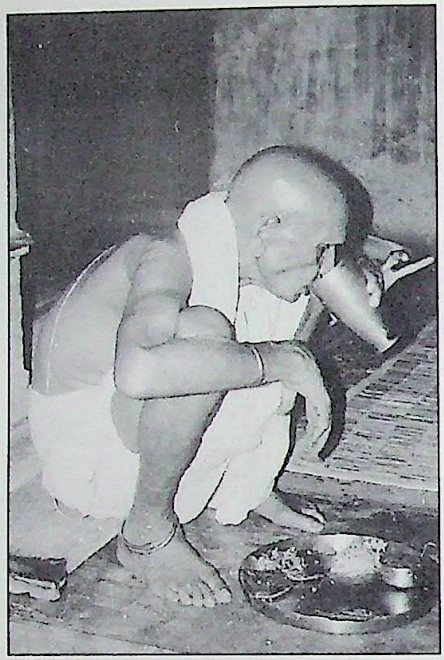

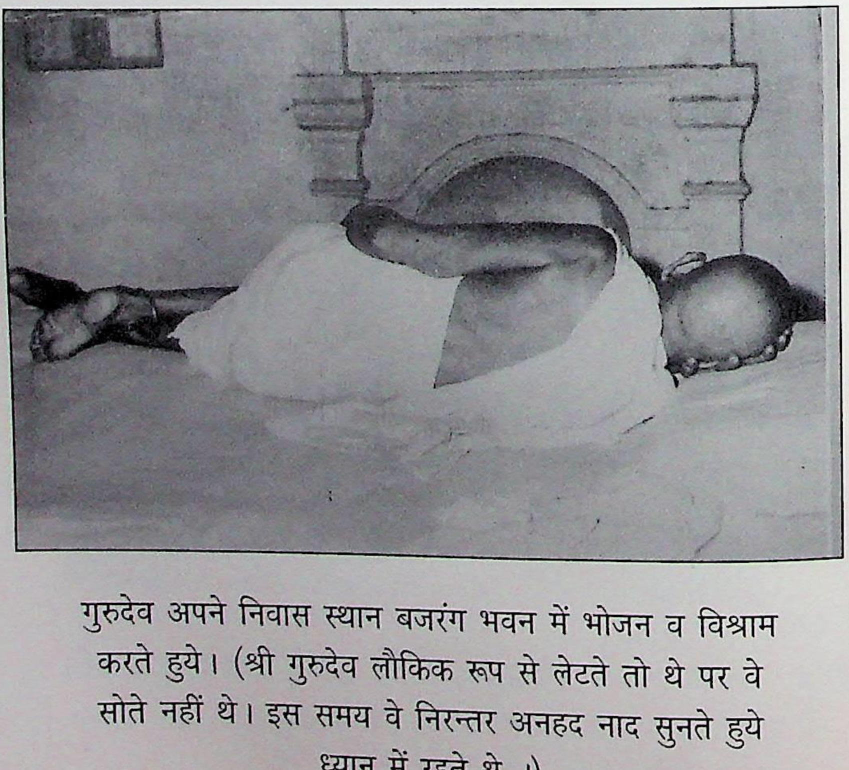

गुरुदेव अपने निवास स्थान बजरंग भवन में भोजन व विश्राम करते हुये। (श्री गुरुदेव लौकिक रूप से लेटते तो थे पर वे सोते नहीं थे। इस समय वे निरन्तर अनहद नाद सुनते हुये ध्यान में रहते थे ।)

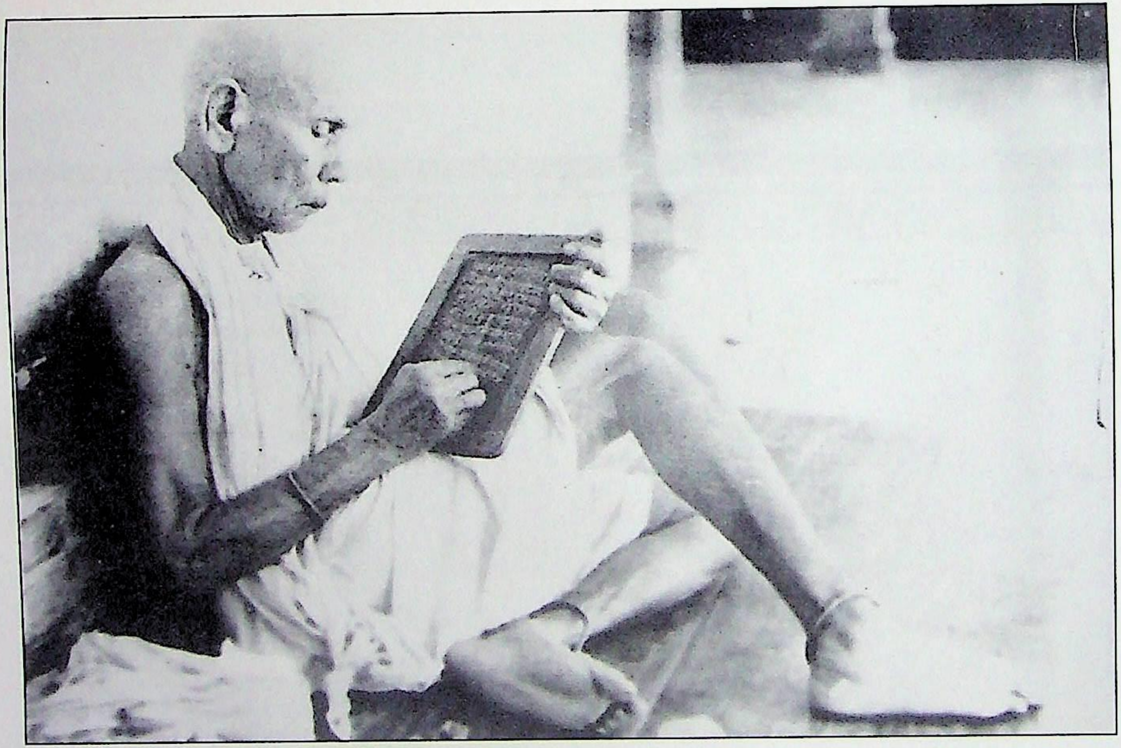

श्री गुरुदेव गोकुल भवन आश्रम में स्लेट पर उपदेश लिखते हुये । (1976)

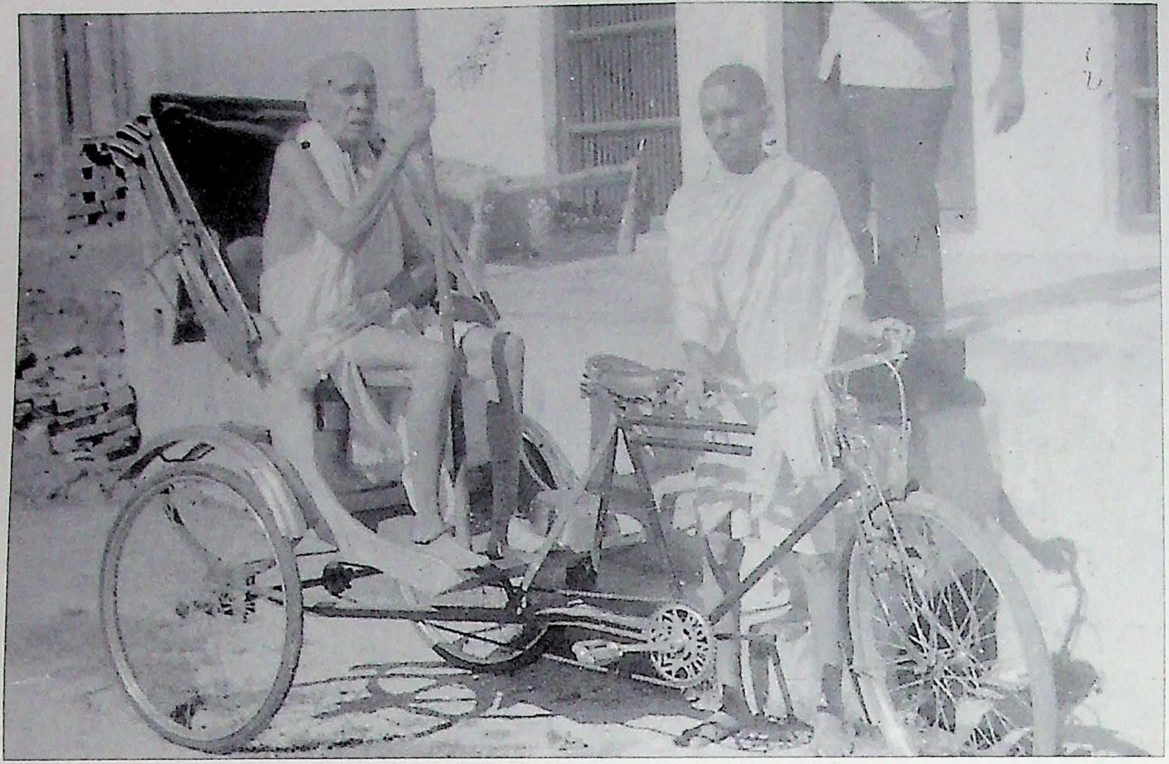

श्री गुरुदेव रिक्शे पर अपने निवास स्थान बजरंग भवन से गोकुल भवन आश्रम जाते हुये ।

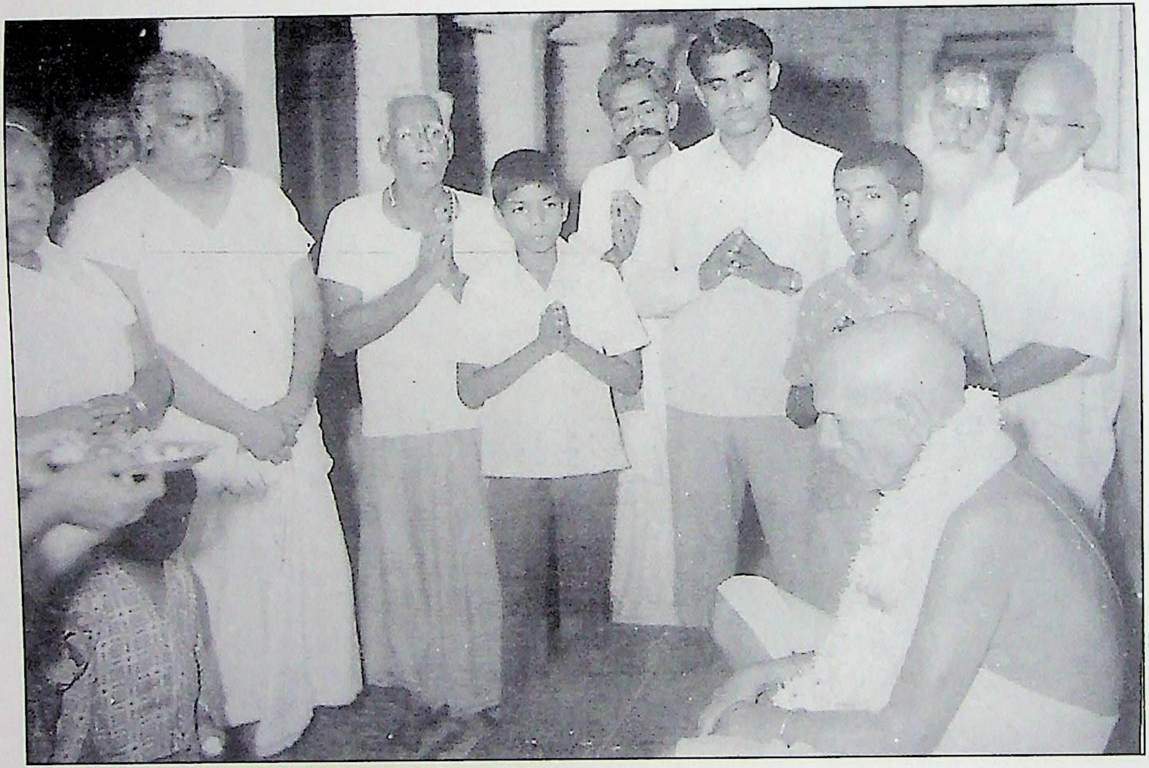

गोकुल भवन आश्रम में शाम को गुरु-आरती ।

भक्तों के आग्रह पर श्री गुरुदेव अपना तुलादान कराते हुये ।
(18 फ़रवरी 1982)

सोरठाः- कहैं यमपुरी सांच, सुनि के हरि सुमिरन करै।
लागि सकै नहि आँच, मम आवरनन पग धरै।।

१८३ ।। श्री जानकी जी ।।

वार्तिकः- श्री अयोध्या पुरी, मधुपुरी, जनक पुरी, काशी पुरी, गया जी, सुदामा पुरी, द्वारिका पुरी, शिव काञ्ची, बिष्णु काञ्ची, मुक्ति भक्ति, त्याग, वैराग्य, ज्ञान, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, कपट, सत्य, दया, धर्म, शान्ति, शील, सन्तोष, दीनता, सरधा, क्षिमा, प्रेम, बिचार, द्वैत, अद्वैत, काम, रति, पाताल लोक, मृत्यु लोक, स्वर्गलोक, चौदह भुवन, सात द्वीप, नौ खण्ड, पृथ्वी देवी, कैलाश, बैकुण्ठ, इन्द्र पुरी, ब्रह्म लोक, गो लोक, साकेत, काली लोक, दुर्गा लोक, सूर्य्य लोक, चन्द्र लोक, नक्षत्र लोक, सिद्ध लोक, दम्भ, पाखण्ड, वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद, संहिता, गीता, रामायण, महाभारत, वशिष्ठ योग, दुःख, सुख, हानि, लाभ, शोक, भय, परा, पैशन्ती, मध्यमा, बैखरी, माया देवी, इड़ा, पिंगला, सुखमना, चित्रणी, बज्रणी, मन, चित्त, पाप, पुण्य, भूख, प्यास, निद्रा जमुआई, आलस, बल, निर्बल, इच्छा, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, मंगल, अमंगल, अन्नदेव, दशोदिशा, अष्ट सिद्धि, नव निद्धि, बावन बीर, चौंसठि योगिनी, क्षेत्रपाल, यमकाल, मृत्यु, प्राण, जीव, सब दिन, सब तिथि, कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष, सब मास, सब नक्षत्र, सब वर्ष, सब राशि, सब ग्रह, सब योग, पला, घड़ी, घंटा, दिनमान, महूर्त, मिनट, सिकन्ड, तुला, मन, सेर, छटांक, तोला, माशा, रत्ती, अणु, सब विद्या, सन, सम्वत, शाके, फसली, ईस्वी, देवता, ऋषि, मुनि, दैत्य, पहाड़, सरिता, सागर, बन इत्यादि, जिनके नाम हैं उनके रूप हैं। जितने शब्द भाषण करने में अशुद्धि निकलते हैं उन सब के रूप भी काले बनकर निकलते हैं और जो शब्द भाषण करने में शुद्ध निकलते हैं उनके रूप भी सुंदर बन के निकलते है। यह बिषय अलेख है सतगुरु की कृपा बिना समझ में नहीं आ सकता हैं, नाम में रूप हैं, रूप में नाम हैं, नाम में प्रकाश है। प्रकाश में नाम है, रूप में प्रकाश है, प्रकाश में रूप है। सर्गुण में निर्गुण है, निर्गुण में सर्गुण है। हरि नाम स्मरण से ही कुछ समझ सकते हो जब कोइ सतगुरु मार्ग बतला देवैं नहीं तो बड़ा दुस्तर है। जो कुछ है सब ब्रह्म ही है।

१८४ ।। श्री मलूक दास जी ।।

दोहाः- राम नाम सुमिरन करौ कहते दास मलूक।
सुमिरन ही जग सार है हरि से होय सलूक।।

१८५ ।। श्री संजय जी ।।

सोरठाः- श्यामै नाम अधार, सब में श्याम दिखात हैं।
संजय कहैं पुकार, मम सन्मुख मुसक्यात हैं।।

१८६ ।। श्री दशानन जी ।।

सोरठाः- राम कृष्ण औ बिष्णु इनकी महिमा अगम है।
बिधि फणपति औ शम्भु गावत नित प्रति निगम हैं।।

१८७ ।। श्री कुम्भ कर्ण जी ।।

दोहाः- राम बिष्णु औ कृष्ण को, एकै जो कोइ जान।
जियतै तिनको मिल गयो, मुक्ति भक्ति को दान।।

१८८ ।। श्री हिरण्य कश्यप जी ।।

चौपाईः-हरि का भजन पुत्र मम कीन्हा। यकइस पीढ़िन को सुख दीन्हा।।
हरि मोको उठाय के भाई। घोटनन ऊपर लीन उठाई।।
उदर बिदारि शरीर छोड़ायो। तुरतै बैकुण्ठै पठवायो।।
ऐसे दीन दयाल कृपाला। भजै तो काह करै यम काला।।
नर हरि रूप धरयौ मम हेता। भक्तन के प्रभु सदा निकेता।।
जो कोई हरि से नेह लगाई। जियतै मुक्ति भक्ति को पाई।६।

दोहाः- हिरणा कश्यप की बिनय सुनिये तन मन लाय।
निशि बासर हरि को भजौ, आवागमन नशाय।।

१८९ ।। श्री हिरण्याक्ष जी ।।

चौपाईः- रूप बराह धरयौ मम कारन। ऐसे दीन बन्धु दुख टारन।१।
तन छोड़ाय बैकुण्ठ दीन हरि। प्रभु की कौन करै जग सरवरि।२।
जहँ जस काम परत है आई। वैसै रूप धरैं सुखदाई।३।

सोरठाः- कहैं हिरण्याक्ष पुकार, राम नाम एक सांच है।
मानो बचन हमार लागि सकत नहिं आंच है।।

१९० ।। श्री ताड़ुका जी ।।

दोहाः- एकहि बाण ते राम मोहिं, मारि दीन हरि धाम।
दुष्ट कर्म मैं अति किहेंव, जप्यौ न कबहूँ नाम।१।
ऐसे दीन दयाल हरि, जिनका नाम है राम।
हर दम हरि को जो भजैं पावैं अचल मुकाम।२।

सोरठाः- कहैं ताड़ुका ठीक यामें कछु संशय नहीं।
है यह पत्थर लीक, राम धाम जावै सही।।

१९१ ।। श्री पूतना जी ।।

सोरठाः- बिष दोउ कुचन लपेटि, चलि हतन मैं श्याम को।
माया की मैं बेटि सुभग रूप धरि बाम को।१।
वय किशोर बनि धाय, नन्द के गृह को मैं गई।
यशुमति लखि हर्षाय, मधुर बचन बोलत भई।२।

चौपाईः- कहो सखी तुम कहां से आई। दै आसन कर गहि बैठाई।।
तब मैं कह्यों दूर गृह माई। लाल के दर्शन हित मैं आई।।
भोली भाली यशुमति माई। दौरि श्याम को मम ढिग लाई।।
तब मैं कह्यों लाल मोहिं दीजै। लेउँ खेलाय मातु सुत कीजै।।
यशुदा मोहिं तुरत दै दीन्हा। दुलरायों मैं हरि को चीन्हा।।
कनियां लेतै तुरतै भाई। भयो प्रकाश वरनि नहि जाई।६।

दोहाः- बाणी नभ ते भई तहँ आदि पुरुष हैं श्याम।
तेरो प्राण निकारिहैं देर नहीं हे बाम।।

चौपाईः- कुचन में बिष लगाय जो आई। पीकर हरि तोहिं देहिं नशाई।१।
तब मैं मन में कीन्ह बिचारा। जो भागौं तो कहां गुजारा।२।
कंस सुनै तो अति रिसिआई। जान से तुरतै देय मराई।३।
या से हरि हाथन मरि जैहौं। तो बैकुण्ठ धाम को पैहौं।४।

दोहाः- पाप जन्म भर कीन्ह जो सो अबहिं मिटि जाँय।
तन छूटै हरि पुर चलौं बिगरी सब बनि जाय।।

चौपाईः- श्याम के मुख पर कुच हम लावा। तुरतै श्याम सुघर मुख बावा।१।
यशुमति देखि हँसन तहँ लागी। श्याम के प्रेम में थीं अति पागी।२।

हमसे कह्यौ कोई सुत तेरे। तब मैं कहा नहीं कोइ मेरे।३।

दोहाः- कह्यो यशोमति दूध फिरि कहां ते कुच में होय।
झूठै दूध पिआवति बुद्धि गई का खोय।१।

चौपाईः- तब मैं कहा सुनो हे माई। तन मन ते इच्छा ह्वै आई।
पूरी होय भावना जैसे। लाल को दे देहों मैं तैसे।।

दोहाः- भई यशोमति शान्त तब बोलीं नहि कुछ मान।
चुभुर चुभुर तब श्याम मम करन लगे कुच पान।१।
दोनो पगन हिलावहीं दोनो कर कुच थाम।
आधा बल मेरो हरयौ एकै कुच पी श्याम।२।
सुसती छाई बदन सब उठीं न सकी मैं जान।
दूसर कुच पीने लगे खैंचि लियो मम प्रान।३।

चौपाईः- देह प्रथम जो रही हमारी। सो वहँ वैसे ह्वै गै सारी।१।
दिव्य बिमान तहाँ एक आयो। तामें बैठि परम सुख पायो।२।
चलै पारषद लै सिंहासन। जाय दीन बैकुण्ठ में आसन।३।

दोहाः- जँह कौशिल्या मातु हैं तिनके बाँये जान।
ऐसी किरपा कीन हरि मानो बचन प्रमान।१।
पर बैकुण्ठ कहैं उसे पर नारायण बास।
हरि के दर्शन होंय नित सब बिधि तहाँ सुपास।२।

चौपाईः- प्राण हरत हरि दुख नहिं दीन्हा। अति शय दया मोहिं पर कीन्हा।१।
जैसे नशा पिआय के कोई। हरि लेवै धन भइ गति सोई।२।

दोहाः- गति मातु की दीन मोहिं कहैं पूतना श्याम।
मुक्ति भक्ति को देंय हरि सुमिरौ आठों याम।।

१९२ ।। श्री सूर्पणखा जी ।।

सोरठाः- नाक कान कटवाय लीन लखन से राम जी।
कह्यों हाल सब गाय खर दूषण ते आय जी।१।
चले लड़न मम भाय मैं शरीर त्यागन किहेंव।
चढ़ि बिमान हर्षाय हरि पुर में बासा लिहेंव।२।

चौपाईः- कौन काम हम उत्तम कीन्हा। छल बल करि जीवन दुख दीन्हा।।
मानुष भोजन मिल्यो जहां तक। और जीव नहि हत्यों तहां तक।।

जाति निशाचर की थी मोरी। छल का रूप बुद्धि ते कोरी।।
छल का फल पायौं मैं आला। बड़े लघुन की करैं न ख्याला।।
श्राप देंय फर करैं उबारा। मारैं धाम देंय निज प्यारा।५।

दोहाः- जो गति देवैं राम जी सोई देवैं भक्त।
दुष्टन के हित के लिए भक्त प्रगट भे जक्त।।

सोरठाः- सूर्पणखा कहैं गाय, प्रभु में भक्त में भेद नहिं।
मानो मम बचनाय, अधमन पर दाया करहिं।।

१९३ ।। श्री लंकिनी जी ।।

सोरठाः- नाम लंकिनी मोर छल कीन्ह्यों हनुमान ते।
दीन्ह्यों पकरि मरोरि हर्षि चल्यो चढ़ि यान ते।१।
ऐसे राम के दास उनकी महिमा को कहै।
करैं जो तन को नाश राम धाम में सुख लहै।२।

१९४ ।। श्री अदिति जी ।।

दोहाः- राम नाम विख्यात हैं चारौं युग में मान।
सुर मुनि निशि बासर जपैं तन मन सब का प्रान।१।

सोरठाः- अदिती कहैं सुनाय सुमिरौ तन मन लाय कै।
नाम खुलै दुख जाय हरि दरशैं हरषाय कै।२।

१९५ ।। श्री सुरसा जी ।।

दोहाः- पवन तनय स्पर्श करि मम तन निर्मल कीन।
अन्त समय हरि पुर गई कौन यज्ञ जप कीन।१।
सुरसा नाम हमार था मातु अहिन की जान।
हरि के भक्त कि कृपा भइ, भयो मोर कल्यान।२।

१९६ ।। श्री भस्मासुर जी ।।

चौपाईः- कीन भजन हर का हम का भाई। दस सहस्त्र बरषै मन लाई।।
दोनो कर ऊपर को कीन्हा। ह्वै कर खड़े दृगन ढक लीन्हा।।
निर अहार औ मौन धारि कै। ख्याल में हरि के सब बिसारि कै।।
प्रगटे शम्भु शीश कर फेरा। बल तन में ह्वै गयो घनेरा।।
कह्यो शम्भु माँगौ बर मोसे। हौं प्रसन्न भस्मासुर तोसे।।
तब मैं कहा देव बर स्वामी। इच्छा पूरण होय नमामी।६।

दोहाः- कर जा के सिर पर धरौं तौन होय जरि छार।
यह अभिलाष हमार है दानी आप उदार।१।
एवमस्तु कहि हर चले मैं गृह को चलि दीन।
मारग में नारद मिले हरि के भक्त प्रवीन।२।

चौपाईः- हाल पूँछि हम से उन लीन्हा। हम सब ठीक ठीक कहि दीन्हा।१।
कह्यौ तुमहिं हर दीन बकाई। ऐसा बर कहिं होत है भाई।२।
भाँग धूतर ज़हर बहु खावैं। उनके बचन न हम पतिआवैं।३।
अक्किल उनकी गई हेराई। अधिक आयु के ह्वै गे भाई।४।

दोहाः- ऐसी आशिष आज तक हम ने सुनी न कान।
चारों युग में कबहुँ कोइ पायो कहूँ प्रमान।।

चौपाईः- जाय परिक्षा हर की कीजै। झूठी सांची सब लखि लीजै।१।
तब मेरे मन में यह आवा। नारद बचन ठीक बतलावा।२।
करि प्रणाम नारद को भाई। शम्भु कि ओर चल्यौ रिसिआई।३।

सोरठाः- लखि हम कीन पुकार खड़े भये शंकर तहां।
बोले बचन उदार भस्मासुर आवत कहाँ।।

चौपाईः- तब मैं कहा परिक्षा ले हौं। आपै के शिर पर कर देहौं।
भागे शिव सुनि मेरी वानी रपटायौं मैं तन मन मानी।
दुइसै पग का बीच रह्यौ जस। बीचै में श्री हरि प्रगटे तस।
पूँछ्यौ हाल ठीक हम गावा। हरि हँसि कै यह भेद बतावा।
पहले अपने शिर कर धरिये। झूँठ होय तो हरहिं पकरिये।५।

फिर इन्साफ करैं हम तेरो। पहिले बचन मानिये मेरो।
मम मन भयो आय विश्वासा। हरि ने बचन कह्यो यह खासा।७।

दोहाः- शिर पर अपनें कर धरयौं जरि तन ह्वै गो छार।
चढ़ि बिमान तुरतै गयौं हरि के धाम सिधार।।

चौपाईः- कौन कर्म हम उत्तम कीन्हा। जिन वर दीन तिनहिं दुख दीन्हा।।
पाप कर्म करने के हेता। यह वर माँग्यौं बिगरी नेता।।
नारद धन्य कृपा अति कीन्हा। जो मो को घुमाय तिन दीन्हा।।
मग में हरि के दर्शन पावा। हरि किरपा करि दुःख छुड़ावा।।
हर से बैर कीन्ह सुख पावा। मिल्यो धाम आनँद उर छावा।५।

दोहाः- भस्मासुर बिनती करै सब से शीश नवाय।
प्रेम भाव करि हरि भजौ जग में फँसौ न भाय।।

१९७ ।। श्री नज़र अली शाह जी ।।

शेरः- कहते नज़र अली हैं सब में समा रहे हरि।
दीदार हमको अपना हरदम दिखा रहे हरि।।

१९८ ।। श्री दुर्योधन जी ।।

सोरठाः- भीम से हरि मरवाय मोहिं पठयो हरि के धाम
ऐसे कृपा निधान हैं, जिन्हें कहैं सब श्याम।१।
कहा न मान्यौं श्याम का, तेहि पर यह पद दीन।
दुर्योधन कहैं मुक्त वै, हरि चरनन लव लीन।२।

१९९ ।। श्री कीचक जी ।।

चौपाईः- पाप कर्म मेरे मन जागा। जाय द्रोपदी ते रति मांगा।१।
कह्यौ द्रोपदी मम हित बानी। नहिं मान्यौं मद में सुख जानी।२।
गयों फेरि निज भगिनी पासा। कामातुर लज्जा करि नासा।३।
कह्यों करौं या से रति भगिनी। काम कि दहत है तन मन अग्नी।४।

दोहाः- रानी तब वैराट की, हम से कह्यो सुनाय।
रक्षक हैं गन्धर्व यहि, पांच मानिये भाय।।

चौपाईः- हमै भेद सब दियो बताई। सो हम तुम्हैं दीन समुझाई।१।
मारैं तुम्हैं बचै नहिं पैहो। धर्म जाय औ तनहि नसैहौ।२।
जैसा होनहार है होता। वैसे बुद्धि लगावै गोता।३।
मेरे तन मन कुछ न विसायो। लौटि के द्रुपद सुता ढिग आयों।४।

सोरठाः- मांग्यों रति का दान, कह्यो काल्हि निशि आइये।
राखौं तेरो मान, मम तन ते सुख पाइये।।

चौपाईः- अर्द्ध रात्रि के समय में भाई। पहुँचि गयो मैं निर्भय जाई।
सोय रहे सब नर औ नारी। छाई नगर में सुन्ना कारी।
फाटक खुला भवन का देखा। उपजा उर में हर्ष बिशेषा।
बरैं दीप सुन्दर उजियारी। निशि चौदस की थी अँधियारी।
सब दीपन को दिहेंव बुझाई। द्रुपदी भवन में पहुँच्यों जाई।५।

वहां क दीप बुझायों नाहीं। सांची कहौं भ्रात तुम पाहीं।
तहां भीम बैठो बनि दारा। भूषण बसन बिचित्र सँवारा।
मैं यह भेद जानि नहिं पावा। दोनो कर गहि उर में लावा।
पकरयौ कर कसिकै जब मेरो। तब मैं जान्यौं है कछु फेरो।
बैठे पर तहँ भई लड़ाई। फिर भीतर ते आँगन जाई।१०।

ह्वै कर खड़े लड़ेन हम भाई। दुइ घण्टा तक खूब अघाई।
भीम मोहिं तँह पटकि के मारा। शिर मरोरि तुरयो महि डारा।
चढ़ि बिमान मैं हरि पुर धायों। अधरम का फल उत्तम पायों।१३।

दोहाः- धन्य श्याम के दास हैं मारैं दें हरिधाम।
जे हर दम सुमिरन करैं तिनके संग में श्याम।।

सोरठाः- कीचक कहैं सुनाय हरि के भक्त कि यह कथा।
समझै तो बनि जाय रहे न तन मन कछु ब्यथा।।

२०० ।। श्री धन्वन्तरि जी ।।

चौपाईः- बात में ब्रह्मा को है बासा। पित्त में बिष्णु करैं निवासा।
कफ में काम दहन शिव राजैं। त्रै नाड़िन त्रै देव बिराजै।।
तीनों मेल करैं तब जानो। प्रगटै सन्निपात दुख मानो।।
कहैं धन्वन्तरि सुनिये भाई। वैद्य भजै हरि करै दवाई।।
बिन आराधन जग यश नाहीं। सत्य बताय दीन तुम पाहीं।५।

दया धर्म जा के तन होवै। सोई वैद्य जक्त सुख सोवै।।
रोगी देखन को जब जावै। यथा शक्ति कछु धर्म करावै।।
कपटी झूठी औ अभिमानी। पाखण्डी दम्भी अज्ञानी।।
ब्यभिचारी कटु बचन मलिन मति। मैले फटे बसन तन पर अति।।
यहां न यश वहँ दुर्गति होवै। जाय नर्क में हर दम रोवै।१०।

पुत्री बहिन मातु सम भाई। जानै परनारिन जग आई।।
पुत्र भ्रात औ पिता समाना। जानै नरन को तब कल्याना।।
बड़ी के माता करिकै जानै। सम को भगिनी करि कै मानै।।
छोटी को पुत्री करि जाना। सुर मुनि बेद बचन तिन माना।१४।

दोहाः- छोटे नर को पुत्र सम, सम को भ्रात समान।
बड़े को माने पिता सम बेद शास्त्र परमान।।

चौपाईः-ऋषिन मार्ग यह कीन प्रकाशा। जा से दुखिन क हो दुख नाशा।
वैद्य के सन्त समान हो लक्षन। दवा लाभ करिहै तब तत्क्षण।
पालन कीन चहै परिवारा। तन मन के सब तजै बेकारा।
जो कछु खुशी से धन कोइ देवै। प्रेम पूर्बक सो लै लेवै।
ता के होय बरक्कत भारी। सुख पावैं गृह के नर नारी।५।
या बिधि ते जो जग में रहिहै। धन शिशु ते नहि खाली रहिहै।
तन मन ते मम बचन को मानै। अन्त चलै हरि पुर चढ़ि यानै।७।

२०१ ।। श्री शरभङ्ग जी ।।

चौपाईः-हर दम हरि के रंग जो राँचा। ता को भव की लगै न आँचा।१।
नर तन पायो सुन्दर ढाँचा। बिन हरि भजन जानिये काँचा।२।
हरि को भजै सूर सो सांचा। काल के गाल पै देय तमाचा।३।
कह शरभङ्ग भाल बिधि खाँचा। सो मिटि जाय सत्य मम बाचा।४।

२०२ ।। श्री गव जी ।।

दोहाः- राम नाम परताप अति ऊँचा अगम अपार।
गव कहते हर दम भजो ह्वै जावो भव पार।१।

२०३ ।। श्री गवाक्ष जी ।।

दोहाः- राम नाम अनमोल मणि सब में जासु प्रकाश।
कह गवाक्ष सुमिरन करौ तब घट होय प्रकाश।।

२०४ ।। श्री द्विविद जी ।।

दोहाः- राम नाम सुमिरन करौ द्विविद कहैं कर जोरि।
भीतर बाहेर एक हो छूटै मोरि व तोरि।।

२०५ ।। श्री मयन्द जी ।।

दोहाः- कहैं मयन्द सुनाय यह तव घट हो उजियार।
जब धुनि नाम कि जाय खुलि सदा रहै एकतार।।

२०६ ।। श्री बालि जी ।।

दोहाः- राम मारि निज बाण ते मम ढिग आये धाय।
करि दर्शन किरतार्थ ह्वै चल्यों बिष्णुपुर भाय।१।

राम नाम में प्रीति जेहि सोई सच्चा दास।
बालि कहैं सो सर्बदा रहै राम के पास।२।

२०७ ।। श्री सुबाहु जी ।।

दोहाः- पावक शर से मारि हरि तन मन कीन्ह्यों क्षार।
दिव्य रूप ह्वै यान चढ़ि गयों बिष्णु दरबार।।

सोरठाः- कहैं सुबाहु सुनाय ऐसे राम कृपालु जी।
बिगरी देत बनाय दनुज नाग खग भालु जी।१।
मृग बानर गति दीन राम गरीब नेवाज जी।
सुमिरैं ते परवीन होय भक्त शिर ताज जी।२।

२०८ ।। श्री नारान्तक जी ।।

दोहाः- दधिबल मो को मार कै दीन बिष्णु को धाम।
मैं हरि भक्तों को करूँ बार बार परनाम।।
नारान्तक था नाम राक्षस तन औ मन्द मति।
तहूँ दियो बिश्राम हरि के दास कि सत्य मति।।

२०९ ।। श्री कालनेमि जी ।।

सोरठाः- कालनेमि मम नाम कपट कीन हनुमान सों।
मारि दियो हरि धाम ऐसे भक्त महान सों।।

चौपाईः- ऐसे भक्त दयालु कहावैं। कपटिन को हरि ढिग पहुँचावैं।
वदी करौ तो नेकी पावो। ऐसे भक्तन बलि बलि जावो।२।

२१० ।। श्री मारीच जी ।।

सोरठाः- कपट क मृग बनि जाय राम ब्रह्म से छल किया।
हरि मोहिं मारयौ धाय दिव्य रूप हरि पुर दिया।१।
ऐसे राम उदार जे जन सुमिरन करत हैं।
कह मारीच पुकार ते फिर भव नहिं परत हैं।२।

२११ ।। श्री कवन्ध जी ।।

चौपाईः- कह कवन्ध सुनिये मम भाई। हरि औ हरि भक्तन यश गाई।१।
हरि मारैं तो दें हरि धामा। भक्तौ मारि देंय हरि धामा।२।

भक्तन की हरि की है एका। या में फरक नहीं है नेका।३।
एकैं हैं दुइ रूप बनावैं। जग के हित यह खेल मचावैं।४।

२१२ ।। श्री तपा दास जी ।।

चौपाईः- शम नव इन्द्रिन को करि दीजै। दसवाँ द्वार खोलि तब लीजै।।
दम तन भीतर चोरन कीजै। नाम प्रकाश रूप लै लीजै।।
मुद तन भीतर आनन्द छाई। मंगल बाहर वही देखाई।।
तब सुमिरन से छुट्टी पावो। हर दम धुनि हरि लखि मुसक्यावो।।
पढ़े सुने से बनै न भाई। साधन करै तौन सुख पाई।५।

दोहाः- कथनी को त्यागन करै गहनी गहै सो शूर।
तपा दास कहैं तब लखै हरि पासै नहिं दूर।।

२१३ ।। श्री लवणा सुर जी ।।

सोरठाः- लवणासुर मम नाम मारि शत्रुहन सुख दियो।
भक्तन का यह काम अधमन हित नर तन लियो।१।
रूप चतुर्भुज पाय बैठ्यों हर्षि बिमान में।
जय जय कार सुनाय पहुँचि गयों हरि धाम में।२।

२१४ ।। श्री त्रिजटा जी ।।

दोहाः- श्री जानकी मातु की कछु सेवा हम कीन।
त्रिजटा नाम हमार था तन राक्षसी मलीन।१।
माता करि किरपा हमैं पठ यो हरि के धाम।
ऐसी दया कि खानि हैं सुमिरो आठौं याम।२।

२१५ ।। श्री खर जी ।।

दोहाः- हरि औ हरि के भक्त जेहि मारैं निज कर भाय।
सो तौ हरि के धाम को चढ़ि बिमान चलि जाय।१।
खर है नाम हमार हम पर हरि किरपा कियो।
सांची कहौं पुकार हरि पुर में बासा दियो।२।

२१६ ।। श्री दूषण जी ।।

सोरठाः- दूषण कहैं सुनाय हमरे सब दूषण हटे।
कहँ लगि करौं बड़ाय हम हूँ हरि पुर में डटे।१।

बिपिन मांहि रघुराय युद्ध कीन मारयौ हमै।
हरि पुर दियो पठाय सत्य बतायों मैं तुम्हें।२।

२१७ ।। श्री त्रिशिरा जी ।।

चौपाई:-त्रिशिरा कहैं सुनो मम बयना। मारि के हरि मोहिं दीन्हेव चैना।१।
छूट शरीर दिब्य तन पावा। चढ़ि विमान बैकुण्ठ सिधावा।२।

दोहा:- राम लखन सब राक्षसन मारि दीन हरि धाम।
योग यज्ञ जप धर्म का फल पायो सब आम।१।
अधमन पर इतनी कृपा जे भजते चित लाय।
तिनको गोदहि में लिये घूमत हैं रघुराय।२।

२१८ ।। श्री सुलोचना जी ।।

दोहा:- नाम हमार सुलोचना शेष कि कन्या जान।
जरत समय पति संग में कीन राम को ध्यान।१।
पर बैकुण्ठ को मैं गई चढ़ि विमान हर्षाय।
पती रहे बैकुण्ठ में जो सब से लघु आय।२।

२१९ ।। श्री मेघनाद जी ।।

चौपाई:- शेष की कन्या हम लै आय। शेष के अंश लखन बनि आय।१।
युद्ध कीन हम जीत न पावा। तब उन हमको मारि गिरावा।२।
मिल्यो प्रथम बैकुण्ठ सुहावन। रमा बिष्णु जहँ पर मन भावन।३।

दोहा:- बदला लीन चुकाय उन गति हू उत्तम दीन।
मेघनाद तुम से कहैं कौन धर्म हम कीन।।

२२० ।। श्री षड़ानन जी के बाहन ।।

चौपाई:- श्री षटमुख स्वामी के पायक। नाम मयूर भजौं रघुनायक।१।
राम नाम को सुमिरौं भाई। हर दम एक तार मन लाई।२।
बोलौं तब हूँ राम कौ नामा। और बात से·नेक न कामा।३।

२२१ ।। श्री गजानन जी के बाहन ।।

चौपाई:- बाहन श्री गजानन जी का। राम नाम मोहिं लागत नीका।१।
नाम हमार मूष है भाई। सुमिरौं निशि बासर रघुराई।२।

२२२ ।। श्री सिकन्दर शाह जी ।।

शेरः- फकीरों का कौतुक अजब हमने देखा।
करैंगे तो कुछ औ कहैंगे अलेखा।१।
सिकन्दर कहैं बस कदम उनके चूमै।
निडर हो के दुनिया में हर जा में घूमै।२।

२२३ ।। श्री दारा जी ।।

शेरः- गदाओं क है क्या अजब ही तमाशा।
रहैंगे जहां में सबों से निराशा।१।
कहैं दारा उनके कदम सिर्फ पकड़ो।
चलो भिश्त में फिर न दोज़ख़ में जकड़ो।२।

२२४ ।। श्री अकबर शाह जी ।।

शेरः- फ़कीरों कि महिमा नहीं जानी जाती।
कहैं अकबर वह तो खुदा के संघाती।१।
कर दें गदा जिस पर रहम वह भिश्त में मौजैं करैं।
गर बद दुआ देवैं तो दोज़ख ही में जा कर परैं।२।

२२५ ।। श्री आसफुद्दौला जी ।।

शेरः- रहम करिये गरीबों पर अगर पैसा खुदा देवै।
चलोगे छोड़ दुनिया जब तुम्हें फिर भिश्त ही होवै।१।
गरीबों को खाना खिला कपड़े दीजै।
खुशि होंगे अल्ला यही काम कीजै।२।
पड़े अन्धे लूले जो लँगड़े व बहिरे।
अपाहिज व कोढ़ी दुखी जो साकहिरे।३।
इनकी मदद करने से हो भलाई।
कहैं आसफुद्दौला सच मैं बताई।४।

२२६ ।। श्री मलिका विक्टोरिया जी ।।

दोहाः- दुःख न देवै प्रजा को अपनि कमाई खाय।
हाथ पैर जब तक चलैं करिये यही उपाय।।
राजनीति जैसी चही तैसीन हम कछु कीन।
ना मालुम किस हेतु मोहिं हरि निज धाम को दीन।।

चारि दिना की ज़िन्दगी फेरि मिलै अति दुःख।
छल बल करि दुख देय जो पावै कब तक सुक्ख।।
पुण्य पाछिली का बिया जब घट जावै आय।
तब नैको नहि मिल सकै दाना पानी भाय।।
जब तक जग में जो रहै करै कार्य्य सब ठीक।
मलका कहै सुनाय सो यहाँ वहाँ पर नीक।५।

२२७ ।। श्री पारबती माता जी के बाहन सिंह जी ।।

चौपाईः- पारवती माता सुख दाई। तिनका बाहन मैं हो भाई।१।
नाम हमार सिंह जग जाना। करौं मातु सीता को ध्याना।२।
जिन सब शक्तिन को उपजावा। तिन चरनन मैं तन मन लावा।३।
दिब्य भोग शिव शिवा जो पावैं। सोई हम सब बाहन पावैं।४।

२२८ ।। श्री ब्रह्मा जी के बाहन हंस जी ।।

चौपाईः- श्री ब्रह्मा जी का मैं बाहन। हंस नाम मम हरि आराधन।
चोंच मोरि हरि ऐसि बनाई। तामे तीखी भरी खताई।
पय पानी या से बिलगावों। डारत चोंच देर नहि लावों।
फटै दूध पानी अलगावै। दूध के आंठा सब बनि जावै।
आंठा पाय लेंव हर्षाई। पानी भरा रहै नहि पाई।५।

मेरो जो परिवार है भाई। मान सरोबर रहत सदाई।
भस्म में मोती के बल जो है। मान सरोबर जल में सो है।
जल पीवैं ता में सब तैरें। करैं सरोबर में खुब सैरें।
मोती वहां होत है नाहीं। सत्य बताय दीन तुम पाहीं।
मोती का गुन जल में जानो। या से मस्त रहैं सब मानो।
हम नित्य दिव्य भोग को खाते। यह सब भेद तुम्हैं बतलाते।११।

दोहाः- जो या में संशय करै मान सरोवर जाय।
देखै मम परिवार तहँ निज नैनन हर्षाय।१।
जल निर्मल औ अति गहिर मध्य में थाह न भाय।
संत जौन कोइ गये हो तिन ढिग पूँछै जाय।२।
जोड़ै जोड़ा उड़त हैं जब मन उनका होय।
घूम के तब फिर गिरत हैं अन्य न जावै कोय।३।

जल के ऊपर निशि में सोवैं। जल के निकटै अण्डा देवैं।
राम ब्रह्म का खेल है सारा। भजै नाम ता को निस्तारा।४।

बार्तिकः- श्री राजा इक्ष्वाकु, अज, सगर रघु, मनु, दिलीप, मान्धाता, भगीरथ, हरिश्चन्द्र, दशरथ, अम्बरीष, रामचन्द्र, लवकुश, नृग, दधीचि, प्रह्लाद, ध्रुव गालव, जनक, कर्ण, मोरध्वज, नल, नहुष, प्रियावर्त, इन सबके यहां हंस रहते थे। उत्तम सरोवर बने थे। दूध मोती सेवन करते थे और जल में किलोल करते थे। जब सरोवर बन कर तय्यार हो जाता था तो जितने हंसो को निमंत्रण जाता था उतने चले आते थे और साल में एक जोड़ा उनसे होता था। राजा बीर बिक्रमादित्य जो उज्जैन नगरी में हो गये हैं उन्होने एक सरोवर बनवा के हंसो को निमंत्रण भेजा कि हमारे यहां सौ सहस्त्र हंस मानसरोवर से कृपा करके पधारें। वैसा ही हुआ। हंस आये और तीन वर्ष रहे। नित्य दूध मोती पाने को मिलता था। फिर हंसों ने कहा कि हम सब मानसरोवर जाने की इच्छा करते हैं।

राजा ने कहा अभी मेरे एक मकान का एक कोना भी मोतियों से नही खाली हुआ है। अभी और कुछ दिन रहना चाहिये। हंसों ने कहा आप बड़े प्रतापी भगवत के अंश हो। ऐसा राजा उदार, दानी और पराक्रमी, निर्भय इस कलि में हो नहीं सकता। तुम्हारी कीर्ति हर युगों में रहेगी। यह कह कर सब हंस मानसरोवर को चले गये। एक हंस पांच या छ मोती और एक पाव दूध इस से अधिक नहीं खा सकता। जो मोती कंजा कें बराबर होते हैं और छोटे छोटे पत्थर कें टुंकड़े और छोटे छोटे शंख खा कर पचा देते हैं। हंस मानसरोवर में बावन लाख (५२,००,०००) हमेशा रहते हैं। भगवान की कृपा से किसी युग में कम नही होते। कलि में उनकी आयु साठि (६०) वर्ष होती है। द्वापर में इसकी दस गुनी और द्वापर से दस गुनी त्रेता में और त्रेता से दस गुनी सतयुग में। हंस मरने के पहले ही जल से अलग होकर पृथ्वी पर बैठ कर शरीर त्यागते हैं। और एक पक्षी जो बत्तख के शरीखे होता है उसे कड़ाकुल और सावन भी कहते हैं। वह भी मानसरोवर में चारों तरफ़ रहते हैं, और मछली पकड़कर खाते हैं। वह भी रात दिन रहते हैं और दो तरह के होते हैं। एक छोटे और एक बड़े। उनमें भी उड़ने की ताक़त बहुत होती है। परन्तु जहाँ झील या बड़े तालाब होते हैं वहीं

उतर पड़ते हैं। यह पहाड़ी पक्षी कभी कभी इस देश में भी चले आते हैं। उनको यहां के लोग शिकार करके मार खाते हैं और जो बच जाते हैं वह फिर पहाड़ी सरोवर या झीलों में जा कर बास करते हैं। यह रात्रि में बहुत जागते हैं। जहां चाप मिलती है तहां तुरत बोलकर उड़ने लगते हैं और ऊँचे जा कर मड़राया करते हैं। फिर देर में आकर जल पर गिरते हैं। कड़ाकुल यानी सावन जिनको कहते हैं वह छोटे छोटे पत्थर भी खा कर पचा देते हैं जैसे कपोत और बनेवा, पंडुख सीकपर, लेदुक यह भी कंकड़ और पत्थर खाकर हजम करते हैं और जब बीट करते हैं तब चून सरीखे हो जाती है। इन सब के शरीर में गर्मी बहुत होती है। इसी कारण से जठराग्नि बहुत तेज रहती है। हंसों में उड़ने की ताक़त अधिक होती हैं। जब मण्डलाकार उड़ते हैं तब देखने में बड़ा आनन्द आता है। उनके शरीर में चमक बहुत होती हैं। हंसों को यदि दूध पहिले दे दिया जाय तो मोती नहीं पाते। अगर मोती देकर दूध दिया जाय तो बहुत प्रसन्न रहते हैं।

हंस मारने से बोलता नहीं है। आँसू गिरते हैं और फटकता है। अगर तुम उसको पकड़ लो और कहो कि तुम को हम थोड़ी देर में मार डालेंगे तो उसके आँसू जारी हो जावेंगे। ऐसा सच्चा और गरीब होता है उसे कभी कोई मारता ही नहीं है। एक समय कंस ने इस बात की परिक्षा करके फिर छोड़ दिया था। एक जोड़ा हंसों का पकड़वा करके परिक्षा करवाया था। आज कल के समय में हंस जो जवान होता है वह बीस सेर पक्का होता है। इसका दूना द्वापर में, द्वापर से दूना त्रेता में और त्रेता से दूना सतयुग में। जब घींच उठाकर खड़ा होता है तब एक गज़ का लम्बा मालूम पड़ता है। द्वापर में डेढ़ गज़ त्रेता में दो गज़ और सतयुग में ढाई गज़ लम्बा होता है। हंस सब एक रंग श्वेत चिक्कन और बड़े चमकीले होते हैं चोंच और पग सोबरण के समान होते हैं। शकल बत्तख सरीखे होती है। हम में और उन में सिर्फ प्रकाश का अन्तर होता है। हम दिव्य हैं हम में प्रकाश ज्यादा है। वह प्राकृत हैं उनमें कम हैं। परन्तु आत्मा तो एक ही है। हर एक युग में जलवायु बदला करती है। कलि से जलवायु द्वापर में पुष्ट, द्वापर से त्रेता में पुष्ट, और त्रेता से सतयुग में पुष्ट होती हैं। और जो दिव्य हंस इन्द्र पुरी में रहते है उनके दिव्य दूध, दिव्य मोती और दिव्य जल के

सरोवर बने हुये हैं। यह बात यह बात ध्यान करने वाले देखते हैं। मानसरोवर में पहिली स्नान देवता और मुनियों की होती है, फिर दूसरी स्नान हरद्वार में होती है, और तीसरी स्नान तीर्थराज प्रयाग में होती है और सायंकाल की सन्ध्या बन्दन पुष्कर पर होती है। यह नित्य का नेम है, और श्री अवधपुरी में सब देवता और मुनी नित्य जन्म भूमि की और तुलसी चौरा की परिक्रमा करते हैं। श्री मधुपुरी में श्री कृष्ण जी का जहां अवतार हुआ है वहां और जहां श्री राम जी ने धनुष का खण्डन किया है वहां और कैलाश में जहां धनुष धरा जाता है इन सब भूमिकाओं को अति पुनीत समझकर प्रेम पूर्वक जाते हैं और नित्य दरबार में जाते हैं। उन सब के लिये कोई परिश्रम नहीं। राम नाम के प्रताप से अनन्त रूप धरने की शक्तियां हो गई हैं। अपने अपने स्थानों में भी मौजूद रहते हैं और सब जगह जाते भी हैं। जिस जगह आप प्रेम करो उसी जगह मौजूद भी हैं। वह सब तुम्हारे शरीर में भी हैं और बाहर भी हैं। राम नाम के प्रताप से सब कुछ मालूम होता है। उसी के अन्तरगत सब खेल है।

२२९ ।। श्री माया देवी जी ।।

दोहाः- हरि से करते प्रीति नहि झूठें बनते सन्त।
पाठ करैं माला जपैं मन घूमत है अन्त।१।
या से कछु नहि ह्वै सकै जब तक मन थिर नाहिं।
तन मन प्रेम लगै जबै सन्मुख हरि दर्शाहिं।२।
जप औ पाठ का फल तुरत मिलै करौ यह काम।
सब में ब्यापक कहत सब सुर मुनि राम क नाम।३।

चौपाईः- सुनौ नाम धुनि हर दम भाई। निरखौ सन्मुख सिय रघुराई।
ध्यान में पहुँचि जाव जब प्यारे। देखौ लीला अजब बहारे।
लय में सुधि बुधि कछु नहिं रहई। कौन बताय सकै का रहई।
हम सब हरि सुमिरन को जानी। हरि जो कार्य्य दियो सो ठानी।
हम को या में दोष न कोई। जो जस करै तैस फल होई।
बिना परिक्षा जाय न पैहौ। जो डरि जाव तो गोता खैहौ।६।

दोहाः- इधर उधर ते जात हैं अब हीं चेतत नाहिं।
बे समुझन के कहे परि अन्त में नरकै जाहिं।१।

चले रहे हरि भजन को ओढ़ि लीन परपंच।
नैना चारों बन्द भे किमि सूझै सतपंच।२।
भीतर में कछु और था ऊपर था कछु और।
काम सिद्ध वह होयगो जा पर हर दम गौर।३।
हरि को जे सुमिरन करैं तिन चरनन बलिहार।
त्रिभुवन पति की छाह मैं माया नाम हमार।४।

२३० ।। श्री निद्रा देवी जी ।।

चौपाईः- हरि सुमिरन में जे मन लावैं। तिनहिं निरखि हम शीश नवावैं।
ना सोवैं ना सोवन देवैं। हम हूँ को कायल करि देवैं।
दहिनी बाईं करवट लेते। नैन मूँद मोंहि धोका देते।
होंय उतान कबहुँ हरषाई। ध्यान करैं तन मन को लाई।
देखैं हरि के चरित मनोहर। पढ़ा सुना जो नहीं कहीं पर।५।

अकथ अलेख कौन लिखि पावै। सुर मुनि कोई पार न पावै।
लय में पहुँचि जाँय फिर मानो। नहिं जहँ रूप नाम जप ध्यानो।
निर्गुण में निर्गुण ह्वै जावै। सुधि बुधि रहै न क्या बतलावै।
भक्तन की यह निद्रा भाई। जामे परम शक्ति सब गाई।
उतरैं सुनै नाम धुनि प्यारी। हर दम निरखैं अवध बिहारी।
उनको हम केहि भांति सोवावैं। हर दम हरि संग वै दुलरावैं।११।

दोहाः- देंय हाजिरी आय हम, वै हमरे वश नाहिं।
निद्रा देवी नाम मम, सांचि कही तुम पाहिं।।

२३१ ।। श्री भोला नन्द जी ।।

दोहाः- विष का अमृत होत है अमृत का बिष होय।
हरि की लीला अगम है जानि न पावै कोय।१।
जे हरि सुमिरन नहिं करैं तिन को समझो कूर।
जे सुमिरन में लगे हैं बैठें जाय हजूर।२।
जियते हरि दर्शायँ जब तब निर्भय ह्वै जाय।
राम नाम खुलि जाय जब हर दम तान सुनाय।३।
दृष्टि ते होय अदृष्टि तब शून्य में जाय समाय।
अनुभव की परमान यह, भोला नन्द बताय।४।

२३२ ।। श्री ज्वाला नन्द जी ।।

दोहाः- जो हरि का सुमिरन करैं सोई पहुँचैं पास।
सुमिरन बिन नरकै चलैं होवै सत्यानास।१।
तजैं कामना काम सब सुमिरै तन मन लाय।
राम नाम की धुनि खुलै राम सिया दर्शाय।२।
ध्यान में बहु लीला लखै बरनत नहीं सेराय।
लय में जावैं पहुँचि जब सुधि बुधि जाय भुलाय।३।
जो कोइ यहँ पर जानि ले सोई सूर कहाय।
ज्वाला नन्द कि बिनय यह नाहीं तो पछिताय।४।

२३३ ।। श्री निजामीदास जी ।।

पदः- हरि की लीला ध्यान में देखा। सतगुरु कृपा कीन तब देखा।
धनुष बाण लीन्हें कर देखा। शंख चक्र गदा पद्मौ देखा।
मुरली अधर धरे प्रभु देखा। गोबर्द्धन नख ऊपर देखा।
दशरथ आँगन खेलत देखा। क्षीर समुद्र शेष पर देखा।
नन्द महरि मुख चूमत देखा। कौशिल्या के गोद में देखा।

पिअत यशोमति के कुच देखा। अवध पुरी में बिहरत देखा।
बाम भाग संग लक्ष्मी देखा। वृज में रहस करत हंसि देखा।
सखा सखी संग में बहु देखा। तीनौ रूप श्याम अति देखा।
तीनौं शक्ती गोरी देखा। पावन परम मनोहर देखा।
बरनौं किमि नहि बुद्धि बिशेषा। भूषन बसन दिब्य तन देखा।

केशर तिलक भाल बिच देखा। राज तिलक श्री अवध में देखा।
सोवत पय समुद्र में देखा। कुञ्जन में राधे संग देखा।
द्रुपदी बसन बने हरि देखा। श्री भृगु लता हृदय में देखा।
नाम कि धुनि संघ सन्मुख देखा। सुर मुनि बिबिध भांति के भेषा।
शून्य समाधि में कछु नहिं देखा। नाम रूप रंग वहां न रेखा।

आगे बढ़ेन कृष्ण पुर देखा। नाना भांति कि सुरभी देखा।
फूले फूल सुगन्धित देखा। लगे अनार वृक्ष बहु देखा।
दूध की धारैं जारी देखा। ना कोइ दुहै करारी देखा।
नालिन में पय जाते देखा। हौजन में फिर भरते देखा।
आपै आप औटते देखा। शीतल ह्वै कर जमते देखा।

बिना अधार क झूला देखा। श्याम के अन्तर श्यामा देखा।
ढारैं स्वयं चलैं तँह देखा। त्रिबिधि समीर बहै तहँ देखा।
मुरली धनुष बाण लिये देखा। संख चक्र गदा पद्म है देखा।
आठौं करन में धारे देखा। कोटि काम छबि वारे देखा।
हव्य अमार उठावत देखा। गरुड़ रूप बहु धारत देखा।५०।

सुर मुनि सबन दै आवत देखा। श्याम से हाल बतावत देखा।
श्याम नाम गौवैं कहैं देखा। श्याम प्रकाश वहां पर देखा।
आगे चलि साकेत को देखा। महा प्रकाश तहां पर देखा।
राम श्याम छबि अनुपम देखा। अगणित मदन निछावर देखा।
ऊँचे सिंहासन प्रभु देखा। सिया को हरि के उर में देखा।६०।

मणिन की बसुधा तहँ पर देखा। पुष्प बृक्ष बहु बिधि के देखा।
बेपरमान सिंहासन देखा। हरि के रूप संत बहु देखा।
तिन पर बैठे हैं सब देखा। बोलत नहीं किसी को देखा।
सिंहासन चढ़ि जाते देखा। श्री बैकुण्ठ उतरते देखा।
भांति भांति सिंहासन देखा। नर नारिन तहँ आसन देखा।७०।

झूलैं नारि पुरुष बहु देखा। मन्द मन्द मुसक्याते देखा।
पुष्प बृक्ष बहु सुन्दर देखा। चलत समीर सुगन्धित देखा।
पक्षी बिष्णु नाम कहैं देखा। हरि पुर सुभग धाम है देखा।
भूषन बसन लगे तरु देखा। गिरत दिब्य पृथ्वी पर देखा।
आपै सब इकठौरी देखा। गरुड़ सबन पहिरावत देखा।८०।

रूप बहुत बनि आवत देखा। हब्य अनार देत फिर देखा।
नर नारी हंस लेत हैं देखा। दुइ दुइ दोना सब ढिग देखा।
पाय के दोनो फेकत देखा। दोना अन्तर होते देखा।
धरनी पर नहिं गिरते देखा। सब के गले मे माला देखा।
श्वेत रंग अति आला देखा। नर्क जात बहु प्राणी देखा।९०।

बोलत दुख की बाणी देखा। यम पीटत लै जाते देखा।
तनकौ नहीं दयाते देखा। नर्क में जाय गिरावत देखा।
बूड़ै औ उतराते देखा। तरे से ऊपर आते देखा।
मुख से बोलि न पाते देखा। हाय हाय चिल्लाते देखा।
पल भर कल नहिं पाते देखा। कसे जंजीरन बांधे देखा।१००।

काटत तिनके कांधे देखा। भाला तन में कोंचत देखा।
सिंह श्वान तन नोचत देखा। सर्प भयानक काटत देखा।
कागा चोंच से मारत देखा। गदन से यम शिर फोरत देखा।
ऊपर चढ़ि तन तोरत देखा। उलटा टांगे खंभन देखा।
लोह कि साटिन पीटत देखा। नैन काढ़ि कै फेंकत देखा।११०।

लोह कि खूँटी ठोकत देखा। आरी शिर पर चलते देखा।
दुइ पल्ला होइ गिरते देखा। फिरि हरि इच्छा जुड़ते देखा।
दण्ड सहैं नहि मरते देखा। जीभ पै आरी चलते देखा।
ता से खून निकलते देखा। फटकत मुख फैलाये देखा।
यम जिह्वा कर थाम्हे देखा। कोल्हू में बहु पेरत देखा। १२०।

तप्त खम्भ कसि वांधत देखा। नैनन सूजा कोंचत देखा।
नाक कान में भोंकत देखा। परे पीव के हौजन देखा।
कृमि सब तन में काटत देखा। मुख नासिका में जाते देखा।
उलटि फेरि सब गिरते देखा। तैल कराहन खौलत देखा।
तिन में पापिन औटत देखा। अग्नि कि भट्ठिन झोंकत देखा।१३०।

चर चर चर चर जरते देखा। चाम कि थैलिन सीते देखा।
ता में बिष्ठा भरते देखा। बृक्ष बबूलन टाँगे देखा।
धीरे श्वांस निकलते देखा। सीसा औटि मुख डारत देखा।
गुदा द्वार ह्वै गिरते देखा। लोहा लाले करते देखा।
अबलन इन्द्री धरते देखा। नरन कि इन्द्री काटत देखा।१४०।

उन्ही के मुख डारत देखा। मुख में बारू भरते देखा।
सांस न नेकौ चलते देखा। नाना भांति के दुख तहँ देखा।
नर नारिन को सुख नहि देखा। जाय पताल लोक फिर देखा।
जल के ऊपर कच्छप देखा। चारि श्वेत दिग्गज तहँ देखा।
बारह श्वेत बराहौ देखा। कमठ के ऊपर शेष को देखा।१५०।

शेष के ऊपर पृथ्वी देखा। एक सहस मुख उनके देखा।
दुइ सहस्त्र दृग ता में देखा। पृथ्वी पर क्या रचना देखा।
ग्राम सहर पुर कस्बा देखा। बाग बगीचे जंगल देखा।
सरिता सागर नाले देखा। ताल तलैया पोखर देखा।
गुफा सुरंग कंदरा देखा। पर्वत बहुत भांति के देखा।१६०।

झरना तिन पर चलते देखा। कुण्ड व सरितन गिरते देखा।
कूप बावली कोटिन देखा। जल खारी औ मीठा देखा।
कहीं कहीं पर जल नहिं देखा। नर नारी दुइ बिधि के देखा।
नीक बेकार स्वभाव के देखा। काह कूह परिस्तानौ देखा।
देव परी तहँ पर बहु देखा। पशु पक्षि जल जीवन देखा।१७०।

बहु प्रकार के कृमिन को देखा। इन्द्रपुरी कैलासौ देखा।
हरि की चर्चा सब कहुँ देखा। पालन परलय उत्पति देखा।
दशौ दिशा दिग्पालन देखा। राम नाम जे जपते देखा।
ते नहिं जग में फंसते देखा। चन्द्र सूर्य्य तारा गण देखा।
इनके फिर धामन को देखा। ब्रह्मा जी के लोक को देखा।१८०।

सुर मुनि शक्तिन आश्रम देखा। बेद शास्त्र को पढ़ते देखा।
कथा कीर्तन कहते देखा। बहु बिधि बाजा बजते देखा।
राग बिलग नहि होते देखा। ध्यान समाधि लगावत देखा।
जल भोजन नहि पावत देखा। जप औ पाठ को करते देखा।
धीरज मन में धरते देखा। द्वैत न तन मन आवत देखा।१९०।

दीन भाव उर लावत देखा। सत्य प्रेम पद पावत देखा।
हंसि हंसि हिय हर्षावत देखा। शव को ज़िन्दा करते देखा।
कटे को जोरि जिलाते देखा। अपने तन को छोड़त देखा।
दुसरे के तन घुसते देखा। मंतर जंतर तंतर देखा।
तिन में बहु बिधि शक्ती देखा। काली दह हरि कूदत देखा।२००।

भवन में उसके पहुँचत देखा। नागिन बहु तँह आते देखा।
हरि से बैन सुनाते देखा। हरि काली ढिग जाते देखा।
लात से मारि जगाते देखा। काली उठि गुस्साते देखा।
हरि के तन लपटाते देखा। हरि को बदन बढ़ाते देखा।
काली हाय मचाते देखा। काली को कुल धावत देखा।२१०।

हरि को बिनय सुनावत देखा। हरि अंतर ह्वै जावत देखा।
फेरि प्रगट ह्वै आवत देखा। तुरतै काली नाथत देखा।
फन के ऊपर नाचत देखा। अहि पर कमल लदावत देखा।
नागिनि नाग लै आवत देखा। कमल लदाय के चलते देखा।
मुरली अधर पै धरते देखा। मधुर मधुर फिर बजते देखा।२२०।

यमुना के तट आवत देखा। सुर मुनि जय जय करते देखा।
सुमन प्रकाश से गिरते देखा। दुन्दुभि साज़ बजावत देखा।
हरि की कीरति गावत देखा। बृज बासी तँह ठाढ़े देखा।
तन मन प्रेम से गाढ़े देखा। काली को फिर चलते देखा।
हरि के द्वार ठ्हरते देखा। हरि को तहां उतरते देखा।२३०।

फन से तहां डोरि निकरते देखा। फन पर फूँक को गिरते देखा।
तुरतै छिद्र को पुरते देखा। फूल तहां उतरावत देखा।
नर नारी हरषावत देखा। हरि को ग्रह में जावत देखा।
बेलवा हेम उठाते देखा। तामे पय को नाते देखा।
बूरा घृत मिलाते देखा। अहि के पास लै जाते देखा।२४०।

अहि तब बिनय सुनाते देखा। हरि तब कछु पी लेते देखा।
तब अहि को फिर देते देखा। अहि हंसि प्रेम से पाते देखा।
दिब्य रूप बनि जाते देखा। फिरि चरनन परि जाते देखा।
हरि हंसि उर में लाते देखा। फिरि अन्तर ह्वै जाते देखा।
नर नारी गृह जाते देखा। हरि धीमर प्रगटाते देखा।२५०।

बहेंगा लै बहु आते देखा। कमल लादि सब लेते देखा।
कंस के भौन को चलते देखा। द्वारे जाय उतारत देखा।
कंस को तहां पुकारत देखा। कंस तहां पर आवत देखा।
लखि कै बोलि न पावत देखा। धीमर फूल धरत तहँ देखा।
कंस का द्वार भरत तँह देखा। धीमर तहां बिलाते देखा।२६०।

कंस को फिर पछताते देखा। फेरी कंसल गावत देखा।
फूलन लखि ललचावत देखा। करत दंडवत फूलन देखा।
उठि कै हाथ बढ़ावत देखा। फूलन को फिर गायब देखा।
कंस खड़ा अकुलावत देखा। तन मन ते मुरझाते देखा।
नैन नीर झरि लाते देखा। तब फिरि हुकुम लगाते देखा।२७०।

नन्द को सभा बुलाते देखा। बलराम श्याम संग जाते देखा।
मल्ल अखाड़े लड़ते देखा। दोनो भाई भिरते देखा।
कोई नहीं ठहरते देखा। फील कुबलिया आवत देखा।
हरि बलराम नचावत देखा। हरि तेहिं शुण्डी थाम्हे देखा।
बलिराम पूँछ गहि साधे देखा। ताको फेरि गिरावत देखा।२८०।

दोनो दन्त उखारत देखा। कंस के ढिग हरि धावत देखा।
चोटिया गहि कढ़िलावत देखा। कसिकै फेरि घुमावत देखा।
पटकि के यमुना फेंकत देखा। दिब्य बिमान को आते देखा।
दिब्य रूप ह्वै जाते देखा। उग्रसेन तँह आये देखा।
हरि हँसि तिलक लगाये देखा। नर नारी हर्षाये देखा।२९०।

धन पट भूषन पाये देखा। निज निज गृह को जाते देखा।
आशिर्वाद सुनाते देखा। आश्रम काग भुशुण्डि क देखा।
सुर मुनि कथा सुनत तँह देखा। बटत तहाँ परसादौ देखा।
गरुड़ै सब को बाँटत देखा। प्रेम से सब तँह पावत देखा।
हनुमत बारि पिआवत देखा। सब को वहाँ से चलते देखा।३००।

फेरि भुशुण्डि अकेले देखा। सुर मुनि सब कैलाश में देखा।
कथा शंभु को कहते देखा। भरद्वाज मुनि आश्रम देखा।
सुनत कथा सुर मुनि सब देखा। याज्ञवल्क मुनि कहते देखा।
उत्तर मुख करि बैठे देखा। नित दरबार जाय कर देखा।
सुर मुनि शक्ति सन्त बहु देखा। शेष को प्रभु के पीछे देखा।३१०।

श्वेत रंग अति भारी देखा। सब ऊपर फन ताने देखा।
सब ता मध्य समाने देखा। चारों बेदन को तँह देखा।
अस्तुति करि फिरि बैठत देखा। राग रागिनी पुत्रन देखा।
गाते साज बजाते देखा। फेरि सबन तँह बैठत देखा।
फिर तुम्बरू को उठते देखा। बीणा बायें हाथ में देखा।३२०।

दहिने हाथ बजाते देखा। मोहक स्वर से गाते देखा।
साज में राग मिलाते देखा। फेरि बैठ तँह जाते देखा।
सभा में एकै रस सब देखा। सतयुग द्वापर त्रेता देखा।
बैठे थे फिर उठते देखा। तीनौ जनन कि स्तुति देखा।
संग खड़े ह्वै करते देखा। एकै स्वर से होते देखा।३३०।

शब्द अलग नहिं होते देखा। करि बिनती फिर बैठत देखा।
श्याम को तब फिर उठते देखा। मुरली तहां बजाते देखा।
सब अन्तर ह्वै जाते देखा। श्री कलियुग महाराज को देखा।
उनकी सब सामाज को देखा। नग्न बदन अति काला देखा।
लोह गदा बिकराला देखा। दहिने कर से साधे देखा।३४०।

रक्खे दहिने कांधे देखा। शिर के केश पगन तक देखा।
बड़े बड़े दांतन निकसे देखा। जीभ नाभि तक लटकत देखा।
मानहु लाल नागिनी देखा। बाम हाथ इन्द्री पर देखा।
दृग दोनो अति लाले देखा। कुरुक्षेत्र रण भूमि को देखा।
कौरव पाण्डव दल तँह देखा। कृष्ण सारथी रथ पर देखा।३५०।

पारथ ता पर बैठे देखा। घोर युद्ध तँह होते देखा।
दोनो सैना कटते देखा। रथ लोथिन पर चलते देखा।
नेकौ नहीं बिछलते देखा। ध्वजा के ऊपर हनुमत देखा।
फिर हुँकार करत तँह देखा। सिंहासन बहु आते देखा।
दिब्य रूप बनि जाते देखा। नाग पुरी बलि पुरी को देखा।३६०।

भांति भांति के भवन को देखा। अमृत कुण्ड भरा तँह देखा।
नागन की रखवारी देखा। जनक पुरी की शोभा देखा।
सिया के बाल रूप को देखा। सिया को धनुष उठाते देखा।
चौदह पग चलि धरते देखा। चौका तहां लगाते देखा।
धनुष तहां फिर धरते देखा। जनक जानि प्रण करते देखा।३७०।

धनुष यज्ञ फिर ठनते देखा। देश देश के भूपन देखा।
एक ते एक बली तँह देखा। धनुष धरा तँह पर फिरि देखा।
उत्तर दक्षिण ओर को देखा। चारि हाथ का लम्बा देखा।
श्वेत रंग चमकीला देखा। चाप हरे मखमल की देखा।
दुइ अंगुल की चौड़ी देखा। बीच में धनु को मोटा देखा।३८०।

एक हाथ भरि नाप के देखा। दोनों तरफ़ से ढारू देखा।
सुन्दर चढ़ा उतारू देखा। धनु ढिग भूपन आते देखा।
कसि कसि ज़ोर लगाते देखा। जरा न जुम्मस खाते देखा।
छोड़ि चलै शरमाते देखा। नीचे मुख लटकाते देखा।
तन मन ते मुरझाते देखा। तन पीले पड़ि जाते देखा।३९०।

मुख से बोलि न पाते देखा। अवध जात मुनि राज को देखा।
दशरथ के ढिग पहुँचत देखा। दशरथ चरनन परते देखा।
मुनि को आशिष देते देखा। मुनि सिंहासन बैठत देखा।
नृप को पूजन करते देखा। फिरि सब कुँवर बुलाते देखा।
चरनन शिर धरवाते देखा। मुनि शिर पर कर फेरत देखा।४००।

हर्षि हर्षि तन हेरत देखा। राम लखन मुनि माँगत देखा।
नृप तन मन सकुचावत देखा। तब वशिष्ठ समुझावत देखा।
नृप तन मन हर्षावत देखा। राम लखन गृह जाते देखा।
मातन से मिलि आते देखा। धनुष औ बान उठाते देखा।
नृप के चरनन परते देखा। मुनि के संग फिरि चलते देखा।४१०।

बन समीप में जाते देखा। निरखि ताड़ुका आते देखा।
मुनि हरि को बतलाते देखा। हरि एक बाण चलाते देखा।
मस्तक शर लगि जाते देखा। दक्षिण मुख चित गिरते देखा।
गिरतै प्राण निकलते देखा। चढ़ि बिमान फिर जाते देखा।
जय जय कार मनाते देखा। होम करत सब मुनिन को देखा।४२०।

राम लखन दोउ रक्षक देखा। पच्छिम तरफ़ प्रभु को देखा।
पूरब तरफ़ लखन को देखा। दोनों भाई ठाढ़े देखा।
धनुष बाण कर साधे देखा। चौतरफ़ा औ ऊपर देखा।
चितवत राम लखन को देखा। मारीच तहाँ पर आते देखा।
असुर संग बहु लाते देखा। हरि शर थोथा मारत देखा।४३०।

चारि सौ कोस पर गिरते देखा। सागर पार परा तेहि देखा।
तन की सुधि बिसरातेहि देखा। अग्नि बाण हरि मारत देखा।
तन सुबाहु को जारत देखा। लखन कटक संघारत देखा।
सुर मुनि जयति पुकारत देखा। मुनि तब तन मन हर्षे देखा।
विद्या हरि को देते देखा। लागत क्षुदा प्यास नहि देखा।४४०।

बल प्रकाश तन बढ़ते देखा। कछुक दिवस तँह रहते देखा।
मुनिन पै दाया करते देखा। धर्म कथा मुनि कहते देखा।
दोउ भाइन को सुनते देखा। मुनि संग कुँवरन चलते देखा।
गौतम नारि पाषाण कि देखा। हरि चरनन रज परते देखा।
दिब्य रूप ह्वै जाते देखा। अस्तुति प्रभु की करते देखा।४५०।

चरनन में फिर परते देखा। चढ़ि बिमान फिर जाते देखा।
पति के लोक उतरते देखा। राम लखण संग मुनि बहु देखा।
जनक नगर में पहुँचत देखा। सुख से तहां ठहरते देखा।
जनक खबरि यह पाते देखा। दर्शन के हित आते देखा।
देख के रूप लुभाते देखा। मुनि के चरनन परते देखा।४६०।

मुनि सब हाल बताते देखा। स्वागत जनक करत अति देखा।
तन मन प्रेम भरत अति देखा। मुनि तब आज्ञा देते देखा।
राम लखन को चलते देखा। फुलवारी में पहुँचत देखा।
चमनन पर तंह टहलत देखा। माली लखि बहु आते देखा।
हरि तब बैन सुनाते देखा। कदली पत्र मंगाते देखा।४७०।

पोखर में धुलवाते देखा। दोना जुगल बनाते देखा।
लखन को एक थमाते देखा। कली करन से छूते देखा।
तुरतै कलिन को खिलते देखा। तूरि के दोनन धरते देखा।
माली लखि मुद भरते देखा। कर जोरे सब ठाढ़े देखा।
तन मन प्रेम में गाढ़े देखा। फुल बगिया की शोभा देखा।४८०।

फूल वृच्छ बहु रंग के देखा। भांति भांति के पच्छी देखा।
फुल बगिया मधि पोखर देखा। मीन कमठ दादुर बहु देखा।
करत किलोलैं जल में देखा। गिरिजा भवन मनोहर देखा।
बरनत बनै नहीं जस देखा। सिया भवन से आवत देखा।
सखिन संग छबि छावत देखा। गिरिजा भवन में जावत देखा।४९०।

पट सब बंद करावत देखा। बिधिवत पूजन करते देखा।
तन मन प्रेम में भरते देखा। दोउ कर माल उठाते देखा।
कर ऊपर नहिं जाते देखा। नैन नीर झर लाते देखा।
झुकी खड़ी हैं तँह पर देखा। माल अवनि गिर जाते देखा।
उमा मूर्ति से प्रगटत देखा। सिया को हृदय लगाते देखा।५००।

आशिरबाद सुनाते देखा। सिया को बाहेर आते देखा।
तन मन ते हर्षाते देखा। एक सखी गइ बगिया देखा।
राम लखन की छबि तँह देखा। सिया से आय बतावत देखा।
प्रेम में तन पुलकावत देखा। सिया को संग लै जाते देखा।
लता कि ओट लखाते देखा। सखि सब पीछे जाते देखा।५१०।

निरखि के मुर्छित होते देखा। राम सिया को निरखत देखा।
तन मन प्रेम में हर्षत देखा। राम लखन से कहते देखा।
जनक जौन प्रण करते देखा। लखन सिया को निरखत देखा।
मातु भाव उर लावत देखा। नीचे सिर निहुरावत देखा।
मन ही मन जस गावत देखा। दोनो कुँवरन चलते देखा।५२०।

मुनि के पास पहुँचते देखा। फूलन दोना देते देखा।
मुनि तँह हर्षि के लेते देखा। पूजन मुनि को करते देखा।
दोनो कुँवरन बैठे देखा। मालिन को फिर चलते देखा।
निज निज कार्य्य पै लगते देखा। सिया सखिन संग लेते देखा।
मन्दिर जाय ठहरते देखा। प्रेम से पूजन करते देखा।५३०।

मूर्ति से शिवा निकलते देखा। सिया को हृदय लगावत देखा।
शीश पै हाथ फिरावत देखा। सब भविष्य बतलावत देखा।
फिर निज माल पिन्हावत देखा। सिया बहुत हर्षावत देखा।
तब फिर बाहेर आवत देखा। सखिन संग लै चलते देखा।
पहुँचि मातु ढिग बैठत देखा। मुनि से आज्ञा लेते देखा।५४०।

राम लखन लै चलते देखा। बालक लखि बहु आते देखा।
पुर भर में टहलाते देखा। हंसि हंसि सबै बताते देखा।
राम लखन मुसक्याते देखा। राम लखन बहु बनते देखा।
सबको दर्शन देते देखा। सब फिर मूर्छित होते देखा।
प्रेम समाधि को लगते देखा। सात घरी जब बीती देखा।५५०।

सब की मूर्छा जागी देखा। दोनो कुँवरन चलते देखा।
मुनि ढिग जाय ठहरते देखा। जनक राज गुरु आवत देखा।
मुनि को बिनय सुनावत देखा। मुनि कुँवरन लै चलते देखा।
धनु मख जाय ठहरते देखा। जनक चरन शिर धरते देखा।
मुनि तँह आसिष देते देखा। विश्वामित्र बिराजे देखा।५६०।

राम लखन संग राजे देखा। अनुपम छबि तँह छाजै देखा।
अमित काम रति लाजै देखा। जनक तहां यह भाख्यो देखा।
कोइ न मम प्रण राख्यो देखा। लछिमन सुनि रिसियाने देखा।
मही शेश घबड़ाने देखा। नैन सैन हरि कीन्हों देखा।
लछिमन बैठि प्रवीना देखा। श्री गुरु आज्ञा देते देखा।५७०।

राम चन्द्र को उठते देखा। गुरु चरनन शिर धरते देखा।
गुरु शिर पर कर फेरत देखा। तब फिरि हरि को चलते देखा।
मन्द मन्द पग धरते देखा। धनु के ढिग हरि पहुँचत देखा।
धनु को फिरि दहिनाते देखा। पूरब को मुख करते देखा।
भानु पीठ पर परते देखा। ताटक धनु पर करते देखा।५८०।

तब झुकि उसे उठाते देखा। चाप को आपै चढ़ते देखा।
धनुष टूटि महि गिरते देखा। एक खण्ड को उड़ते देखा।
एक धरनि में धँसते देखा। शब्द घोर तँह होते देखा।
दुष्ट भूप कँपि जाते देखा। हरि को गुरु ढिग जाते देखा।
चरनन शीश नवाते देखा। सिंहासन पर बैठत देखा।५६०।

श्री गुरु लखन खुशी अति देखा। सिया को माल उठावत देखा।
सखिन को मंगल गावत देखा। हरि के ढिग फिर आवत देखा।
प्रेम में तन पुलकावत देखा। नैन नीर झरि लावत देखा।
हरि को माल पिन्हावत देखा। चरनन में फिर परते देखा।
कर जोरे दोउ उठते देखा। फिर गुरु चरनन परते देखा।६००।

श्री गुरु आशिष देते देखा। सिया को भवन में जाते देखा।
मातु कि गोद में बैठत देखा। परशु राम को आते देखा।
हल्ला बड़ा मचाते देखा। जनक को डाटि सुनाते देखा।
जनक शान्त ह्वै जाते देखा। लछिमन तँह बतलाते देखा।
मुनि को खूब बकाते देखा। मुनि कछु पार न पाते देखा।६१०।

लछिमन पर गुस्साते देखा। हरि को सैन चलाते देखा।
लखन शान्त ह्वै जाते देखा। हरि मुनि संग बतलाते देखा।
मुनि हरि को धनु देते देखा। हरि को धनु को लेते देखा।
चाप आप ही चढ़ते देखा। मुनि को चरनन परते देखा।
हरि उठाय उर लाते देखा। मुनि को स्तुतिं करते देखा।६२०।

करि प्रणाम फिर चलते देखा। उत्तर मुख को जाते देखा।
फेरि लौटि नहि आते देखा। अवध सँदेशा जाते देखा।
सजि बरात फिरि आते देखा। सुर बहु रूप बनाते देखा।
सब को तहां टिकाते देखा। सब की खातिर करते देखा।
बहु प्रकार सुख देते देखा। जनक के आँगन मंडप देखा।६३०।

परम मनोहर छावा देखा। सुर मुनि शक्तिन बैठे देखा।
नर नारिन बहु पुर के देखा। दान करत तँह पर बहु देखा।
धन पट मणि भूषण गो देखा। ब्रह्मा बेद पढ़त तँह देखा।
गौरि गणेश कि पूजन देखा। चारो महरानिन संग देखा।
चारों कुँवर बैठ तँह देखा। गठि बन्धन सब कीन्हे देखा।६४०।

खम्भ के चहु दिशि घूमत देखा। पीढ़न पर फिरि बैठ्त देखा।
फिरि गठि बन्धन छोरत देखा। जनक को मणि पट देते देखा।
नापित को खुश होते देखा। सब समाज को उठ्ते देखा।
फिर जेवनार को होते देखा। गारि गान तँह होते देखा।
बहु सखियाँ मिलि गाते देखा। सब को फिरि तब उठते देखा।६५०।

निज निज आसन जाते देखा। फेरि कलेऊ होते देखा।
प्रेम सहित सब पाते देखा। सखिन को हास्य करत तँह देखा।
उत्तर कुँवर देत तँह देखा। दाइज जनक देत तँह देखा।
कहत बनै नहि नैनन देखा। बिदा बरात होत तँह देखा।
अवध पुरी में पहुँचत देखा। सब प्रसन्न होय बैठत देखा।६६०।

अवधपुरी अति मंगल देखा। चारौं डोलन परछन देखा।
याचक सकल अयाचक देखा। कौशिल्या कैकेयी को देखा।
संग सुमित्रा सखि बहु देखा। सातौं सै रानिन को देखा।
अरुन्धती माता को देखा। चरनन पर शिर धरते देखा।
मंगल गावत सब को देखा। कुँवर कुँवारि सब चलते देखा।६७०।

चारिऊ कुँवर मनोहर देखा। बीच में सबके चलते देखा।
अनुपम भवन ठ्हरते देखा। कैकेयी बर मांगत देखा।
दशरथ बोलि न पावत देखा। राम लखन बन चलते देखा।
सिया को साथ में लेते देखा। मातन चरन छुवत सब देखा।
पिता के ढिग को आवत देखा। पाता निरखि दुख पावत देखा।६८०।

मुख से बोल न आवत देखा। करि प्रणाम सब चलते देखा।
नृप धरणी पर गिरते देखा। तब फिर तन को त्यागत देखा।
अवध में दुख अति व्यापत देखा। भरथ को किरिया करते देखा।
जँह बिल्ब हर शम्भु तँह देखा। गंगा तट सब जाते देखा।
केवट लखि सब आते देखा। चरनन में गिरि जाते देखा।६९०।

हरि हँसि उर में लाते देखा। फिरि मृदुबचन सुनाते देखा।
केवट अति हर्षाते देखा। कच्छप पीठि कि कठवति देखा।
ता में जल भरि लावत देखा। हरि लखि के मुसकाते देखा।
सिया लखन सकुचाते देखा। हरि को चरन बढ़ावत देखा।
केवट प्रेम से धोवत देखा। तब सिय लखन धोवावत देखा।७००।

चरणोदक हँसि पावत देखा। नाव में फिरि बैठावत देखा।
मन ही मन गुन गावत देखा। धीरे धीरे खेवत देखा।
छवि सागर को चितवत देखा। नाव को तट लै जाते देखा।
हरि सिय लखन उतरते देखा। चित्रकूट चलि पहुँचे देखा।
बन की शोभा बढ़ते देखा। सुख से तँह पर रहते देखा।७१०।

ऋषि मुनि तँह बहु आते देखा। नाम के अन्तरगत सब देखा।
निर्गुण सर्गुण लिखा अलेखा। चित्त कि वृत्ती सुधरी देखा।
फिरि गइ नैन कि पुतरी देखा। हरि के चरित हैं अगम अलेखा।
या में जनि कोइ मानै मेखा। कहैं निजामी मैं क्या देखा।
आपै अपने खेल को देखा।७१९।

२३४ ।। श्री उद्दालक ऋषि जी ।।

कथा सुनै जे प्राणी जावैं। माला जपै न जीभ डुलावै।।
सुनै चरित तन मन को बारी। लागि जाय तब प्रेम की तारी।।
दर्शै तहँ पर श्री धनुधारी। बाम भाग श्री सीता प्यारी।।
लक्ष्मी सहित बिष्णु जग पालन। राधे सहित नन्द के लालन।।
शक्तिन सहित देव मुनि लखिये। यह अनुपम रस कथा में चखिये।५।

माला जपै कथा में जावै। ना जप होय न हरि यश पावै।।
मन चंचल यह एकै भाई। दोनौ ओर से देय भगाई।।
या से नाम सिद्ध नहि होवै। कथा व जप दोनौ ते खोवै।।
जप एकान्त में बैठि के करिये। मन एकाग्र हो प्रेम में भरिये।।
सन्मुख अद्‌भुत झांकी आवै। नाना बिधि के खेल देखावैं।१०।

तब जप सुफल होय यह भाई। कर्म लिखा बिधि सो मिटि जाई।।
माला की सुधि रहै न तनकौ। जब स्थिर करि लेहौ मन को।।
कर में है कि अवनि में सोहै। जानि न पैहो मन छबि मोहै।।
अठोतरी जप माल सुमिरिनी। पर मानिक सुर मुनि सब बरनी।।
सहस एक दुइ का कहुँ भाई। सुर मुनि बेद शास्त्र नहिं गाई।१५।

मन मानी करते मन मुखिया। कैसे होंय भला वै सुखिया।।
राम नाम अनमोल मनी को। खेल बनाय के भयो धनी को।।
चरन पादुका जूता पहिने। तुलसी माल लिये कर दहिने।।

पैरन तले जीव बहु मारैं। तनकौ मन यह नहीं विचारैं।।
घर में तूल के बसन न पायो। यहां रेशमी ऊनी भायो।२०।

माला झोरी गले में डारे। बिथिन में बनि घूमैं प्यारे।।
बातैं करैं व माला फेरैं। इधर उधर दोउ नैनन हेरैं।।
चकर मकर का देखव भाई। बुद्धि बिगाड़ देय दुख दाई।।
या से खुलैं न लोचन हिय के। जप में भेद परयौ सिय पिय के।।
नीक कहैं ते लगै बेकारा। तन मन ते उठि गई बिचारा।२५।

दर्पन में करिखा बहु लागा। हंस श्वेत त्थे बनि गे कागा।।
सत्संगति में कबहुँ न जावैं। बिषय बासना में हर्षावैं।।
श्री महराज कहै कोई आई। सुखी होंय मानो निधि पाई।।
श्री महराज को चीन्ह्यो नाही। झूठै मन ही मन हर्षाहीं।।
काम क्रोध मद लोभ मोह के। बनिगे चेला आय द्रोह के।३०।

ऊपर ते तो ज्ञानी बनते। पैसा छूटत नहि तन मन ते।।
पर दारन के मूत्र पात्र पर। मन हर दम रहता है तत्पर।।
जस मोरी तुमरे गृह जानो। वैसे है औरन गृह मानो।।
इन्द्री नित्य कर्म हित भाई। नर नारी सब जीवन पाई।।
नारि पुरुष को संगम भाई। एक मास पर सुर मुनि गाई।३५।

अपनी नारि अपन ही पति हो। नाहीं तो यम पुरी कुगति हो।।
बने बिरक्त आय गृह छोड़ा। ज्ञान बिराग से मुख को मोड़ा।।
बिषय बासना संग न छोड़ै। कैसे राम नाम धन जोड़ै।।
सुर मुनि थोड़ै ऐसै भाई। जिन संग बाम नहीं सुखदाई।।
भजन में कोई बिघ्न न आवै। सुमिरै राम नाम सुख पावै।४०।

नारी ढाल असि पुरुष है मानो। रोकै वार अस्त्र को मानो।।
काम कृशानु बड़ा दुख दाई। बिरलै शूर कोई ठहराई।।
साधु क भेष बनायो आला। गले में कण्ठी चन्दन माला।।
कपट कतरनी उर में सोहै। कतरि दीन शुभ वस्तुन को है।।
करि बारीक दीन अस तिनको। जुड़ना मुश्किल है अब उन को।४५।

दीन भाव आवै जुड़ि जावै। आप को मेटै सब बिलगावै।।
झगड़ा करि जे गृह ते आवैं। साधू बनैं सुःख नहि पावैं।।

अपनी नारी त्यागि जे चलते। ते फिरि आय पाप यहँ करते।।
पर दारा पर सुत संग नेहा। जे जन करैं ते होवैं खेहा।।
तरुण अवस्था इन्द्रिन साधन। बिन गुरु होय न हरि आराधन।५०।

लड़िकन ढिग संतन को आसन। सुर मुनि बेद न कीन्हयो भाषन।।
छोट बन्यो सो बड़ा कहायो। सुर मुनि बेद शास्त्र यश गायो।।
मन ही मन हरि सुमिरन करिये। पन्थ चलत जप माल न करिये।।
या से हरि खुश होंय न भाई। जगत रिझाये नहीं भलाई।।
दम्भ कपट पाखण्ड को त्यागौ। निर्मल ह्वै हरि नाम में लागौ।५५।

नाम कि जप की बिधि जिन जानी। तिनको मिलिगे शारंग पानी।।
धुनि खुलि जाय नाम की सुन्दर। ररंकार जो होत निरन्तर।।
सीता राम को हर दम चितओ। तन मन छबि सागर में भिजवो।।
हैं सब में औ सब से न्यारे। जानत है कोइ जानन हारे।।
या मारग गुरु से लै साधौ। तन के चोर सबै कसि बांधौ।६०।

सुरति शब्द यह मार्ग कहावा। सुर मुनि सब जग हेतु चलावा।।
भोजन बसन अधिक नहि होवै। सो समाधि में जाय के सोवै।।
या से सुलभ मार्ग नहि कोई। भाग्य होय बड़ि पावै सोई।।
एक बार भोजन को करिये। होय न आलस्य हरिहि सुमिरिये।।
काम क्रोध लालच में परिके। कैसे सेवक बनिहौ हरि के।६५।

मान अपमान हर्ष औ शोका। सुख दुख हानि लाभ दुइ ढोका।।
समय पाय कै मूँदे उघरै। जब तक प्राण न तन ते निकरै।।
जो कोइ भजन कि बिधि को जानै। सोई इनको सम कर मानै।।
अन्धे ज्ञान ते भवि नहि तरिहौ। जाय नर्क में कल्पन सरिहौ।।
आँखी कान खुलैं जब भाई। तब हरि के ढिग पहुँचै जाई।७०।

वही उपासक पक्का जानो। पायो नाम रूप मन मानो।।
राम रसिक ता को श्रुति भाखै। हर दम नाम रूप रस चाखै।७२।

सोरठाः- करि तन मन विश्वास, बचन गहै सतगुरु के।
सो ह्वै जावै पास सर बरि हो सतगुरु के।।

दोहाः- उद्दालक कहैं बचन मम, मानि जपौ हरि नाम।
मुक्ति भक्ति जियतै मिलै, जाओ हरि के धाम।।

२३५ ।। श्री विद्यारण्य स्वामी जी ।।

दोहाः- विद्यारण्य के बचन को, सुनिये धरि के ध्यान।
राम नाम खुलि जाय जब तब हो आतम ज्ञान।।
गुप्त प्रगट देखन लगै दृष्टि अदृष्टि समाय।
मन्त्र राज तेजो मयी, सन्मुख परै देखाय।।
षट अक्षर गिनि लीजिये बिलग बिलग दर्शाय।
षट बिकार या से मरैं जपिये तो हर्षाय।।
सन्मुख सीता राम जी हर दम दर्शन देंय।
सुर मुनि आवैं पास बहु नित्य बलैया लेंय।।
मुक्ति भक्ति सुख मिलि गयो जियतै में जपि नाम।
अन्त समय हरि पुर चलौ बैठि करौ बिश्राम।५।

श्री गुरु रामानन्द जी मोहिं लीन अपनाय।
चारि पदारथ बाँटि जग दीन्हों यश फैलाय।६।

२३६ ।। श्री श्याम तीर्थ जी ।।

पदः- भजन में विघन करते औंघाई।
काम क्रोध मद लोभ मोह औ माया द्वैत मिलाई।
दम्भ कपट पाखण्ड मसखरी झूठ औ मन की माई।
सुमिरन करने जैसे बैठो आलस प्रथम पठाई।
झिटका रहि रहि तन को देवै संग लिहे जम्हुआई।५।

मूह बावत में तन अकुलावत नैन लगे करुवाई।
आय तुरत आपौ लपटावै संघै लेत सोवाई।
यह देवी सब के संग लागी या के बल बहु भाई।
असमय समय एक नहिं मानै पहुँचि जाय जँह आई।
नाना कारज शुभ गिरहिन के तिनहुँ क मारि भगाई।१०।

अगणित रूप धरत नहि देरी आवत देर न लाई।
बिना दुसरिहा सोवत नाहीं या की कौन दवाई।
पहिले देत संदेशा सुनिये तब फिर आवत धाई।
करै परिक्षा हरि दासन की देखत हैं चतुराई।
सांचे की तो करत दण्डवत चलत न तहां उपाई।१५।

जे हारैं तिनको लै सोवै हरि यहि हेतु बनाई।
जल भोजन या को है सोना और कछु न सोहाई।
कैसे पेट भरै कोइ या को कबहूँ न आह बुताई।
एक बार भोजन को करिये श्यामतीर्थ कहैं गाई।
राम नाम सतगुरु से लै कर भजन करो तब जाई।२०।

चौपाईः- काम क्रोध मद लोभ की बातैं। दम्भ पखंड कपट की घातैं।
इरषा द्वैष मोह औ माया। धूप शीत जँह पर नहि छाया।
हंसी मसखरी झूंठ बवाला। वैश्या नाच ताश औ आल्हा।
बिषय भोग चिंता दुख चरचा। तहां करत यह समय न खरचा।
चोरन को पिंसन दै दीन्ही। ऐसी देवी नींद प्रवीनी।५।

अपने वंश को खूब बढ़ावै। कलि की यह सब फौज कहावै।
शुभ कर्मन में बिघ्न लगाना। या के हाथ में है परवाना।
ब्रह्मा को तप अति यह कीन्हा। प्रगटे बिधि तब यह बर लीन्हा।
निद्रा जीत संत जग थोरे। सत्य कहौं लिखि कागज़ कोरे।
या को जीत लेय जो कोई। ताको कार्य सिद्ध सब होई।१०।

सोरठाः- करै परिच्छा आय परखै केवल संत को।
पास होय सो जाय बनै रूप भगवंत को।।

दोहाः- निद्रा देवी है प्रबल रहती सदा हजूर।
सतगुरु की जिनपर कृपा जीति लेत ते सूर।।

२३७ ।। श्री सुतीक्षण जी ।।

चौपाईः- राम मयी सब सृष्टी भाई। रामै अपनै ते प्रगटाई।१।
कहै सुतीक्षण तन मन लाई। रामै सुर मुनि भजत सदाई।२।

२३८ ।। श्री सतयुग जी ।।

सोरठाः- परा से जपिये नाम सतयुग कहैं सुनाय कै।
जावो हरि के धाम बैठो तँह हर्षाय कै।।

२३९ ।। श्री त्रेतायुग जी ।।

सोरठाः- करिये तन मन लाय पैशन्ती की जाप को।
त्रेता कहैं सुनाय मेटौ भव के ताप को।।

२४० ।। श्री द्वापर युग जी ।।

सोरठाः- द्वापर की सुनि लेहु जाप मध्यमा की करौ।
तन मनवा पै देहु तब हरि धाम में पग धरौ।।

२४१ ।। श्री रामायण जी ।।

(मानस जी)

दोहाः- राम नाम जप यज्ञ सम और यज्ञ नहि कोय।
जा के बल से ध्यान लय हरि दर्शन सुख होय।।
कथा कीरतन सुर मुनी कहैं करै लखि लेव।
सब लोकन में घूमि कै जियतै जानौ भेव।।
रामायण मानस कहैं सुर मुनि मेरो नाम।
शिव ने हरि के चरित लखि, लीन हृदय में थाम।।
अधिकारी पायो नहीं ताते प्रगट न कीन।
पारवती को प्रेम अति जान्यो तब कहि दीन।।
अपनी इच्छा ते प्रगट करि मोहि पास बिठाय।
जो चरित्र शिव ने लख्यो सो मोहि दीन लखाय।५।

चौपाईः- प्रथम मन्त्र मोहिं तारक दीन्हा। तब उर हरि चरित्र भरि दीन्हा।।
बर दीन्ह्यो मो को अति सुन्दर। सुर मुनि गै हैं तुम्हैं निरन्तर।।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि के दायनि। दीन बनाय तुम्है मन भायनि।।
तन मन प्रेम लगाय के तुमको। कहिहैं सुनिहैं ते प्रिय हमको।।
उर तुम्हरे सब तीर्थ निवासा। राम सिया सुर मुनि ऋषि वासा।५।

पूजन तुम्हरी जो नित करिहैं। ते प्राणी भव सागर तरिहैं।।
धूप आरती तुलसी फूला। चन्दन भोग समय अनुकूला।।
तब उनको दर्शन तुम दीजै। अब तुम जाय जक्त यश कीजै।।
बालक बृद्ध तरुण नर नारी। बहु ह्वै हैं तुमरे अधिकारी।।
काक भुशिण्डि औ जाग्यबल्क मुनि। चारौं युग प्रचारिहैं पुनि पुनि।१०।

दोहाः- प्रेम भाव करि नित तुम्हैं करै दण्डवत जौन।
वा को हम भूलैं नहीं जावै हरि के भौन।।

सोरठाः- सत्य दीन बतलाय जैसे मम उत्पति भई।
मानो मम बचनाय सृष्टि जक्त सब हरि मई।।

चौपाईः- कुरुक्षेत्र रण भूमि है जँह पर। सूर्य्य ग्रहण मज्जन हो तँह पर।।
कौरव पाण्डव दल दोउ जोड़ा। रथ पैदर कुञ्जर बहु घोड़ा।।
पारथ लखि कै भयो दुखारी। श्याम के चरनन में शिर धारी।।
हम न लड़ैं इनसे भगवाना। ये मम सम्बन्धी जग जाना।।
हमरी कुगति होय बनवारी। इनको हते पाप बड़ भारी।५।

पारथ के नैनन जल छावा। श्याम निरखि हँसि हृदय लगावा।।
जान्यो मोह में पारथ आये। लड़िहैं नहिं बिना समुझाये।।
खींचि मोह तँह पर हरि लीन्हा। शान्ति चित्त पारथ को कीन्हा।।
रूप बिराट फेरि दिखलावा। पारथ को सब भर्म मिटावा।।
जग भव पार करने के हेतू। रच्यौ चरित यह कृपा निकेतू।१०।

समुझि पारथै तब अधिकारी। कर्म उपासन ज्ञान उचारी।
ध्वज पर बैठ पवन सुत जानो। जे हरि चरित के रसिया मानो।
तँह मोको हरि परगट कीन्हा। गीता नाम तुरत धरि दीना।१३।

सोरठाः- उपासना औ ज्ञान कर्म काण्ड मम भरयौ तन।
शिर कर फेरि के कान्ह, तन मन कीन्ह्यों अति मगन।।

चौपाईः- पारथ ते हरि तब फिर भाषा। पारथ हृदयाङ्गम करि राखा।१।
पवन तनय सुनि भये सुखारी। लीन्ह्यों सब चरित्र उरधारी।२।

दोहाः- पांच घरी में पारथहिं, हरि सब दीन बताय।
या में संशय को करै, हरि सब विश्व के राय।।

चौपाईः- पल भर में परलय कर देवैं। पल ही भर में फिर रचदेवैं।१।
अपने उरते सब प्रगटायो। आपै उर में फेरि समायो।२।

दोहाः- विश्व चराचर बने हरि और न दूजा कोय।
सतगुरु भेद बतावहीं, द्वैत जाय तब खोय।।

चौपाईः- निर्गुण सर्गुण लखि तब पावै। तन मन प्रेम से हरि पद ध्यावै।
हरि फिरि मोहिं दीन बरदाना। करिहौ तुम जग को कल्याना।
गीता गीता जे जन करिहैं। बिन प्रयास भव सागर तरिहैं।
सब युग आदर होय तुम्हारा। सुर मुनि पढ़ि सुनि करैं बिचारा।
सुर मुनि एक बार नित नेमा। पाठ करैं तुम्हरो करि प्रेमा।५।

ब्यास मुनी फिरि करैं प्रचारा। कलि में बहु जानैं नर दारा।
पढ़ि औ सुनि निर्मल ह्वै जावै। तब हम उनको दरश देखावैं।
पहले दरश देंय हम जिनको। तब तुम दरशन दीन्ह्यो उनको।८।

दोहाः- चारि बेद षट शास्त्र का औ दश आठ पुरान।
सबै उपनिषद संहिता योग वशिष्ठ को ज्ञान।१।
सब का सत हम खींचि कै तुम्हरे तन भरि दीन।
या से तुम मम अति प्रिय, जानहिं परम प्रवीन।२।

चौपाईः- सुमिरन कथा कीर्तन ध्याना। जहां होत तँह करौ पयाना।१।
भक्तन के हित नर तन धारौ। असुरन बधि फिर धर्म्म प्रचारौ।२।
हरि मोते फिरि कह्यो सुनाई। जप करना हर दम सुखदाई।३।

दोहाः- कूटस्थो अक्षर उच्यते, का दियो भेद बताय।
धुनी उठत सर्वाङ्ग से, हरि सन्मुख दर्शाय।१।
जैसै उत्पति भई मम, कृष्ण कृपानिधि कीन।
तुम से भेद बताय हम, सत्य सत्य सब दीन।२।

२४३ ।। श्री जालन्धर जी ।।

दोहाः- हर ने मोको मारि कै, भेजि दीन हरि पास।
जे शिव को सुमिरन करैं तिनको भव दुख नाश।१।
कहैं जलन्धर गाय किरपा के शिव रूप हैं।
नाम लिहे दुख जाय परमा नन्द स्वरूप हैं।२।

२४४ ।। श्री तारकासुर जी ।।

चौपाईः-धन्य षड़ानन शिव सुत बीरा। पठ्यो मोहिं मारि हरि तीरा।१।
तारक कहै तारि मोहिं दीना। कौन कर्म मैं उत्तम कीन्हा।२।

२४५ ।। श्री जरासन्धु जी ।।

दोहाः- भीम से मोहिं मराय हरि, पठय दीन हरि धाम।
ऐसे करुणा सिन्धु हैं, सब में ब्यापक श्याम।१।
जरासन्ध की बिनय यह सब जन लीजै मान।
हर दम हरि सुमिरन करौ छोड़ि कपट अभिमान।२।

२४६ ।। श्री महा रावण जी ।।

चौपाईः- नाम महा रावण जग जाना। समर भूमि कोइ नहि ठहराना।१।
काली मातु मारि मोंहि दीन्हा। हरि पुर जाय के बासा लीन्हा।२।

२४७ ।। श्री महिरावण जी ।।

चौपाईः- महावीर अति ही बलवाना। मारि के मोरि कीन कल्याना।।

सोरठाः- महिरावण मम नाम कपटी पापी मन्द मति।
पायों हरि को धाम, हरि के दास ने दीन गति।।

२४८ ।। श्री जफ़र खां जी ।।

शेरः- यादगारी करते रहिये भाईयों अल्ला कि रोज।
दुनिया कि बातैं औ सब समझो यह है बदबू क गोज़।।
मगज़ की भुकाना औ खपना फज़ूल। समय जाया करना
न हो कुछ वसूल।।
नतीजा मिलै उसका दोजख तुम्हैं। यही सोच कर रहम आता हमैं।।
जाहिर करो काम तन से तो खूब। मगर बातिन हर दम भजो नाम खूब।।
रहौ पाक बेबाक औ रहम दिल। तो तुमको खुदा आप ही जांय मिल।५।

कमल सातहू चक्र षट ठीक हों। जगै नागिनी काम सब नीक हों।।
पहुँचि कोटि त्रिकुटी में जाओगे जब। वहां पर त्रिबेनी नहाओगे तब।।
लखौ नूर ही नूर फिर तुम वहां। नहीं रूप औ रंग दूसर जहां।।
वहां से बढ़ो ध्यान में जाओगे। अजब खेल अल्ला क वहँ पाओगे।।
पहुँचि जाओ लय में न सुधि बुधि रहे। उतर करके आओ
तो फिर चित चहै।१०।

जहां में तो रहना सदा है नहीं। रहेगी बुराई भलाई सही।।
छुटैगा यह तन एक दिन दोस्तौं। सड़ैगा कबर में सबी गोश्तौ।।
पड़ैं उसमें कीड़े तहां बेशुमार। अभि जिसको कहते हो तन यह हमार।।
उसे कीड़े खा कर के मर जांयेगे। सिरिफ़ ढांचे हड्डिन के रह जांयेगे।।
हवा गन्दी उस से निकल जायगी। कबर की लकड़ियां दिमक खांयगी।१५।

फिर कबरों के ऊपर उगैं झाड़ियां। मिलैं फिर न मादर पिदर प्यारियां।।
बिरादर अजीज़ो न हमशीरा खाला। न फरजन्द जोरू न मामू न साला।।
मिलै भिश्त उनको जे हर दम जपैं। नही तो वो दोज़ख़ में जाकर खपैं।।

श्री रामानन्द जी का दर्शन मिला। तभी से हमारा यह तन मन खिला।।
ज़फ़र कहता खोजो सफर करके यार। बता देगा मरशिद तो होगा दिदार।।

२४९ ।। श्री शंखा सुर जी ।।

चौपाई:- हरि से भागि बचै नहि कोई। हरि जो चहैं होत है सोई।।
छल बल चतुराई नहि चलती। हरि सन्मुख सब धूरि में मिलती।।
सागर पैठि खोजि मोहिं मारयौ। मच्छ रूप अति भारी धारयौ।।
चढ़ि बिमान बैकुण्ठ सिधायों। सुन्दर धाम बास तँह पायों।।
जिन सब खेल कीन बिस्तारा। तिनको भजै तो हो़ निस्तारा।।
शंखा सुर यह बिनय सुनावैं। हरि से लड़ै तहूं सुख पावै।६।

२५० ।। श्री महिषासुर जी ।।

चौपाई:- महिषा सुर है नाम हमारा। देवन को दुख दीन करारा।।
हारे हम से सब सुर भाई। तब प्रगटीं श्री दुर्गा माई।।
रमा उमा शारद से जानो। त्रै अंशन को समि करि मानो।।
प्रगट भई या बिधि ते माता। जो सब जक्त माहि बिख्याता।।
मारि मोहिं दुर्गा महरानी। पठ्यो श्री हरि की रजधानी।।
तन मन प्रेम लगाय के ध्यावै। सो परलोक लोक सुख पावै।६।

२५१ ।। श्री निहाल दास जी ।।

गारी:- चारि पदारथ देन हार यह नर तन सुर मुनि गाई जी।
बिन सत्संग जात है बिरथा पुनि पुनि गोता खाई जी।
काम क्रोध मद लोभ मोह यह असुर बड़े दुखदाई जी।
पांचों संस्कार ये जानो तन में रहत सदाई जी।
दम्भ पखण्ड कपट औ निद्रा आलस संघ जम्हुआई जी।५।

माया द्वैत बासना नाना संग मन नाचै जाई जी।
चिंता तन में चिता लगावै दुख चढ़ि बैठै आई जी।
यह समाज आसुरी वंश की थकै न नेकौ भाई जी।
महा जाल में फांसि लेत औ नर्क को देय पठाई जी।
शान्ति शील संतोष दीनता प्रेम क हाल सुनाई जी।१०।

क्षिमा दया सरधा औ हिम्मति सत्य समाधि लगाई जी।
ज्ञान बिराग संग विश्वासौ लय में पहुँचौ धाई जी।

परस्वारथ परमारथ दोनो कैसे कोउ करि पाई जी।
देवासुर संग्राम जीतिये घट ही में चमकाई जी।
हरि सुमिरन बिन जीति न पैहौ सुनिये सब मम भाई जी।१५।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ तब मन वश ह्वै जाई जी।
नाम खुलै हरि दर्शन लागैं खल सब चलैं पराई जी।
ध्यान समाधि में पहुँचि जाव जब कर्म भर्म मिटि जाई जी।
सबै देव मुनि संग बतलावैं हर्ष न हृदय समाई जी।
दास निहाल सुरति औ शब्द क मारग अति सुखदाई जी।२०।

२५२ ।। श्री बिभाण्डक ऋषि जी ।।

दोहाः- कश्यप आय के मनु भये, मनु भे दशरथ जान।
विभाण्डक ऋषि कहैं मम बचन, सत्य लीजिये मान।।

चौपाईः- अदिती को सतरूपा जानो। सतरूपै कौशिल्या मानो।।

दोहाः- दशरथ जनमें मधुपुरी, नाम भयो बसुदेव।
कौशिल्या देवकी भईं, सुर मुनि जानत भेव।१।
राम कृष्ण के नाम ते, तहां लीन औतार।
धरणी को दुख सब हरयौ, कीन्हयो चरित अपार।२।

चौपाईः- बारह कला से श्री धनुधारी। प्रगटे अवध भार महि टारी।
सोरह कला से मुरली धारी। प्रगटे श्री मधु पुरि मँझारी।
श्री बसुदेव प्रयाग में आये। श्रुति निधान तँह नाम कहाये।
बिप्र वंश में परम कुलीना। बेद शास्त्र में रहे प्रवीना।
श्री देवकी मुर्बी नामा। पति आज्ञा में अर्प्यो यामा।५।

तिनके प्रगटे हरि सुखदाई। रामानन्द नाम भा आई।
चारी पदारथ बांट्यौ जग में। द्वादश शिष्य रँगे निज रँग में।७।

दोहाः- नव द्वीप में नन्द जी जन्म लीन फिर आय।
नाम भयो जगन्नाथ तँह द्विज कुल जानो भाय।।

चौपाईः- यशुमति तहां शची कहवाई। पतिव्रता सुनिये सुखदाई।।
गीताचार्य्य कृष्ण भगवाना। तिनते प्रगट भये जग जाना।।
सर्गुण यश को कीन प्रचारा। छायो मंगल सब संसारा।।

गृह गृह के नर सुत औ नारी। करैं कीरतन तन मन वारी।।
गौराङ्ग कृष्ण चैतन्य निमाई। कहि सब जय जय बोलैं भाई।५।

श्री बलदेव को कहैं निताई। श्री कृष्ण को कहैं निमाई।
झुण्ड के झुण्ड जहाँ तँह गावैं। सुर मुनि लखि लखि कै हरषावैं।
बाजैं संग में बहु बिधि बाजा। आपन आपन लिहे समाजा।
हरि यह खेल जक्त हित करहीं। पढ़ि सुनि प्राणी भव निधि तरहीं।
तन मन प्रेम लागि जब जावै। तब कीरतन में आनन्द आवै।१०।

सन्मुख श्याम राधिका राजैं। सखा सखी सब संग बिराजैं।
बिबिध भांति के चरित देखावैं। कहैं बिभाण्डक बरनि न जावैं।१२।

२५३ ।। श्री सुभद्रा जी ।।

चौपाईः- राधा कृष्ण नाम जो ध्यावै। ता को मुक्ति भक्ति मिलि जावै।।
परम मनोहर श्याम औ श्यामा। निरखै सन्मुख आठौं यामा।।
नाम कि धुनि सब तन से जारी। सुनतै बनै मधुर धुनि प्यारी।।
समय अमूल्य न त्यागौ भाई। जान लेव सतगुरु से जाई।।
तब यह अमृत अनुपम पैहौ। ना कर चली न जीभ डोलै हौ।५।

स्वतः नाम धुनि तन से होवै। जो सब कर्म भर्म को खोवै।।
अजपा या को सुर मुनि गायो। सतगुरु बिना कोई नहि पायो।।
यह मरजाद सनातन जानो। बेद शास्त्र पढ़ि मिलत न मानो।।
साधन करै तो करतल होवै। नाहीं तो पढि सुनि क्या होवै।।
है मत्थे में हाथ न आवै। जन्म जन्म रोवै पछितावै।१०।

सबै पदारथ पास तुम्हारे। ताला द्वैत लगा है प्यारे।।
कुञ्जी बिना खुलै यह कैसे। रहि जैहौ जैसे के तैसे।१२।

दोहाः- सत्य प्रेम औ दीनता संगै मिलि जब जांय।
तिरगुन फाटक बज्र का तब ढीला पड़ि जाय।१।
सूरति के संग मन चलै शब्द पै ह्वै असवार।
ताला द्वैत खुलै तबै उघरैं तुरत केवार।२।
कहैं सुभद्रा बचन यह मानि लेय जो कोय।
तन मन प्रेम लगाइये नित मुद मंगल होय।३।

२५४ ।। श्री कैलाश जी ।।

चौपाई:- बक्ता श्रोता परम प्रवीना। जिन हरि नाम को साधन कीना।
ध्यान समाधि जानि जिन लीन्हा। तिन सब कहब सुनव सुख लीन्हा।
बक्ता जौन चरित को बांचै। सो श्रोता के आगे नाचै।
बक्ता श्रोता सम सुख पावैं। अन्त समय हरि पुर को जावैं।
तन मन प्रेम एक करि पावैं। सो श्रोता हरि यश कछु गावैं।५।

रोम रोम में श्रवण बनावै। सो श्रोता हरि यश सुनि पावै।
नाम हमार अहै कैलाशा। जँह शिव शिवा भक्त गण बासा।७।

२५५ ।। एक ही बाणी चारों श्री बैकुण्ठ जी की ।।

दोहा:- राम बिष्णु औ कृष्ण को, ध्यावै जौन सकाम।
सो मेरे आवरण में आवै, करै अराम।।
तन मन प्रेम लगाय के धर्म करै जो प्रानि।
ते आवै आवरन मम, बैठै हिय सुख मानि।।
हरि या हरि के भक्त जेहि, मारैं सो यँह आँय।
बैठैं सिंहासनन पर हब्य अनार को खांय।।
झूलन पर नर नारि बहु झूलैं करैं किलोल।
बिन अधार झूला पड़े अनुपम अमित अमोल।।
भूषण बसन श्री गरुड़ जी नित्य पिन्हावैं आय।
छूटैं भूषण बसन जो अंतराय ह्वै जाय।५।

दोहा:- बैकुण्ठ नाम मेरो अहै सुर मुनि सब कोइ जान।
या में नेक न फर्क है करि कै देखौ ध्यान।६।

२५६ ।। श्री गोलोक जी ।।

दोहा:- कृष्ण क प्रेमी जौन कोइ हों जग में निष्काम।
ते आवैं मम आवरण उनको करूँ प्रणाम।१।
पठय देंव साकेत को एक रस बैठै जाय।
नाम मोर गोलोक है सत्य कहौ हर्षाय।२।

२५७ ।। श्री साकेत जी ।।

दोहा:- राम कृष्ण औ बिष्णु को, भजै जौन निष्काम।
सो आवै आवरण मम, हरि दें अचल मुकाम।।

चौपाईः- हरि सब को निज रूप बनावैं। बिबिधि भांति यानन बैठावैं।१
इच्छा सब की पूरन जानो। मुख नहि खुलै सत्य कह मानो।२।
नाम मोर साकेत कहावै। सुर मुनि बेद शास्त्र बतलावै।३।

२५८ ।। श्री इन्द्रपुरी जी ।।

दोहाः- इन्द्रपुरि मम नाम हैं, भोग बिलास निवास।
देखत ही बनि परत है, बात कहौं मैं खास।।

चौपाईः- सौ अश्वमेध यज्ञ जे करहीं। मम आवरण में सो पग धरहीं।
ध्यान में जोगी जो कोइ आवैं। पक्के होंय तो बचि कै जावैं।
जो कोइ ध्यानै में लूटि जावै। ते फिरि तन में अति दुख पावै।
हर दम मन में ब्यापी अबला। तन ह्वै गयो फूट जिमि तबला।
स्वप्न दोष होवै नित उनको। जिन बश कियो नही है मन को।५।

जीरन तन ह्वै देही छोड़ै। फिरि अच्छे कुल नाता जोड़ै।
फिरि हरि भजन में लागै भाई। तब बे पार होय भव जाई।
मो को दुख सुख ब्यापै नाहीं। हरि का भज करौं मन माहीं।
जाको जौन कार्य्य हरि दीन्हा। अज्ञा मानि शीश धरि लीन्हा।
या से दोष लगाय सकै को। हरि के बचन मिटाय सकै को।१०।

२५९ ।। श्री बिष्णुप्रिया जी ।।

पदः- क्या झाँकी है वाँकी कन्हैया की।
घुँघुवारी अलकैं अति काली गालन पर लटकैया की।
मोर मुकुट शिर कानन कुण्डल मुरली मधुर बजैया की।
केशर तिलक भाल बिच राजत कज्जल दृगन लगैया की।
मुख ताम्बूल नाक नाशा मणि फाहा इतर सुघैंया की।५।

चंचल चपल चलत झुकि झूमत तिरछा चरण धरैया की।
चन्दन चर्चित नील बदन पर उर भृगु चरण रखैया की।
भूषण बसन मनोहर साजे कटि पट पीत कसैया की।
सखा सखी राधे संग सोहैं रास बिलास करैया की।
गावत राग रागिनी स्वर भरि दोउ कर ताल देवैया की।१०।

नाचत छम छम नूपुर बाजत दामिनि सम दमकैया की।
संग में साज बजत नाना बिधि सब पर ख्याल चढ़ैया की।

सुर मुनि चढ़े बिमानन निरखैं जय बोलैं छबि छैया की।
रूप अनेक बनत नहिं देरी कर से कर पकरैया की।
हिलि मिलि रास करैं सब के संग घूमि के बैठि जवैया की।१५।

फिरि अनेक से एकै राजत सब उर प्रेम पगैया की।
उत्पति पालन परलय औ लय भाँजत पलक करैया की।
ध्यान समाधि कीरतन सुमिरन का परचार सदैया की।
पढ़ि सुनि गुनि साधन करि तरिहैं जग हित खेल मचैया की।
जैसा समय वैसही लीला करि जग हिय हरषैया की।२०।

आरति होय लखै सो छबि को चर औ अचर करैया की।
आतम अनुभव रूप रूप बिन परम स्वरूप सुखदैया की।
सब में ब्यापक सब से न्यारे सब की फिकिर लेवैया की।
भञ्जन धरनि भार भक्तन हित निर्गुन सगुन बनैया की।
अगणित युगन ते शेष औ शारद बरणत जस न चुकैया की।२५।

सतगुरु करि जप की बिधि जानो पूरन आस करैया की।
नाम में सूरति मूरति सन्मुख नैनन नैन भिड़ैया की।
बिष्णु प्रिया कहै हर दम धुनि हो तन मन प्रेम फँसैया की।२८।

२६० ।। ख्याली राम जी ।।

पदः- क्या झाँकी है वाँकी सुघर नट की।
शिर पर क्रीट श्रवण दोउ कुण्डल गालन पर काली जुलुफ़ लटकी।
भाल विशाल तिलक केशर को नाक में नाशा मणि लटकी।
लोचन कञ्ज कमान सी भौहैं अधर लाल मुख द्युति छिटकी।
दोउ कर मुरली अधर धरे हैं त्रिभुवन की छबि तँह अटकी।५।

भूषन बसन बनै बस देखत कछनी काछै पीत पट की।
तिरछा चरण दोउन में नूपुर निरखि के सुर मुनि सुधि भटकी।
बाम भाग में राधे राजैं लखि रति काम गये सटकी।
शेष सहस मुख जीह सहस दुइ क्या बरनै गति मति झिटकी।
उत्पति पालन परलय करतल भृकुटी अपन जहाँ मटकी।१०।

दरशन की सौभाग्य होय जेहि सो निर्भय फिरि को हटकी।
नाम खुलै हर दम धुनि होवै सो भव सिन्धु जाय तड़की।

नर तन का फल प्राप्त जियति हो भर्म कि फूटि जाय मेटुकी।
पूरन ब्रह्मा सगुन भक्तन हित सन्मुख निरखै छबि टट की।
तन मन प्रेम लगाय दीन ह्वै करु सतगुरु उघरै खिड़की।१५।

ध्यान समाधि देव मुनि दरशैं शिर पर अनहद धुनि चटकी।
यह नर देह सुरन को दुर्लभ बिनु सुमिरन मग की सिटकी।
शान्ति चित्त स्थिर ह्वै बैठौ दौरि छोड़िकै गिरगिट की।
सूरति शब्द क मारग पकड़ो पहुँचि जाव बजतै चुटकी।
एक एक रोवां में हरि के अगणित ब्रह्माण्डन पोटकी।२०।

श्वांस में अगणित आवैं जावैं जानत हैं सब घट घट की।
कबहूँ दुख न देंय किसी को आप सहैं सब की घुड़की।
मुक्ति भक्ति संगै संग डोलै गर्भ में फेरि नहि फटकी।
ख्याली राम कहैं हरि सुमिरो नहि तो मृत्यु आय गटकी।२४।

२६१ ।। श्री मनसा राम जी ।।

पदः- गुरु पद पंकज पराग अनुराग बिन कपट कटारी नहिं उर से निकरिहैं।
द्वैत भाव छूटै नहीं भर्म भाड़ा फूटै नहीं बचन प्रतीति बिन
भव किमि तरिहैं।
मानुष क तन पाय हरि को न जान्यो हाय रोये न चुकैगो
जब नर्क जाय परिहौ।
जप बिधि जान लीजै ध्यान औ समाधि कीजै नाम रूप जाने बिना
मन ना ठहरिहै।
ब्रह्म सर्व व्यापक अकाल सब भाषत है ताको बिन जाने सारी
बासना न मरिहै।५।

सर्व शक्तिमान के अनन्त रूप नाम धाम बिना अवतार जक्त
कार्य्य कैसे सरिहै।
पढ़ि सुनि गाय भजि दुष्ट संग देहैं तज धर्म्म को प्रचार करि
तारिहैं औ तरिहैं।
लीला में आनन्द बढ़ी प्रेम रंग अंग चढ़ी सुर मुनि ध्यान माहिं
करत औ करिहैं।
वाक्य ज्ञान छोड़ि भाय तन मन प्रेम लाय जियति निरखि
मुद मंगल में भरिहैं।

सीताराम राधेश्याम रमा विष्णु शिवा शिव ब्रह्मा शारदा जी
सुर मुनि कृपा करिहै।१०।

सब में रमें है जौन समुहे खड़े हैं तौन बिना सत्संग
यहि मार्ग कैसे परिहै।
मनसा राम बैन कहैं निष्काम जे नर हैं मुक्ति भक्ति पोवैं कैसे
नाम जे बिसारिहैं।१२।

दोहाः- राम नाम रस गारि कै पीवै जो जग आय।
मनसा राम कहैं वही निर्भय हरि ढिग जाय।।

२६२ ।। श्री भोला मस्तान शाह जी ।।

पदः- रबी नबी अल्ला खुदा। एक ही न कोई जुदा।।
अजपा जाप जपो सदा। तब तो होगे सच्चे गदा।।
सब में मौला है तो मुँदा। प्रेम ते प्रगट होवे खुदा।।
कौल से तो होहु अदा। तन है आबे बुद बुदा।।
काम क्रोध लोभ मदा। मोह रह्यो सब को पदा।५।

जायगा मिटि कर्म बदा। दोजख का छूटैगा फँदा।।
पाय जाव नाम रँदा। रगरि के छोड़ावो गँदा।।
साफ करिके होहु वँदा। लखौ रूप नूर सदा।।
दाता वही खालिक वही। साहब वही मालिक वही।।
परवरदिगार उसको कहते हैं बशर।
लेता खबर है सबकी रखता न वह कसर।।
है वह गरीब परवर बन जो गरीब जाय।
भोला मस्तान कहते तब सामने दिखाय।११।

पदः- अल्ला अल्ला कहोगे तो पल्ला खुल जाँयेगे।
खुदा खुदा कहोगे तो खुद ही मिलि जाँयेगे।
नबी नबी कहोगे तो नूर देखिलाँयेगे।
रवी रवी कहोगे तो ध्यान लगवाँयेगे।
लाह लाह कहोगे तो शून्य लै जाँयेगे।५।

मौला मौला कहोगे तो संग लगि जाँयेगे।
भोला मस्तान शाह कहैं जिक्र कीजिये।
तन मन व प्रेम संघ कर उस रंग में भीजिये।९।

२६३ ।। श्री अमीर हसन खां ।।

(महमूदाबाद, सीतापुर)

शेरः- लाह लिल्ला कहौ। और सबसे मिल कर के रहौ।१।
भिश्त गर लेना चहौ। अच्छी बुरी सब की सहौ।२।
रहम जीवों पर करो। काहे को दोज़ख तब परो।३।

अमीर हसन खां की बात मान जाओगे।
तो तन के अन्दर अपने पैगम्बर पाओगे।।
फातिमा हसन हुसेन का निवास है।
काबा व भिश्त सुन्दर घट में प्रकाश है।।
हर दम सुनोगे धुनि जो होती है लाह लाह।
सन्मुख खुदा क नूर कहोगे तो वाह वाह।।
झलकैगि श्याम सुन्दर कि बाँकी छबी कभी।
बस मस्त होगे देख कर बरनोगे क्या कभी।।
मुख के नहि हैं आँखै आँखो के मुख नहीं।
फिर अब भला बताओ कहने को को कही।५।

पहुँचोगे ध्यान में जब देखोगे तमाशा।
दुनियाँ के खेल से तब होओगे निराशा।।
लय में पहुँचिके भाई सुधि बुधि न कछु रही।
सूरति के साथ मन मिल सब साह ठग गही।।
मुरशिद से जान करके सुमिरन करोगे जब।
आँखै व कान प्यारे तुम्हरे खुलैंगे तब।८।

२६४ ।। श्री घिसावन दास जी ।।

पदः- राम जी धनु रमापति का आप निज हाथ में लीजै।
मिटै सन्देह सब मेरी चाप को तान गर दीजै।
यह कह कर धनु दिया हरि को छुवत चढ़ि चाप बोली जय।
परशु धर हर्ष में भरिगे करैं अस्तुति छिमा की जय।
चले परणाम करि उत्तर करूँ तप हरि रंग मन भीजै।
घिसावन दास की बिन्ती भजन बिन तन वृथा छीजै।६।

२६५ ।। श्री जानकी दास जी ।।

लावनीः- क्या राम श्याम तन लखन पीत तन धारी।
आये जँह सभा मँझार मोहनी डारी।
कानन में कुण्डल मकुट शीश पर धारी।
केशरि को तिलक बिशाल भाल छबि न्यारी।
भूषन औ बसन बिचित्र अंग में धारी।
पट पीत कमर में कसे खूब सम्भारी।
तरकस में शर हैं भरे पीठि पर डारी।
बाँये काँधे में धनुष पड़ा झलकारी।
गजमुक्ता कौस्तुभ मणी नील मणि प्यारी।
अहि मणि औ हीरा लाल माल गले धारी।१०।

है सब मंचन से मंच ऊँच एक भारी।
तापर मुनि बैठे विश्वामित्र सुखारी।
तँह दहिने भाग में राजत अवध बिहारी।
बांये दिशि लक्षिमन पीत बरन छबि प्यारी।
संसार में चारों तरफ खबरि यह जारी।
नृप रच्यो जनक पुर धनुष यज्ञ अति भारी।
जो तोरै शिव को धनुष बरै सुकुमारी।
यह प्रण नृप अपने उर में लियो टिकारी।
नृप आये तँह पर देश देश के भारी।
असुरौ आये तँह बैठे नर तन धारी।२०।

करि करि हारे सब ज़ोर सके नहिं टारी।
लागी सब के मुख मसी गये हिय हारी।
रावण बाणासुर धनु पर कर नहि डारी।
जिन शिव जी के कैलाश को लीन उपारी।
यम काल इन्द्रगे हार ऐसा भट भारी।
लखि कै चट दोनौ भवनन गये सिधारी।
बन्दी गण बरनन कीन्हों सभा मँझारी।
तँह जनक राज ने रिसि कर बचन उचारी।
भइ वीरन मही बिहीन सुता रहै क्वारी।
सुन लखन नृपति के बैन क्रोध कियो भारी।३०।

बोले उठि सभा मँझार सुनो नर नारी।
यह अनुचित सभा के मध्य जनक कहि डारी।
रघुवँशी जँह चलि जाँय सकैं नहि हारी।
भे हमरे कुल में बड़े बड़े बल धारी।
हम उनकी कृपा ते काल की जीभ निकारी।
अभिमान न नेकौं करौं सत्य व्रत धारी।
हरि के परताप से भुजन में है बल भारी।
श्री रामजि आज्ञा देंय तो खेल प्रचारी।
ब्रह्माण्ड को गेंद समान लेंव कर धारी।
कच्चे घट के सम फोरौं लगै न वारी।४०।

मूली सम तोरौं पर्वत मेरु उखारी।
यह धनु पुरारि का तृणवत कर में धारी।
शत योजन जावों पौन समान उड़ारी।
क्या चाप हरे मखमल की दिब्य है प्यारी।
छुवतै आपै चढ़ि जाय बड़ी सुकुमारी।
फिरि वाँस करिल सम तोरि के धनु महि डारी।
परताप प्रभु का उर में रह्यौ समारी।
हरि की मैं शपथको खाय ये बचन उचारी।
करि के दिखलावों नहीं तो होवै ख्वारी।
धनु बाण बसन औ भूषन त्यागौं झारी।५०।

मामूली कपड़े पहिन के बनौं भिखारी।
सुनि बचन लखन के कोप भरे अति भारी।
घबड़ाने गज बाराह हिली महि सारी।
हरषे मुनि विश्वामित्र राम धनुधारी।
करि नैन सैन श्री राम लखन बैठारी।
तब विश्वामित्र ने राम कि ओर निहारी।
फिरि कह्यौ उठौ अब तोरौ धनु धनुधारी।
मिटि जाय जनक परिताप भक्त हितकारी।
सुनि बचन गुरु के उठि चरनन सिरधारी।
धनुवान व तरकस गुरु ढिग धर्‌यो उतारी।६०।

चलि दियो धनुष की ओर अतुल बलधारी।
मानहुँ मयन्द मद मस्त चलत पग धारी।
पहुँचे जब धनु के पास में अवध बिहारी।
तब सिया पै एक निगाह कृपानिधि डारी।
देख्यो अति प्रेम में बिकल हैं जनक दुलारी।
चट धनु दहिनाय उठाय लीन बल धारी।
डरि चाप आप ही चढ़ी शब्द भनकारी।
प्रभु दोनो गोसन हाथ दियो सरकारी।
जस चह्यो नवावन टूटि गयो धनु भारी।
हरि दोउ खण्डन को उत्तर दक्षिण डारी।७०।

उड़ि गयो एक सुर पुर को लगी न बारी।
धँसि गयो दूसरा धरनि पताल सिधारी।
तँह भयो शब्द ज़ोर से हा हा कारी।
सब लोकन पहुँच्यो जाय अकाश मँझारी।
बरसावैं फूल औ गावैं साज बजारी।
गन्धर्व औ किन्नर संग अप्सरा प्यारी।
नाचैं तन मन ते हर्षि ताल दै तारी।
श्री जनक सुनयना सिया ग्राम नर नारी।
बहु भूप औ विश्वामित्र लखन सुख भारी।
फिरि सिया लीन जय माल दोउ कर धारी।८०।

चलि भई सखी संग दस सहस्त्र सुकुमारी।
सब गावैं मधुरेश्वरन मंगलाकारी।
फिरि पहुँचि गईं प्रभु के ढिग जनक कुमारी।
जय माला गले में डारि चरण शिर धारी।
उठिकै फिरि मुनि के चरन परी सुख भारी।
मुनि दीन्हयों आशीर्वाद शीश कर धारी।
सिय सदा सोहागिन रहौ जक्त हितकारी।
फिरि चलीं सखिन के संग सिया सुकुमारी।
माता के गोद में जाय के बैठि गईं प्यारी।
तँह परशुराम गे आय भीर लखि भारी।९०।

चारों दिशि देखा सब की ओर निहारी।
पूछा तब जनक से कैसी सभा बिठारी।
सब हाल जनक कहि दीन कौन रिसि भारी।
धनु को तोरयौ है कौन उसे हति डारी।
मोको नृपदेव बताय कौन बल धारी।
जो नहीं बताओ तो देहौं दुख भारी।
उलटौं जँह लगि है राज्य भूमि तब सारी।
सुनि बचन मुनि के जनक और नर नारी।
डरि गये कहैं बिधि ने बनि बात बिगारी।
असुरन औ दुष्ट महीपति मन सुख भारी।१००।

कहैं बदला मुनि धनु केर लेंय हरि मारी।
तँह लछिमन उठि कै मुनि को खुब फटकारी।
नहिं चली चतुरता एकौ हिम्मत हारी।
कियो शान्त लखन को नैन सैन हरि मारी।
मुनि ते तब प्रभु निज मुख से बचन उचारी।
सुनतै मुनि तन का क्रोध भागि गयो झारी।
दियो बिष्णु को धनु मुनि हरि के हाथ पै धारी।
दीजै प्रभु चाप चढ़ाय मिटै दुख भारी।
छुवतै तँह चढ़ि कै चाप कियो जयकारी।
मुनि हर्षे तन मन ते अस्तुति कियो प्यारी।११०।

फिरि करि प्रणाम उत्तर की ओर सिधारी।
हर्षे तब राजा जनक भूप नर नारी।
कहैं राम श्याम रणधीर बीर धनु धारी।
शंकर का चाप जहाज़ तूरि महि डारी।
बल सागर रघुबर भुजा जक्त हितकारी।
जिनका करैं सुर मुनि भजन सदा एकतारी।
क्या मुनि मख में चलि आय कोप कियो भारी।
लघु भ्राता लछिमन मान मर्दि सब डारी।
इन मुनि मख रक्षा कीन ताड़का मारी।
मारीच उड़ायो बेफर बाण चलारी।१२०।

फिरि अगिनि बाण से असुर सुबाहु को जारी।
लछिमन असुरन को कटक सबै संहारी।
पथ्थर ह्वै गौतम नारि पड़ी दुख भारी।
हरि के चरनन रज परत बैठि उठि प्यारी।
अस्तुति फिरि तन मन प्रेम लगाय उचारी।
फिरि चरनन में परि पति के लोक सिधारी।
अब हम सब की क्या भाग्य खुली सुखकारी।
श्री जनक लली को बरिहैं अवध बिहारी।
अइहैं अब प्रेम सनेह से फिरि ससुरारी।
दरशन हम सब को मिलै खुल्यौ दर भारी।१३०।

यह रामायण प्रभु सिया चरित सुखकारी।
पढ़िहैं सुनिहैं करि प्रेम ताप त्रय हारी।
है कामधेनु रामायण जक्त मंझारी।
थन चारों चारि पदारथ हैं सुखकारी।
है बच्छ बने बहु भक्त पियत पय धारी।
निशि बासर गावत हरि चरित्र सुख कारी।
दोउ श्रृङ्ग बने हैं ज्ञान बिराग सुखारी।
हैं नेत्र अर्थ समझावन अनरथ टारी।
पुच्छ परम पद देत करत भव पारी।
हरि यश मुख ते उच्चारन होत करारी।१४०।

श्रवण ते सुनि जग धर्म प्रचार प्रचारी।
उदर दिव्य भण्डार कामना पूरत सारी।
चारों पग खम्भा बज्र जक्त को धारी।
है मंत्र कि महिमा बड़ी बड़ी गुणकारी।
तीरथ तामें सब बसत पिअत सुख भारी।
गोमूत्र व गोबर दूध दही घृत डारी।
बनि जाती है क्या पंच गब्य सुखकारी।
गौवन की सेवा करने से सुख भारी।
इन ही के बल से जग में मंगल कारी।
इनके सब तन में देवन बास करारी।१५०।

सो तुमको देंय लिखाय लिखो सम्भारी।
राजत हैं सींगन इन्द्र शक्ति संग प्यारी।
कानन में सत्य औ कर्म धर्म व्रत धारी।
मुख में हैं शिव शिवा गजानन भारी।
तारा गन सूरज चन्द्र दृगन छबि प्यारी।
दोउ भौवन भैरव बीर भद्र बल धारी।
मस्तक पर हैं हनुमान गदा कर धारी।
श्री काली दुर्गा नाशा पर असवारी।
शिर के अन्दर में राम जानकी प्यारी।
संग भरथ शत्रुहन लखन लाल गुणकारी।१६०।

वंशीधर राधे संग छटा छबि न्यारी।
सरस्वती बिराजैं कण्ठ में बीणाधारी।
हिरदय में राजत रमा बिष्णु सुखकारी।
अट्ठासी सहस्त्र ऋषि बसते उदर मँझारी।
ग्रह राशि नक्षत्र महूर्त योग तिथि सारी।
ब्रह्मा जी शक्ति समेत पीठि असवारी।
नवयोगेश्वर बायें कोहान सवारी।
शुकदेव और सनकादिक दहिनी पारी।
हैं मूत्र में राजत सब तीरथ सुखकारी।
औ थनन में सातौं सागर सरिता झारी।१७०।

बन पर्बत कस्बा ग्राम पुरी पग चारी।
कमठ शेष बाराह श्वेत गज चारी।
ये पूँछ में करते बास मही को धारी।
मुद मंगल तन गो माता जग हित धारी।
सब रोवन में सुर बास करत बलि हारी।
सब सुक्ख जियत में देंय अन्त हितकारी।
पग रक्षा के हित चाम देंय महतारी।
तृण भोजन नित प्रति करैं पियैं फिर बारी।
सब जीव मात्र में राम रमे सुखकारी।
सुमिरन की बिधि जो जानै वही निहारी।१८०।

यह राम नाम सरनाम अटल युग चारी।
सुर मुनि जपते निशि बासर तन मन वारी।
है सर्व लोक में बिदित जपैं नर नारी।
याही से ध्यान समाधि होत सुख भारी।
लीला औ धाम क खेल नाम उर जारी।
नामैं में पालन परलय उत्पति सारी।
मिलिहै जब नाम कि धुनी मधुर सुर प्यारी।
सन्मुख हों सीता सहित राम धनुधारी।
परकाश चहूँ दिशि रहै मण्डला कारी।
ता के भीतर क्या झांकी बाँकी प्यारी।१९०।

लै सतगुरु से उपदेश चोर सब मारी।
ह्वै जावो निर्भय फिरि को सकै बिगारी।
जियतै करतल करि लेव दीनता धारी।
है शान्ति केर तलवार बड़ी बलकारी।
हैं सब में सब से न्यार अमर अबिकारी।
नहि राखै तन में शत्रु सबन संहारी।
सब सुर मुनि दर्शन देंय दिब्य तनु धारी।
बोलैं मधुरे क्या बैन प्रेम बर्षारी।
यह बिनय जानकी दास की जो उर धारी।
ता की इच्छा सब पूरैं अजिर बिहारी।२००।

२६६ ।। श्री दुलारे दास जी ।।

पदः- युक्ति सों जगाइये जगत पति भक्त जन तन को यह लाभ तो
जियतै लै लीजिये।१।

आतमा लखत जाहि अगम अनूप सोहै ताहि अभ्यास करि
सन्मुख कीजिये।२।

तन मन प्रेम करि शब्द पै सुरति धरि ध्यान औ समाधि सुख जानि
रंग भीजिये।३।

तन को बृथा गँवाय अंत पछितैहौ जाय कहत दुलारे दास
सतगुरु कीजिये।४।

२६७ ।। श्री भगवान दास जी ।।

पदः- सतगुरु शब्द भेद जब से बतायो मोहिं करि अभ्यास
कछु जानि मै तो पायो है।
नाम धुनि खुलि गई राधे श्याम सन्मुख राजैं तेज चहुँ ओर
झाँकी बीच में सुहायो है।
चारों तन शोधन भे पांच तत्व जानि लीन नागिनी जागृत भई
आलस हटायो है।
षट चक्र बेधन भे सातह कमल खिले तीन चारि पांच औ
पचीस को भगायो है।
गुदा चक्र गणपति संग शक्ति राजत हैं इन्द्री चक्र ब्रह्मा शक्ति संग
छबि छायो है।५।

नाभि चक्र रमा बिष्णु हृदय चक्र शिवा शिव कण्ठ चक्र आतम
इच्छा शक्ति प्राण पायो है।
कमल सहस दल जापै ब्रह्माण्ड धरा त्रिकुटी के नीचे
गति सुघर सुहायो है।
उमा औ निरंजन फेरि जोति संग सोहत हैं निरखि निरखि
अति हिय हुलसायो है।
त्रिकुटि के चक्र पर ब्रह्मा बिष्णु शम्भु बैठे जपते हैं रेफ बिन्दु
बीज जो कहायो है।
शुकुल प्रकाश ता को चम चम चमकत देखत बनत
बे अधार तँह छायो है।१०।

आशिर्वाद तीनो देव मोको दै दीन तहां खोलि दीन फाटक
त्रिबेणी जी नहायो है।
लखि कै प्रकाश जोति ध्यान में पहुँचि गयो लीला तँह
बहु बिधि देखने में आयो है।
आगे बढ़ि शून्य में समाय कछु देखा नहि आगे जाय
कृष्ण लोक देखने में आयो है।
श्याम के हृदय माहिं श्यामा तँह शोभा देवैं झूला है अधार बिन
चलत लखायो हैं।
सुरभी अनेक भांति नाना रंग बृक्ष फूल लगे हैं अनार तरु
बहु लखि पायो है।१५।

गिरत अनार और आप ही इकट्ठा तहां बड़े बड़े टाल लागि
देखि मन भायो है।
गौवन के थनन ते दूध आपै आप गिरै नालिन में ह्वै के फेरि
हौजन में आयो हैं।
आपै आप खौलत आपै आप ठण्ढा होत आपै आप जामि
नाम हब्य कहवायो है।
गरुड़ अनेक रूप धरत तहां पै जानो हब्य और अनार
बाँटने क ठेका पायो है।
सुर मुनि आश्रमन जाय पहुँचाय आवैं लौटि फिर
श्याम को हिसाब बतलायो है।२०।

श्याम है प्रकाश तहाँ श्याम श्याम गावैं कहैं श्यामा श्याम छबि
लखि प्रेम उमड़ायो है।
फेरि साकेत जाय महा परकाश पाय राम रूप संत बहु बैठे
लखि पायो है।
फूलन के बृक्ष तहाँ रंग रंग शोभा देत बसुधा मणिन लखि
भाँति भाँति पायो है।
सुभग सिंहासनन बैठे नहि बोलैं सन्त मनहु पाषाण
हरि प्रतिमा धरायो है।
सब से ऊँचा है यान तेज तामे है महान राजत हैं ता पै हरि
लखने में आयो है।२५।

राम ब्रह्म के हदय में राजती हैं आदिशक्ति उपमा अवरणीय
कहि कौन पायो है।
काली लोक दुर्गा लोक पास ही है देखा जाय मातन के दर्श करि
आशिष को पायो है।
लौटि बैकुण्ठ आय घूमि चारों देखि लीन कीन परणाम सब
स्वामी हरषायो है।
शीश पर कर फेरयो उर में लगायो मोहिं शोभा कौन बरनै
शेष शारद चुपायो है।
तीनि बिष्णु संग तहाँ रमा जी को देखा नहिं चौथे बिष्णु संग तहां
रमा लखि पायो है।३०।

क्षीर के समुद्र मध्य शेष जी की सेज बनी शुकुल है रंग
परकाश बहु छायो है।
ता पै मातु पिता राजैं लखि कोटि काम लाजैं शेष फन सहसौ क छाता
क्या लगायो है।
छोटा बैकुण्ठ या को कहते हैं सुर मुनि या ही में समुद्र क्षीर
और में न पायो है।
फूलन के वृक्ष जो हैं तीनि तीनि हाथ सोहैं कई रंग फूल सोहैं
मन ललचायो है।
हरी हरी पत्ती और शाखैं सब हेम कैसी जड़ैं पेड़ी रूपा सम
देखने में आयो है।३५।

झूला बे आधार पड़े यान बहु सोहैं तहां झूलैं नर नारी बहु
हर्ष उर छायो है।
यानन पर बैठे बहु बैस बारह वर्ष जानो भुजा चारि चारि
देखते में बनि आयो है।
मखमल फर्श पांच रंग की बिछी है प्यारी ता में फूल बेलि को
कसीदा कढ़वायो है।
भूषन बसन तहां बृक्षन में फरैं झरैं आप ही इकट्ठा
दुइ टाल लखि पायो है।
गरुड़ तहाँ पै देखा रूप बहु बनि बनि भूषन बसन
नर नारिन पिन्हायो है।४०।

और सब लोकन में जाय पहिराय आवैं नाम परताप जानि
कार्य्य ये उठायो है।
हव्य औ अनार कार्य्य भूषन बसन कार्य्य करत हैं नित्य प्रति
समय ना बितायो है।
चन्द्र लोक सूर्य्य लोक ब्रह्मा लोक इन्द्र लोक सिद्ध लोक शक्तिन के
लोक घूम आयो है।
बलि धाम नाग धाम घूमि शेष ढिग आयो कमठ के ऊपर आप
आसन जमायो है।
जल पै कमठ चारों ओर दिग्गज चारि बारह हैं बराह तहाँ
देखने में आयो है।४५।

शिर पै अवनि धारे दिग्गज बराह सारे शेष मध्य भाग में
अवनि शिर लायो है।
ध्यान में मगन सब उनको न जानि परै लखैं छबि राम श्याम
ब्रह्मानन्द पायो है।
आय महि ऊपर कैलाश ओर चलि दीन उत्तर तरफ
एक फाटक देखायो है।
बैठे गज बदन बिशाल भुजा सोरह है सबन में अस्त्र धारे
कालहू डेरायो है।
चरनन परयों जाय अज्ञा दीन हरषाय तब कैलाश में
प्रवेश करि पायो है।५०।

सुन्दर भवन सोहैं कहत बनत नाहिं ता के मध्य बट बृक्ष
शोभा अति छायो है।
शिवा शिव राजत षरानन बिराजत हैं सरस्वती बैठी
बीणा मधुर बजायो है।
काल भैरव बीर भद्र संग बैठे देखा तहाँ नन्दी गण सिंह मोर
मूसहू देखायो हैं।
नाना भांति गण और बाहन अनेक भाँति काल परिवार मानो
नेवते में आयो है।
भवनन माहिं सब बैठे कोई ठाढ़े लेटे देखि निर्भय फिरि
शिव ढिग आयो है।५५।

चरनन शीश धरि शिव शिवा जी के फेरि सबके चरन परि
आशिष को पायो है।
बरनै शिंगार कौन आनन्द के आनन्द हैं नाम के आचार्य
सब लोक यश छायो है।
फेरि तन माहिं देखा मध्य भाग पीठी पर तीनि बिष्णु ध्यान औ
समाधि में लुभायो है।
अनहद बाजा सुना बाजहू क बाजा सुना साज राग रागिनी
समाज लखि पायो है।
किणी और किंकिणी रुणी और झुन झनी सिंह की सी धुनी
नाद का ये नाद छायो है।६०।

हरि दरवाजे पर गान और बजान होत कबहूँ न बन्द होय
मंगल मचायो है।
पांचो मुद्रा जानि लीन ध्यान औ समाधि करि चौदह ब्रह्म एक ही हैं
नाम बिलगायो है।
खेचरी से जीह नाम होत उच्चारन है अगोचरी से उलटि
ब्रह्माण्ड में समायो है।
चाचरी से तत्व रंग त्रिकुटी लखाय परै भूचरी सुरति शब्द
एक मे मिलायो है।
उन्मुनी मुद्रा से प्रकाश जोति रूप लखा जाप खुली पन्द्रह बिधि
जीह ना डुलायो है।६५।

खेचरी क जीह बास अगोचरी ब्रह्माण्ड बास चाचरी क नैन बास
जानि मन भायो है।
भूचरी श्रवण बास उन्मुनि क नाशा वास तीन हू गुणन के
स्वरूप लखि पायो है।
रज गुण गौर वर्ण सतगुण श्वेत वर्ण तम गुण श्याम वर्ण
देखने में आयो है।
लाल वस्त्र रज गुण के श्वेत वस्त्र सतगुण के श्याम वस्त्र तम गुण के
तन में सोहायो है।
इनसे जो मेल करै सोई आगे पग धरै ब्रह्मा बिष्णु शम्भु के
ये अंश कहवायो है।७०।

पांच तत्व रंग कहौ पांच प्राण रंग कहौ आतम स्वरूप जीव
रूप जौन पायो है।
पृथ्वी क पीला रंग जल का है श्वेत रंग वायु का है हरा रंग
देखने में आयो है।
पावक का लाल रंग श्याम आसमान रंग पांचों प्राण हरा रंग
लखि हरखायो है।
जीव श्वेत रूप अति कोमल सुहावन है आतमा प्रकाश रूप
ताहि में समायो है।
क्रोध लोभ मोह मद कपट पाखण्ड दम्भ झूठ निद्रा आलस
जम्हुआई लखि पायो है।७५।

अपमान शोक दुःख हानि रोग द्वैत कूट भय व काल मृत्यु पाप
रंग श्याम पायो है।
काम रति गौर रंग मन माया बहु रंग चंचल चलाक जाय
नर्क में गिरायो है।
मान हर्ष लाभ सुक्ख शान्ति शील दया छिमा सरधा सन्तोष
दीनता हु लखि पायो है।
सत्य श्रृंगार प्रेम छबि मुक्ति भक्ति तप ज्ञान औ बिराग
ध्यान मै समाधि आयो है।
चारि चारि भुज निज कार्य्य में निपुण सब धन्य वै भक्त
जिन इनको हटायो है।८०।

योग विश्वास परतीति जप यज्ञ पाठ पूजा अनुराग
श्वेत देखने में आयो है।

अर्थ धर्म काम मोक्ष साधन बिचार आशिर्वाद नमस्कार औ प्रणाम
श्वेत पायो है।
छींक श्राप भूख प्यास खजुली अज्ञान हाय बासना अगार में
बिगार करवायो है।
पालन उत्पत्ति परलय ब्रह्मानन्द परमानन्द जाग्रत तुरिया तीत
श्वेत लहरायो है।
मुद और मंगल कल्याण गुण शुभधाम सूरति ख्याल हाल
लखि श्वेत पायो है।८५।

अनुचित अरुचि अपच औ कुरूप रूप ऐड़ाई और हिचकी
अशुभ स्याह पायो है।
संचित प्रारब्ध क्रिया मान जो हैं संतन के श्वेत रंग भोग को
भोगाय पहुँचायो है।
दैहिक औ दैविक औ भौतिक ये तीनि ताप पर सन्ताप रूप श्याम
देखने में आयो है।
रूप रस गन्ध स्पर्श से मलीन होत नाहीं तो ये श्वेत रंग
सुन्दर सुहायो है।
दोहा चौपाई छन्द सोरठ पहेली पद कवित्त सवैया औ
कुण्डलिया लखि पायो है।९०।

बेद शास्त्र औ पुरान धन्य जय संस्कृत व्याकरण औ
ज्योतिष श्लोक दरशायो है।
अन्वय स्वर ब्यञ्जन औ ह्रस्व दीर्घ संज्ञा अर्थ प्रकरण अनुस्वार
लखि हरषायो है।
गीता और मानस रामायण वशिष्ठ योग भागवत महाभार्त
रूप दर्शायो है।
मल मूत्र उलटी खखार थूक खूँट मैल चीपर औ गारी हल्ला
झगरा लखायो है।
मारु लागि टूट फूट डोलि फूलि पाक घाव कहाँ तक कहौं शब्द शब्द
लखि पायो है।९५।

शुद्ध शब्द भाखने से शुद्ध रूप रंग जानो भाखिये अशुद्ध शब्द
काले ह्वै बिलायो है।
मुख से कढ़त बाहेर रूप सब देखि लेव निष्काम भये बिन
देखि कौन पायो है।
तत्तवन की चाल स्वाद बास औ अहार देखि लीजिये स्वरोदय माहिं
शम्भु बिलगायो है।
इंगल औ पिंगल औ सुखमन बज्रणी औ चित्रणी औ षट चक्र रंग
ईसा गायो है।
सातहू कमल रंग देवन के बास जहाँ शम्भु शुक नानक
जग जीवन बतायो है।१००।

सुर मुनि संत जग हेतु परचार करैं जाको जानि जीवि
भव सिन्धु पार जायो हैं।
पूछि घोखि चेति हृदयाङ्गम करै औ फेरि साधन को सिद्धि करि
नाम रूप पायो है।
नाम रूप लीला धाम ध्यान औ समाधि एक रेफ़ बिन्दु जानने से
सब हाथ आयो है।
शब्द पै सुरति धरि जियतै में जाय मरि तन मन प्रेम करि
जानि सोइ पायो है।
चन्द्र सूर्य्य एक करि सुखमन माहि परि चित्रणी में जाय फिरि
बज्रणी समायो है।१०५।

ता के अभ्यन्तर धुनि शुकुल धुवाँ के रंग सुर मुनि शक्ती
वायु रूप ते लुभायो है।
रं रं रं धुनि एक तार सदा रहै सब में प्रवेश
सब खेल को बनायो है।
जाने बिना मानै कौन जानि कै न होवै मौन देय उपदेश अति दीन ह्वै
सो पायो है।
सुर मुनि प्रेम लखि संग हर्षि बैठैं आय नाना भांति खेल करैं
कहिवे न आयो है।
त्रिकुटी के बाँये दिशि छिद्र इकयावन की हड़डी एक टेढ़ी मेढ़ी
बिधि ने बनायो है।११०।

ता के मध्य छिद्र जौन ता में ह्वै के जात योगी ऐसा यह राज योग
हरि ने चलायो है।
प्रथम श्री आदि शक्ति शम्भु को बतायो भेद जा से आप नाम जानि
रूप में लोभायो है।
फेरि आय उमा को बताय या को भेद दीन्हो सुनि लीन्हो शुक
सोऊ अमर कहायो है।
प्रभु की इच्छा से यह मार्ग आदि शक्ति मातु जानि अधिकारी
हनुमान को बतायो है।
हनुमान जी से श्री ब्रह्मा जी ने लीन लै ब्रह्मा से वशिष्ठ
सनकादिक ने पायो है।११५।

सनक सनन्दन औ सनत कुमार जी ने सुर मुनि ऋषिन में
खूब फैलायो है।
शुक देव नारद वशिष्ठ और अंगिरस कपिल अगस्त
उद्दालक लुटायो है।
नवों योगेश्वर ब्यास नवों नाथ राघवानन्द रामानन्द को लखाय
जग में बँटायो है।
नानक, कबीर, रैदास, तुलसीदास, सूरदास हरि यश को
आनन्द बरसायो है।
दादू और सुन्दर, जग जीवन, रघुनाथ दास आय जग माहिं
बहु जीवन चेतायो है।१२०।

ह्वै गये हैं और ह्वै हैं हमेशा रहैं चारों युग खेल यह
ऐसै होत आयो है।
जियत में जाने बिन भव नहि पार होय बृथा बकवाद में
न मन सुख पायो है।
कहत भगवान दास सतगुरु कीन पास दुख सब भयो नाश
परमानन्द छायो है।१२३।

दोहाः- कुण्डलिनी का श्याम रंग उमा मातु का अंश।
भगवान दास कहैं जगै जँह, होय दुःख बिध्वँस।।

चौपाईः- नाभि से हृदय तक चलि आवै। हरा रंग ता को बनि जावै।।
हृदय से कँठ को करै पयाना। बदलै लाल रंग हम जाना।।
कँठ से सुखमन घाट पै जावै। सुकुल रंग ता को दरशावै।।
सुखमन ह्वै जब गगन को चलती। पीत रंग चम चम चम खिलती।।
गगन से लै समाधि में जावै। जा को नाम शून्य कहावै।५।

मन गुण प्राण जीव औ आतम। नागिन संघ लै हों परमातम।।
सुधि बुधि रहै न तँह पर भाई। महा घोर निद्रा जिमि आई।।
हरि इच्छा से फिर बिलगावै। चारौं ध्यान क खेल दिखावै।।
सब लोकन में देय घुमाई। इच्छा जियतै देय नसाई।।
मुद मंगल की देने हारी। धनि धानि जगदम्बा बलिहारी।१०।

सोरठाः- भगवान दास कह गाय, सतगुरु करि अमृत चखौ।
सूरति शब्द लगाय, जियतै में सब कुछ लखौ।।

२६८ ।। श्री बिजयी दास जी ।।

पदः- आतमा चिद आतमा परि ज्ञातमा परमात्मा।
घटा काशमा मठा काशमा आकाश मा महाकाशमा।
धाम मा औ लीलामा औ ध्यान मा समाधि मा।
पृथ्वी मा औ बारि मा औ अगिन मा समीर मा।
राग मा औ साज मा औ ताल मा आलाप मा।५।

धुनी मा औ स्वरन मा श्रृङ्गार मा औ छबी मा।
बिराग मा अनुराग मा औ ज्ञान मुक्ति भक्ति मा।
योग मा औ भोग मा संयोग मा बियोग मा।

धर्म मा औ कर्म मा औ नेम मा औ टेम मा।
शान्ति मा औ शील मा सन्तोष मा औ आर्ति मा।१०।

सरधा मा औ छिमा मा औ दया मा औ धैर्य्य मा।
सत्य मा औ प्रेम मा औ ख्याल मा औ चित्त मा।
काम मा औ क्रोध मा औ लोभ मा औ मोह मा।
अहँकार मा औ माया मा अज्ञान मा औ निद्रा मा।
दम्भ मा पाखण्ड मा औ कपट मा औ झूठ मा।१५।

अपिमान मा औ दुःख मा औ हानि मा औ शोक मा।
मान मा औ सुक्ख मा औ हर्ष मा औ लाभ मा।
पूजन मा औ पाठ मा औ यज्ञ मा कल्याण मा।
रिद्धि मा औ सिद्धि मा औ बृद्धि मा उदार मा।
सहन मा औ गहन मा औ रहन मा औ कहन मा।२०।

परनाम मा नमस्कार मा आशिर्वाद मा स्वीकार मा।
उत्पति मा औ पालन मा औ परलय मा औ इच्छा मा।
संचित मा क्रियमान मा प्रारब्ध मा प्रसिद्ध मा।
दैहिक मा औ दैविक मा औ भौतिक मा औ साइत मा।
यन्त्र मा औ तन्त्र मा औ मन्त्र मा औ शक्ति मा।२५।

राति मा औ दिवस मा औ मास मा औ बर्ष मा।
बेद मा औ शास्त्र मा पुराण मा उपनिषद मा।
आदि मा औ मध्य मा औ अन्त मा ख्याल मा।
सन्तुष्ट मा औ पुष्ट मा औ चतुर मा औ चपल मा।
तकदीर मा तदबीर मा गम्भीर मा रणधीर मा।३०।

जल चर मा औ थल चर मा औ नभ चर मा बन गिरिन मा।
तिरगुन मा औ प्रकृति मा औ तन मन मा सर्वत्र शब्द शब्द मा।३२।

२६९ ।। श्री ताम्र ध्वज जी ।।

दोहाः- गो ब्राह्मण सुर सन्त औ दीनन की सेवकाय।
ताम्र ध्वज कहैं करैं जे, सीधे हरि पुर जाँय।।

२७० ।। श्री देवी दास जी ।।

दोहाः- राम नाम जाने बिना पद न मिलै कैवल्य।
देवी दास कहैं जना, कर उपाय भल भल्य।।

चौपाईः- नाम बिना जाने मन भोगी। जर्जर तन करि दीन्हेव रोगी।।
बिषय बासनन के संग नाचै। पावत जूठे तहाँ तमाचे।।
सतगुरु कृपा सुधरि जब जावै। तब हरि हीरा पासै पावै।।
सूरति के संग शब्द में लागै। धुनि खुलि जाय रूप रस पागै।।
ध्यान समाधी औ बहु लीला। जानै तब मन होय रसीला।।
तब मन संगिन और न जाई। अधम समुझि गाहैं सब भाई।६।

दोहाः- साथी अगणित जन्म के कपटी चोर चलाक।
संसकार संयोग जब, मिल्यो भयो बेबाक।।

सोरठाः- या बिधि सबै हटाय मन, तन मन ते अति मगन।
जानै कोइ कोइ भाय, मन हू के है तन व मन।।

२७१ ।। श्री चन्द्र रानी जी ।।

पदः- सुरति सोहागिन साजु सिंगरवा अब तोहि सइयाँ घर चलना होगा।
प्रेम की सारी विवेक क घँघरा फूँद विश्वास लगाना होगा।
मन की चोली बाजू जुगुति योग तप की माँग बनाना होगा।
शान्ति के सेंदुर शील की कंघी सत्य फुलेल चढ़ाना होगा।
शौक क काजर आर्त की नथिया धर्म्म कि मिस्सी मलना होगा।५।

कर्म्म की चूड़ी दाया कि दुलरी श्रद्धा कि बेंदी लगाना होगा।
सन्तोष छिमा के बीरै झुमका किंकिणि धैर्य्य कि बँधना होगा।
सहन के पायल गहन के कड़वा रहन के छड़वा पहिरना होगा।
हर्ष के छल्ला ध्यान कि अरसी पुरुषार्थ कि सीढ़ी पै चढ़ना होगा।
शब्द कि ताली लैकर प्यारी ताला बज्र क खोलना होगा।१०।

गगन महल में अनहद बाजै मधुर मधुर धुनि सुनना होगा।
नाना भांति कि लीला सुरमुनि करते लखि हर्षाना होगा।
शून्य महल में चलि फिरि प्यारी सुधि बुधि सबै भुलाना होगा।
चेति क महा शून्य करि बेधन श्री गोलोक में जाना होगा।
श्याम के अन्तर श्यामा राजैं झूला लखि सुख पाना होगा।१५।

आगे चलि साकेत पुरी में महा प्रकाश समाना होगा।
ताके मध्य पुरुष अविनाशी शक्ति हृदय में लखना होगा।
राम श्याम के रंग रूप के भक्तन लखि मुद भरना होगा।
सतगुरु ने सब भेद बतायो अब चलि पता लगाना होगा।
चँद्ररानी कहैं लौटि के नैहर अब फिरि मोहिं न आना होगा।२०।

२७२ ।। श्री गया दास जी ।।

पदः- पाप के बाप से बचिये भाई।
काम क्रोध मद मोह क दादा बड़ा दुष्ट दुखदाई।
या के चक्कर में जे परिगे ते कल कबहूँ नहि पाई।
प्रबल शक्ति या की है माया लपटि के लेत गिराई।
नाक छेदि के डोरि लगावै चारौं ओर घुमाई।५।

हर दम शिर मुख जूतिन पीटै डाटै नैन देखाई।
मन ही मन निशि बासर रोवो नैनन आँसु न आई।
राति दिवस के बीच में आय के मृत्यु अचानक खाई।
सब धन धाम पिता माता त्रिय पुत्र सुता औ भाई।
नातेदार मित्र औ पुर जन कोई संघ न जाई।१०।

जिन के खातिर करत ठगौरी स्वार्थ हेतु मूँह बाइ।
तुमको नर्क में जाय ढकेलैं स्वाँस न घूटी जाई।
या से मानो कहा हमारा सतगुरु खोजौ धाई।
राम भजन की विधि को जानो तब हो भली भलाई।
नाही तो पीछे पछितेहौ रोये नहीं सेराई।
गया दास जिन जियत न जान्यौ मरि सो घण्टा पाई।१६।

दोहाः- जिस घर ते तू यहां पर आयो सुन हे जीव।
ता को पता लगाय ले, जीव से ह्वै जा सीव।१।
नाम रूप को जानि ले, जियतै में जो भाय।
गया दास कहैं छोड़ि तन, सो हरि पास में जाय।२।

२७३ ।। श्री ध्यान दास जी ।।

पदः- राम सिया छबि निरखौ नयनन तन मन प्रेम से नर औ नारी।१।
कनक भवन में राजत प्यारे बाम भाग में सोहैं प्यारी।२।

अनुपम झाँकी बरणि सकै को सुर मुनि फणपति शारद हारी।३।
ध्यान दास निशि बासर निरखै जोड़ी जुगुल पै तन मन वारी।४।

२७४ ।। श्री कमल दास जी ।।

पदः- राम सिया की झाँकी बाँकी कनक भवन में राजि रहे हैं।१।
निरखत बनै कहै छबि को कबि मनसिज रति बहु लाजि रहे हैं।२।
बाजत साज गान नित प्रति हो मुद मँगल तहँ छाजि रहे हैं।३।
कमल दास कहैं दरशन करिये सब में यही बिराज रहे हैं।४।

२७५ ।। श्री माता ईछरा जी ।।

पदः- ठुमरीः- चँचल चपल चटकीली राधे अलबेली।
भूषण बसन मनोहर सोहैं सुर मुनि नभ ते लखि कै मोहैं
ऐसी छरी छबीली राधे अलबेली।
दामिन सम दमकत सखियन में कज्जल शोभा दे अँखियन में
रँग सुभग अति पीली राधे अलबेली।
सखा सखिन के सँग में नाचत छम छम छम पग नूपुर बाजत
छेड़त तान रसीली राधे अलबेली।
दौरि श्याम को लिपटैं प्यारी छाय जाय चहुँ दिशि उजियारी
तन मन प्रेम में गीली राधे अलबेली।
नैन की सैन करै सब ओरी पकरैं सब चट हरि को दौरी
आप हँसत हरि ढीली राधे अलबेली।६।

२७६ ।। श्री वाजिद अली शाह जी ।।

शेरः- था राम कृष्ण शँकर हनुमत से प्रेम मेरा।
यह ख्याल मुझको हर दम तन में किये है डेरा।१।
दुनियावी ऐश करके सब दिन किया निवेरा।
वाजिद अली यह कहते अब भिश्त में बसेरा।२।

२७७ ।। श्री बलदी दास जी ।।
(गाँव- पिपरोला जिला - हरदोई)

पदः- आपै अपना खेल पसारा।
आपै देखैं आप देखावैं आपै करत बिचारा।
आपै निरगुण आपै सरगुण आपै ध्यान समाधि को धारा।

आपै नाम रूप हैं आपै आपै मातु पिता पति दारा।
आपै मित्र भ्रात सुत भगिनी आपै सुता नात परिवारा।५।

आपै राम रावणौ आपै आपै आप को करत संहारा।
आपै कृष्ण कंस हैं आपै आपै शिखा पकरि के मारा।
आपै आवैं आपै जावैं आपै आप को करत उबारा।
आपै काल अकाल आप ही आपै ज्ञान भानु उजियारा।
आपै अगम अपार आप ही आपै अकह अकथ संसारा।१०।

आप अथाह अलेख आप ही आप अनूप अमित सुख सारा।
आपै स्वामी आपै सेवक आपै दाता औ भिखियारा।
आपै शिष्य आप ही सतगुरु आपै भव औ खेवन हारा।
आपै पूजा पाठ जज्ञ जप आपै कहैं करैं परचारा।
आपै अपने रूप पै आशिक तन मन प्रेम करत एकतारा।१५।

आपै अपने नाम को सुमिरैं आपै बने शब्द रंकारा।
आपै बाजा आप बजावैं आपै गाय रिझावन हारा।
आपै ताल धुनी स्वर आपै आपै खुशी करैं जयकारा।
आपै साँकरि आपै कुण्डी आपै ताली कुलुफ किंवारा।
आपै सुख दुख आपै सहते आपै जान आपै अजान उदारा।२०।

आपै मुक्ति भक्ति तप आपै आपै मुद मंगल करतारा।
आपै नर्क स्वर्ग बनि बैठे आपै ता में करत बिहारा।
उत्पति पालन परलय आपै आपै सब कुछ नीक बेकारा।
बल्दी दास कहैं बिन जाने मानि लेंय ते बड़े लवारा।२४।

२७७ (अ) ।। श्री भोला दास जी ।।

चौपाई:- भोलादास कहैं मति भूल, राम नाम भव तारन मूल।
तन के असुर जौन प्रतिकूल, सो ह्वै जैहैं सब अनुकूल।
राम नाम का चलै त्रिशूल, कौन करै फिर तुम से तूल।
उठै कलेजे असुरन शूल, छिन छिन लागै शब्द कि हूल।
जाँय उपद्रव सब तब भूल, नाम को जारी राखौ रूल।५।

अन्धे बहिरे बने हौ लूल, नाम रूप को जानि के फूल।
हर दम नाम को करो वसूल, नाहिं तो परौ अगिनि के गूल।
ठीक यही है सब की मूल, गर्भ बास में फिर मति झूल।८।

२७८ ।। श्री मगण जी ।।

चौपाईः- मगण कहैं मुद मंगल ताको। नाम रूप मिलि जावै जाको।१।
सो निशि बासर रहै सुखारी। जप हो सन्मुख अवध बिहारी।२।

२७९ ।। श्री नगण जी ।।

चौपाईः- नगण कहैं हरि को सो पावै। जो हरि नाम से नेह लगावै।१।
तन मन से सो रहै अनन्दा। निरखै रूप सच्चिदानन्दा।२।

२८० ।। श्री भगण जी ।।

चौपाईः- भगण कहैं भजु भाँड़ा फूटै। द्वैत भाव सब तन से छूटै।१।
तब दरशैं घट घट के बासी। आदि अन्त के जो अविनाशी।२।

२८१ ।। श्री यगण जी ।।

चौपाईः- यगण कहैं जग आय के भाई। हरि सुमिरौ सब काम बिहाई।१।
जियतै में तब दरशन होवै। तन मन के सब पापन खोवै।२।

२८२ ।। श्री जगण जी ।।

चौपाईः- जगण कहैं जग जाल करारा। सुमिरि नाम भव होवौ पारा।१।
तब तन छोड़ि अमरपुर जावो। राम रूप ह्वै बैठक पावो।२।

२८३ ।। श्री रगण जी ।।

चौपाईः- रगण कहैं रामै पहिचानौ। या ते पावो पद निर्वानौ।१।
चौरासी का चक्कर भाई। छूटि जाय आनन्द निधि पाई।२।

२८४ ।। श्री सगण जी ।।

चौपाईः- सगण कहैं सब में हरि बासा। सुमिरौ नाम तो होय प्रकाशा।१।
जियति में जो हरि को नहि पाई। मरि के फिरि पीछे पछिताई।२।

२८५ ।। श्री तगण जी ।।

चौपाईः- तगण कहै तन मन चित लावो। सुमिरौ नाम परम निधि पावो।१।
नामै से सब सुख हो भाई। नामै सुर मुनि बड़ा बताई।२।

२८६ ।। श्री सन्त दास जी ।।

पदः- बेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुरान सब गाई।
पढ़ि सुनि कै कछु जानि न पायन छस्सै बरस बिताई।

हठ योगिन के संघ मे परिकै आयू लीन बढ़ाई।
संस्कार औ समय आयगो हरि सतगुरुहिं मिलाई।
नाम जपन की बिधि मोहिं सतगुरु सहजै दीन बताई।५।

राम सिया की झाँकी सन्मुख हर दम निरखौ भाई।
एक तार धुनि नाम कि होती मधुर मधुर सुखदाई।
अनहद बाजा बहु बिधि बाजैं मनुवाँ रह्यो लुभाई।
ध्यान समाधि लोक गो देखा फिरि साकेत मँझाई।
पानी पवन और तारागण रवि शशि वहाँ न जाई।१०।

महा प्रकाश बनै नहि बरनत जाय सोई सुख पाई।
अगणित सँत श्याम तन तँह पर बैठे जान न जाई।
राम ब्रह्म ऊँचे सिंहासन शक्ती हृदय समाई।
हरि तँह बोलैं और मौन सब इच्छा गत सो जाई।
तन मन प्रेम लगावै शब्द में दीन बनै बनि जाई।
सन्त दास कहैं सूर वही है जियतै जो लखि पाई।१४।

२८७ ।। श्री गोपाल दास जी ।।

पदः- सब सुर मुनि लोक जीवों का सरदार सँवलिया।
जो गौवों संग बन बन घूमें ओढ़े कमरिया।
माखन दहि को लूटि ले चट रोंकि डगरिया।
ग्वाल बाल संग में क्या करैं गुजरिया।
जल भरन सखी यमुना जावै फोरैं गगरिया।५।

यमुना में नहाते लखै लै भागै चदरिया।
देवै बजाय मधुर मधुर जहाँ मुरलिया।
सुधि बुधि न रहै तन की पड़ै प्रेम फँसरिया।८।

२८८ ।। श्री लक्ष्मण दास जी ।।

पदः- तन मन लुभाय कान्ह ने सूरत को दिखा कर।
सुध बुध हरी सब तन की है मुरली को सुनाकर।
मोरों के पँख का मुकुट शिर पर सुघर धरे।
कानो में कुण्डल सोहैं द्युति जैसे भास्कर।
भूषण वसन सँवारे चमकै सुघर सबी।५।

चलते हैं चाल लचकि कै नूपुर को बजाकर।
नैनों में जान पड़ता जादू भरा है क्या।
करते निगाह तिरछी है अबरू को नचाकर।
दिल चाहता है अपने मैं सीने को बिदारूँ।
बैठारि करके आप को सिऔं फेरि बनाकर।१०।

बिन्ती मेरी है मोहन कलपाओ मत हमैं।
मिलिये दया के सागर सीने से लगाकर।
देखा कई दफे तुम्है या से बेचैन हूँ।
यह बानि आप छोड़ौ बैठो न लुकाकर।
त्यागूँगा प्राण जब मैं कहते हैं दास लछिमन।
चरणो में आप के हरि सूरत को लगाकर।१६।

२८९ ।। श्री गुरुबख्श सिंह जी ।।

पदः- काहे काहे मोरी रोको गैल।१।
मैं यमुना जल भरनि जात हौं आय अचानक पकरत प्यारे
राखत हौ कछु मन में मैल।२।
कर मेरो पकरि कलाई मुरकायो बड़े निडर तुम नन्द के लालन
छरे छबीले छैल।३।
सब सारी मसकाई हम कैसे घर जाई रहि रहि पछिताई अकुलाई
संकुचाई तोहि लाज न आई अस ढीठ भैल।४।

२९० ।। श्री जवाहिर सिंह जी ।।

पदः- चतुर चपल चञ्चल चटकीलो यशुदा तेरो श्याम।
भोरै ते सब बीथिन निरखत दूध दही माखन सब लूटत
संग लिये ग्वाल तमाम।
बोलैं तो हंसि गारी देवैं गुद गुदाय सब तन को देवैं
काह करैं सब बाम।
रूप अनेक धरत हरि माई कौन भाँति हम बेचन जाई
नित प्रति का यह काम।
निशि को गृह गृह पहुँचै जाई लाज को तन से धोय बहाई
कोई सकै न थाम।५।
ना सोवैं ना सोवन पाई नैनन में छाई औंघाई छोड़ि जाँय बृज धाम।

ग्वाल बाल हम सब के लाला जन्मायन औ बहु बिधि पाला

सब हरि कीन निकाम।

हरि के कहै में परिकै सारे बिगड़ि गये हरि की मति धारे

नैकौ नहीं अराम।८।

२९१ ।। श्री शिव प्रसाद जी ।।

पदः- महरि सुनु अ र र र र र कान्हा है बड़ो तेरो ढीठ।१।

मैं दधि बेचन गृह से निकसी पीछे से सारी गहि खींचि मसक गई

च र र र र र कान्हा है बड़ो तेरो ढीठ।२।

यमुना जल भरि गृह को डगरी लै पिचकारी चट पट आय मारि दियो

स र र र र र कान्हा है बड़ो तेरो ढीठ।३।

राति जहाँ पै पौढ़ी माई देखा बैठो निडर सँवलिया पलँग कि पाटी

हिचिक तूरि दियो झ र र र र र कान्हा है बड़ो तेरो ढीठ।४।

२९२ ।। श्री राम औतार जी ।।

पदः- मग लूटै मेरो क्षीर यशुदा ये तेरो कन्हैया।१।

दूरहि ते लखि घात लगावै ग्वाल बाल सब लै कर धावै

आय पकरि ले चीर यशुदा ये तेरो कन्हैया।२।

आप् खाय औ ग्वालन देवै बोलैं हम तो घुड़की देवै

मेटुकी में भरि दे नीर यशुदा ये तेरो कन्हैया।३।

घर के लोग हमै रिसिआवै बृज को छोड़ि कहाँ हम जावैं

चलत न कछु तदबीर यशुदा ये तेरो कन्हैया।४।

२९३ ।। श्री राम सुख जी ।।

पदः- हरि तेरी टेढ़ी टेढ़ी निराखनि मन बश करि लीन।१।

बोलनि हँसनि चलनि अति प्यारी बरनत बनै न रसना हारी

लागि जात प्रेम कि तारी ऐसे चतुर प्रवीऩ।२।

गृह में हम से रहा न जावै बिन देखे जिय चैन न आवै

रैन दिवस बस यहि सुहावै भूँख प्यास सब छीन।३।

प्रेम भाव के भूखे प्यारे घट घट की सब जानन हारे

सब के नैनन के हौ तारे सब तुमरे आधीन।४।

२९४ ।। श्री दुर्गा दास जी ।।

पदः- कैसे कैसे गहो मो को श्याम।
दोउ कर पकरि के दिहेव लड़ाई चुरिया फूटि गिरे महि जाई
ऐसे निडर भयो दुख दाई कौन नीक यह काम।
हँसी मसखरी करना लाला ठीक नहीं यह सुनिये चाला
मातु पिता सुनिहैं जब हाला ह्वै हौ तब बदनाम।
लूगा रोटी पति मोहिं देते कबहूँ नहिं असि फजिहत करते
प्रेम भाव करि हमसे बोलते जिनकी हैं हम बाम।
नेक लाज तुमको नहि आवत हंसि हंसि कै कटु बचन सुनावत
ऐसे बैन हमैं नहिं भावत सूझत नहिं बसुयाम।५।

प्रिया से चलत नहीं चतुराई हम सब को नित पकरत धाई
मति तुम्हार हरिगै बैराई पहिरे हौ नर जाम।
निशि में घर घर उधुम मचावत नाक में दम सब की करि आवत
भोर होत अन्तर ह्वै जावत राजत अपने धाम।
बृज की सखी भरन जल जावैं आपै की कीरति सब गावैं
जो कछु बीतै सो बतलावैं हौ हरि सब गुन ग्राम।८।

चौपाईः- दुर्गादास कहैं कर जोरी। छोड़ि दीन हरि भागी गोरी।
जाय भवन में पहुँची प्यारी। गृह कारज में तन मन धारी।
सूरति हर दम श्याम पै राखै। ऊपर ते कछु औरे भाखै।
नित प्रति श्याम से खेल मचावैं। धनि बृजबासी यह सुख पावैं।
सुर मुनि के जे ध्यान न आवैं। तिनके संग में सब दुलरावैं।
सब हरि की नित जूठनि पावैं। प्रभु नित गृह गृह भोग लगावैं।६।

दोहाः- बृज की लीला को कहै शारद शेष चुपान।
जगत मातु पितु जहाँ पर करत नित्य गुण गान।।

२९५ ।। श्री गणेश दास जी ।।

पदः- आज राधे सोहैं श्याम के काँधे पर।
जोड़ी जुगुल कि छबि अति प्यारी सखा औ सखी बोलैं बलिहारी
धाय धाय पैकरमा करि।
नभ ते सुर मुनि लखि हरषावैं भाँति भाँति के फूल गिरावैं
जय जय कार रहे सब कर।

मुरली अधर पै धरि के प्यारे कूकि देत तन सुधि बिसरारे
सब को प्रभु लियो बश में कर।
दै थिरकैयाँ बहु बिधि नाचैं नूपुर छम छम छम छम बाजैं
प्रिया को नेकैं नाही खबर।५।

प्रतिमा सम पधरीं सुकुमारी नेकौं पलक न सकैं उघारी
दामिनि सम चमकैं ऊपर।
श्याम पीत परकाश निकलती लपटि के एकै में है मिलती
छाय जाय फिर बृज घर घर।
लै सुर दून तीन पर गावैं राग साज सम भेद न आवै
जड़ चेतन को चित दे भर।८।

दोहाः- श्याम बैठि के लेटिगे, भयो प्रिया को होश।
सखा सखी कहैं घर चलो क्यों प्रिया करतीं रोश।।

सोरठाः- अबहूँ नहि सन्तोष, काँधे बैठ्यौ श्याम के।
प्रेम में रहा न होश, मन मोह्यौ नर बाम के।।

चौपाईः- सखा सखिन के बचन सुहाये। सुनि हरि प्रियाहिं निरखि मुसुकाये।।
प्रिया हँसी सब हँसने लागे। सब हरि प्रिया के रस में पागे।।
सखा सखी राधे औ मोहन। चलि पहँचे निज निज फिर भवनन।।
नाना लीला नित प्रति करहीं बृज बासिन को मोद में भरहीं।।
दास गणेश चरण रज चहही। कृपा होय नैनन फल लहही।।

२९६ ।। श्री हरिहर दास जी ।।

पदः- श्याम राधे बने राधे श्याम बनीं ऐसी जोड़ी सुघर सुखमा को भनी।
भूषण बसन बदल तन पहिरयो मातु पिता त्रिभुवन के धनी।
प्रथमै रास भवन आ बैठे सखा औ सखी फिर पहुँचे गुनी।
नख शिख निरखैं बोलि न पावैं नभ ते सुर सब हँसत मुनी।
श्याम क तन लखै गौर वर्ण है राधे क तन जैसे नील मणी।५।

मन ही मन सब करत बिचारैं बैठे ठाढ़े जन औ जनी।
राधे ने बँशी बजाय दई तहँ प्रेम में सुधि बुधि सब की सनी।
रास करन सब हिलि मिलि लागे पहिले से प्रीति बढ़ाई घनी।
बिबिधि भाँति ते नाचत गावत साज बजावत खूब ठनी।
राधे के खेल को श्याम करैं तँह श्याम के खेल पै राधे चुनी।१०।

समता प्रिय प्रीतम की जानो फरक परत नहि एक कनी।
प्रगटि कै जै जै कार कियो तँह बीच सभा में सहस फनी।
निश्चय प्रेम करै हरि से तन असुरन आपै देंय हनी।
सो जाय साकेत में सुक्ख लहै आसन सिंहासन छत्र तनी।
जग में रहि पाप अनेक किह्यों सब माफ़ कियो नहिं एकौ गिनी।
हरि हर दास केरी बिनती घनश्याम कृपा निधि खूब सुनी।१६।

२९७ ।। श्री अवध प्रताप नारायण सिंह ।।

दोहाः- राधे कृष्ण शिवा शिव दाया मो पर कीन्ह।
पाप नाश सारे भये हरि पुर बैठक लीन्ह।।

चौपाईः- हरि हर सब की लज्जा राखैं। अवध प्रताप नरायन भाखैं।।
कछु स्नेह हमारी भाई। श्याम शम्भु से रही सदाई।।

सोरठाः- याही से हरि धाम पठ्यो मोको जानिये।
हरि हर सब गुण ग्राम, सत्य बचन मम मानिये।।

छन्दः- तन त्यागन स्वर्ग द्वार गयो तँह शंकर श्याम ने दर्श दियो।
संग राधे उमा जी राजि रही धुनि जै जै कार कि गाजि रही।१।
सिंहासन आवत एक लखा, रमणीक लगे तामे चार सखा।
मम सन्मुख आय के ताहि धरा, अति कोमल बिस्तर ता में परा।२।
तकिया दुइ छोटी एक बड़ी, अति गोल औ चिक्कन तामें पड़ी।
सँहासन बे आधार ठँगा जड़े ता में बहुत रंग के हैं नगा।३।
तन छूटत में नहि कष्ट भयो, जैसे सुख निद्रा में सोय गयो।
तन दिव्य चतुर्भुज मोहिं मिल्यौ, लखतै मन चित्त हमारो खिल्यौ।४।

चौपाईः- भूषन बसन गरुड़ पहिरावा। कर गहि सिंहासन बैठावा।
चलै पारषद लै सिंहासन। जाय उतार दीन इन्द्रासन।
इन्द्र के दरशन तँह पर कीन्हा। फिर सिंहासन पर चढ़ि लीन्हा।
लीन पारषद यान उठाई। पहुँचायो हरि पुर में धाई।
सिंहासन से उतरि के भाई। पहुँच्यो रमा बिष्णु ढिग जाई।५।

क्षीर समुद्र शेष पर आसन। मातु पिता बैठे कमलासन।
कीन प्रणाम चरण शिर नाई। मातु पिता ते आशिष पाई।
कह्यौ जाव अब करो बसेरा। कोटि वर्ष तक सुक्ख घनेरा।

फिरि वँह से चलि के हम आयन। दूसर सिंहासन तँह पायन।
बैठै लेटै जस हो इच्छा। सब प्रकार की तँह पर रच्छा।१०।

झूला एक झूलने हेता। दीन्ह मोहिं श्री कृपा निकेता।
शोभा तँह की बरनि न जावै। नर नारी तँह अति सुख पावैं।
कोइ बैठे कोइ लेटे झूले। भोजन मिलत समय अनुकूलै।१३।

दोहाः- बारह बर्ष क तन सुभग, नर नारिन को जान।
देखत ही बनि परत है, को करि सकै बखान।।

२९८ ।। श्री नैन शाह जी ।।

शेरः- भजन करने में बिघ्न डालता है काहे मना।
बिना कसूर ही के कर रहा है तनी तना।
काम औ क्रोध लोभ मोह मद को करदे फना।
जिन्होंने मुझको तुझको कोटिहू जनम से हना।
सख्त ऐसी है सज़ा जैसे कि लोहे के चना।५।

अगर न मानेगा तो पायगा फल दोज़ख घना।
ठगों का साथ छोड़ करके जो हरि रंग में सना।
वही फिर जाय अमरपुर में हरि का रूप बना।
मेरा वजीर है तू कहना मेरा मान ले।
छोड़ी कितनी हि शाही ख्याल करके जानले।१०।

फन्दा बड़ा खराब है आने व जाने का।
या से समझ जा प्यारे मतलब सिखाने का।
सूरति के संग जब तक लागैगा तू नहीं।
तब तक तो नाम की धुनी पावैगा तू नहीं।
देखैग तब तो झाँकी बाँकी अदा धरे।१५।

श्यामा औ श्याम सन्मुख मुरली अधर धरे।
कहैं नैन शाह मौका ऐसा न मिलेगा।
यह तन मन बशर का सुन्दर मुश्किल से मिलेगा।१८।

२९९ ।। श्री श्रुति निधान जी ।।

पदः- ढाई घड़ी क घण्टा होवै चौबिस घण्टा राति औ दिन।
पन्द्रह दिवस रैनि जब बीतै पखवरा एक लीजै गिन।

तीस दिवस औ रात्री बीतैं मास एक सब मानत हैं।
बारह मास क एक बर्ष भा सात दिवस सब जानत हैं।
इन्द्रपुरी बैकुण्ठ नर्क कैलाश के दिन जो कहे गये।५।

वँह पर जीव जौन कोइ रहते उनके भोग के कहे गये।
सहस बार चारों युग बीतैं तब बिधि का हो एक दिवस।
चौदह इन्द्र राज्य करि बदलैं करिकै भोग बिलास हवस।
ब्रह्मा जी के एक दिवस में बिष्णु कि एकै घड़ी भई।
बिष्णु कि एक घड़ी जब बीतै शिव की आधी घड़ी भई।१०।

श्रुति निधान कहैं राम नाम जपि पार होहु सुख पावो।
जा के अन्तरगत सब कछु है ता में चित्त लगावो।१२।

३०० ।। श्री काला देव जी ।।

पदः- अहा हाहा अहा हाहा अहा हाहा अहा हाहा।१।
इही हीही इही हीही इही हीही इही हीही।२।
उहू हूहू उहू हूहू उहू हूहू उहू हूहू।३।
एहे हेहे एहे हेहे एहे हेहे एहे हेहे।४।

३०१ ।। श्री लाल देव जी ।।

पदः- अहा हाहा इही हीही उहू हूहू एहे हेहे।१।
इही हीही अहा हाहा एहे हेहे उहू हूहू।२।
उहू हूहू एहे हेहे अहा हाहा इही हीही।३।
एहे हेहे इही हीही उहू हूहू अहा हाहा।४।

३०२ ।। श्री लाल परी जी ।।

पदः- मैं तो सरकार को खोजत फिरियां।१।
करतार यार दिलदार सोहावन कब तक मो को मिलियां।२।
दिन नहि चैन रैन नहि निंदिया लाली भई दोउ अंखियाँ।३।
लाल परी कहैं किरपा करि हरि मोहिं लगा ले छतियाँ।४।

३०३ ।। श्री सब्ज़ परी जी ।।

पदः- मैं तो साँवलिया को ढूँढत चलियाँ।१।
बिषय भोग में मन यह लपट्यौ या से देरी लगिया।२।

कबहूँ कपा करैंगे प्यारे नैनन सन्मुख लखियाँ।३।
सब्ज परी कहै सब्र बिना बनती नहिं कोई बतिया।४।

३०४ ।। श्री नीलम परी जी ।।

पदः- खोजत घूमौं मैं तो प्रीतम रसिया।१।
सुर नर मुनि जिनको नित ध्यावैं जो सब के उर बसिया।२।
ऐसा समय आइहै कबधौं जब मम सन्मुख हँसिया।३।
नीलम परी कहैं बनवारी तुम बिन धिक यह संसिया।४।

३०५ ।। श्री पोखराज परी जी ।।

पदः- ढूँढ़ि थकी मैं श्याम सजनवाँ।१।
कैसे मिलैं करूँ कौन जतनवाँ।२।
तन मन प्राण के रक्षक जो हैं। कब निरखौं भरि दोनों नयनवां।३।
पोखराज परी कहैं दरशन दीजै तलफत हूँ दिन रैनवाँ।४।

३०६ ।। श्री नान्हू दास जी ।।

पदः- सुनो बिनती सुनो बिनती सुनो बिनती ये नर दारा।
करो सतगुरु करो सतगुरु करो सतगुरु भव हो पारा।
धुनी होती धुनी होती धुनी होती जो रंकारा।
सुनो ताको सुनो ताको सुनो ताको हो सुख सारा।
रहै हर दम रहै हर दम रहै हर दम जो एक तारा।५।

सदा सन्मुख सदा सन्मुख सदा सन्मुख में करतारा।
ध्यान होवै ध्यान होवै ध्यान होवै सुघर प्यारा।
लखौ लीला लखौ लीला लखौ लीला हो मतवारा।
समाधी हो समाधी हो समाधी हो सबै टारा।
नहीं सुधि बुधि नहीं सुधि बुधि नहीं सुधि बुधि को समभारा।१०।

उतरि आवो उतरि आवो उतरि आवो वही तारा।
होय अनुभव होय अनुभव होय अनुभव अपरम्पारा।
तरौ तारो तरौ तारौ तरौ तारो जला जारा।
मिलै छुट्टी मिलै छुट्टी मिलै छुट्टी तब संसारा।
अभी फुरसत अभी फुरसत अभी फुरसत करो कारा।१५।

नहीं मानो नहीं मानो नहीं मानो तो बेकारा।
पड़ौ दोज़ख पड़ौ दोज़ख पड़ौ दोज़ख चलै आरा।
न कुछ चलिहै न कुछ चलिहै न कुछ चलिहै वहां चारा।
भजो हरि को भजो हरि को भजो हरि को जो निशि बारा।
कहैं नान्हू कहैं नान्हू कहैं नान्हू तब निस्तारा।२०।

करते जो ऐश यँह पर हरि को नहीं भजैं।
आवैंगे बार बार वह दुनियाँ को नहिं तजैं।
जब तक रहैं गरभ में उलटे बँधे पड़े।
मल मूत्र ही कि थैलिन के बीच में अड़े।
चौरासी लक्ष योनियों में काटते चक्कर।
नान्हू कहैं हरि भजन में करते हैं जीव मक्कर।२६।

३०७ ।। श्री नोखे दास जी ।।

पदः- करो गफ़लत करो गफ़लत करो गफ़लत बहुत भारी।
सुनो चित दे सुनो चित दे सुनो चित दे सब नर नारी।
भजन करिये भजन करिये भजन करिये तन मन वारी।
खुलैं पट तब खुलैं पट तब खुलैं पट तब हो उजियारी।
धुनी सुनिये धुनी सुनिये धुनी सुनिये हो एक तारी।५।

लखौ मोहन लखौ मोहन लखौ मोहन प्रिया प्यारी।
बिना सतगुरु बिना सतगुरु बिना सतगुरु के अँधियारी।
सत्य मानो सत्य मानो सत्य मानो शिरोधारी।
उठो चेतो उठो चेतो उठो चेतो बनै सारी।
चखौ अमृत चखौ अमृत चखौ अमृत तजौ खारी।१०।

कहाँ भूले कहाँ भूले कहाँ भूले हो घर वारी।
मिलै दोज़ख मिलै दोज़ख मिलै दोज़ख हो अति ख्वारी।
जिन्हैं ध्यावैं जिन्हैं ध्यावैं जिन्हैं ध्यावैं सुर मुनि झारी।
उन्हैं खोजौ उन्हैं खोजौ उन्हैं खोजौ कपट टारी।
बसे सब में बसे सब में बसे सब में वो हर बारी।१५।

अजब कौतुक अजब कौतुक अजब कौतुक किया जारी।
प्रेम कीजै प्रेम कीजै प्रेम कीजै लगै तारी।
दीन पाते दीन पाते दीन पाते तजि सुकुवारी।

मिलै पासै मिलै पासै मिलै पासै जगत धारी।
कहैं नोखे कहै नोखे कहैं नोखे तब बलिहारी।२०।

शेरः- कीजै हरि नाम खेती, देगी सुधार नेती।१।
पावो जब नाम रेती, मिलि जाव रूप सेती।२।
नोखे कहैं सगेती, जे हरि के रंग रँगेती।३।

३०८ ।। श्री नँगा दास जी ।।

पदः- नाम धन पा गये जे हैं उन्हीं की तो भलाई जी।
राम सीता रहैं सन्मुख छटा अनुपम सोहाई जी।
धुनी सब तन से जारी है और हर शै में छाई जी।
नाम औ रूप की सृष्टी सृष्टि उसमें समाई जी।
बेद औ शास्त्र सुर मुनि सब यही बानी सुनाई जी।५।

बिना सतगुरु नही बजती यह अति पावन बधाई जी।
दरश पाने ही से प्यारे नहीं होती रिहाई जी।
जाय बैकुण्ठ सुख भोगै लौटि यँह फेरि आई जी।
नाम जीप रूप जो पावै वही सच्चा कहाई जी।
ध्यान परकाश लय जानै लौटि फिर वह न आई जी।१०।

कहैं नंगा वही चंगा जियत में जो कमाई जी।
सदा निर्वैर औ निर्भय जो इस पदवी को पाई जी।१२।

३०९ ।। श्री कमला बाई जी ।।

पदः- श्री सतगुरु श्री सतगुरु श्री सतगुरु कि बलिहारी।
हटायो जिन हटायो जिन हटायो जिन तिमिर भारी।
मिलायो जिन मिलायो जिन मिलायो जिन धनुषधारी।
करायो जिन करायो जिन करायो जिन धुनी जारी।
नघायो जिन नघायो जिन नघायो जिन त्रिगुण पारी।५।

चढ़ायो जिन चढ़ायो जिन चढ़ायो जिन गगन बारी।
लखायो जिन लखायो जिन लखायो जिन लीला प्यारी।
पठायो जिन पठायो जिन पठायो जिन शून्य मारी।
पिलायो जिन पिलायो जिन पिलायो जिन अमी धारी।
जिलायो जिन जिलायो जिन जिलायो जिन मृत्यु हारी।१०।

मिटायो जिन मिटायो जिन मिटायो जिन कर्म कारी।
दिलायो जिन दिलायो जिन दिलायो जिन अचल तारी।१२।

३१० ।। श्री बिमला बाई जी ।।

पदः- सदा भक्तों कि ज़िन्दगानी रहे कायम रहे कायम।
जे हरि चरनों में रति ठानी रहे कायम रहे कायम।
किया तन मन धन कुर्वानी रहे कायम रहे कायम।
जियत में पायो सुखदानी रहे कायम रहे कायम।
शान्त मन कीन पहिचानी रहे कायम रहे कायम।५।

धुनी सुनते हैं निर्वानी रहे कायम रहे कायम।
दीनता प्रेम के खानी रहे कायम रहे कायम।
त्यागि जिन दीन सब कानी रहे कायम रहे कायम।
राव औ रंक सम जानी रहे कायम रहे कायम।
कर्म शुभ अशुभ भे फानी रहे कायम रहे कायम।१०।

लीन जिन धाम पहिचानी रहे कायम रहे कायम।
मुक्ति औ भक्ति के दानी रहे कायम रहे कायम।
उतारैं पार बहु प्रानी रहे कायम रहे कायम।
बतावैं युक्ति आसानी रहे कायम रहे कायम।
सार ही सार दे छानी रहे कायम रहे कायम।
मिलै आनन्द मन मानी रहे कायम रहे कायम।१६।

३११ ।। श्री टीका दास जी ।।

पदः- वही ज्ञानी वही ध्यानी वही लय जाय दें सानी।
वही योगी वही भोगी वही सब सृष्टि के खानी।
वही उत्पति वही पालन वही परलय वही जानी।
वही कहते वही सुनते वही कटु औ मधुर वानी।
वही तारैं वही तरते वही सब सहते हैरानी।५।

वही खाते वही पीते वही सोवैं बसन तानी।
दशा सिद्धा कि ये बातैं बिना सतगुरु न कोइ जानी।
दास टीका कहैं समझो लय तब आप मनमानी।८।

३१२ ।। श्री पहलवान दास जी ।।

पदः- भजन जिसने किया हरि का वही नर तन क फल पाया।
बजा कर नाम का डंका राम सीता को अपनाया।
सदा सन्मुख रहै झाँकी सगुन निर्गुण जो कहलाया।
रमे सब में वही स्वामी उन्ही की सब यह है माया।
दीनता प्रेम से मिलते यही प्रभु को सदा भाया।५।

आप को मेटि जो देवै करैं ता पर तुरत दाया।
सहारे जो रहै हरि के और सब बात बिसराया।
वही सच्चा बहादुर है दास पहलवान गुन गाया।८।

३१३ ।। श्री मृत्यु लोक जी ।।

चौपाईः- मम आवरण में जो कोइ आवैं। हरि को भजैं ते हरि पुर जावैं।१।
ब्रत अरु धर्म करैं नर दारा। ते जावैं बैकुण्ठ मँझारा।२।
पर उपकार तीर्थ करि आवैं। ते सीधे बैकुण्ठ को जावैं।३।

दोहाः- नाना भांति के धर्म्म हैं, सुर मुनि बेदन गाय।
तन मन प्रेम ते करैं जे, ते बैकुण्ठ को जाँय।१।
तीनि अंश यदि धर्म्म है, एक अंश है पाप।
पाप क तब न निशाय कछु, धर्म्म देत है ढाँप।२।

चौपाईः- अधिक पाप जे प्राणी करते। ते सब जाय नर्क में परते।
पाप पुण्य जब सम ह्वै जावैं। तब फिर मानुष का तन पावैं।
भजन क मार्ग बड़ा सुखदाई। हर दम सुमिरौ तन मन लाई।
सुनौ शब्द धुनि मधुर सुहावन। सन्मुख निरखौ छवि मन भावन।
ध्यान प्रकाश समाधी जानौ। निज घर को तब तो पहिचानो।५।

सब लोकन को जाय मँझाओ। जियते में सब तै करि आवो।
इच्छा सब गत होवै भाई। तब तन छोड़ि सत्य पुर जाई।
हरि निज रंग रूप करि लेवैं। उर लगाय फिर आसन देवैं।
अनुपम सिंहासन पर राजैं। को बरनै सुर मुनि लखि लाजैं।९।

दोहाः- अमृत दीन पिआय हरि भूँख प्यास गइ भूल।
नूर तन को लाहौ मिल्यौ, जौन यथारथ मूल।१।
प्रतिमा सम पधरे रहैं, सदा एक रस जान।

मुख नेकौं खुलिहै नहीं, मानौ बचन प्रमान।२।
सतगुरु से उपदेश लै, सुमिरौ आठौ याम।
सोई वँह पर जाइहैं, पावैं अचल मुकाम।३।

चौपाईः- समय अमूल्य भजन बिन खोवैं। अन्त में ते निशि बासर रोवैं।
पढ़ि सुनि के ये अमल न करते। ते सब रव रव नर्क में परते।
सुर मुनि बेद भजैं जेहि भाई। ता को तजि कोइ कहाँ को जाई।
भोगी कल्पन अति दुख पाई। चौरासी पर चक्कर खाई।
ज्ञानी बनि के कथते ज्ञाना। ज्ञान क रूप नहीं पहिचाना।५।

सर्गुण को माया बतलावैं। निर्गुण स्वयं ब्रह्म ठहरावैं।
हरि का मानो चारज लीन्हा। ऐसी मति मलीन है कीन्हा।
गिरहिन के दरवाज़े जावैं। चिकनी चुपड़ी उन्हैं सुनावैं।
भोले भाले लोग लुगाई। आदर करते चित्त लगाई।
भांति भांति के भोजन पावैं। उत्तम पलँगा परि हर्षावैं।१०।

स्वामी बनि कै पग दबवावैं। पर दारन संग पाप कमावैं।
सतगुरु सो जो सत्य लगावै। भेद भाव मन में नहिं लावै।
आप तरैं औरन को तारैं। दया धर्म उर में अति धारैं।
शिष्य वही जग में परवीना। तन मन सतगुरु को दै दीना।
सो निज ठौर ठेकाना कीन्हा। जानि मानि निर्भय पद लीन्हा।१५।

भजन करैं हमहूँ हरि केरा। निशि बासर है सुक्ख घनेरा।
झाँकी युगुल सामने प्यारी। सीता मातु पिता धनुधारी।
एकतार धुनि नाम कि जारी। अनहद बाजैं मंगल कारी।
जेहि दिशि देखौ नज़र उठाई। तेहि दिशि मातु पिता छबि छाई।
सहौं भार सब जो परि जावै। मो को नेकौ नहीं बिसावै।२०।

दोहाः- अजर अमर हौं नाम जप, सत्य कहौं हर्षाय।
मृत्यु लोक कहैं बचन मम, मानै सो सुख पाय।।

३१४ ।। श्री बजरंग दास जी ।।

दोहाः- योगी कोविद कवि वही, जंगम वही नरेश।
मुल्ला आदम गदा वह, पीर वही दरवेश।१।
शिष्य वही सतगुरु वही, धरयौ वही सब भेष।

वही करत दीदार है, वही हर जगह पेश।२।
कहैं दास बजरंग यह, हरि को भजै हमेश।
तन छूटै चढ़ि यान में, पहुँचि जाय हरि देश।३।

३१५ ।। श्री हरि दास जी ।।

पदः- कृष्ण राधे कि छबि अनुपम वरनने में न आती है।
देखि कै सुर व मुनि मोहैं सबों के दिल चुराती हैं।
महकता है बदन सारा फुलेलो इत्र से हर दम।
त्रिबिधि वायु चलै निशि दिन महक बृज भर में छाती हैं।
करैं अस्नान यमुना जल में जा कर के जुगुल जोड़ी।५।
बलैयां यमुना जी लेतीं बिहँसि गोदी उठाती हैं।
पगों के नूपुरों की धुनि चलत में होती है छम छम।
मधुर मुरली बजा देते तो सब सुध बुध भुलाती हैं।
चाल चितवनि अजब प्यारी निरखते बनती क्या कहना।
श्याम औ पीत परकाशैं निकल सब ओर जाती हैं।१०।
मुलायम बदन ऐसे हैं कि जैसे दूध का फेना।
चँवर मधु पुरी नित ढोरैं अवनि बिस्तर लगाती हैं।
कहैं हरि दास सतगुरु करि लखौ सब ठौर ही बैठे।
धुनी औ ध्यान परकाशा दशा लय सब सँघाती हैं।१४।

(२)

सदा सिया राम राधे श्याम लक्ष्मी बिष्णु को भजिये।
श्री सतगुरु के चरणो की रेणु लै दृगन में अँजिये।
ध्यान परकाश धुनि लय हो नाम के साथ तो मँजिये।
लखौ झाँकी सुघर बाँकी द्वैत तन मन से जब तजिये।
सूरति को शब्द पर धरि कै सत्य पद प्राप्त करि सजिये।५।
कीरतन सुर व मुनि करते संग में प्रेम करि गजिये।
दीनता शान्ति माता की गोद में बैठि पय पिजिये।
कहैं हरि दास तब प्यारे पुत्र पितु मातु के भजिये।८।

३१६ ।। श्री दुर्गा दास जी ।।

पदः- जागता है वही जग में जिसे सतगुरु भेटाया है।
सुरति औ शब्द का मारग बता संशय हटाया है।

धुनी अन्दर कि जारी की रूप सन्मुख डटाया है।
पाप के बाप को कसिकै मही नीचे पटाया है।
चखा अमृत अमित पावन करम की गति मिटाया है।
दास दुर्गा कहैं हरि ने समय पर सब जुटाया है।६।

३१७ ।। श्री भैरव दास जी ।।

पदः- जागता है वही जग में जिसे सतगुरु जगाया है।
शब्द का भेद दे करके धुनी में मन लगाया है।
रूप सन्मुख रहै हर दम ध्यान लय में पगाया है।
द्वैत की फ़ौज को तन से मारि करके भगाया है।
दीनता प्रेम की सेना हिफ़ाजत हित मँगाया है।
दास भैरव कहैं सुनिये सोई हरि रँग रँगाया है।

३१८ ।। श्री मोहन दास जी ।।

पदः- जागता है वही जग में जिसे सतगुरु लखाया है।
नाम औ रूप रस अनुपम दया करि के चखाया है।
मृत्यु से हाथ जोड़वा के हारि मुख ते भखाया है।
हमारे जे हितू तन में उन्हैं खुब सिख सिखाया है।
चोर सब पकड़ि के बाँधे अवनि नीचे रखाया है।
कहैं मोहन बिना सुमिरै करम निज को झखाया है।६।

३१९ ।। श्री शिवनाथ जी ।।

पदः- जागता है वही जग में जिसे सतगुरु शब्द दीन्हा।१।
धुनी एकतार सुनता है रूप सन्मुख में करि लीन्हा।२।
ध्यान परकाश लय पायो देव मुनि प्रेम सँग कीन्हा।३।
कहैं शिवनाथ सो हरि का जियत निज धाम जो चीन्हा।४।

३२० ।। श्री हरितीर्थ जी ।।

पदः- जागता है वही जग में जो सतगुरु चरण अनुरागी।
कर्म शुभ अशुभ हत ह्वैगे नाम की धुनि जहां जागी।
छटा छबि छा गई सन्मुख प्रेम तन मन गयो पागी।
ध्यान परकाश लय जान्यो परम पावन वो बड़भागी।
अन्त में अचल पुर जावैं स्वप्न जिमि देर नहिं लागी।
कहैं हरि तीर्थ नर तन यह बिना सुमिरन के हो बागी।६।

३२१ ।। श्री केशव भारती ।।

पदः- हम तो हर दम ही श्यामा श्यामै लखैं।
केशव भारती बचन यह साँचे भखैं।
हरि के नाम कि धुनि पै सूरति रखैं।
क्या अनुपम अभी रस मन भर चखैं।
नहिं परदा नेकहू दुइ का रखैं।५।

जे सतगुरु से मारग ये नाहीं सिखैं।
ते कर्मन को अपने नाहक झखैं।
ज्ञान पढ़ि सुनि कहैं औ तन मन मखैं।८।

३२२ ।। श्री आत्मा राम जी ।।

दोहाः- सुमिरन जे जन नहि करैं, ते पीछे पछिताहिं।
काम बिगारैं आपनो, उल्टा पीटे जाहिं।१।
यम स्थूल शरीर को, मारैं खूब अघाय।
सूक्षम तन निकसै तबै, ता को बाँधै धाय।२।
लै जावैं तब नर्क में, देवैं खूब सजाय।
पल भर कल पावैं नहीं, हाय हाय चिल्लाय।३।

सोरठाः- कहैं आत्मा राम, सुमिरन ही सुख सार है।
भजैं जे आठों याम, सोई जग से पार है।।

३२३ ।। श्री चितरंजन दास जी ।।

शेरः- भारत के बासियों को सुख होने वाला है अब।
थोड़े हि दिन हैं बाकी दुख धोने वाला है अब।
जैसा समय जब आता वैसा हि होता है तब।
कर्मानुसार भाई दुख सुख ये होता है सब।
भजि राम कृष्ण नाम को हरि धाम हम गये।
चितरंजन दास कहते लखि तँह मगन भये।६।

३२४ ।। श्री शुकरू जी ।।

पदः- सदा कायम रहैं हरि जन बधाई है बधाई है।
करैं तन मन से हरि सुमिरन बधाई है बधाई है।

लखैं सिय राम जीवन धन बधाई है बधाई है।
मिलै धुनि ध्यान लय रोशन बधाई है बधाई है।
तरैं तारैं जियत बहु जन बधाई है बधाई है।
कहैं शुकरू मगन तन मन बधाई है बधाई है।६।

३२५ ।। श्री कन्हई दास जी ।।

पदः- सभा में जौन कोइ आये उन्हैं मैं शिर नवाता हूँ।
सभों के चरणों की रज लै शीश निज पै चढ़ाता हूँ।
क्षिमा करिये मेरी त्रुटियों को जो कुछ मैं सुनाता हूँ।
मुबारक होंय दिन सब को यही हरि से मनाता हूँ।
रहै जारी सदा उत्सब यह तन मन से मैं चहता हूँ।
कहैं कन्हई सदा निर्भय और निर्बैर रहता हूँ।६।

३२६ ।। श्री शुकई जी ।।

पदः- सभासद जौन हैं आये उन्हैं यह दिन मुबारक हो।
बचन अमृत जे बरसाये उन्हैं यह दिन मुबारक हो।
सुना जिन तन मन हुलसाये उन्हैं यह दिन मुबारक हो।
धन्य जे सब को बोलवाय उन्हैं यह दिन मुबारक हो।
धर्म के मार्ग मन भाये उन्हैं यह दिन मुबारक हो।५।

सदा शुभ कार्य में धाये उन्हैं यह दिन मुबारक हो।
वही नर तन को फल पाये उन्हैं यह दिन मुबारक हो।
चरणों में शुकई शिर नाये उन्हैं यह दिन मुबारक हो।८।

३२७ ।। श्री जुम्मन जी ।।

पदः- हुई गलती हुई गलती हुई गलती जो है भारी।
करो मत गम करो मत गम करो मत गम ऐ नर नारी।
भजन करिये भजन करिये भजन करिये तन मन वारी।
खता बख्शैं खता बख्शैं खता बख्शैं गे बनवारी।
नहीं होगी नहीं होगी नहीं होगी कभी ख्वारी।५।

धुनी खुलिहै धुनी खुलिहै धुनी खुलिहै वो एकतारी।
लखौ झाँकी लखौ झाँकी लखौ झाँकी युगुल प्यारी।
ध्यान लय हो ध्यान लय हो ध्यान लय हो औ उजियारी।

करौ मुरशिद करौ मुरशिद करौ मुरशिद बनै सारी।
खिली तन में खिली तन में खिली तन में है फुलवारी।१०।

टहलिये तो टहलिये तो टहलिये तो चमन क्यारी।
महक रहती महक रहती महक रहती अजब जारी।
न कछु मुश्किल न कछु मुश्किल न कछु मुश्किल अभी बारी।
गरीबी लो गरीबी लो गरीबी लो जो दिलधारी।
मुहब्बत हो मुहब्बत हो मुहब्बत हो लगै तारी।
कहैं जुम्मन कहैं जुम्मन कहैं जुम्मन तब बलिहारी।१६।

शेरः- जुम्मन कहैं इस खेल को जो जान पायगा।
सो बेधरक तन छोड़ हरि के पास जायगा।।

३२८ ।। श्री सत्य नारायण दास जी ।।

पदः- भजन श्री हरि का करने में महा सुख है महा सुख है।
शरनि सतगुरु की चलने में महा सुख है महा सुख है।
मार्ग सुमिरन क खुलने में महा सुख है महा सुख है।
नाम धुनि हरदम सुनने में महा सुख है महा सुख है।
युगुल छबि सन्मुख लखने में महा सुख है महा सुख है।५।

ध्यान लय नूर मिलने में महा सुख है महा सुख है।
देव मुनि संग खेलने में महा सुख है महा सुख है।
दीनता धैर्य्य धरने में महा सुख है महा सुख है।
बचन कटु मृदुल सहने में महा सुख है महा सुख है।
धर्म निष्काम करने में महा सुख है महा सुख है।१०।

भोजन जल अर्पि पाने में महा सुख है महा सुख है।
सदा निर्बैर रहने में महा सुख है महा सुख है।
प्रेम के पथ पै परने में महा सुख है महा सुख है।
मन को निज बश में करने में महा सुख है महा सुख है।
तन को अपने हि शोधन में महा सुख है महा सुख है।१५।

सदा इसमें बिचरने में महा सुख है महा सुख है।१
चक्र षट तन के बेधने में महा सुख है महा सुख है।
सातहू कमल खिलने में महा सुख है महा सुख है।

शक्ति कुण्डलिनी जगने में महा सुख है महा सुख है।
बचन सतगुरु क गहने में महा सुख है महा सुख है।२०।

एक रस हो के पगने में महा सुख है महा सुख है।
ख्याल में मस्त रहने में महा सुख है महा सुख है।
जियत सब प्राप्त करने में महा सुख है महा सुख है।
अन्त साकेत चलने में महा सुख है महा सुख है।२४।

३२९ ।। श्री रंगी राम जी ।।

पदः- श्री हरि नाम सुमिरन बिन भला हरगिज नहीं होगा।
लाभ नर तन क लै लीजै बने बैठे हो क्यों चोगा।
आय यमदूत जब पिटिहैं तूरि सब देंय नस पोंगा।
सहायक कौन है तेरा जो फैलाये यहां ढोंगा।
करो सतगुरु नाम जानो रूप से होय सँयोगा।५।

जियत अभ्यास करि जानै मगन तन मन से सोइ लेगा।
कहैं रंगी राम तब प्यारे कटै आवागमन रोगा।७।

३३० ।। श्री नज़ीर जी ।।

गज़लः- तन मन लुभा लिया है घनश्याम हँसते हँसते।
निर्मल किया हिया है घनश्याम हँसते हँसते।
नूपुर छमा छम बाजैं नाचैं हमारे सन्मुख।
अमृत छका दिया है घनश्याम हँसते हँसते।
मुरलि कि तान सुनकै सुध बुध सबै भुलाती।५।

कैसा हिला लिया है घनश्याम हँसते हँसते।
सीने लगा के चट पट लेते हैं बोसा प्यारे।
ऐसा सितम किया है घनश्याम हँसते हँसते।
जिसने किया न सुमिरन मानुष के तन को पाकर।
उस से भला छिया है घनश्याम हँसते हँसते।१०।

धुनि नूर ध्यान लय सब पासै में हैं तुम्हारे।
मुरशिद मिला दिया है घनश्याम हँसते हँसते।
अब जान करके भाई खोलो तो ताला अपना।
सुन्दर समय दिया है धनश्याम हँसते हँसते।

कहते नज़ीर जानो तन मन से प्रेम हो जब।
सबका यही जिया है घनश्याम हँसते हँसते।१६।

३३१ ।। श्री स्वामी शिवपुरी जी ।।

पदः- चित चेतो करो मत अरचन कमर कस कर कस कर कस कर।
करो तन मन प्रेम से सुमिरन करो सदा डट कर डट कर डट कर।
कर सतगुरु बिधि जानो मिटै चक्कर चक्कर चक्कर।
फिर समय न ऐसा पैहौ करत मक्कर मक्कर।
सुनो नाम कि धुनि अति प्यारी सुरति धर कर धर कर धर कर ।५।

होंय सन्मुख अवध बिहारी सुफल तन कर तन कर तन कर।
मिलै ध्यान औ लय उजियारी कर्म हत कर हत कर हत कर।
सब सुर मुनि दर्शन देवैं प्रेम भर कर भर कर भर कर।
जिन नाम को सुमिरन कीन्हयों प्रभुहिं बश कर बश कर बश कर।
दीनता शान्ति करि धारण रहौ बच कर बच कर बच कर।१०।

तब असुर फेरि नहिं करिहैं कभी टक्कर टक्कर टक्कर।
शिव पुरी कहैं तन छूटै चलौ हँस कर हँस कर हँस कर।१२।

३३२ ।। श्री लाल दास जी ।।

(अवध वासी)

दोहाः- शान्ति दीनता हृदय धरि हरि का सुमिरन कीन।
या से हरि ने भेजि मोहिं पर बिष्णु ढिग दीन।१।
लाल दास कहैं और कोइ बिधि हम जान न पाय।२।
साधारण जो रीति है, सोइ तन मन गइ भाय।२।

३३३ ।। श्री जगन्नाथ दास जी ।।

(श्री मंझले महाराज जी, छावनी, अयोध्या)

चौपाईः- हवन कीन हरि नाम उचारा। गुरु गादि सेवा मन धारा।१।
सन्तन की सेवा कछु कीन्हा। या से हरि मोहिं हरि पुर दीन्हा।२।
तीनि बिष्णु के दरशन करिकै। तब फिर गयऊँ प्रेम में भरिकै।३।
परनारायण धाम में जाई। दीन पारषद मोहिं बिठाई।४।

दोहाः- जगन्नाथ कहैं आय जग, भजै राम को नाम।
अन्त समय संशय नहीं, जावै हरि के धाम।१।

३३४ ।। श्री मणीराम दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- नाम जपै सन्तन सनमानै। पूजा पाठ में भेद न मानै।१।
हरि के कार्य में तन मन लावै। सो हरि धाम में बैठक पावै।२।
साधारण रीती यह जानै। तन मन प्रेम लगाय के मानै।३।
मनि राम कहैं सो सुख पावै। पर नारायण के ढिग जावै।४।

३३५ ।। श्री वैष्णव दास जी ।।
(अवध वासी)

दोहाः- सुमिरन पूजन पाठ औ सन्तन की सेवकाय।
करैं जे तन मन प्रेम ते ते हरि धाम को जाँय।१।

सोरठाः- कहैं वैष्णव दास, या में कछु संशय नहीं।
पर नारायण पास, बैठक सो पावै सही।१।

३३६ ।। श्री मुरारी दास जी ।।
(अवध वासी)

दोहाः- राम नाम सुमिरन करै, पाठ करै मन लाय।
सेवा ठाकुर की करै, सो हरि धाम को जाय।१।

सोरठाः- कहते दास मुरारि, राम गरीब नेवाज़ हैं।
बिगरी देत सुधारि, भक्तन के शिरताज हैं।१।

३३७ ।। श्री प्रह्लाद दास जी ।।
(अवध वासी)

दोहाः- तन मन प्रेम लगाय कै, जपै राम का नाम।
सेवा ठाकुर की करै, पावै सो हरि धाम।१।
प्रह्लाद दास कहैं निष्कपट जब तक जीव न होय।
तब तक वह हरि से बिमुख, दरशन कैसे होय।२।

३३८ ।। श्री पण्डित भगवान दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- श्री गुरु चरण में हो विश्वासा। सो हरि पुर में पावै बासा।१।
जीव मात्र पर दाया राखै। खरा स्वभाव झूठ मति भाखै।२।
भोजन बसन कि तृष्णा त्यागै। तब बिराग फिर वाको जागै।३।
हरि में तब होवै अनुरागा। तब वह जीव जानिये जागा।४।

सोरठाः- कहैं दास भगवान, ता को नर तन सुफ़ल है।
नाहीं तो हैरान, दोनो ओर बिफ़ल है।।

३३९ ।। श्री पं. उमापति जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- बहु बिप्रन को शास्त्र पढ़ायन। कर्म धर्म के मार्ग सिखायन।१।
सुमिरन दान पाठ कछु कीन्हा। या से हरि मोहिं हरि पुर दीन्हा।२।

दोहाः- उमा दत्त कहैं धन्य वै, जे सुमिरैं बसुयाम।
उनकी पदवी बड़ी है, पावैं अचल मुकाम।।

३४० ।। श्री बब्बन पति जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- हरि सुमिरन सरयू अस्नाना। कीन जहां तक तन मन माना।१।
कछु गौवन के प्राण बचायन। या से हरि पुर बासा पायन।२।

दोहाः- बब्बन पति कहैं जगत में रहै जब तलक जौन।
तब तक शुभ कारज करै, अन्त जाय हरि भौन।।

३४१ ।। श्री तुलसी दास जी ।।

चौपाईः- माला से हरि सुमिरन कीन्हा। करि किरपा हरि हरि पुर दीन्हा।१।
तुलसी दास कहैं नर दारा। जपौ माल भव होवौ पारा।२।

३४२ ।। श्री राम फल दास जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- सदा दीनता तन में धारा। ठाकुर सेवा तन मन वारा।१।
या से हरि पुर पहुँचेन जाई। श्री गुरु के ढिग बैठक पाई।२।

सोरठाः- कहैं राम फल दास, हरि सेवा फल मिलि गयो।
तन मन सदा हुलास, हर दम मंगल तँह छयो।१।

३४३ ।। श्री द्वारिका प्रसाद जी ।।

(अवध वासी)

दोहाः- माला से हरि को सुमिरि, दीन भाव उर लाय।
कहैं द्वारिका हम गयन, हरि पुर बैठक पाय।१।

३४४ ।। श्री रघुनाथ दास जी ।।
(अवध वासी)

छन्दः- संग्रह किया बिश्राम सागर नाम हरि सुमिरन किया।१।
हरि धाम में बैठक मिली नर तन क फल हरि मोहिं दिया।२।
रघुनाथ दास क बचन यह धरि लेंय जे अपने हिया।३।
हरि कथा सुमिरन में समय जे देंय ते हरि पुर लिया।४।

३४५ ।। श्री राघौ दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- संतन की सेवा कछु कीन्हा। सुमिरन पाठ में कम मन दीन्हा।१।
प्रभु कृपा करि हरि पुर दयऊ। निरखत आनँद तन मन भयऊ।२।
राघौदास कहैं सुनि लीजै। तन मन प्रेम से सुमिरन कीजै।३।

३४६ ।। श्री राम दास जी भंगेड़ी ।।
(अवध वासी)

दोहाः- हरि सुमिरन जैसा चही वैसन ही हम कीन।
हरि पुर में बासा मिल्यौ सत्य बचन कहि दीन।१।
राम दास कहैं हरि भजन करै जो निशि औ बार।
सो साकेत में पग धरै होवै जग से न्यार।२।

३४७ ।। श्री मधुर अली जी ।।
(अवध वासी)

दोहाः- राम सिया के नित्य मैं, साजौं रूप बनाय।
यही भावना मन बसी, और न मोहिं सोहाय।१।
आसन पर बैठारि के, माला गले पिन्हाय।
तन मन प्रेम लगाय के, गान करौं नित भाय।२।
फिर मिष्ठान पवाय के, करौं आरती लाय।
दाया प्रभु मोपर करी हरि पुर दीन पठाय।३।
मधुर अली की बिनय को, सुनिये सब नर नारि।
प्रीति करौ सिय राम से बिगरी देंय सुधारी।४।

३४८ ।। श्री राम सखे जी ।।
(अवध वासी)

दोहाः- तन मन प्रेम से भाव मम, हरि हमरे हैं मीत।
एक दिवस हरि मिलि गये उर लगाय कह्यौ मीत।१।
अन्त समय हरि धाम को गयों हर्षि चढ़ि यान।
राम सखे कहैं बचन मम, सत्य लीजिये मान।२।

३४९ ।। श्री सीता शरण जी ।।
(अयोध्या जी)

चौपाईः- राम नाम को सुमिरन कीन्हा। सेवा पूजा में मन दीन्हा।१।
दीन भाव हिरदय में राखा। पढ़ि सुनि रामायण रस चाखा।२।
लाल साहेबै आई दाया। अन्त में हरि पुर मोहिं पठाया।३।
सीता शरण कहैं सुख भारी। बरनि सकै क्या जीभ बिचारी।४।

३५० ।। श्री लक्ष्मण शरण जी ।।

चौपाईः- सुमिरेन राम सिया को नामा। पायन अन्त समय हरि धामा।१।
शोभा वहँ की वरनि न जावै। निरखि के तन मन अति सुख पावै।२।
भांति भांति झूला सिंहासन। नर नारिन का तिन पर आसन।३।
लछिमन शरन कहैं हरखाई। सुमिरन करी सो हरि पुर जाई।४।

३५१ ।। श्री भगवान दास सखी जी ।।
(अयोध्या जी)

चौपाईः- राम सिया सुमिरै सुख लहई। सदा दीनता उर में रहई।१।
प्रेम भाव संतन संग राखै। मीठे बचन सबन से भाखै।२।

दोहाः- भगवान दास कहैं अन्त में, जावै हरि के धाम।
ऐसे करूणा सिन्धु हैं, बार बार परणाम।१।

३५२ ।। श्री द्वारिका दास, झाड़ूबरदार जी ।।

चौपाईः- सुमिरन पाठ नेम से करिये। अन्त समय हरि धाम सिधरिये।१।
कहैं द्वारिकादास सुनाई। हरि को भजिये छल तजि भाई।२।

३५३ ।। श्री घनश्याम शरण जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- त्यागि कपट हरि सुमिरन कीजै। तब हरि धाम में वासा लीजै।१।
घनश्याम शरन कहैं सो सुख पावै। द्वैत भाव जो हृदय न लावै।२।

३५४ ।। श्री फकीरे राम जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- सिया राम सुमिरै जो कोई। अन्त में हरि पुर बैठे सोई।१।
कहैं फकीरे राम सुनाई। सुमिरन ते सब दुःख नसाई।२।

३५५ ।। श्री संगति बख्श जी ।।

(अवध वासी)

दोहाः- राम नाम अजपा जपै, सो होवै भव पार।
संगति बख्श कहैं सुनो, विहँग मार्ग सुखसार।।

३५६ ।। श्री सहज राम जी ।।

(अवध वासी)

दोहाः- अजपा जाप को जानि ले, सोई भव से पार।
सहज राम कहैं होय तेहि, हर दम ही दीदार।।

३५७ ।। श्री काठ जिह्वा स्वामी ।।

दोहाः- सोऽहं अजपा जो जपै, सुर मुनि दर्शन देंय।
अन्त समय हरि कृपा करि, पास आपने लेंय।।

३५८ ।। श्री बाबा जै राम दास जी ।।

(जमाति वाले)

दोहाः- जपेन माल निष्कपट ह्वै, कहैं दास जै राम।
अन्त समय हम यान चढ़ि पहुँचि गयन हरि धाम।१।
सन्तन की किरपा भई, दीन्ह्यों मोहिं उबार।
सेवा उनकी जो करै, सो होवै भव पार।२।

३५९ ।। श्री धीरम दास जी ।।
(जमाति वाले)

चौपाईः- हरि सुमिरन संतन सेवकाई। ठाकुर सेवा पाठ सोहाई।१।
धीरम दास कहैं सुख दाई। अन्त समय हरि पुर पहुँचाई।२।

३६० ।। श्री भीषम दास जी ।।
(जमाति वाले)

दोहाः- संतन की सेवा करै, हरि का सुमिरै नाम।
ठाकुर सेवा पाठ करि, जावै हरि के धाम।१।
भीषम दास कि बिनय यह, बिरथा समय न जाय।
हरि ही के कारज बिषे, देवै देह बिताय।२।

३६१ ।। श्री निहाल दास जी ।।

दोहाः- चिता के ऊपर बैठि कै, राम राम कहि जान।
निहाल दास कहैं जारि तन, छोड़ि दीन हम प्रान।१।
बास मिल्यो बैकुण्ठ में, आवा गमन मुकाम।
या की गणना जगत में, बात मानिये आम।२।

चौपाईः- नाम रूप लीला औ धामा। शून्य समाधि जानि निज जामा।१।
मरै बासना निर्भय होवै। सो साकेत जाय सुख सोवै।२।

दोहाः- जो जियतै में तय करै, सोई चतुर सुजान।
नाहिं तो जनमै मरै, मानों बचन प्रमान।१।

चौपाईः- बाबन बेर ठगावै जोई। बावन बीर कहावै सोई।
धोका खाये बिन नहिं ज्ञाना। हम तो यह अपने मन माना।
पानी दूध वहां बिलगाना। सुनतै खुलि गे आँखी काना।
बचन हमार मानि यह लेना। सत्य नाम की सिक्षा देना।
रेफ़ बिन्दु जो सब में ब्यापक। सब का जानो यह अध्यापक।
या को जानि लेय जो कोई। ता को आवागमन न होई।६।

दोहाः- नाम कि धुनि खुलि जाय जब, सुर मुनि दर्शन देंय।
मुद मंगल ह्वै जाय तब, हरि निज पास में लेंय।।

३६२ ।। श्री सुख देव दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- राम नाम में हो विश्वासा। सो हरि धाम में पावै बासा।१।
सुखदेव दास कहैं सोई पण्डित। राम नाम जो जपै अखण्डित।२।

३६३ ।। श्री बृजलाल दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- अन्न त्यागि कै फलहर कीन्हा। राम राम जपि हरि पुर लीन्हा।१।
बृजलाल दास कहैं सो सुख पावै। जो हरि नाम से नेह लगावै।२।

३६४ ।। श्री बख्तावर दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- राम नाम बैखरी उचारा। हरि का धाम मिल्यो मोंहि प्यारा।१।
बख्तावर दास कहैं गोहराई। जिह्वा चले जाय बनि जाई।२।

३६५ ।। श्री निहाल दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- तन मन भाव भरयो यह मेरे। बाट बहारैं नित्य सवेरे।
चारौं भाई करैं पयाना। राम घाट पैदर अस्नाना।
पाछे कोचवान लिये घोड़ा। श्याम रंग बाँके दुइ जोड़ा।
मञ्जन करि तब होंय सवारा। चलि आवैं लागै नहि वारा।
यही भावना गुरु बतलावा। या को फल निज नैनन पावा।५।

जन्म स्थान से राम घाट तक। झाड़ू देवैं हम हंसि चट चट।
राम दास तपसी रहैं जँहवा। श्री सरयू की धारा तहवाँ।
तीन दिवस बीते जहाँ भाई। चौथे दिन सब दरश देखाई।
तब से नित हम दरशन पावा। झाड़ू देन में प्रेम बढ़ावा।
चौबिस बर्ष काम यह कीन्हा। अन्त में हरि पुर बासा लीन्हा।
निहाल दास कहैं यह सेवकाई। प्रेम लगाय करै सुख पाई।११।

३६६ ।। श्री गोपाल दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- हरि की कीन मानसी पूजा। और देव पूज्यों नहिं दूजा।
दर्शन बहुत बार मोहिं दीन्हा। परगट ह्वै कर बोले चीन्हा।

अन्त समय हरि पुर भा बासा। तहँ सब भेद मिला मोहिं खासा।
श्री नारद जी वहँ पर आये। पूछेन हाल भेद बतलाये।
यह है ध्यान कल्पना केरा। यहँ पर या से मिला बसेरा।५।

सबै कल्पना जब मर जावै। तब साकेत में बासा पावै।
मन सूरति के संग में लागै। नाम कि धुनि में तब वह पागै।
तब वह पावैं उत्तम ध्याना। सन्मुख दर्शं कृपा निधाना।
जब लय में वह पहुँचे जाई। तब नहिं रूप नाम सुख आई।
सुधि बुधि रहै न का बतलावै। आवै लौटि रूप धुनि पावै।१०।

दोहाः- काक भुशुण्डी करत नित, प्रात समय यह भाव।
बाल रूप हरि दर्श दैं, पूरण करते भाव।।
उनकी सरबरि को करै, अजर अमर हैं जान।
माया ब्यापि सकै नहीं, कबहूँ उनको मान।।
नाम प्रभाव क जानि कछु, हरि यश करते गान।
बांचैं जौन चरित्र को, सो समुहे दर्शान।।
श्री नारद जी के बचन सुनिकै मिटिगा रोष।
मुक्ति भक्ति गति तब मिलै, पावै नाम क कोष।।
कहैं दास गोपाल, नाम कि गति अति ऊँच है।
जानि के होय निहाल, सोई जग से कूच है।५।

३६७ ।। श्री मनोहर दास जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- उलटा झूलेन सुमिरेन नामा। अन्त समय पायन हरि धामा।१।
कहैं मनोहर दास सुनाई। सुमिरन कीजै झूलि के भाई।२।

३६८ ।। श्री देवादास जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- धुनी तापि हरि सुमिरन कीन्हा। अन्त समय हरिपुर हम लीन्हा।१।
देवादास कहैं सुनि लीजै। धुनी तापि हरि सुमिरन कीजै।२।

३६९ ।। श्री शम्भू दास जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- दोनों भुज ऊपर चढ़वावा। सुमिरि नाम हरि पुर हम पावा।१।
शम्भू दास कहैं सुख पावै। सुमिरै नाम भुजन चढ़वावै।२।

३७० ।। श्री यमुना दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- जल में पैठि कै सुमिरेन नामा। पायन अन्त समय हरि धामा।१।
यमुना दास कहैं यह बानी। सुमिरै जाको जस मन मानी।२।

३७१ ।। श्री भरथ दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- बारह बर्ष ठाढ़ ह्वै जानो। सुमिरेन राम नाम को मानो।१।
अन्त में हरिपुर पहुँचेन जाई। भरत दास कहैं सत्य सुनाई।२।

३७२ ।। श्री भगवत दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- बैठे बैठे सुमिरन कीन्हा। तीस बर्ष औ आठ महीना।१।
अन्त समय हरिपुर हम पावा। भगवत दास कहैं मन भावा।२।

३७३ ।। श्री अनन्त दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- परे परे हरि नाम उचारा। बर्ष पचास तीनि पखवारा।१।
अन्त में हरिपुर बासा पायन। अनन्त दास कहैं सत्य बतायन।२।

३७४ ।। श्री शंकर दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- छत्तिस बर्ष मौन ब्रत धारेन। मन ही मन हरि नाम उचारेन।१।
शंकर दास कहैं तन त्यागेन। चढ़ि बिमान हरि पुर को भागेन।२।

३७५ ।। श्री हनुमान दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- साष्टांग दण्डवत करि, कीन्हेउं चारों धाम।
तन छूट्यो चढ़ि यान पर पहुँचि गयऊँ हरि धाम।१।
हनुमान दास कहैं करै जो तीरथ या बिधि जाय।
अन्त समय हरिपुर मिलै, दीन्हेंव सांच बताय।२।

३७६ ।। श्री लक्ष्मी दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- हरि चरित्र हम पढ़ेन हमेशा। अन्त में पहुँचि गयन हरि देशा।१।
लक्ष्मी दास कहैं समुझाई। नित हरि चरित पढ़ै सो जाई।२।

३७७ ।। श्री गिरिजा दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- कीन कीरतन नेम से भाई। और भजन बिधि मोहि न भाई।१।
गिरिजा दास कहैं हरषाई। करै कीरतन सो वहँ जाई।२।

३७८ ।। श्री विन्ध्या दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- हरि सुमिरन हरि सेवा कीन्हा। अन्त समय हरि पुर हम लीन्हा।१।
विन्ध्या दास कहैं हरषाई। सुमिरन सेवा है सुखदाई।२।

३७९ ।। श्री गोबर्द्धन दास जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- बाण सेज पर बैठि के भाई। सुमिरेन राम नाम हर्षाई।१।
अन्त समय हरिपुर सुख पावा। कहैं गोबर्द्धन सत्य बतावा।२।

३८० ।। श्री रामा जी ।।
(अवध वासी)

चौपाईः- राम बिवाह में तन मन पागा। दूसर और न भायो रागा।१।
रामा कहैं त्यागि तन भाई। हरिपुर जाय बास हम पाई।२।

३८१ ।। श्री राम अधार जी ।।
(अवध वासी)

दोहाः- तन मन प्रेम लगाय कै, सन्मुख धरि हरि चित्र।
थोड़े ही दिन में प्रगट, ह्वै कर करैं चरित्र।१।
पठ्य देंय हरि धाम तेहि, जो या बिधि को जान।
राम अधार कहैं सुनो, मानो बचन प्रमान।२।

३८२ ।। श्री सरवन जी ।।

दोहाः- राम नाम सुमिरन करै मातु पिता सेवकाय।
अन्त समय बैकुण्ठ को चढ़ि बिमान सो जाय।१।
सरवन कहैं सुनाय, बचन मानिहैं ते सुखी।
ऐसी सुलभ उपाय, नहिं मानैं ते हों दुखी।२।

३८३ ।। श्री गोगे दास जी ।।

दोहाः- जगत मातु श्री राधिका, जगत पिता घनश्याम।
चरन कमल बन्दन करौं, कीजै उर बिश्राम।।

पदः- श्री घनश्याम श्री राधे कि दाया जिस पै हो जाये।
वही नर तन से छुट करके पार भव सिन्धु हो जाये।
अधम औ दीन भक्तन हित लिया अवतार करते हैं।
क्षिमा अवगुन करैं छिन में जो उनकी शरन में आये।
धुनी एक तार जो सुनते हैं प्रभु के नाम की प्यारी।५।

रहैं उनके सदा सन्मुख युगुल झाँकी छटा छाये।
ध्यान में जाय कर देखैं करैं जो देव मुनि लीला।
बजै अनहद तहाँ बाजा बहुत परकार मन भाये।
बढ़ै जब ध्यान के आगे समाधी लय जिसे कहते।
रहै सुधि बुधि नहीं नेकौं उतरि फिरि क्या वो बतलाये।१०।

जाप खुलि जाय पन्द्रह बिधि कि हर दम जौन होती है।
सर्गुन निरगुन को तब जाने द्वैत वह फिरि न लखि पाये।
सनातन से चली आती है जो मर्य्याद सो करिये।
बिना सतगुरु न अपनावैं शम्भु बिधि कीन तब पाये।१४।

शेरः- प्रेम करने से दर्शन देके बतलाते औ हँसते है।
कहैं गोंगे प्रिया प्रीतम बचन यह हमको समुझाये।।

३८४ ।। श्री चिरकुट दास जी ।।

पदः- बिना रसना कि जप होवै यही उत्तम भजन जानो।
कहैं अजपा जिसे सुर मुनि करो सतगुरु बिधी जानो।
धुनी एक तार जारी हो जो हर शै से निकलती है।

छटा सिय राम की सन्मुख यही उत्तम भजन जानो।
बजै अनहद कि धुनि प्यारी लखौ क्या ध्यान में लीला।५।

देव मुनि संग बतलावैं यही उत्तम भजन जानो।
समाधी लय में सुधि बुधि नहिं रहै बतलाय क्या सकते।
उतरि आवो धुनी दरशन यही उत्तम भजन जानो।
जियत में जान कर भाई बासना नाश कर दीजै।
तरौ तारौ मुदित तन मन यही उत्तम भजन जानो।१०।

अगर अभिमान कछु होवै खोंटि हरि देंय चट अँकुर।
सुधारैं अपने भक्तन को यही उत्तम भजन जानो।
ध्यान भक्तों के हरि करते भक्ति हरि रंग मे जे माते।
वही पावैं ये सुख अनुपम यही उत्तम भजन जानो।
किया वादा गरभ में जो कहैं चिरकुट सो बिसराये।
चेत करके चलो निज घर यही उत्तम भजन जानो।१६।

३८५ ।। श्री बुधई दास जी ।।

पदः- कृपा करते हैं जब भगवन तभी सतगुरु मिला देते।
गरीबी जीव को आवै तभी अवसर भिड़ा देते।
नाम धुनि ध्यान परकाशा समाधी लय चढ़ा देते।
प्रेम प्याले को भर कर के रूप सन्मुख में छा देते।
बीज जिन सुकृत के बोये वही उनको लखा देते।
कहैं बुधई करो सुमिरन करम असुरन जरा देते।६।

३८६ ।। श्री माथुर जी ।।

पदः- करैं तन मन लगा सुमिरन प्रेम में हरि के आतुर हैं।
ध्यान धुनि रूप लय पावैं वही सच्चे बहादुर हैं।
जगत से पार हो जावैं वही पण्डित औ चातुर हैं।
श्री हरि नाम सुमिरन बिन गरभ में झूलैं गादुर हैं।
कथैं जे ज्ञान बिन जाने वही फिर होत दादुर हैं।
बिना सतगुरु न भव तरिहैं कहत यह सत्य माथुर हैं।६।

३८७ ।। श्री नाथू दास जी ।।

पदः- समाधी सहज जब जानो ध्यान जप संग में होवै।
मार्ग उत्तम निबृत्ती का कर्म शुभ अशुभ को खोवै।

मिलै पिंशन उसे भाई चेत कर बीज जो बोवै।
करैं तय जियत में यहँ पर वही सुख से वहाँ सोवै।
नहीं तो अन्त में दोज़ख पड़े कल्पों वहां रोवै।
कहैं नाथू बिना सतगुरु कोई भव पार नहिं होवै।६।

३८८ ।। श्री भगवान सिंह जी ।।

पदः- महामाया महामाया महामाया महामाया।
करो दाया करो दाया करो दाया करो दाया।
शरन आया शरन आया शरन आया शरन आया।
रहै छाया रहै छाया रहै छाया रहै छाया।
तुम्हीं जाया तुम्हीं जाया तुम्हीं जाया तुम्हीं जाया।५।

जगत आया जगत आया जगत आया जगत आया।
नर तन पाया नर तन पाया नर तन पाया नर तन पाया।
मनै भाया मनै भाया मनै भाया मनै भाया।
जो तन ताया जो तन ताया जो तन ताया जो तन ताया।
वही धाया वही धाया वही धाया वही धाया।१०।

जो अलसाया जो अलसाया जो अलसाया जो अलसाया।
वो बिलखाया वह बिलखाया वह बिलखाया वह बिलखाया।
जो शिर नाया जो शिर नाया जो शिर नाया जो शिर नाया।
वो हरखाया वह हरखाया वह हरखाया वह हरखाया।
जो गुन गाया जो गुन गाया जो गुन गाया जो गुन गाया।
वो यश छाया वह यश छाया वह यश छाया वह यश छाया।१६।

३८९ ।। श्री जावालि जी ।।

दोहाः- जावाली कहैं भजन बिन, जीव न होवै पार।
या से हरि सुमिरन करो सब का यही है सार।१।
सुमिरन की बिधि जान लो श्री सतगुरु के द्वार।
लय परकाश औ ध्यान हो रूप धुनी एकतार।२।
तब नर तन का फल मिलै जग से होवौ न्यार।
जियतै में सब जानिये, करि सांचा व्यवहार।३।

३९० ।। श्री जयन्त जी ।।

चौपाईः- हरि की शरन गये बिन भाई। नहिं कल्याण सत्य बतलाई।१।
या से कीजै यही उपाई। सुमिरो तन मन प्रेम लगाई।२।
तब फिर ज्ञान भानु दरशाई। सिया राम लछिमन छबि छाई।३।
कहैं जयन्त सुफ़ल तन होवै। सतगुरु करि भजि भय सब खोवै।४।

३९१ ।। श्री शची जी ।।
(इन्द्राणी)

दोहाः- भजन करो सतगुरु करि धुनी होय एकतार।
दरशैं हर दम सामने सिया सहित सरकार।१।
ध्यान प्रकाश समाधि हो मानो बचन हमार।
सची कहैं कल्याण तब जियतै करो सम्हार।२।

३९२ ।। श्री मंगू दास जी ।।

पदः- भजन करने के हित नौका ये हरि नर तन बनाया है।
नाम बल्ली को लै सतगुरु से खेय कर पार पाया है।
बड़ा भवसिन्धु जग जानो बीच ही में डुबाया है।
बिना सतगुरु के को देवै बहुत लगता किराया है।
नहीं खरचा सो किमि जावैं बूड़ि उतराय आया है।५।

मिलै धन यह गरीबों को जो आपे को मिटाया है।
उसी पर चाह सब रखते वही सच्चा कहाया है।
ध्यान परकाश लय धुनि औ रूप सन्मुख में छाया है।
देव मुनि संग में खेलैं मित्र अपना बनाया है।
कहैं आनन्द की लीला प्रभू का यश सुनाया है।१०।

बजैं बाजा मधुर अनहद हद्द उनकी को पाया है।
कहैं मंगू वही जानै जियत में जो कमाया है।१२।

३९३ ।। श्री गणेश शंकर विद्यारथी ।।

दोहाः- परस्वारथ में तन गयो, जग में छायो नाम।
गणेश शंकर कहैं दिब्य तन पाय गयन हरि धाम।।

३९४ ।। श्री यतीन्द्रनाथ जी ।।

दोहाः- यतीन्द्रनाथ कहैं जासु तन, परस्वारथ में जाय।
सो बैकुण्ठ को जात हैं जगत रहै यश छाय।।

३९५ ।। श्री भगत सिंह जी ।।

दोहाः- मन ही मन सुमिरन करत, राम नाम को मान।
फाँसी पर हम चढ़ि गयन त्यागि दीन तन जान।१।
दिब्य रूप तुरतै मिल्यौ आयो सुभग बिमान।
ता पर बैठेन हर्षि कै, पहुँचेन हरि पुर जान।२।
भगत सिंह कहैं जौन बिधि, हम करि गयन पयान।
सो सब तुम से दीन कहि, मानो बचन प्रमान।३।

३९६ ।। श्री दरिद्रा जी ।।

पदः- सँवलिया सभी जा छिपे बैठे हो तुम।
सभों की फिकिर भी सदा रखते हो तुम।
जो जैसा करै वैस ही देते हो तुम।
दया का खज़ाना लिये पास हो तुम।
मिलै दीन कोई उसे देते हो तुम।५।

जो ध्यावै तुम्हैं उनको खुद ध्येते हो तुम।
बनै सच्चे प्रेमी उन्है मिलते हो तुम।
जो आते शरन में उन्हैं खेते हो तुम।
सदा सब में सब से अलग रहते हो तुम।
अजर औ अमर सर्वदा रहते हो तुम।१०।

सबों में शिरोमणि महिमान हौ तुम।
सभी वस्तु के जान की जान हौ तुम।
प्रलय पालन उत्पति सब करते हो तुम।
निराकार निर्गुण सगुण रूप हौ तुम।
समाधी धुनी ध्यान परकाश हौ तुम।१५।

अमित रूप लीला अमित धाम हौ तुम।
अमित नाम निष्काम सब काम हौ तुम।
गुरु बन के चेला भि बन लेते हो तुम।

सिखाते हो सिखते हो निज जपते हो तुम।
दरिद्रा कहैं आप ही आप हौ तुम।२०।

३९७ ।। श्री कुदरत अली जी ।।

पदः- ऐसी सँवसिया मुरलिया बजावै हो।
मधुर मधुर धुनि तान सप्तस्वर सम से बिलग न जावै हो।
छंइउ राग छत्तीस रागिनी सन्मुख निज दर्शावै हो।
तीन ग्राम सम तान सप्तस्वर धुनि श्रृङ्गार बोलावै हो।
साज आवरन छाड़ि दिब्य तन धरि हरि पर बलि जावै हो।५।

जल चर थल चर नभ चर मोहैं जड़ तन धरि चट धावै हो।
मूर्छित होय लखैं जस झांकी श्री राधे मुसक्यावैं हो।
बृज के सखा सखी नर नारी मौन बोलि नहि पावै हो।
यमुना जी जल बेग रोक दें पवन मन्द गति आवै हो।
स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक के ज्ञान गुमान सेरावै हो।१०।

शेष कमठ बाराह दिग्गजौ पृथ्वी ध्यान लगावै हो।
दशौं दिशा दिग्पाल शान्ति ह्वै लय समाधि में जावै हो।
सात द्वीप नौ खण्ड चारि दश भुवन कि कौन चलावै हो।
भूषन बसन अन्न जल छूटै प्रेम कि फाँस फँसावै हो।
कुदरत अली कहैं हरि सुमिरौ आवागमन मिटावै हो।१५।

३९८ ।। श्री पण्डित मोती लाल नेहरू ।।

शेरः- माता पिता का लाल मोती लाल कहते हैं वही।
तन मन व धन अर्पन करै पर स्वार्थ में जानो वही।१।
अन्त में हरि पुर बसै दुनियां में यश छावै सही।
नर तन मिला इस हेतु सुर मुनि बेद जेहि निज मुख कही।२।

३९९ ।। श्री लाला लाजपति राय जी ।।

गज़लः- छोड़ि परस्वार्थ हित तन हम गयन हरि धाम को जानो।१।
चलै साका बहुत दिन जग बड़ी आनन्द वहँ मानो।२।
लाज पति राय की बिनती यह तन पर स्वार्थ में सानो।३।
सहारा एक श्री हरि का समय पर सब बनै ठानो।४।

४०० ।। श्री राजगुरु जी ।।

दोहाः- राजगुरु कहैं जगत में नर तन धारी जौन।
पर स्वार्थ हित तन तजै जावै हरि के भौन।१।
राम कृपा ते समय पर कारज सब बनि जाय।
तन मन ते लागा रहै बैठै मत अलसाय।२।

४०१ ।। श्री सुखदेव जी ।।
(पंजाब)

दोहाः- परस्वार्थ करता रहै निर्भय ह्वै के भाय।
फल वा को हरि देंयगे जाय समय जब आय।१।
अन्त समय हरिपुर चलै बैठि बिमान में धाय।
यश लोकौ परलोक में कह सुखदेव सुनाय।२।

४०२ ।। श्री राम प्रसाद बिस्मिल ।।

शेरः- जिसने किया परस्वार्थ जगमें नर शरीर क फल मिला।
अन्त में हरि धाम जाकर के सिंहासन पर खिला।१।
कहता है राम प्रसाद भाई निडर ह्वै कर के रहो।
छोड़ो न अपने काम को अच्छी बुरी सब की कहो।२।
कर्म करना काम करता का है या से कीजिये।
कारण लगैं तो लगने दो हरि का भरोसा लीजिये।३।

४०३ ।। श्री बिनता जी ।।

दोहाः- राम नाम में तन व मन प्रेम लगै जेहि केर।
बिनता कहै तेहि जीव का छूटि जाय सब फेर।।

४०४ ।। श्री कद्रूजी ।।

दोहाः- राम नाम सम वस्तु कोइ और नहीं है मान।
कद्रू कह मिलि जाय जेहि, ताको सुःख महान।।

४०५ ।। श्री राना बेनी माधौ सिंह ।।

दोहाः- युद्ध कीन जो कछु बनो फेरि गयन नैपाल।
संतन की संगति भई कीन्ह्यो मोहिं निहाल।१।
अन्त समय हम यान चढ़ि पहुँचेन बिष्णु के धाम।

जा पर संत दया करै ता को पूरन काम।२।
बेनी माधौ कहै यह संत बड़े सामर्थ।
इन ही की संगति करै समय न खोवै व्यर्थ।३।

४०६ ।। श्री गुलाब सिंह ।।

चौपाईः- तन में क्रोध आय जब जावै। अनुचित उचित न कछु सोहावै।१।
नारि पुरुष बालक बहु मारा। तब नैपाल की ओर सिधारा।२।
संतन की किरपा भइ भाई। नाम कि बिधि मोहिं दीन्ह बताई।३।

दोहाः- गुलाब सिंह कहैं तन तजेन पहुँचेन हरि पुर जाय।
ऐसे संत दयाल हैं सत्य कहौं हर्षाय।।

४०७ ।। श्री दरिया साहब जी ।।

शेरः- सुमिरन करैं एक तार जे सच्चे वही दोनो तरफ़।
धुनि ध्यान रूप समाधि हो दरिया कहैं एकै हरफ़।।

४०८ ।। श्री बली राम जी ।।

शेरः- वासना सारी मरैं जब लय समाधी जानिये।
सूरति शब्द से सब मिलै बली राम कहते मानिये।।

४०९ ।। श्री सहजो बाई जी ।।

दोहाः- अजपा जाप को जानिये, तन मन प्रेम लगाय।
सहजो बाई कहैं तब आवागमन नशाय।।

४१० ।। श्री चरणदास जी ।।

दोहाः- सोऽहं अजपा जाप है जपै जो प्रेम लगाय।
स्वाँसा से निकसत सदा गुनिये तो मन लाय।१।
चरन दास कहैं जे जपैं ध्यान समाधी होय।
सुर मुनि दर्शन देंय फिरि गर्भ वास नहि होय।२।

४११ ।। श्री दर्शन सिंह जी ।।
(अवध वासी)

दोहाः- धर्म कार्य्य कछु कीन्ह हम सो बहु जीवन जान।
दर्शन सिंह कहैं गयन अन्त में हरि पुर मान।।

४१२ ।। श्री राम अधीन सिंह जी ।।

(अवध वासी)

चौपाईः- शिव से रहा प्रेम कछु मेरा। या से भा कैलाश बसेरा।१।
रामाधीन कहैं हर्षाई। आनन्द वहँ की वरनि न जाई।२।

४१३ ।। श्री मान सिंह जी ।।

चौपाईः- शिव से प्रेम कीन्ह फल पावा। अन्त समय कैलाश सिधावा।१।
मान सिंह कहैं मंगल दाता। हर दम दर्शन दें पितु माता।२।

४१४ ।। श्री फिक्कू जी ।।

शेरः- बिना हरि के सुमिरे नहीं भव से छूटैं।
पकड़ कर के यमराज नस नस को कूटैं।१।
बिमुख हरि से जे हैं वे पापों को लूटैं।
रहेम बेच खाई दुई कैसे टूटै।२।
करो मुरशिद हरि का वो पकड़ावैं खूटैं।
शरम औ भरम का तभी भाँड़ा फूटैं।३।
कहैं फिक्कू हरदम जिकिर में जो जूटै।
वही उस अमी के प्याले को घूटै।४।

४१५ ।। श्री खैरू शाह जी ।।

शेरः- ज़िकिर हरि का हर दम जे करते हैं भाई।
उन्हीं की यहां औ वहाँ पर भलाई।१।
धुनी नाम की सुनते तन मन को लाई।
रहैं सन्मुख उनके सुघर झाँकी छाई।२।
अजब खेल हरि ने ये देखो बनाई।
सबी से निराले सबी में समाई।३।
बिना हरि के सुमिरे न होगी रिहाई।
कहैं खैरू मानै सोई पास जाई।४।

४१६ ।। श्री चँटू शाह जी ।।

गज़लः- मुरशिद जिसे मिलैगा उसकी भलाई होगी।
तन मन से वह खिलैगा जग से रिहाई होगी।

जिसकी सुनो ये भाई पिछली कमाई होगी।
फल वह समय पै पाई हर जाँ बड़ाई होगी।
हरि को न जिसने जाना उसकी बुराई होगी।५।

दोज़ख में जाय साना हरदम पिटाई होगी।
मुरशिद बिना ये मन की कैसे सफ़ाई होगी।
ठग तन के देत धमकी कैसे समाई होगी।
शर नाम का चलै जब उनकी भगाई होगी।
चँटू कहैं चलै तब फ़ौरन सुनाई होगी।१०।

४१७ ।। श्री अजबदास जी ।।

दोहाः- अजब दास कह अजब है, बीज रकार की जाप।
सूरति शब्द में जब पगै, जानै आप को आप।१।

४१८ ।। श्री भगेलू दास जी ।।

ग़ज़लः- सतगुरु हमें कृपा करि सुमिरन की बिधि बता दो।
धुनि रोम रोम होवै अजपा क जप सिखा दो।
सूरति शबद में भगवन एक तार कर पगा दो।
परकाश ध्यान लय भी स्वामी मुझे दिला दो।
अनहद कि धुनि रसीली घट में बजै सुनादो।५।

सियराम कृष्ण राधे बिष्णू रमा लखा दो।
सुर मुनि व तीर्थ शक्ती घट ही में हैं दिखादो।
शुभ अशुभ कर्म जो हों योगाग्नि में जरा दो।
मेरा पकर के कर निज सरकार को गहा दो।
कहता भगेलू मेरा आवागमन मिटा दो।१०।

४१९ ।। श्री झाँझू दास जी ।।

दोहाः- झांझा वाद को त्यागि कै हरि को सुमिरौ भाय।
अँजुलि जल परमान यह नर तन छीजत जाय।१।
झाँझू कह चित चेतिये, काहे रहे भुलाय।
झाँझी कौड़ी नहि मिलै जो न भजै रघुराय।२।

४२० ।। श्री झिनकू दास जी ।।

पदः- अनमोल तन है नर का खोवै बृथा सो अहमक।
सुमिरन करै न हरि का बेकार करता बक बक।
सतगुरु से शब्द जानै धुनि ध्यान लय चढ़ै झक।
परकाश चमचमाता खुलता है कैसा फक फक।
बजते हैं बाजा अनहद सुनने से छूटै सक सक।५।

रंग रंग के कुम कुम से सन्मुख में झरते पक पक।
तत्वन के रूप दर्शें क्या पांच रंग के लक लक।
क्या श्याम श्वेत पीले लाले हरे हैं तक तक।
षट चक्र सातौं नीरज कुंडलिनी दर्शें लक लक।
सुरमुनि के संग खेलो आनन्द लूटौ छक छक।१०।

सन्मुख में राम सीता बसु जाम निरखौ एक टक।
झिनकू कहैं तब मन से करि प्रेम लीजै यह हक।१२।

४२१ ।। श्री आनन्द गिरि जी ।।

पदः- कहौ सतगुरु कहौ सतगुरु कहौ सतगुरु कि जै जै जै।
भगायो जिन भगायो जिन भगायो जिन सब भै भै भै।
खिला तन मन खिला तन मन खिला तन मन न मै मै मै।
कर्म दोनो कर्म दोनो कर्म दोनो भे छै छै छै।
ध्यान धुनि भा ध्यान धुनि भा ध्यान धुनि भा औ लै लै लै।५।

रूप सन्मुख रूप सन्मुख रूप सन्मुख में है है है।
मुक्ति भक्ती मुक्ति भक्ती मुक्ति भक्ती कि तै तै तै।
सुफ़ल नर तन सुफ़ल नर तन सुफ़ल नर तन न द्वै द्वै द्वै।८।

४२२ ।। श्री दाया बाई जी ।।

पदः- भिखारी दीन हो साँचा उसे यह भीख मिलती है।
भरैं झोरी श्री सतगुरु नेकहू फिर न हिलती है।
ध्यान धुनि लय औ उजियारी छटा सन्मुख में खिलती है।
देव मुनि संग बतलावैं प्रेम वह चख पिघलती है।
तत्व पांचौ चारिहू तन तीनि गुण शोधि चलती है।
कहैं दाया कटै बन्धन न फिर जग में टहलती है।६।

४२३ ।। श्री सटपट दास जी ।।

पदः- हरि को भजौ हरि को भजौ हरि को भजौ हरि को भजौ।
दुबिधा तजौ दुबिधा तजौ दुबिधा तजौ दुबिधा तजौ।
तन मन सजौ तन मन सजौ तन मन सजौ तन मन सजौ।
धुनि संग मंजौ धुनि संग मंजौ धुनि संग मंजौ धुनि संग मंजौ।
असुरन गंजौ असुरन गंजौ असुरन गंजौ असुरन गंजौ।५।

हरि पुर रजौ हरि पुर रजौ हरि पुर रजौ हरि पुर रजौ।
सतगुरु ख्वजौ सतगुरु ख्वजौ सतगुरु ख्वजौ सतगुरु ख्वजौ।
जग से भजौ जग से भजौ जग से भजौ जग से भजौ।८।

४२४ ।। श्री एकनाथ जी ।।

चौपाईः- राम नाम मुद मंगल मूला। सुर मुनि जपैं सबन अनुकूला।१।
एकनाथ कहैं नर औ नारी। जपहु नाम तन मन को वारी।२।

४२५ ।। श्री पवन नाथ जी ।।

चौपाईः- राम नाम अनमोल है जानो। जपत जाहि सुर मुनि सब मानो।१।
पवन नाथ कहैं नर तन धारी। जपहु नाम हो मंगलकारी।२।

४२६ ।। श्री महेन्द्र नाथ जी ।।

चौपाईः- राम नाम सम को सुखदाई। सुर मुनि जाहि भजत हरखाई।१।
महेन्द्र नाथ कह तन मन लाई। भजै नाम सो भर्म न आई।२।

४२७ ।। श्री लक्कड़ नाथ जी ।।

चौपाईः- राम नाम सम नाम न दूजा। सुर मुनि भजत सबन में गूँजा।१।
लक्कड़ नाथ कहैं गोहराई। सुमिरै नाम सो हरि ढिग जाई।२।

४२८ ।। श्री फक्कड़ नाथ जी ।।

चौपाईः- राम नाम है सब का सारा। सुर मुनि जाहि जपत एकतारा।१।
फक्कड़ नाथ कहैं सब कोई। सुमिरौ नाम परम सुख होई।२।

४२९ ।। श्री अधार सिंह जी ।।

पदः- भजु भरथ लखन शत्रुहन लाल। मिटि जांय सबै तन मन के जाल।२।

देंं मुक्ति भक्ति अति हैं कृपाल। श्री सीय राम जिन पर दयाल।४।
भाजै लखि तिनको मृत्यु काल। बल प्रेम ज्ञान वैराग्य टाल।६।
बाटैं औ काटैं लिखा भाल। सुर मुनि जिनका यश बरणैं आल।८।
तिन सम कहिये को है बिशाल। नर नारि चहैं धन यश औ बाल।१०।
सुमिरैं सब को करि दें निहाल। कहते अधार करि लेव ख्याल।१२।

४३० ।। श्री मंगल सिंह जी ।।

चौपाई:- मुद मंगल चाहै जो कोई। सुमिरे हरि सब करतल होई।१।
मंगल कहैं सुनो नर दारा। सुमिरि नाम भव होवौ पारा।२।

४३१ ।। श्री रंका जी ।।

चौपाई:- रंका कहि हरि सुमिरन करिये। करि पुरुषार्थ उदर को भरिये।१।
अन्त समय हरि धाम सिधरिये। जन्म मरन में तब नहि परिये।२।

४३२ ।। श्री वंका जी ।।

चौपाई:- वंका कहै भजौ भगवाना। नित प्रति मेहनत करके खाना।१।
अन्त समय हरि धाम सिधरिये। जन्म मरन में तब नहि परिये।२।

४३३ ।। श्री तुका राम जी ।।

चौपाई:- तुका राम कहै हम तुम त्यागै। तब जीव हरि चरण में लागै।१।
तन मन प्रेम एक रस पागै। भव बन्धन ते हंसि के भागै।२।

४३४ ।। श्री लव जी ।।

चौपाई:- उमा शम्भु का सुमिरन कीजै। चारौं फल कर तल करि लीजै।१।
लव कह लागै नेक न बारा। बचन मानि जो लेय हमारा।२।

४३५ ।। श्री कुश जी ।।

चौपाई:- उमा शम्भु सम को जग दाता। चारों फल जिन हाथन ताता।१।
कुश कह तन मन प्रेम लगाई। सुमिरै ताको सब बनि जाई।२।

४३६ ।। श्री नासिक जी ।।

चौपाई:- पंचवटी मानौ है यह तन। राम सिया राजैं संग लछिमन।१।
सुर मुनि असुर नाग नर खग मृग। सरिता सागर बन गिरि औ जग।२।

या के भीतर सब कछु भाई। सतगुरु करै तौन लखि पाई।३।
तन मन प्रेम लगै हरि नामा। पूरन होवै तब सब कामा।४।

दोहाः- अहंकार रावण मरै, कपट मरै मारीच।
नासिक कह तब जीव फिरि फंसै न भव के कीच।।

चौपाईः- पृथ्वी तत्व को बट तरु जानो। पीपर तरु जल तत्वहिं मानो।
अगिन तत्व पाकरि तरु भाई। तत्व समीर रसाल कहाई।
तरु तमाल है तत्व अकाशा। पंचवटी आश्रम यह खाशा।
सतगुन काष्ठ औ रज गुण पाती। तम गुण बन्धन सोहत लाती।
गुदरी पांच तत्व की भाई। तीनि गुणन की चाल समाई।
ब्रह्म जीव माया बनि खेलै। आपै न्यारा आप सकेलै।६।

सोरठाः- यह सब ब्रह्म बिलास, नासिक कह सुनि लीजिये।
नाम से करि विश्वास, जियतै सब लखि लीजिये।।

४३७ ।। श्री सतगुरु दास जी ।।

पदः- अपने शिष्यन को सतगुरु तारैंगे।
शान्ति शील सन्तोष क्षिमा औ सरधा दया से निहारैंगे।
कर्म धर्म शुभ सत्य दीनता प्रेम के पथ पै डारैंगे।
सूरति शब्द क भेद बताय के नाम कि धुनि परचारैंगे।
राम सिया की झांकी वांकी सन्मुख शिष्य निहारैंगे।५।

ध्यान में नाना लीला निरखैं प्रेम मगन उर धारैंगे।
शून्य समाधि में पहुँचि जाँय जब सुधि बुधि सबै बिसारैंगे।
सुर मुनि बहुत आय सँग खेलैं कोमल बचन उचारैंगे।
मैं माया तीनो गुण असुरन ज्ञान कृपान से मारैंगे।
सतगुरु दीनदयाल कृपानिधि जियतै सब निखारैंगे।१०।

मुक्ति भक्ति जो सार वस्तु है देहैं सुधि न बिसारैंगे।
अधिकारी जे राम भजन के दै उपदेश सुधारैंगे।
ख्याल में नेकौं जे जन चूकैं कर गहि उन्हैं उबारैंगे।
हर दम ध्यान रहै दीनन पर या बिधि सबै सम्हारैंगे।
नाम रूप परकाश ध्यान लय साजि सिंगार सँवारैंगे।
सतगुरु दास कहैं श्री सतगुरु अन्त साकेत बिठारैंगे।१६।

४३८ ।। श्री राम सुन्दर दास जी ।।

पदः- एक मास निज गमन के पहले जग हित प्रभु यह कीन्ह बिचारा।
श्री अवध में श्री हनुमान कि प्रतिमा प्रतिमा निज हरि हाथ पधारा।
श्याम पाषाण कि प्रतिमा सुन्दर श्री विश्वकर्मा आय सँवारा।
सुर मुनि को बरदान उन्हैं यह छिन में रच देवैं जग सारा।
बड़ी भीड़ स्थापन में भइ सुर मुनि कीन्ह्यो जय जय कारा।५।

चारौं बेद कृत्य करवायो तीनि दिवस भयो हा हा कारा।
पवन तनय की शक्ति मूर्ति में भई प्रवेश मन्त्र के द्वारा।
बोली मूर्ति काह आज्ञा है तब हरि कह्यो हरो जग भारा।
ब्रह्मा जी के दिन भर रहने की आशिष दै शिर पर कर धारा।
श्री कलियुग के अन्त के प्राणिन मूरति जानौ अंगुल वारा।१०।

भूषन बसन स्वर्ण मणि मोती हय गज धेनु दीन्ह कर तारा।
याचक सकल अयाचक तन मन अवध में छायो हर्ष अपारा।
भाँति भाँति पकवान मिठाई मेवा फल पायो नर दारा।
पशु पक्षी जल जीव बिपिन के पायो मोहन भोग अहारा।
जाको जैस अहार हमेशा वैसै वाको स्वाद डकारा।१५।

धरती अगिन अकाश पवन जल दिब्य रूप धरि बने सुआरा।
सुर मुनि लोक देश पुर बन गिरि सागर सरितन भइ ज्योनारा।
असुर नाग जड़ तन नर धारयो लखि शारद फण पति हिय हारा।
यह आनन्द नहिं वरणि सेरावै हरि की लीला अपरम्पारा।
तन मन प्रेम से दर्शन पूजन करै जौन होवै भव पारा।२०।

दोहाः- कोस चौरासी अवध में बरसायो सुर फूल।
हाट बाट द्वारे भवन सम सोहैं शुभ फूल।१।
राम नाम को जानि ले सतगुरु से जो कोय।
राम सुन्दर दास कह चरित लखै यह सोय।२।

४३९ ।। श्री राम मनोहर दास जी ।।

चौपाईः- जन्म भूमि पावन सुख दाई। प्रगटे जँह पर श्री रघुराई।१।
दूसरे भवन में लै फिर राखा। जन्म स्थान नाम तेहि भाषा।२।
छठ्ठी बरहा भयो तहाँ पर। बाल चरित अति कीन वहाँ पर।३।
राज तिलक भा रतनसिंहासन। सिया राम बैठे यक आसन।४।

दोहाः- कनक भवन है शयन हित, राम सिया के जान।
राम मनोहर दास कह मानो बचन प्रमान।।

४४० ।। श्री श्याम मनोहर दास जी ।।

दोहाः- छंद प्रबन्ध को कवि रचे कोविद अच्छर छेद।
प्रेम भाव करि भक्त जन कछु पावैं हरि भेद।१।
निश्चय नेह लगी रहै जिमि चातक औ मीन।
सोई साँचा भक्त है रहै सदा लवलीन।२।
हरदम निरखै राम सिय नाम कि धुनि ले जान।
अन्त समय साकेत को जावै बैठि बिमान।३।
श्याम मनोहर दास कह भजै नाम ह्वै दीन।
पार होय संसार से, सोई परम प्रवीन।४।

४४१ ।। श्री लोना चमारी जी ।।

चौपाईः- मारन वशीकरन उच्चाटन। आकर्षन मोहन स्थम्भन।
नर नारिन पाषाण बनाना। पशु पक्षी करि उन्है चलाना।
मन्त्र से उनको खाक बनाना। या पढ़ि मन्त्र उन्हें पगलाना।
छिन ही में अन्तर ह्वै जाना। बनि कै चील्ह अकाश उड़ाना।
चाटक नाटक बहु बिधि जाना। कीन्ह पाप सोई मन माना।५।

एक समय रुक्माङ्गद स्वामी। मिलिगे मोको अन्तरयामी।
कह्यो कि या से नहि कल्याना। अन्त परै तोहिं नर्क को जाना।
सब मन्त्रन में राम रमें हैं। याही से सब मन्त्र थमे हैं।
नर्क क दृश्य दिखायो भाई। लखि मैं हाय हाय चिल्लाई।
कहते दृश्य गई दुख दाई। शान्ति तबै तन मन को आई।१०।

तब हम से बोले गुरू ज्ञानी। राम नाम है सब गुन खानी।
मन ही मन यह सुमिरन करिये। अन्त समय बैकुण्ठ सिधरिये।
पाप कर्म कीन्हें जो भारी। सो सब नाम देय करि छारी।
श्री गुरु अज्ञा शिर धरि लीन्हा। मन ही मन हरि सुमिरन कीन्हा।
दया मातु अन्तर में जागी। तन के चोर गये सब भागी।१५।

दोहाः- अन्त समय चढ़ि यान, हरि पुर मैं पहुँचत भई।
लोना करै बखान, हरि पुर है मंगल मई।१।

या संसार में आय कर, राम नाम भजि लेय।
लोना कह सो अन्त में, हरि पुर बैठक लेय।२।

४४२ ।। श्री शिव दीन सिंह जी ।।

पदः- दशरथ के लाला छैल छबीले सब से रंगीले तुम्हीं तो हो।
कृष्ण मुरारी बाँके बिहारी गिरिवर धारी तुम्हीं तो हो।
जन हितकारी मंगल कारी मुरली धारी तुम्हीं तो हो।
बृज के बिहारी रासबिहारी सर्वाधारी तुम्हीं तो हो।
सब सुःख कारी भव भय टारी हृदय बिहारी तुम्हीं तो हो।५।

धर्म प्रचारी दैत्य संहारी मुनि मन हारी तुम्हीं तो हो।
दैकर तारी जक्त पसारी लागी न बारी तुम्हीं तो हो।
शब्द उचारी धुनि रंकारी ध्यान खेलारी तुम्हीं तो हो।
शून्य मँझारी सुधि बुधि हारी फेरि उतारी तुम्हीं तो हो।
सुर मुनि झारी करत पुकारी छबि अति प्यारी तुम्हीं तो हो।१०।

चक्र के धारी संख के धारी गदा के धारी तुम्हीं तो हो।
पुष्प के धारी धरणि के धारी श्री धनुधारी तुम्हीं तो हो।
साकेत औ गोलोक बिहारी अवध बिहारी तुम्हीं तो हो।
सब में ब्यापक सब से न्यारे सब के प्यारे तुम्हीं तो हो।
सब गुण आगर रूप उजागर बल के सागर तुम्हीं तो हो।१५।

मुक्ति औ भक्ति युक्ति औ शक्ती पूरण तृप्ती तुम्हीं तो हो।
सत्य के सिन्धू दीनन बन्धू करुणा सिन्धू तुम्हीं तो हो।
राधे सीता परम पुनीता मन गो तीता तुम्हीं तो हो।
रूप न रेषं सर्गुण रूपं सब के भूपं तुम्हीं तो हो।
सब के पितु माता भागिनी भ्राता जक्त बिख्याता तुम्हीं तो हो।२०।

निशि परभाता सब के दाता मित्र औ नाता तुम्हीं तो हो।
पुरुष औ बनिता सुत औ दुहिता दुख सुख रहिता तुम्हीं तो हो।
बसुदेव के लालन नन्द के लालन जक्त के पालन तुम्हीं तो हो।
कौशिल्या दुलारे यशुदा के प्यारे देवकि वारे तुम्हीं तो हो।
पय सागर वासी लक्ष्मी बिलासी महा प्रकाशी तुम्हीं तो हो।२५।

बिधि सारद फणपति सरस्वति गण पति काग औ खग पति तुम्हीं तो हो।
शिव उमा के स्वामी अन्तरयामी रहत अकामी तुम्हीं तो हो।
रुक्मिणि सतिभामा उर बिश्रामा श्री घनश्यामा तुम्हीं तो हो।
उत्पति के कर्ता पालन कर्ता परलय कर्ता तुम्हीं तो हो।
धरणि अकाशा नीर बताशा पावक आशा तुम्हीं तो हो।३०।

तीनौ गुण स्वाँसा दिन तिथि मासा खेल तमासा तुम्हीं तो हो।
श्री दुर्गा काली वृक्ष औ माली फूल औ डाली तुम्हीं तो हो।
श्री भरथ शत्रुहन षट मुख लछिमन हनुमत भैरव तुम्हीं तो हो।
सुरपति औ धनपति रघुपति यदुपति सब की गति मति तुम्हीं तो हो।
शान्ति शील सन्तोष दीनता सरधा दाया तुम्हीं तो हो।३५।

छिमा सत्य विश्वास प्रेम सतगुरु औ चेला तुम्हीं तो हो।
ज्ञान बिराग योग जप तप मख कथा कीर्तन तुम्हीं तो हो।
दधि दूध लुटैया माखन के खवैया चीर हरैया तुम्हीं तो हो।
लाज रखैया चीर बढ़ैया गज उबरैया तुम्हीं तो हो।
बाराह औ दिग्गज मच्छ कमठ बलि पृथ्वी देवी तुम्हीं तो हो।४०।

श्री अछय बट श्री कल्प वृक्ष श्री कामधेनु भी तुम्हीं तो हो।
झरना गिरि सागर सरिता पोषर कूप औ बापी तुम्हीं तो हो।
ताल तलैया भँवर औ नैया बाँस खेवैया तुम्हीं तो हो।
भरुही के अण्डा पर गज घंटा छोरि धरैया तुम्हीं तो हो।
पाँडवन उबारन कौरव मारन बैकुण्ठ बिठारन तुम्हीं तो हो।४५।

श्री ध्रुव प्रह्लादा हरयो विषादा पीपा भुज छाया तुम्हीं तो हो।
तोरि जँजीरा राखि कबीरा हरि सब तीरा तुम्हीं तो हो।
बावन को रूपं नर हरि रूपं सूकर रूपं तुम्हीं तो हो।
लोमश दिगपाला दिशा औ काला हाँक हवाला तुम्हीं तो हो।
शशि भानु औ उड़गन सुर मुनि ऋषि जन मंदिर तीरथ तुम्हीं तो हो।५०।

द्वीप खंड औ भुवन लोक सब कारण कारज तुम्हीं तो हो।
मणि मुक्ता पारस वस्त्र औ भूषण अस्त्र बनैया तुम्हीं तो हो।
प्रकृती युग माया धूप औ छाया षट ऋतु आयू तुम्हीं तो हो।
सुर ग्राम औ ताला धुनि लय आला करत निहाला तुम्हीं तो हो।
सब राग औ साजा मधुर अवाजा सकल समाजा तुम्हीं तो हो।५५।

ग्रह रासि महूरत अद्भुत मूरति साँवलि सूरत तुम्हीं तो हो।
प्रारब्धि औ संचित क्रियामान औ दैहिक दैविक भौतिक तुम्हीं तो हो।
स्थूल औ सूक्षम कारन महाकारन चौदहो ब्रह्म प्रभु तुम्हीं तो हो।
सब भोग बिलासा भूँख औ प्यासा रस औ स्वादा तुम्हीं तो हो।
जल चर स्वामी थल चर स्वामी नभ चर स्वामी तुम्हीं तो हो।६०।

हानि लाभ औ शर्म शौक दुख नींद सोवैया तुम्हीं तो हो।
भय निर्भय अद्वैत द्वैत औ प्रेत पितर सब तुम्हीं तो हो।
गन्धर्व यक्ष किन्नर गण आठौं बीर भद्र प्रभु तुम्हीं तो हो।
बावन बीर योगिनी चौसंठ क्षेत्र पाल प्रभु तुम्हीं तो हो।
काम क्रोध मद लोभ मोह मन बुद्धि चित्त प्रभु तुम्हीं तो हो।६५।

दम्भ कपट पाखण्ड मस्खरी अरुचि अपच प्रभु तुम्हीं तो हो।
परा बाणि पैशन्ती बाणी मध्यमा बाणि प्रभु तुम्हीं तो हो।
बैखरी बाणि औ ब्रह्म बाणि सबमें समान प्रभु तुम्हीं तो हो।
इड़ा नाड़ि पिंगला नाड़ि सुखमना नाड़ि प्रभु तुम्हीं तो हो।
चित्रणी नाड़ि बज्रणी नाड़ि औ ब्रह्म नाड़ि प्रभु तुम्हीं तो हो।७०।

षट चक्र सातहू कमल नागनी अनहद बाजा तुम्हीं तो हो।
खेचरी मुद्रा चाचरी मुद्रा भूचरी मुद्रा प्रभु तुम्हीं तो हो।
अगोचरी मुद्रा उनमुनी मुद्रा लय जड़ समाधि प्रभु तुम्हीं तो हो।
अष्टाङ्ग योग हठयोग और श्री राज योग प्रभु तुम्हीं तो हो।
आठौं परा चारिहू अजपा तीनो जप प्रभु तुम्हीं तो हो।७५।

ध्यान चारि विज्ञान चारि एकादश भक्ती तुम्हीं तो हो।
तेरहौ त्याग औ कर्म धर्म औ नेम टेम प्रभु तुम्हीं तो हो।
रहन गहन अवसहन ख्याल जो अंक भाल प्रभु तुम्हीं तो हो।
औषधी वैद्य रोगी औ रोग संयम निरोग प्रभु तुम्हीं तो हो।
बेद शास्त्र पोथी पुराण उपनिषद संहिता तुम्हीं तो हो।८०।

कंद मूल फल अन्न मिठाई अमी हलाहल तुम्हीं तो हो।
कवि कोविद और धूप आरती स्तुति प्रतिमा तुम्हीं तो हो।
श्रृंगार छटा आशीरवाद परनाम श्राप प्रभु तुम्हीं तो हो।
कल्यान कुशल औ गुप्त प्रगट तुरिया महातुरिया तुम्हीं तो हो।

प्राण जीव आतम परमातम तन मन धन सब तुम्हीं तो हो।८५।

सर्व नाम औ सर्व रूप औ सर्व काम प्रभु तुम्हीं तो हो।
शिवदीन सिंह को दर्शन दै बैकुण्ठ भेजैया तुम्हीं तो हो।८७।

४४३ ।। श्री बज्रङ्ग बख्स जी ।।

दोहाः- कर्म धर्म से रहै औ, मन में सुमिरै नाम।
बज्रङग बख्स कह अन्त में, सो जावै हरि धाम।।

४४४ ।। श्री गजोधर बख्स जी ।।

दोहाः- कर्म धर्म छोड़ै नहीं, सो बैकुण्ठ को जाय।
कहैं गजोधर बख्स यह, सत्य तुम्हैं बतलाय।।

४४५ ।। श्री ठाकुर दास जी ।।

दोहाः- स्थूल शरीर तो जगत है, सूक्षम विधि को जान।
कारण नारायण भयो, महा कार्ण शिव मान।१।
इस रहस्य के भेद को अनुभव बिन को जान।
ठाकुर दास कहैं हमै सतगुरु दीन्हो ज्ञान।२।

४४६ ।। श्री इस्माइल जी ।।

पदः- यक दफ़ा मोहन दरश देकर किया मुझको कटा।
छिप के बैठे हो कहाँ दिखलाइये वह फिर छटा।
प्राण बिन देखे निकल जावैंगे तन मन अट पटा।
क्या करोगे आयकर जब तन चलैगा मरघटा।
सब से बिलग सुर मुनि कहैं और सब में फिर कहते सटा।५।
इच्छा करो पूरी मेरी लागै न अन्त में घट घटा।
रूप सन्मुख आप अपना दीजिये मेरे डटा।
इस तन में जितने चोर हैं सब करते निश दिन खट्ट पटा।
करके कृपा मुझ दीन पर अब दीजिये इनको हटा।
आप ही के हुक्म से सब को रहे यह खट खटां।१०।

जग में बिमुख जे आपसे उनसे अधम औ को लटा।
कहता है इस्माइल किया सुमिरन सोई हरि पुर अटा।१२।

४४७ ।। श्री सफी बक्स जी ।।

पदः- घनश्याम मन मोहन मुझे दर्शन दिखाता क्यों नहीं।
दर का भिखारी हूँ बना प्यारे दयाता क्यों नहीं।
अनुपम छटा दिखलाय कै तन मन लोभाता क्यों नहीं।
तिरछा चरन धरि सामने मुरली सुनाता क्यों नहीं।
नैनों की सैन चलाय कै फिरि मुस्किराता क्यों नहीं।५।

नूपुर बजा छमा छम झुक झूमि आता क्यों नही।
प्रेम तन मन से मेरा उर में लगाता क्यों नहीं।
कहता सफ़ी निज धाम को मुझ को पठाता क्यों नहीं।८।

४४८ ।। श्री चाँद खाँ जी ।।

पदः- घनश्याम मन मोहन छटा अपनी दिखा दीजै हमैं।१।
छटपटाता हूँ बिना देखे कहूँ क्या मैं तुम्हैं।२।
आपने हर काम का पहिलेहि से बाँधा समै।३।
चाँद कहता है जपै हरि नाम सो जग नहि थमै।४।

४४९ ।। श्री मुस्तफ़ा हुसेन जी ।।

पदः- यक दफ़ा मोहन छटा अपनी दिखाना चाहिये।
बसन भूषन क्रीट कुण्डल सज के आना चाहिये।
अलकैं लटकती हैं उजारो पर बनी जिमि नागिनी।
दोनो कर मुरली अधर पर धर बजाना चाहिये।
भाल में केशर तिलक औ पगन में नूपुर पहिन।५।

झुकि झूमि करके श्याम सुन्दर बैठि जाना चाहिये।
रूप अनुपम आपके पर काम रति बहु लाजते।
तिरछी निगह करके प्रभु फिर मुस्किराना चाहिये।
मुस्तफ़ा तन मन से करता है अरज़ यह राति दिन।
मुझ दीन पर करके रहेम उर में लगाना चाहिये।१०।

४५० ।। श्री जग देव दास जी ।।

पदः- पाप करने वालों अब हुशियार हो हुशियार हो।
समय आता है चला मुखकार हो मुखकार हो।

लेंयगे यमदूत कसि गृफ्तार हो गृफ्तार हो।
मारत तुम्हें ले जाँयगे बटपार हो बटपार हो।
यह तन जिसे चिकनावते जरि छार हो जरि छार हो।५।

हाजिर करैंगे जाय के दरबार हो दरबार हो।
लेखा बतावोगे न जब बेज़ार हो बेज़ार हो।
पिटवाय करके देंय फिरि फटकार हो फटकार हो।
अनमोल नर तन हाय यह बेकार हो बेकार हो।
रोवेंगे कल्पों नर्क में दुख भार हो दुख भार हो।१०।

दुःख भोगैं अमित तँह पर नारि हो नर नारि हो।
मिलती न कल तँह एक पल चिक्कार हो चिक्कार हो।
नाना प्रकार कि दें सज़ा तन ख्वार हो तन ख्वार हो।
मन के बने बैठे यहाँ मुखत्यार हो मुखत्यार हो।
हरि नाम धन पायो नहीं धिक्कार हो धिक्कार हो।१५।

हरिनाम सुमिरन के बिना को पार हो को पार हो।
भूलि कै उलटा टँगे जग जार हो जग जार हो।
दीन बनि कर छोड़िये अहँकार हो अहँकार हो।
तन मन लगा सुमिरन करो निशिवार हो निशिवार हो।
प्रेम लखि तब दर्शिहैं करतार हो करतार हो।२०।

सुर मुनि प्रगट हो कर करैं तब प्यार हो तब प्यार हो।
खुलि जाय जप जग देव कह सुखसार हो सुखसार हो।
सतगुरु बिना मिलते नहीं सरकार हो सरकार हो।२३।

४५१ ।। श्री हरदेव दास जी ।।

पदः- सिय राम की अद्भुत छटा जिस दास सन्मुख छाई है।
सो ध्यान धुनि परकाश लय भक्ती के पद को पाइहै।
जियतै में मुक्ती हो गई तन मन न हर्ष समाइहै।
जब तक रहै जग में लखै लीला मगन गुन गाइहै।
तारैं अधम से अधम पापिन द्वैत भाव मिटाइहै।५।

फिरि अन्त में साकेत को चढ़ि कै सिंहासन जाइ है।
यह पद उसी को प्राप्त हो जो दीनता उर लाइहै।
हर देव कह यह भेद सतगुरु बिन न कोई पाइहै।८।

४५२ ।। श्री मुन्ना दास जी ।।

पदः- प्रेम करि घनश्याम राधे नाम सुमिरन कीजिये।
अद्‌भुत छटा कर दे कटा तन मन डटा लखि लीजिये।
धुनि ध्यान औ परकाश लय में जाय अमृत पीजिये।
सुर मुनि बलैयाँ लेंय नित इस रंग में तो भीजिये।
जियतै में करि अभ्यास लखि हरि धाम को चलि दीजिये।५।

आसन सिंहासन पर दया निधि देंय लखि छबि रीझिये।६।
मुन्ना कहैं ह्वै मौन बैठो गर्भ बास न लीजिये।७।
सतगुरु बचन विश्वास करि दीदार हर दम कीजिये।८।

४५३ ।। श्री जग रानी माई जी ।।

पदः- सिय राम की अद्‌भुत छटा सन्मुख में जिसके छा गई।१।
धुनि ध्यान लय परकाश मुक्ती भक्ति जियतै पा गई।२।
सतगुरु मिला सांचा जिसे हर्षा गई बतला गई।३।
कहती है जगरानी छोड़ी तन पास हरि के धा गई।४।

४५४ ।। श्री झब्बू दास जी ।।

पदः- हरि हर ठौर मंगल करन।
दीन भक्तन पर दया अति मृत्यु जिनकी सरन।
गीध गणिका गज अजामिल सधन लीन्ह्यो सरन।
द्रोपदी की लाज राख्यो बसन बनि दुख हरन।
संकट हरे प्रह्लाद के सब नाहि पायो मरन।५।

ध्रुव को पदवी अचल दीन्ही अब न जग में गिरन।
इन्द्र जी रिसि कीन बृज वर बृष्टि लागे करन।
प्रलय के मेघा जुटे सब जहाँ हरि सुख करन।
बृज के रक्षा हेतु गिरिवर सात दिन नख धरन।
चक्र गिरि पर जाय बैठो सकल जल तहँ जरन।१०।

इन्द्र को मद चूर कीन्ह्यो आय शिर पग धरन।
खड़े ह्वै फिरि हाथ जोड़्यो लगे अस्तुति करन।
दया निधि कर पर्सि शिर पर इन्द्र को मन भरन।
अमित पापिन को उबारयो सबै युग सब वरन।

नाम सुमिरन करै हरदम जोरि कै चित चरन।
कहै झब्बू बिनय सुनिये प्रभु तारन तरन।१६।

४५५ ।। श्री मौलाना जुन्नैद ।।

शेरः- जुन्नैद मौलाना कहैं करिये ज़िकिर एक तार हो।
छूटै फिकिर छुट्टी मिलै दुनियां से तब तो पार हो।
मै मै मिटै छूटै दुई हर वक्त तब दीदार हो।
मुरशिद करो साँचा नहीं तो तन बशर बेकार हो।
खिदमत करो कौसर पिओ काहे गरद गुब्बार हो।
रहेम को जिसने तजा वह जाय दोज़ख ख्वार हो।६।

४५६ ।। श्री अहमक दास जी ।।

पदः- दीदार हर दम श्याम का सतगुरु बिना होता नहीं।
ध्यान धुनि परकाश लय का बीज जप बोता नहीं।
बासनाओं में फंसा है द्वैत को खोता नहीं।
गर्भ कि इकरार को करि ख्याल ठग रोता नहीं।
शब्द के साबुन से हिरदय का कलुष धोता नहीं।५।

प्रेम तन मन से लगाकर खेत तो जोता नहीं।
पास ही में धन धरा पुरुषार्थ करि ढोता नहीं।
सतगुरु बिना अनमोल मणि क्या पायगा पोता नहीं।
तेरे लिये हरि अगम हैं तू जानता गोता नहीं।
पढ़ि सुनि के टें टें कर रहा पालैंगे प्रभु तोता नहीं।१०।

अब हीं तो करते पाप हौ कहते हौ कुछ होता नहीं।
देखिहौ यमपुर में चलि पल भर कोई सोता नहीं।
अन्धा व बहिरा क्यों बना करि कर्म धन टोता नहीं।
शब्द पर सूरति लगा कर मन को क्यों नोता नहीं।
कपट का संगी बना तू सत्य का ढोता नहीं।१५।

रास्ता चक्कर का है फिरि संग में सोंटा नहीं।
सतसंग करि भक्तों के तू चरण पर लोटा नहीं।
सौदा खरीदा पाप का तुझ सा कोई खोटा नहीं।
बूड़ि हैं मँझधार अहमक कहैं जँह गोटा नहीं।
जाय तू सतगुरु शरन तब होय कोइ कोता नहीं।२०।

दोहाः- नाम कुदारि से खोदि कै ऊसर देय बहाय।
खेत होय तब एक रस जामैं बीज देखाय।१।
तन मन प्रेम लगाइकै सींचै तब बढ़ि जाय।
बाली लागि कै पकै जब काटि धरै हर्षाय।२।
खाय औ खरचै चुकै नहीं नित प्रति बढ़ते जाय।
सतगुरु से किसनई यह जानि करै दुख जाय।३।
अहमक दास है नाम मम पढ़ा नहीं मैं भाय।
राम नाम सतगुरु दियो सोई मोहिं सोहाय।४।

४५७ ।। श्री ढपोंगा दास जी ।।

पदः- सतगुरु बचन का कर भरोसा क्यों फंसा जंजाल में।
राम सीता निरख हरदम क्या धरा जग जाल में।
धुनि ध्यान लय परकाश ले मिट जाय लिखा जो भाल में।
सूरति लगाकर शब्द पर तू मस्त रह उस ख्याल में।
सह दुःख सुख को एक सा राजी तू रह हर हाल में।
कहते ढपोंगादास चलु साकेत माला माल में।६।

४५८ ।। श्री ढोंगा दास जी ।।

पदः- धिक्कार धिक धिक जन्म जग जिसने न हरि सुमिरन किया।
माता पिता परिवार को लै नर्क में बासा दिया।
छोड़ि कै अमृत अधम बनि बिषय बिष सेवन किया।
बुद्धि पै पत्थर पड़ि गये सत्संग में मन नहि दिया।
है चार दिन की ज़िन्दगी हर दम नहीं कोई जिया।५।

खेत कैसे जामिहै जब पड़ा नहि उसमें बिया।
भोजन मिलै जो नर्क में लखि तनक पै रोवैं जिया।
रक्त पीव औ मूत्र बिष्टा पकड़ि यम मुख भरि दिया।
चेतौ कहा मानौ अभी सतगुरु करौ पावो पिया।
ध्यान धुनि परकाश लय है पास पर परदा सिया।१०।

अभ्यास करु तन मन लगा निर्मल बनै तेरा हिया।
लखिये छटा फिर सामने हर दम रहैं रघुबर सिया।
द्वैत जियतै में मिटै हो श्वेत दाग़ न लागिया।

नाम की धुनि सुनौ निशि दिन प्रेम रस में पागिया।
अन्त में सोकेत को चढ़ि कै सिंहासन भागिया।
दास ढोंगा कहै फिरि भव दुख कभी नहि ब्यापिया।१६।

४५९ ।। श्री पोंगा दास जी ।।

पदः- भुलायो हरि सुमिरन कौनी करतूति।
भोजन बसन गपाष्टक कहि सुनि पर दारन संग सूति।
जब यम दूत आय गहि बाँधै दस्त होय दें मूति।
कढ़िलावत यम पुर लै चलिहैं शिर पर मारत जूति
लेखा काह बताओगे तुम पहिले चुके हैं कूति।५।

देंय छोड़ाय नर्क रौरव में तन मन जावै भूति।
स्वाँसन घूँटी जाय वहाँ पर ऊपर ते रहे घूति।
रसना झूँठे बचन कहन हित पालै है जिमि तूति।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो काहे रहे हो सूति।
लय धुनि ध्यान और परकाशा पाय के हो मजबूति।१०।

राम सिया को निरखौ हर दम जिनकी सकल बिभूति।
पोंगा दास कहैं साकेत में चलि बैठो बनि मूर्ति।१२।

४६० ।। श्री चोंगा दास जी ।।

पदः- जवानी में दिवाना बनि करत क्यों पाप मन माना।
चारि दिन की है ज़िन्दगानी अन्त में नर्क हो जाना।
समय जब होगा चलने का ले आवैं दूति परवाना।
देखतै होश उड़ि जैहैं भूलि सब जाय बतलाना।
मारि तन से अलग करिके चलैं लै करते कढ़िलाना।५।

हाय रे हाय चिल्लावो सुनै नहि नेक बैकाना।
करैं दरबार में हाजिर जहाँ इन्साफ़ है ठाना।
लेय लेखा बतावो क्या नाम धुनि सार नहि जाना।
कुटम्मस होय फिर वँह पर जाँय लै नर्क में साना।
पिटाई हर समय होती मिलै मल मूत्र का खाना।१०।

कहा मानो करो सतगुरु मिलै धुनि नूर लै ध्याना।
लखौ सिय राम को हर दम सुनो हर दम मधुर ताना।

चक्र षट शोधि जावैंगे कमल सातौं हो उलटाना।
जगै नागिन मिटै आलस देव मुनि तीर्थ दरशाना।
जियति लो मुक्ति औ भक्ती ये पद मानो है निर्वाना।
दास चोंगा कहै भाई लौटि जग फेरि नहि आना।१६।

४६१ ।। श्री घोंघा दास जी ।।

पदः- मिला नर तन यह दुर्लभ है भजन हरि का नहीं करते।
जवानी के नशे में पाप को सुख मान कर करते।
पड़ै आखिर नरक जाना जभी तो नेक नहि डरते।
मार हर दम पड़ै वहँ पर खड़े यमदूत नहि टरते।
त्राहि हा त्राहि नर नारी करैं लोटैं उठैं गिरते।५।

दूत मज़मूत भयकारी दया उर में नहीं धरते।
अभी चेता करो सतगुरु पाप छय होंय क्यों हरते।
ध्यान धुनि नूर लै पाओ सदा सिय राम लख पड़ते।
सनातन की ये मरजादा बिना सतगुरु न कोइ तरते।
जानि जो जियत में लेवैं वही हों अमर नही मरते।१०।

नाम धुनि के बिना सुनिये कार्य कोई नहीं सरते।
दास घोंघा कहैं एक रस प्रेम तन मन में हैं भरते।१२।

४६२ ।। श्री सोंटा दास जी ।।

पदः- देय फल चारि नर तन यह इसे करि पाप क्यों खोवै।
अन्त में पाइहै यमपुर पड़ा कल्पों वहां रोवै।
करै सतगुरु भजै हरि को पार भव सिन्धु सो होवै।
ध्यान धुनि नूर लै जानै कर्म शुभ अशुभ को धोवै।
लखै सिय राम को हरदम प्रेम संग मन को कसि नोवै।
दास सोंटा कहै प्राणी वही साकेत चलि सोवै।६।

४६३ ।। श्री कर्कट दास जी ।।

पदः- करूणा वरुणालय को भजिये बिरथा क्यों आयु बितावत है।
अन्त समय कोइ काम न दें जिनसे तू नेह लगावत है।
नहि कोई रहा न रहैगा कोई फिरि नाहक गाल बजावत है।
अनुपम अमृत तजि के प्यारे अब काहे हलाहल खावत है।

परिणाम मिलै आखिर इसका यम धाम में चलि दुख पावत है।

मानुष तन है यह अति दुर्लभ सुर या के हित ललचावत है।
जेहि हेतु मिला सो करत नहीं मुख में नित मसी लगावत है।
इन्द्रिन को साधन कीन्हे बिना कोई सत मार्ग न पावत है।
सतगुर करि मुद मंगल भरिये काहे को देर लगावत है।
धुनि ध्यान प्रकाश औ लय मिलिहै सुर मुनि सब दर्श दिखावत हैं।१०।

ब्रह्म अगिन में कर्म शुभा शुभ जरि जाँय द्वैत बिलगावत है।
षट चक्कर भेदन ह्वै जावैं सातौं फिरि कमल फुलावत हैं।
कुण्डलिनी जाग्रत होय तबै सब लोकन माहिं घुमावत है।
सियराम कि झाँकी क्या बाँकी हर दम सन्मुख छबि छावत है।
जियतै में मुक्ति भक्ति को लै तन तजि साकेत सिधावत है।
कर्कट दास केरी बिनती जो मानि जाय सो जावत है।१६।

४६४ ।। श्री फजीहत दास जी ।।

पदः- करैं सुमिरन न जे हरि का उन्हैं यम मारैं कहि पाजी।
अभी तो झूठ कहि सुनि कै बनत हुशियार हौ काजी।
होय दरबार में पेशी करौ कैसे उन्हैं राजी।
गपोली भूलि सब जैहै लोह की होय किमि भाजी।
पिटाई फेरि तँह करिके पटकि लातन से दें गाँजी।५।

फेरि लै नर्क में डालैं नैन दोउ शीश ते राँजी।
खान हित मूत्र मल देवैं कहैं फटकारि कै खाजी।
भूलि पांडित्य सब जावै रहे चारों तरफ़ गाजी।
बिना सतगुरु न भव तरिहौ बनौ मुल्ला चहै हाजी।
कहा मानो करो सतगुरु जन्म फल पाय हो राजी।१०।

प्रेम तन मन से सच्चा करि कपट की बिलग करू काँजी।
सुरति जब शब्द पर लागै जाय मन संग में मांजी।
तार एक तार जब होवै कहां को जाय तब भाजी।
ध्यान धुनि लय औ परकाश लखों सिय राम छबि ताजी।
महा सुख में मगन हर दम पलक सकता नहीं भाँजी।
कहैं फजीहत चलो हरि पुर लेव सिंगार यह साजी।१६।

४६५ ।। श्री सुन्दरी जी ।।

दोहाः- बिष्णु कि माया से बिलग, ताहि बैष्णव नाम।
तन मन प्रेम लगाइ कै हरि सुमिरै बसु याम।१।
नाम कि धुनि औ ध्यान लय पाय जियत में जाय।
कहैं सुन्दरी सुत सुनो हरि सन्मुख ह्वै जाँय।२।

४६६ ।। श्री जालिपा जी ।।

दोहाः- हरि सुमिरन में एक रस पग जावै जो कोय।
सो भव बन्धन ते छुटै ररंकार धुनि होय।१।
ध्यान प्रकाश समाधि औ हर दम दर्शन होय।
कहैं जालिपा सुनो सुत, आवागमन न होय।२।

४६७ ।। श्री लोटनी देवी जी ।।

दोहाः- तन मन प्रेम लगाइकै सुमिरै धुनि खुलि जाय।
राम सिया सन्मुख सदा देखत ही बनि आय।१।
ध्यान समाधि प्रकाश हो जियतै मुक्ति औ भक्ति।
लोटनी कहैं सुनाय सुत, जपै बढ़ै अति शक्ति।२।

४६८ ।। श्री चुटकी देवी जी ।।

दोहाः- राम नाम को जानि ले ताको बेड़ा पार।
हर दम निरखै राम सिय शोभा अमित अपार।१।
ध्यान समाधि प्रकाश हो द्वैत जाय सब खोय।
चुटकी कहैं सुनाय सुत, मुद मंगल तब होय।२।

४६९ ।। श्री चौबुर्जी जी ।।

चौपाईः- राम नाम जे जन जपैं तिनकी भली भलाय।
राम सिया दरशैं सदा धुनी अखण्ड सुनाय।१।
ध्यान प्रकाश समाधि को जानि लेय ते शीव।
कहैं चौबुर्जी सुनो सुत, मुक्ति भक्ति रस पीव।२।

४७० ।। श्री गुरगाईं जी ।।

दोहाः- राम नाम जे जन जपैं चौरासी मिटि जाय।
राम सिया सन्मुख लखै नाम कि धुनी सुनाय।१।

ध्यान समाधि प्रकाश को जियतै लेवै जान।
कहैं गुरगाईं सुनो सुत, सोई पुरुष महान।२।

४७१ ।। श्री ज्ञानेश्वर जी ।।

पदः- दुइ दल कमल बास सा स्वर है, रे नासा पर जनो।
षोड़श दल में गा है राजत, मा द्वादश दल मानो।१।
पा को बास अष्ट दल में है, धा षट दल में जानो।
नी को बास चार दल में हैं सातों स्वर ये मानो।२।
गान बजान से गती न होवै बैकुण्ठै तक जानो।
ज्ञानेश्वर कहैं नाम तान बिन बिरथा जीवन मानो।३।

४७२ ।। श्री निशंकदास जी ।।

दोहाः- शंकर बिधि शारद सदा गणपति सरस्वति जान।
फणपति देव मुनीश सब करत नाम गुण गान।१।
तन मन ते रहते मगन सब पर हरि किरपाल।
निशंक दास कहे दरस दे करते सबै निहाल।२।

४७३ ।। श्री बीर भद्र जी ।।

दोहाः- जिस विद्या से हरि मिलै, वह विद्या सिख लेय।
रोम रोम से नाम धुनि हर दम दम दर्शन लेय।१।
सुर मुनि खेलें संग में हंसि हंसि के बतलाय।
ध्यान समाधी होय तब महा प्रकाश दिखाय।२।
आवागमन नसाय तब जब यह मारग जान।
सुरति शब्द की जाप है अजपा या को मान।३।
बीर भद्र कहँ सुनो सुत सतगुरु बिना न होय।
संसकार जेहि ठीक हों सतगुरु पावै सोय।४।

४७४ ।। श्री दीन दरवेश जी ।।

दोहाः- क्या हिन्दु क्या मुसलमां, भजन करे जो कोय।
हरि सब पर दाया करें, हर दम दरशन होय।१।
एक तार जब धुनि खुले, रोम रोम झनकार।
कहे दीन दरवेश तब होवे, भव से पार।२।

४७५ ।। श्री ताज जी ।।

शेरः- कहता है ताज तज के दुनियां के कारोबार।
सुमिरो संवलिया यार को हो जाओ जग से न्यार।१।

४७६ ।। श्री यकरंग जी ।।

शेरः- छोड़ो कपट के कार को हो जाओ एक रंग।
यकरंग कहता तब संवलिया लखो हर दम संग।१।

४७७ ।। श्री खलील जी ।।

शेरः- यादगारी जिसने की हर दम संवलिया यार की।
देखता सूरत है सन्मुख में सदा दिलदार की।१।
हर शै से नाम की धुनि उठै लीला अगम करतार की।
कहता खलील करो भजन जो गर्भ में इकरार की।२।

४७८ ।। श्री सीता रामदास जी ।।

दोहाः- राम नाम अनमोल है, जप बिधि लीजै जान।
धुनी खुलै एक तार तब दरशैं कृपा निधान।१।
सीता राम कहैं तबै जग से होवै न्यार।
नाहीं तो फिर गर्भ में झूलैं बारम्बार।२।

४७९ ।। श्री खुरशैद जी ।।

ग़ज़लः- हरि को भजो लखो तब काहे करत हो झगड़ा।
मुरशिद से नाम बिधि को जानो करो तो रगड़ा।
सूरति शबद पै लागै मन होय तब तो लँगड़ा।
धुनि ध्यान नूर लय को पाकर के होहु तगड़ा।
थे शेर जाल में पड़ि अब बनि गये हो छगड़ा।५।

चेतो उठो तो भाई अब ही न कछु है बिगड़ा।
सुमिरन से सारे बन्धन कटि जात हैं न घबड़ा।
खुरशैद कह बचन मम मानै न तौन धिगँड़ा।८।

४८० ।। श्री बादल जी ।।

पदः- हरि नाम क सुमिरन कर कर कर।
दुख आनि पड़ै मति टर टर टर।

मुरशिद करि भव निधि तर तर तर।
जब शब्द पै सूरति धर धर धर।
तब ध्यान समाधि में पर पर पर।५।

लखु रूप नूर मन भर भर भर।
तब निर्भय किस से डर डर डर।
बादल कह चल निज घर घर घर।८।

४८१ ।। श्री फय्याज़ जी ।।

पदः- धुनि नाम कि प्यारी खुलि जावै जो सब की मानो ज़र ज़र ज़र।
फय्याज़ कहैं तब फुरसत हो कबहूँ नहि प्यारे मर मर मर।
यह सीख तरीका मुरशिद से झूठै क्यों बकता फर फर फर।
इकरार किया जो गर्भ में तू उस को अब चेत के कर कर कर।
दोज़ख में जाय बिना सुमिरन नहि पल भर कल तँह पर पर पर।५।

यह बात तेरे है मतलब की तू जानि के भव निधि तर तर तर।
यम दूत लेन जब आवैंगे लखि रोवो आँसू भर भर भर।
फिरि परै पिटाई तन उपर तब गोज़ निकलिहै टर टर टर।८।

४८२ ।। श्री सादुल्ला जी ।।

पदः- अब हीं तो ख्याल नहीं नैकों सोते हो भूल में खर खर खर।
यह भूल शूल सम हो भाई तुमको नहि नेकौं डर डर डर।
यम दूत आनि जब घेरैंगे तूरैं सब तन को चर चर चर।
सब खड़े खड़े पछतावेंगे क्या संग जायगा ज़र ज़र ज़र।
मुरशिद से सीख के सबक ठीक जियतै में यहँ तै कर कर कर।५।

परकाश रूप धुनि ध्यान औ लय मिलि जाय चलौ तब घर घर घर।
यह सूरति शब्द क मारग है या से सब कारज सर सर सर।
कहता है सादुल्ला मस्त रहो अजपा पर सूरति धर धर धर।८।

४८३ ।। श्री रेवती जी ।।

पदः- रेवती की बिनय सब जन सुनो तन मन लगाय कै।
करो सुमिरन श्याम राधे का सदा हर्षाय कै।
शान्ति बैठि एकान्त में सूरति को शब्द लगाय कै।

धुनि ध्यान लय परकाश हो हर दम मगन सुख पाय कै।
झाँकी युगुल सन्मुख रहै नैनो में नैन भिड़ाय कै।५।

सुर मुनि कहैं हरि यश सुनो नित प्रेम प्रीति बढ़ाय कै।
अन्त में चढ़ि कै सिंहासन चलो हरि पुर धाय कै।
सतगुरु बिना नहिं मिलै यह पद कहौं सत्य सुनाय कै।८।

४८४ ।। श्री पद्मावती जी ।।

पदः- पद्मावती कह शब्द पर सूरति लगै बसुयाम की।
धुनी जारी रहै हर दम सुफ़ल हो तब जाम की।
नाम की बिधि जानि कै लखिये छटा प्रिय श्याम की।
परकाश ध्यान समाधि हो शुभ अशुभ कर्म नर बाम की।
देव मुनि खेलैं हँसैं बातैं करैं सुख धाम की।५।

परमात्मा को आत्मा ही जानता नर बाम की।
जियत में यहँ पर तै करै सो अचल पुर आराम की।
सतगुरु शरन पर सीख ले यह बात अपने काम की।८।

४८५ ।। श्री शहादत खाँ जी ।।

पदः- कहता सहादत खां जिकिर हरि का करो निशि वार जी।
बातौं से पेट भरैं नहीं मन चाह जकड़ै जार जी।
पाप करने से भरैगा पेट नहि दुखदार जी।
जाय के दोज़ख़ पड़ो रोओगे कल्पों यार जी।
खिदमत करो मुरशिद कि तन मन एक करके प्यार जी।५।

मारग बता देवैं सुगम होवै तुम्है दीदार जी।
रूप सन्मुख रहै तब अनुपम सँवलिया यार जी।
ध्यान धुनि औ नूर लय पाकर के हो भव पार जी।८।

४८६ ।। श्री हिदायत खां जी ।।

पदः- कहता हिदायत खां गरीबी धार लो भव पार हो।१।
नाम हरि का ही जपो भूलो नहीं निशिबार हो।२।
ध्यान धुनि लय नूर पावो रूप का दीदार हो।३।
छकौ छबि हर दम अधर मुरली धरे सरकार हो।४।

४८७ ।। श्री काले खाँ जी ।।

पदः- कहता है कालेखां भजै हरि क न निमकहराम है।
जाय कर दोज़ख पड़े पहिने पशू का जाम है।
बिनु भजन हरि ढिग जाय कैसे बना अधम निकाम है।
मुरशिद मिलै सांचा जिसे सो तो मगन बसु जाम है।
धुनि ध्यान लय परकाश पावै रूप शोभा धाम है।
जियतै में नर तन सुफ़ल हो फिर गर्भ से क्या काम है।६।

४८८ ।। श्री इमदाद खाँ जी ।।

पदः- मिलै सांचा जिसे मुरशिद भजन का मार्ग बतलावै।
छटा घनश्याम राधे की सदा सन्मुख में छबि छावै।
धुनी जारी रहै हर दम ध्यान परकाश लय पावै
देव मुनि संग में खेलैं वरन ने में जो नहि आवै।
बजै अनहद सुघर बाजा ताल स्वर राग दरशावै।५।

शान्ति तलवार में भाई दीनता मूठि लगवावै।
सत्य के म्यान में राखै फौज़ असुरन कि भगि जावै।
ढाल विश्वास में जोती लगै सन्तोष जय पावै।
जियत में तै किया जिसने अन्त हरि पुर को सो धावै।
नहीं तो आने जाने का कठिन चक्कर न सुख पावै।१०।

नाम औ रूप की सत्ता अमित हर शै में लहरावै।
कहै इम्दाद जो जानै सो हरि संग रूप बनि जावै।१२।

४८९ ।। श्री महमूद खाँ जी ।।

पदः- ध्यान धुनि नूर लय रोशन मिला जिसको तरा जग से।१।
जाप अजपा इसे कहते बिना रसना र रा ढँग से।२।
पाँच औ तीनि मन माया पचीसौं को जरा सँग से।३।
कहैं महमूद मुरशिद बिन फिरैं चकरात जग ठँग से।४।

४९० ।। श्री तकीवेग जी ।।

पदः- साधु का भेष धारन कर किसी को फिर सताना क्या।
त्यागि सब ऐश दुनिया के किसी पर फिर लोभाना क्या।

समर में जाय कर भाई तो पीछे पग हटाना क्या।
सिंह के साथ में रहकर गीदड़ो से डराना क्या।
धरी शीरीं जो हो घर में तो फिर शीरा पिलाना क्या।५।

दुःख गर आन पड़ि जावै सहै चुपके बताना क्या।
नाम धन पास में होवै तो फिर बाँटै छिपाना क्या।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर बृथा बकवाद करना क्या।
होय धन तो धरम करिये गाड़ झूठे को धरना क्या।
मान अपमान गर होवै तो उस पर ध्यान करना क्या।१०।

बजै अनहद सुघर तन में सुनौ फिर अन्त चलना क्या।
ज़बानी ज्ञान पढ़ि सुनि कथि के फिर ऊपर उछलना क्या।
सतोगुन का जो हो भोजन तो मन इन्द्रिन बिगड़ना क्या।
होय जो कम हक़ीक़त का उसे भाई दबाना क्या।
इल्म तुमसे पढ़ा कम हो उसे सुनिये बकाना क्या।१५।

आँख जिसके न हों दोनों उसे शीशा देखाना क्या।
श्रवण दोनों जो हों बहिरे उसे गाना सुनाना क्या।
जागता है जो निशि बासर उसे भाई जगाना क्या।
मिलै सतगुरु जिसे सांचा उसे तब फिर रिझाना क्या।
देव मुनि संग बतलावैं तो फिर जग में बिचरना क्या।२०।

कथा औ कीरत जहँ हो वहाँ अभिमान करना क्या।
प्रेम में चूर हो जावै उसे कफनी लगाना क्या।
राम सीता रहैं सन्मुख तो फिर अब और करना क्या।
तकी कहता जियत में जान कर फिर गर्भ पड़ना क्या।२४।

४९१ ।। श्री दाता शाह जी ।।

पदः- तिल तिल का होत हिसाब रोज़ सच झूठ छिपैगा यार नहीं।
हरि नाम जानि लो सतगुरु करि तब तुम पर कोई वार नहीं।
नाहीं तो यारों हो मुशिकल बे दर्द करैं यम प्यार नहीं।
दिन चारि क है यह ठाठ सुनो यहँ पर तुमरा घर वार नहीं।
धुनि ध्यान समाधि व नूर बिना हो कोई भव से पार नहीं।५।

है एक औ सब में परिपूरन परत्यक्ष छिपा सरकार नहीं।

तन मन से हिम्मत जे हारैं ते पावैंगे सरदार नहीं।
कहता है दाताशाह बृथा तन जो सन्मुख दिलदार नहीं।८।

४९२ ।। श्री नूरे शाह जी ।।

पदः- मोह का जब हटै परदा, छुटै शीशे क तब गरदा।१।
मान अपमान जिन मरदा, वही भव जाल नहिं सरदा।२।
शुक्र हरि का जे नहिं करँदा कहैं नूरे ते नहि तरँदा।३।
बशर का तन पैहैं वरदा खाय कसि पेट को भरदा।४।

४९३ ।। श्री यकीन शाह जी ।।

चौपाईः- सुरति क दण्ड शब्द चौगाना। ख्याल करै तब लगै निशाना।१।
धुनि औ ध्यान नूर लय पावै। सन्मुख राम सिया दरशावैं।२।
अनहद बाजै क्या धुनि प्यारी। तन मन धुनि सुनि होय सुखारी।३।

दोहाः- कुण्डलिनी षट चक्र औ सातौं कमलन रंग।
सुर मुनि सब के दरश हों जीति जाय जग जंग।१।
कहैं यकीन यकीन हो, जब जियतै ले जान।
सतगुरु बिन कीन्हे सुनो, खुलैं न आँखी कान।२।

४९४ ।। श्री झल्लर शाह जी ।।

पदः- कहता है झल्लर शाह मुरशिद बिना हाथ न आयगा।
पास ही में है तेरे वरज़िस बिना किमि पायगा।
सूरति लगा कर शब्द पर जब ख्याल प्यारे लायगा।
दरशैं कन्हैया राधिका सँग छटा सन्मुख छायगा।
धुनि ध्यान लय परकाश पाकर मस्त तू बन जायगा।५।

जियतै में इच्छा पूर हों तन त्यागि हरि ढिग धायगा।
यह खेल अगम अथाह है कहने से नहीं सेरायगा।
जो दीन बनि जावैं यहां सोई अमी फल खायगा।८।

४९५ ।। श्री सलामत शाह जी ।।

पदः- होय भव पार तब प्राणी मिलै जब नाम का डंका।
ध्यान धुनि नूर लय पावै मिटै तब भाल के अंका।
सामने कृष्ण राधे की रहै झाँकी हो निःशंका।

समर में जाय कर भाई तो पीछे पग हटाना क्या।
सिंह के साथ में रहकर गीदड़ो से डराना क्या।
धरी शीरीं जो हो घर में तो फिर शीरा पिलाना क्या।५।

दुःख गर आन पड़ि जावै सहै चुपके बताना क्या।
नाम धन पास में होवै तो फिर बाँटै छिपाना क्या।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर बृथा बकवाद करना क्या।
होय धन तो धरम करिये गाड़ झूठे को धरना क्या।
मान अपमान गर होवै तो उस पर ध्यान करना क्या।१०।

बजै अनहद सुघर तन में सुनौ फिर अन्त चलना क्या।
ज़बानी ज्ञान पढ़ि सुनि कथि के फिर ऊपर उछलना क्या।
सतोगुन का जो हो भोजन तो मन इन्द्रिन बिगड़ना क्या।
होय जो कम हक़ीक़त का उसे भाई दबाना क्या।
इल्म तुमसे पढ़ा कम हो उसे सुनिये बकाना क्या।१५।

आँख जिसके न हों दोनों उसे शीशा देखाना क्या।
श्रवण दोनों जो हों बहिरे उसे गाना सुनाना क्या।
जागता है जो निशि बासर उसे भाई जगाना क्या।
मिलै सतगुरु जिसे सांचा उसे तब फिर रिझाना क्या।
देव मुनि संग बतलावैं तो फिर जग में बिचरना क्या।२०।

कथा औ कीरत जहँ हो वहाँ अभिमान करना क्या।
प्रेम में चूर हो जावै उसे कफनी लगाना क्या।
राम सीता रहैं सन्मुख तो फिर अब और करना क्या।
तकी कहता जियत में जान कर फिर गर्भ पड़ना क्या।२४।

४९१ ।। श्री दाता शाह जी ।।

पदः- तिल तिल का होत हिसाब रोज़ सच झूठ छिपैगा यार नहीं।
हरि नाम जानि लो सतगुरु करि तब तुम पर कोई वार नहीं।
नाहीं तो यारों हो मुशिकल बे दर्द करैं यम प्यार नहीं।
दिन चारि क है यह ठाठ सुनो यहँ पर तुमरा घर वार नहीं।
धुनि ध्यान समाधि व नूर बिना हो कोई भव से पार नहीं।५।

है एक औ सब में परिपूरन परत्यक्ष छिपा सरकार नहीं।

तन मन से हिम्मत जे हारैं ते पावैंगे सरदार नहीं।
कहता है दाताशाह बृथा तन जो सन्मुख दिलदार नहीं।८।

४९२ ।। श्री नूरे शाह जी ।।

पदः- मोह का जब हटै परदा, छुटै शीशे क तब गरदा।१।
मान अपमान जिन मरदा, वही भव जाल नहिं सरदा।२।
शुक्र हरि का जे नहिं करँदा कहैं नूरे ते नहि तरँदा।३।
बशर का तन पैहैं वरदा खाय कसि पेट को भरदा।४।

४९३ ।। श्री यकीन शाह जी ।।

चौपाईः- सुरति क दण्ड शब्द चौगाना। ख्याल करै तब लगै निशाना।१।
धुनि औ ध्यान नूर लय पावै। सन्मुख राम सिया दरशावैं।२।
अनहद बाजै क्या धुनि प्यारी। तन मन धुनि सुनि होय सुखारी।३।

दोहाः- कुण्डलिनी षट चक्र औ सातौं कमलन रंग।
सुर मुनि सब के दरश हों जीति जाय जग जंग।१।
कहैं यकीन यकीन हो, जब जियतै ले जान।
सतगुरु बिन कीन्हे सुनो, खुलैं न आँखी कान।२।

४९४ ।। श्री झल्लर शाह जी ।।

पदः- कहता है झल्लर शाह मुरशिद बिना हाथ न आयगा।
पास ही में है तेरे वरज़िस बिना किमि पायगा।
सूरति लगा कर शब्द पर जब ख्याल प्यारे लायगा।
दरशैं कन्हैया राधिका सँग छटा सन्मुख छायगा।
धुनि ध्यान लय परकाश पाकर मस्त तू बन जायगा।५।

जियतै में इच्छा पूर हों तन त्यागि हरि ढिग धायगा।
यह खेल अगम अथाह है कहने से नहीं सेरायगा।
जो दीन बनि जावैं यहां सोई अमी फल खायगा।८।

४९५ ।। श्री सलामत शाह जी ।।

पदः- होय भव पार तब प्राणी मिलै जब नाम का डंका।
ध्यान धुनि नूर लय पावै मिटै तब भाल के अंका।
सामने कृष्ण राधे की रहै झाँकी हो निःशंका।

बड़ा हरि से नहीं कोई करैं छिन राव को रंका।
जियत अभ्यास करि निरखै वही बलवान औ बंका।५।

चेत करके करो सतगुरु नैन चारों को क्यों ढंका।
काल धोके में जब पकड़ै करैगा एक ही फंका।
सलामत शाह कह भाई ये तन जरि जाय जिमि लंका।८।

४९६ ।। श्री कलूट शाह जी ।।

पदः- गोता लगाना सीख लो सुखमन में परिके यार तुम।
फिर तो कोई मुशिकल नहीं लो सामने दिलदार तुम।
धुनी जारी रहै प्यारी सुनो फिरि निशिबार तुम।
परकाश ध्यान समाधि हो जियतै में हो भव पार तुम।
अनहद बजै सब दुख भजै सुरमुनि के हो परिवार तुम।५।

सुमिरन करो सतगुरु से लै कियो गर्भ में इकरार तुम।
चेतो अगर मानो नहीं तो हो गरद गुब्बार तुम।
कहता कलूट बिनय सुनो बनि जाव रंग सरकार तुम।८।

४९७ ।। श्री भलूट शाह जी ।।

पदः- सखिन मधि नाचत कृष्ण राधे।
नाना साज राग को बरनै नूपुर पग बांधे।
धाय धाय हरि लपटैं सब को दौरि चढ़त कांधे।
सखा चहूँ दिशि ते तँह राजत कर से कर साधे।
सुर मुनि शक्ती निरखै एक टक मानहुँ सब बांधे।५।

बृजवासी मुरली की धुनि सुनि मूर्छि गिरत आधे।६।
कहैं भलूट प्रिया प्रीतम भजु कटैं सकल बाधे।७।

४९८ ।। श्री दरगाही शाह जी ।।

पदः- नित नये नये करैं चरित श्याम बृज की छबि न्यारी हो।
सखा सखी हिलि मिलि सब खेलैं संग प्रिय प्यारी हो।
सुर मुनि शक्ती आय के देखैं छबि उर धारी हो।
छकैं युगुल छबि प्रेम में माते बहु नर नारी हो।
नैन चैन से आनँद लूटैं क्या सुख भारी हो।५।

सतगुरु करि तन मन को अर्पै तब जयकारी हो।
ध्यानि समाधि धुनी खुलि जावै घट उजियारी हो।
अनहद नाद सुनो घट बाजै हा हा कारी हो।
श्यामा श्याम लखौ तब हरदम मंगलकारी हो।
सत्य प्रेम पद प्राप्त होय जियतै भव पारी हो।१०।

सूरति शब्द क मारग जानौ चढ़ौ सँभारी हो।
दरगाही कहैं ख्याल यार निशि दिन एक तारी हो।

।। श्री कृष्ण भगवान जी के पद ।।

गज़लः- हमीं सीता हमीं राघौ हमीं राधा हमीं माधौ।१।
हमीं निर्गुन हमीं सर्गुन हमीं निरंकार शून्य शब्दौ।२।
हमीं ज्ञानी हमीं ध्यानी हमीं से चाहे जो माँगौ।३।
हमीं सब में सबी हम में दूसरा कौन जेहि साधौ।४।

गज़लः- लगन जो हमीं से लगाये हुये हैं।१।
जुदाई के सदमें उठाये हुये हैं।२।
अचल मुक्ति पदवी को पाये हुये हैं।३।
हमारे तो दिल में समाये हुये हैं।४।

वार्तिकः- ४० वर्ष हो गये, कुएँ के ऊपर मोर प्रगट हो गये भगवान कृष्ण प्रगट हो गये, भगवान कृष्ण मोरों को मक्खन खिलाते थे और खुद खाते थे, मोर नाचते थे और कृष्ण भगवान भी नाचते थे। तभी के यह दोनों पद हैं।

४९९ ।। श्री गंगा दास जी ।।

कवितः- झूलत कदम तरे मदन गोपाल लाल,
बाल हैं बिशाल झुकि झोंकनि झुलावती।१।
कोई सखी गावती बजावती रिझावती,
घुमड़ि घुमड़ि घटा घेरि घेरि आवती।२।
परत फुहार सुकुमार के बदन पर,
बसन सुरंग रंग अंग छबि छावती।३।
कहैं गंगादास रितु सावन स्वहावन है,
पावन पुनित लखि रीझि कै मनावती।४।

५०० ।। श्री दयालदास जी ।।

पदः- माथे पै मकुट श्रुति कुण्डल विशाल लाल,
अलकैं कुटिल सोहैं लीला मृदु गैंजनी।१।
कछनी कलित्रा कटि किंकिर्णी बिचित्रा चित्रा,
अंग पै पितांबर फहरात रंग बैंजर्नी।२।
डालगले बहियाँ प्रिया पीतम बिहार करैं,
ऐसो अनुराग भरि आई दोऊ दुजनी।३।
कहत दयाल दास मेरो मन हर लीन्हो,
मंद मंद बाजत गोविन्द पग पैंजनी।४।

५०१ ।। श्री शिकारी शाह जी अपढ़ मुसलमान।।
(१ जुलाई सन् १९८१ को रात्रि २ बजे आये थे)

चौपाईः- खान पान में जाको प्रेम। उसका झूठा नेम औ टेम।१।
पांचो चोर औ पकड़े मेम। कैसे होवै वाको छेम।२।

चौपाईः- बंचक भक्त कथा हैं बांचत। मन औ चोर अजा संग नाचत।३।
शान्ति दीनता सच्ची जुगती। तब मिल जाती मुक्ती भक्ती।४।
पाप का बाप लोभ दुखदाई। अंत समय नरकै लै जाई।५।

चौपाईः- मान अभिमान न जाको लागै। सो तन तजि हरि पुर को भागै।।
मन काबू जाको ह्वै जावै। सोई सच्चा भक्त कहावै।।
मन साधू जब तक नहीं तन साधू बेकार।
मन साधू जब ह्वै गयो दोनों दिशि जैकार।
बिन धीरज नर भटकत घूमै। छिन छिन में माया मुख चूमै।५।

बार्तिकः- शिकारी शाह उसे कहते हैं जिसे नाम की प्राप्ती - सरूप की प्राप्ति - प्रकाश की प्राप्ती - लय दशा की प्राप्ती - शून्य समाधि की प्राप्ती - सहज समाधि की प्राप्ती - प्रेम समाधि की प्राप्ती - अनहद बाजा की प्राप्ती - अमृत पान की प्राप्ती - शुभ लोकों में कुण्डलिनी शक्ति के साथ घूम आना - सातौं कमल खिल जाना - नासिका से सुगंधि आना - छइउ चक्र चलने लगना - सब देवी देवताओं के दर्शन होना - देवी देवताओं के यहां दिव्य भोजन का खान पान होना - भूख प्यास का शान्ति हो जाना - जाड़ा घाम का छूट जाना - अजर अमर ह्वै शरीर

बारह वर्ष का हो जाय - बड़ा बिस्तार है कहां तक लिखावैं। वही जीव जियतै शरन हो गया - वही तरन हो गया - वही मरन हो गया। जैसे सेंका अन्न जैसे फिर नहीं जमता।

॥ श्री स्वामी रामानन्द जी ॥

हरि हरिभक्तन का चरित, है अति सुख की खानि।
रामानन्द यह कहत हैं, लेव वचन मम मानि ॥
पढ़ै सुनै जो ग्रन्थ यह, तन मन प्रेम लगाय।
हर्ष शोक की शान्ति हो, भवसागर तरि जाय ॥

श्री गुरू महाराज की आरती

आरती गुरू महाराज की कीजै।
कोटिन कोटि पुण्य सुख लीजै।।
गावत सीता जी राधा जी।
जिनका जस लक्ष्मी जी उमा जी।।
मातु सरस्वति आसिस दीन्हीं।
परमहंस अस लेखनि की जै।१।

गावत नर नारी बालक गन।
रामकृष्ण बसते जिनके मन।।
सहस संत निज भाव लिखाये।
उन अदभुत कर कमलन की जै।२।

गावत प्रभु की लीला को नित।
भगत हिये हुलसे भक्तामृत।
अनहद नाद सुनत भीतर लौं।
तबहूँ मंगल कारक की जै।३।

मैं मूरख गुरू अंतरयामी।
दास सदा वह मेरे स्वामी।
त्राहिमाम शरणागत कीजै।
मोहि सदा चरनन मा लीजै।४।

परम पूज्य गुरुदेव
परमहंस राम मंगल दास जी महाराज
के
अकिंचन शिष्य सुधाकर अदीब द्वारा विरचित

बजरंग भवन, अयोध्या, में श्री गुरुदेव का महानिर्वाण स्थल।

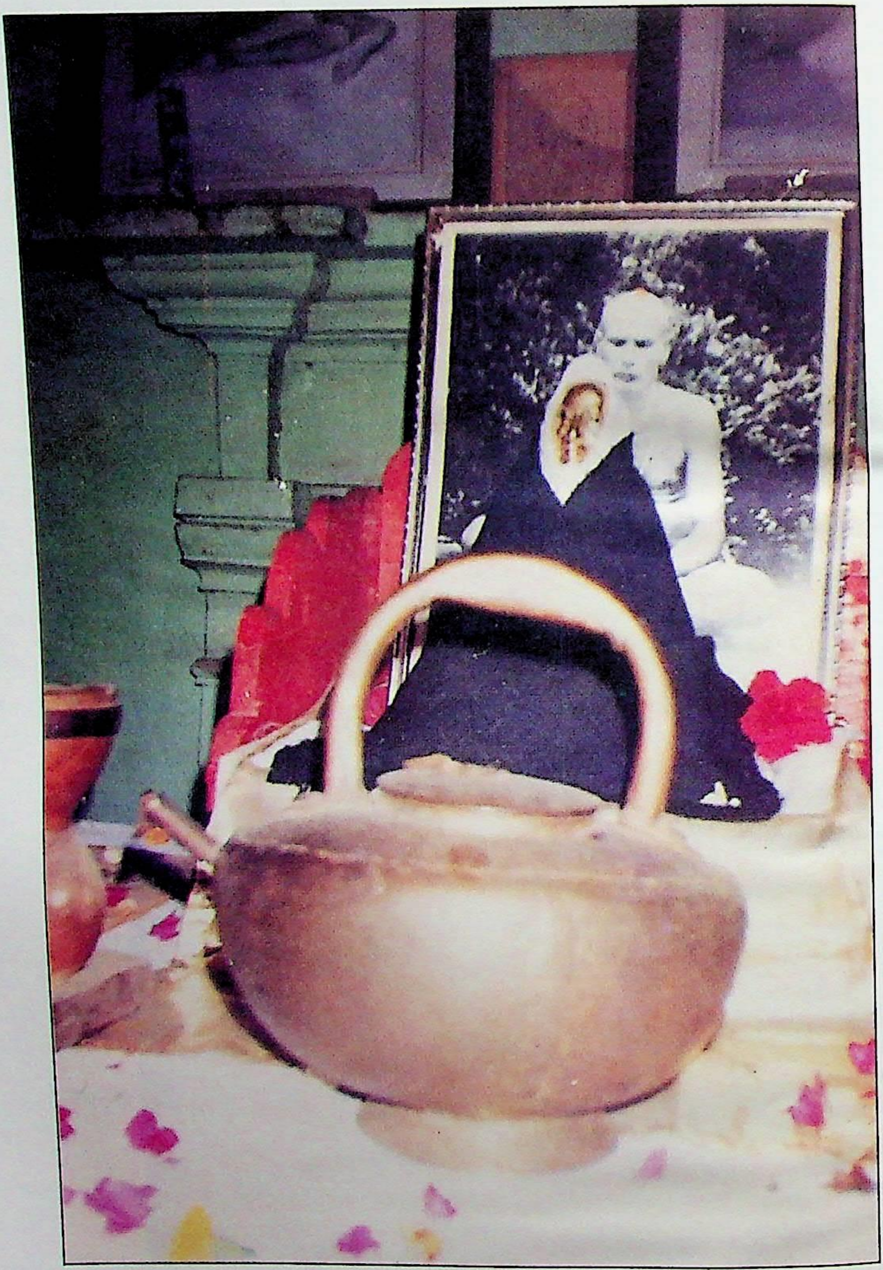

बजरंग भवन, अयोध्या, में श्री गुरुदेव के
महानिर्वाण स्थल पर उनकी
लघु-मूर्ति व चित्र।

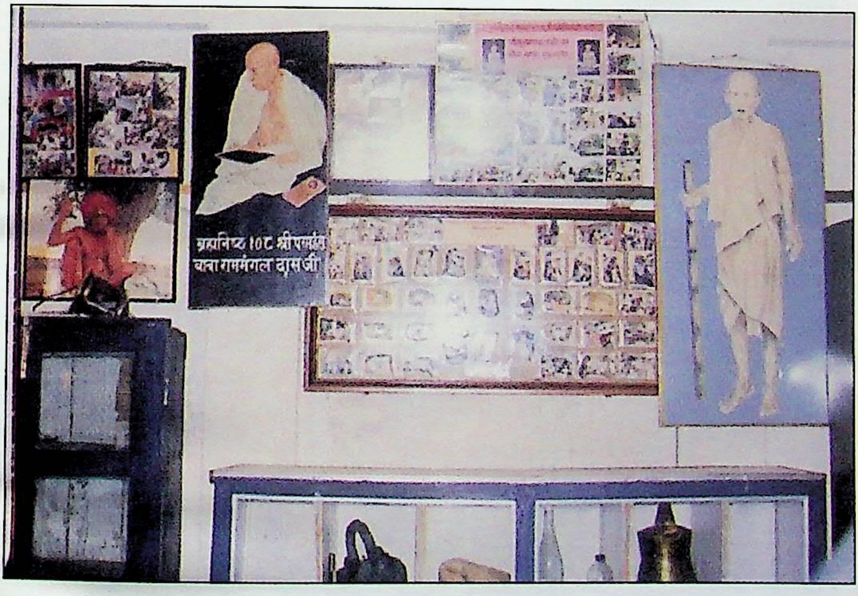

गोकुल भवन आश्रम में गुरुदेव की

मूर्ति व स्मृति प्रतीक।

श्री गुरु-चरण कमल।

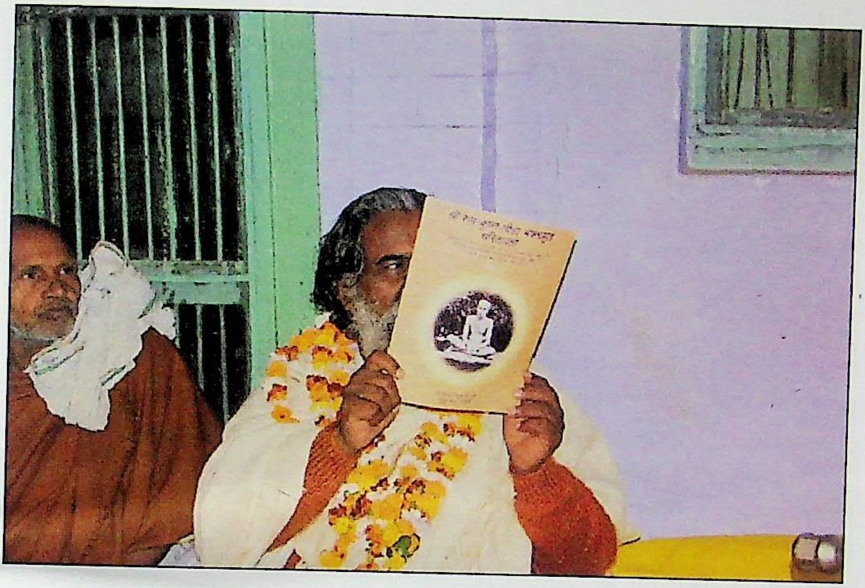

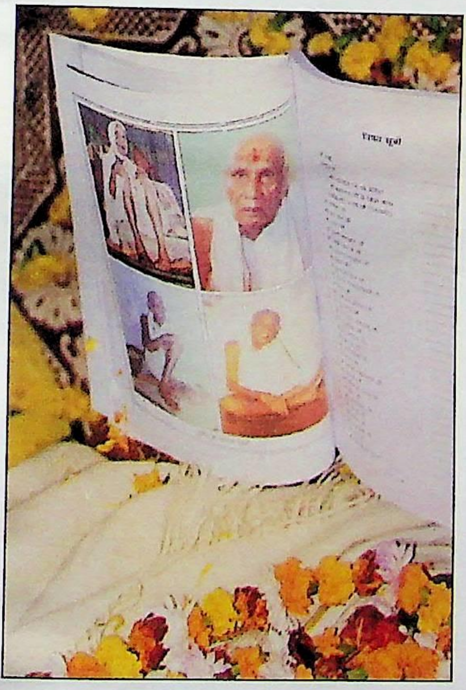

श्री परमहंस राममंगलदास जी द्वारा रचित प्रथम दिव्य ग्रन्थ "श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" के प्रथम भाग का विमोचन करते हुये श्रद्धेय संत श्री नृत्यगोपाल दास जी।
(31 दिसम्बर, 1999)

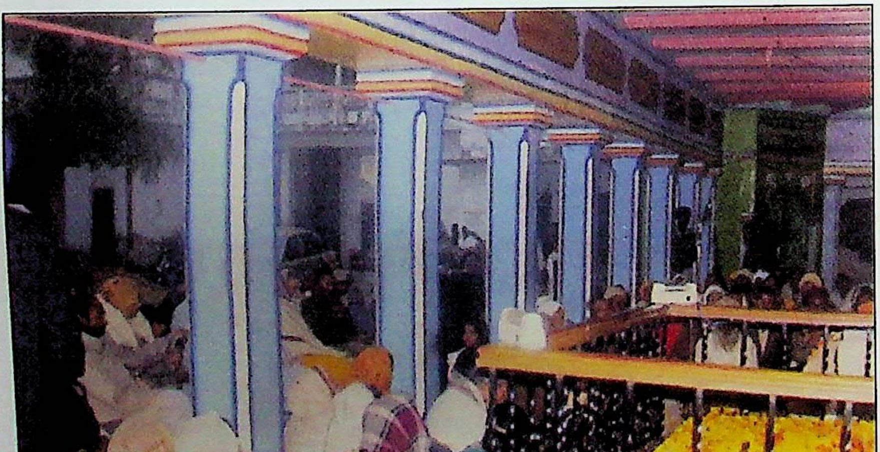

प्रथम दिव्य ग्रन्थ के विमोचन के समय पर
श्री गुरुदेव के तखत की सजावट।

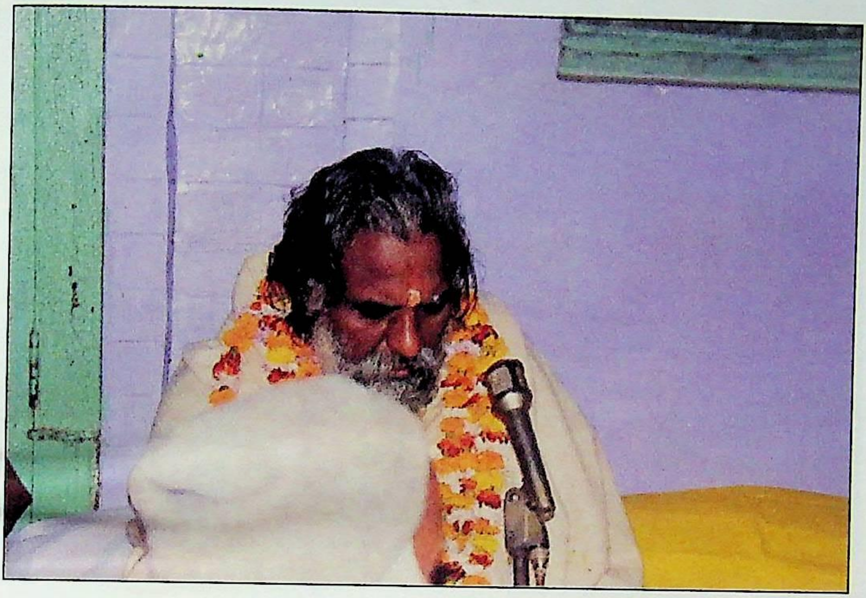

गोकुल भवन में प्रथम दिव्य ग्रन्थ के विमोचन के अवसर पर
प्रवचन करते श्रद्धेय श्री नृत्यगोपालदास जी (ऊपर)
तथा श्रद्धेय श्री रामसेवकदास जी (नीचे)।

श्री गुरुदेव की पुष्प समाधि गोकुल भवन आश्रम के प्रांगण में। कुछ वर्ष पूर्व रात्रि का दृश्य (ऊपर) तथा वर्तमान में दिन का दृश्य (नीचे)।

[illegible] ० गाम-२

भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला

लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला

-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण ली

ी राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरि

ली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत

रितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भ

मृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण ली

भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृ

लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री रा

कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली

राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरि

ी श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत

ावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भ

चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण ली

रितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृ

तावली श्री रा

श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली

श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली
श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली
श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली
श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली

संत शिरोमणि
अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी
(12.2.1893 - 31.12.1984)

श्री परमहंस राममंगलदास जी ने सन् 1933 ई० से सब देवी-देवताओं तथा हर धर्म के सिद्ध सन्तों द्वारा ध्यान में तथा प्रत्यक्ष प्रकट होकर लिखवाए आध्यात्मिक पदों को चार दिव्य ग्रन्थों में संग्रहीत किया। लगभग 50 वर्षों से ये दिव्य ग्रन्थ उनके गोकुल भवन आश्रम में परम पूज्य रूप से सुरक्षित रखे हुये हैं। इनके कुछ अंश ही छपे परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन भगवत्कृपा से अब हो रहा है। प्रथम ग्रन्थ जिसका नामकरण दिव्य रूप से श्री गुरु वशिष्ठ जी ने किया : ''श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली'', उसके प्रथम भाग का प्रकाशन श्री वशिष्ठ जी की आज्ञा व कृपा से सन् 1999 में हुआ। इसी प्रथम दिव्य ग्रन्थ का यह दूसरा भाग, जिसकी रचना 1945 के लगभग हुई है, सर्व जगत कल्याण के लिये अब प्रकाशित किया जा रहा है।

संसार के इन अलौकिक ग्रन्थों में भगवान के नाम की महिमा, सद्गुरु महिमा, सुरति शब्द योग, भगवान को पाने के अनेक मार्ग, उनमें आने वाली स्थितियां व अनुभव, ध्यान की विधियां, विभिन्न अनहद नाद, पूजन की विधियां, सब कमलों, चक्रों व नाड़ियों का वर्णन है। भगवान, देवी-देवताओं के स्वरूप तथा सब लोकों का वर्णन किया गया है। हर जाति व पेशे (व्यवसाय) के संत पुरुष व संत स्त्रियों ने लिखवाया है कि जीवन में कैसा आचार-विचार होना चाहिये, तथा उन्होंने किस प्रकार के कर्म किये जिनसे उन्हें भगवान का धाम प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में श्री परमहंस राममंगलदास जी को दर्शन देकर जिन्होंने दिव्य आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं, संक्षिप्त रूप में वे इस प्रकार है :-

- भगवान के विभिन्न अवतार, श्री सीता जी, श्री राधा जी, सब देवियां, लक्ष्मण जी, भरत जी, शत्रुघ्न जी।
- श्री रामायण जी, गीता जी, सब वेद, सब युग, दिव्य लोक, तीर्थ, राग रागिनियां।
- यमराज, मृत्यु, काल, रति जी, कामदेव जी।
- ऋषि भृगुजी, पांतजलि जी, धन्वन्तरि जी।
- रामायण व महाभारत के पात्र तथा जो राक्षस हरि व हरि भक्तों द्वारा मारे जाने पर भगवान के धाम को गये जैसे रावण, कंस, तारकासुर, महिषासुर, हिरण्यकश्यप।
- संत तुलसीदास जी, रसखान जी, अद्वैताचार्य जी, तानसेन जी, बैजू बावरा जी, ज्ञानेश्वर जी।
- संत शम्स तवरेज जी, फातिमा जी, इस्माईल जी, हकीम अजमल खां जी, मियां चिश्ती जी।
- बादशाह अकबर, बादशाह सिकन्दर, महारानी विक्टोरिया, लेनिन जी।
- भगत सिंह जी, राजगुरु जी, सुखदेव जी, मोतीलाल नेहरू जी, लाला लाजपत राय जी, गणेश शंकर विद्यार्थी जी।

श्री गुरुदेव परमहंस राममंगलदास जी के अनुसार, ''इन ग्रन्थों को जो पढ़ेगा, प्रेरणा पायेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा, तो उसका जीवन सार्थक होगा, उसका कल्याण होगा।''